Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

विधि—नागरमोथा, कालीमिरच, चव्य, चीता, हल्दी, पीपल, वायविडंग, आमला, खस, छारछबीला, सुपारी, लोध, चण्डालकंद (दो पत्र वाला), कुटकी, सफेद चन्दन, तगर, बालछड़, दारचीनी, गोदन्ती और नागकेशर ये प्रत्येक ३-३ तोले कूटकर; तथा धायके फूल ६॥ छटाँक मुनक्का २ सेर ३२ तोले और गुड़ १२ सेर (गुड़ पुराना होना चाहिये) सब को एक शुद्ध घृत से चिकने लिये हुये घड़े में भर कर उसमें जल २० सेर ६४ तोले मिला अच्छी तरह घोल देवे । फिर यथा-विधि पात्र का मुख सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक ।

गुण— खाँसी; दमा; क्षय, मन्दाग्नि तथा कोष्ठबद्धता (कब्जी) नाशक है ।

---

२१९ चित्रकासव नं० १—ज्वरनाशक ।

(श्री भागीरथजी स्वामी रसायन शास्त्री)

विधि—चीते की जड़ की छाल का चूर्ण १ भाग और अत्युच्च नम्बर का मद्य १२ भाग एकत्र मिला एक बोतल में भर, मुख अच्छी तरह बंद कर ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे । फिर छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

पक्षमात्रं निधापयेत् ॥ प्रमृद्य गालितोऽत्यर्थं फाण्टः स्याच्चित्तचन्द्रिरः ॥
कासं श्वासं क्षयं मान्द्यं बन्धं हन्ति प्रकाशते ॥

(सिद्धभैषज्यमणिमाला)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१५ बून्द से ४० बून्द तक। अनुपान १ तोला जल अथवा मधु में मिला कर देवे।

गुण-यह अद्भुत स्वेदजनक है। विषमज्वर में देने से थोड़ी देर में पसीना लाकर ज्वर उतार देता है। यह फिनासेटीन आदि डाक्टरी दवाओं की तरह कोई दुर्गुण नहीं करता। ज्वर उतारने तथा नष्ट करने और क्षुधा बढ़ाने में अद्भुत गुण रखता है।

(धन्वन्तरि—बूटीचित्राङ्क)

---

२१६ चित्रकासव नं० २—अजीर्णादि नाशक।

(श्री कविराज पं० शशिकांतजी मिश्र, भिषगाचार्य)

विधि—चीते के हरे पत्ते ३ भाग कूटकर मद्य या रेक्टिफाइडस्प्रिट ५ भाग में मिलाकर चीनी मिट्टीके पात्र में या मजबूत कांच की शीशी में भर कर रख देवे। ७ दिन बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—१५ या २० बून्द तक।

गुण—अजीर्ण, यकृत विकार, संग्रहणी, शोथ नाशक है। जिस बच्चे को अन्न न पचता हो उसे इस आसव की २ से ५ बून्दें जल मिला कर पिलावे, या माता के दूध में मिला कर पिलावे। भोजन अच्छी तरह पचता है, दस्त साफ़ होजाता है।

नोट—उक्त आसव इसप्रकार भी तैयार किया जाता है। चीते के हरे ताजे पत्तों को कूटकर स्वरस निकाल ले और फिल्टर पेपर में छानकर मतसंजीवनी सुरा या रेक्टिफाइडस्प्रिट

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में डालकर रख देवे। ७ दिन बाद व्यवहार में लावे। मात्रा आधा ड्राम तक।

(जीवनसुधा)

※ २१७ चित्रकाद्यासव—अग्निमांद्यादिनाशक ।

विधि—लाल चीते की जड़ ४ तोले, कैलम्बा (?) की जड़ ४ तोले, सन्तरे के छिलके दो तोले और मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) १०० तोले लेकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर कर रख दे। अच्छी तरह सन्धान कर ७ से १५ दिन तक रक्खे। पश्चात् छानकर (अच्छी तरह दबाते हुये छानना चाहिये और खूब निचोड़ना चाहिये) शीशी में भर कर रख दे।

मात्रा—आधे माशे से ६ माशे तक।

गुण—अग्निमांद्य, अजीर्ण, अरुचि, अम्लपित्तादि रोगों में बड़ा लाभदायक है। इन रोगों में लाभ करने वाली कटुकासव तथा विषतिन्दुकासवादि अन्य औषधियों के साथ मिलाकर भी इसका प्रयोग किया जाता है।

(मद्यासव)

---

२१८ चित्रकाद्योऽरिष्ट—प्लीहा, ग्रहणी आदि नाशक।

※ चित्रक त्रिफळा पाठा चव्यानां ग्रन्थिकस्य च । विडङ्गदेव काष्ठस्य भागान्कुर्याच्चतुष्पलान् ॥ कुष्ठभल्लातकेल्वालु वचानां मरिचस्य च । पिप्पली कटुकेन्द्राह्वा मुस्तानां स्युस्त्रयस्त्रयः ॥ पक्त्वाऽवशेषिताष्टांश रसे तास्मिन्हृते पुनः । पूतं दद्यान्मधुप्रस्थं गुडस्यार्धतुलामपि ॥ पंचकोलं सम-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—चीता, हरड़, बहेड़ा, आमला, पाठा (जलजमनी), चव्य, पीपलामूल, वायविडंग और देवदारु १६—१६ तोले, कूठ, भिलावा, एलुवा, वच, कालीमिरच, पीपल, कुटकी, इन्द्रायन और नागरमोथा प्रत्येक १२-१२ तोले, लेकर कूट कर ८ गुने पानी में पकाकर, आठवाँ भाग शेष रहने पर छान लेना चाहिए। तत्पश्चात् उसमें—शहद ६४ तोले, गुड़ २॥ सेर और पीपल, पीपलामूल; चव्य; चीता; सोंठ; मिरच; हरड़; बहेड़ा और आमले का चूर्ण प्रत्येक दो-दो तोले तथा दारचीनी, तेजपात, इलायची और नागकेशर का चूर्ण मिलाकर, घृत से चिकने मटके में भरकर, अच्छी तरह सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् निकाल कर छान लेवे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—ग्रहणी; पाण्डु, उदररोग, तिल्ली, गुल्म, सूजन और बवासीर नाशक तथा रोचक, अग्निदीपक और स्रोत शोधक है। पुरानी संग्रहणी, आमातिसार और गुल्म पर यह अपना दिव्य प्रभाव करता है।

रिचं त्रिफलां च पलाष्टकम्। संचूर्ण्य दद्यात्पत्रैला त्वङ्नागानां तथा पलम् ॥ मासार्धं घृतकुम्भेऽयं जातोऽरिष्टः प्रयोजितः। चित्रकाद्य इति ख्यातो ग्रहणी दोषहा परम् ॥ पाण्डुरोगोदर प्लीह गुल्म शोफार्शसां मतः। रोचनो दीपनश्चाग्नेः स्रोतसां च विशोधनः ॥

—गदनिग्रह

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२१९. चिरतिक्तासव—(स्वकृत)—ज्वरादि नाशक ।

विधि—चिरायते का चूर्ण (मोटा) ७ तोले और रेक्टि-फाइड स्प्रिट ५० तोले एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् मोटे वस्त्र से खूब मसलते हुए छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बून्द से १२० तक।

गुण—ज्वर, मंदाग्नि, अशक्ति, अजीर्ण तथा त्वचा के रोगों को दूर करता है।

---

२२० चिरतिक्तारिष्ट—ज्वर नाशक।

विधि—२० तोले चिरायता लेकर, जवकुट कर, २५ सेर जल में पकावे. ८ सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें—५ सेर गुड़, १॥ सेर शहद, ५० तोले धाय के फूल, १। सेर मुनक्का तथा असली पीले फूल की सह-देई, गिलोय, नीम की छाल, परवल के पत्ते, कटेरी की जड़, प्रत्येक का चूर्ण १०-१० तोले, बासे की जड़ की बकली ६ तोले और मीठा कूठ ५ तोले मिला, पात्र का मुख संधान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से २ तो० तक।

गुण—सर्व ज्वर नाशक है।

(प्राचीन पुस्तक से)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चिरायतासव—देखिये, चिरतिक्तासव।

२२१ चोपचिन्यासव नं० १—रक्तविकारे।

(श्री वैद्यराज पं० टीकादत्तजी त्रिवेदी, मुरादाबाद कृत)

विधि—चोपचीनी २॥ सेर चूर्ण कर, १५ सेर जल में मिला, एक शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें गुड़ ७ सेर, द्राक्षा (मुनक्का) १ सेर, तथा उसवा, स्यातरा, मुण्डी, ब्राह्मी, हरड़, बहेड़ा, आमला, जवासा, सरफोंका, धनिया, सौंफ मजीठ, लालचन्दन, पतंग, उन्नाव, दारुहल्दी, नीम के फूल, आवनूस का बुरादा, सीसम का बुरादा, गुलाब के फूल, गुल-बनपसा, गावजवाँ के फूल, ब्रह्मदण्डी प्रत्येक ५—५ तोले चूर्ण कर मिला देवे। और अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले तक।

गुण—रुधिर को शुद्ध करता है, और सम्पूर्ण रक्त विकारों का नाशक है।

---

२२२ चोपचिन्यासव नं० २—वाजीकरण।

(श्री० पं० महावीरप्रसाद जी मालवीय वैद्य "वीर")

विधि—चोबचीनी आध सेर कूटकर, २४ सेर पानी में पकावे, १४ सेर जल रह जाय तब नीचे उतार, एक शुद्ध मजबूत चिकने घड़े में भर कर उसमें-मुनक्का आध सेर, मिश्री आध सेर, तथा केशर और रूमीमस्तगी ६-६ माशे,

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

अगर, अजमोद, इन्द्रयव, कच्चूर, गावजवाँ, गुलाब के फूल, छरीला, जटामांसी, तेजपात, पीपल, बड़े गोखरू, बड़ी इलायची, लताकस्तूरी और श्वेतचन्दन दो-दो तोले। अकरकरा, कुलीजन, नागरमोथा २॥-२॥ तोले, अजवायन, असगन्ध गाजर के बीज, जायफल, जावित्री, तज, लवंग और सौंफ प्रत्येक ४-४ तोले, समस्त औषधियों का अधकुट चूर्ण मिला पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। ७ दिन के बाद भबके के द्वारा आसवार्क खींच लेवे। पश्चात् बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ५ तोले तक। बलाबल के अनुसार दोनों समय सेवन कर, थोड़ी दूर टहल लिया करे।

गुण—इसके ३ मास तक सेवन करने से वाजीकरण होता है, शरीर में बल वीर्य की वृद्धि होती है। मन प्रसन्न रहता है तथा अंतड़ियों में बल बढ़ता है। गठिया, पथरी, मूत्रावरोध, प्रमेह, वातव्याधि, रक्तविकार, सन्धिपीड़ा एवं सुजाक आदि रोग दूर होते हैं।

(धन्वन्तरि)

---

२२३ चोपचिन्यासव नं० ३—उपदंशादि नाशक।

विधि—चोपचीनी आध सेर को कूटकर २० सेर जल में मिलाकर पकावे जब १० सेर जल शेष रहे, तब नीचे उतारकर (यह पकाने की क्रिया उत्तम शुद्ध मटके में करनी चाहिये) उसमें मुंडी आध सेर, आमला, उन्नाव, उसवा, कचनार की

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छाल, चिरायता, झाऊकी पत्ती, पित्तपापड़ा, बड़े गोखरू, बनपसे के फूल, बकायन के फल, बहेड़ा, मजीठ, मेंहदी के फल, मेंहदी के फूल, सफेद चन्दन, सरफोंका, सिरस की छाल और पकी हुई हरड़ प्रत्येक ३-३ तोले, अगर, नीम के फूल और बबूल की ताजी छाल प्रत्येक ५-५ तोले तथा गुलाब के फूल १ पाव, उक्त सब औषधियों का अधकुट चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह संधान कर ७ दिन रक्खे। पश्चात् भवके से आसवार्क खींच कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ तोले से ८ तोले तक। अनुपान-मधु या मिश्री तोला, डेड़ तोला मिला कर सेवन करे।

गुण-उपदंश का प्राचीन विकार, प्रमेह, व्रण, मन्दाग्नि, और रक्तदोष दूर होकर शरीर में कान्ति और बल बढ़ता है।

नोट—पथ्य सेवन आवश्यक है। क्रोध, शोक, अचार, खटाई, मादक पदार्थ और सिरके का खाना त्याग दे। आग के सामने वा धूप में रहना, कांजी, कड़वा तेल, शाकभाजी, शीतल जलपान, परिश्रम, दिनका सोना, रात्रि जागरण, लाल मिरच, अधिक स्नान, और स्त्री प्रसंग से बचना चाहिये। लवण और क्षार पदार्थों को सर्वथा त्याग दे। शरीर खुला न रहे और विशेष शीतल वायु न लगने पावे, इत्यादि कुपथ्यों से बचने में सदा सावधान रहना चाहिये। (धन्वन्तरि)

चोपचिन्याद्यासव नं० ४—देखिये, शीतपित्तार्यरिष्ट।

चौलाई आसव—देखिये, तण्डुलियासव।

छ

छोहारासव—देखिये, खर्जूरासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ज

जङ्गली प्याज आसव—देखिये, कोलकन्दासव ।

२२४ जटामास्यासव न०१—(स्वकृत)–हिस्टीरिया नाशक ।

विधि—जटामांसी (बालछड़) २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, ४० सेर जल में पकावे । २० सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकनी मटकी में भरे, ठंडा होजाने पर उसमें ७ सेर शहद, ४ सेर मिश्री, तथा बच और तज का चूर्ण १६–१६ तोले मिलावे । और अच्छी तरह सन्धान कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक ।

गुण—योषापस्मार (हिस्टीरिया) को शीघ्र ही नष्ट करता है । प्रतिश्याय (ज़ुखाम) को भी दूर कर देता है ।

---

* २२५ जटामास्यासव न० २—उन्माद, अपस्मार हर ।

विधि—जटामांसी के १ भाग चूर्ण को मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाला) ५ भाग में मिला, चीनी मिट्टी के पात्र में, या कांच के पात्र में भर; अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे । ७ दिन के बाद खूब निचोड़ते हुये छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—आधा माशे से ६ माशे तक ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—उन्माद; अपस्मार, अपतन्त्रक, क्षीणस्मृति आदि मस्तिष्क रोगों में लाभप्रद है। उक्त रोगों में लाभ करने वाली ब्राह्मी आदि औषधियों के मद्यासवों में मिला कर सेवन करने से इसकी और भी गुण वृद्धि होजाती है।

(मद्यासव)

---

२२६ जपाकुसुमासव नं० १–(स्वकृत)रज, वीर्य दोष नाशक।

विधि—गुड़हल (जासवंद) के ताजे फूल १०० और उसी की जड़ आध सेर, कूटकर १० सेर जल में मिला, शुद्ध मटकी में डाल, उसका मुख वन्द कर आग पर चढ़ावे; लगभग ७ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, दूसरी चिकनी मटकी में भर देवे, और उसमें शहद ४ सेर, धायके फूल आध सेर, नागरमोथा, लौंग, दारुहल्दी, सफेदजीरा और पोस्त के फल प्रत्येक ४–४ तोले कूटकर मिला देवे। तथा पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक।

गुण—स्त्रियों का बाधक रोग दूर होकर, मासिक धर्म खुल कर नियमित रूप से होने लगता है। पुरुषों का वीर्य दोष दूर होकर, नामर्दी, नपुंसकता नहीं रहने पाती। उन्माद में भी यह लाभदायक है।

---

२२७ जपाकुसुमासव नं०२–(प्रातिकाकुमुद)–रक्तशोधक,पुष्टिकर।

(वैद्यराज उमादत्तजी मिश्र, मिर्जापुर)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—गुड़हल के फूल १०० और कागज़ी नीबू का रस आध सेर दोनों को शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में २४ घन्टे रखने के बाद, मलकर साफ कपड़े से छान लेवे, पश्चात् उसे चीनी के पात्र में भर उसमें अर्क गुलाब, अर्क केवड़ा, अर्क वेद-मुश्क प्रत्येक आध-आध सेर, और मिश्री १ सेर चूर्ण कर मिलावे। तथा पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् मल और छानकर, बोतल में भर कार्क लगा ७ दिन तक रक्खा रहने देवे, फिर ऊपर का द्रवरूप आसव (कीट रहित) नितारकर दूसरी शीशियों में भर कर काम में लावे।

मात्रा—३ माशे से २॥ तोले तक। शीतल जल के साथ।

गुण—वायु, पित्त, रक्त शोधक, स्वादिष्ट; तृषा और श्रम निवारक, गर्भाशय वृद्धिकारक एवं पुष्टिकर है। बच्चों को हितकारी, अग्निदीपक, प्रमेह, पूयमेह, हृद्रोग, तथा रक्तज बवासीर में विशेष लाभदायक है।

२२८ जम्बीरासव * नं० १—उदररोग नाशक।

---

* शतं च जम्बीर रसं रामठं च पलद्वयम् । सैन्धवं च विडङ्गश्च पृथक् दत्वा पलं पलम् ॥ त्र्यूषणं पलमेकैकं सौवर्चलं चतुष्टयम् । यवानीका पलं चैकं सर्षपानां चतुष्टयम् ॥ स्निग्धभाण्डे विनिक्षिप्य अश्वशालां निधापयेत् । एकविंशद्दिनं यावत्ततः सर्वं समुद्धरेत् ॥ सुचन्द्रे सुदिने लोके पूजायत्वांभिषग्गुरून् । यकृत् प्लीहामगुल्मं च विद्रध्यष्ठीलिकादयः ॥ वातगुल्ममतीसारं शूलं पार्श्वं हृदामयम् । नाभिशूलं विबन्धं च आध्मानञ्च गदोदरम् ॥ नश्यन्ति तस्य शीघ्रेण वातश्लेष्मानयाश्च ये । जीर्यन्ते तस्य कोष्ठे तु जम्बीरोद्भव सेवनात् ॥

—योग चिन्तामणि।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—जम्बीरी नीबू का रस ५ सेर; भुनीहुई हींग ८ तो०; सेंधानमक, वायविडंग; सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक ४-४ तो०, सोंचल (कालानमक) १६ तो०, अजवायन ४ तो० और सरसों १६ तो० लेकर, कूटने योग्य चीजों को कुटवा कर, सबको चिकने मटके में भरकर, (इसमें कोई २ लौंग ४ तोले और नवसादर ४ तोले मिलाते हैं) उसका मुख अच्छी तरह सन्धान कर; घुड़साल में (अथवा घोड़े की लीद में) दबा देवे। २१ दिन के बाद निकाल कर, छानकर, बोतलों में भरकर रख देवे। इसे ही 'जम्बीरद्राव' कहते हैं।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

गुण—यकृत (जिगर) के रोग, प्लीहा (तिल्ली), आमविकार, गुल्म, विद्रधि, अष्ठीला, विशेषतः वातगुल्म, शूल, अतिसार, पसली का दर्द, हृदय की पीड़ा, नाभिशूल, कब्ज, अफारा, अन्यान्य उदर विकार, तथा कोष्ठ सम्बन्धी वात और कफ के द्वारा उत्पन्न हुए रोगों को शीघ्र ही दूर कर देता है। हैजा, अरुचि, वमन तथा मंदाग्नि नाशक है।

---

२२९ जम्बीरासव नं० २—(जम्बीरद्राव)—गुल्मादि नाशक।

(कविराज प्रकाशचंद्र जी उज्जैन द्वारा—किसी पुरातन—हस्तलिखित ग्रन्थ से, प्रेषित)

विधि—कागज़ी नीबू ५०० का रस निकाल कर (मटकी में भर) उसमें गुड़ ५ सेर मिला आग पर चढ़ावे, (थोड़ा पक जाने पर) फिर नीचे उतार कर उसमें—जवाखार ८० टंक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सैंधानमक ३५ टंक, नौसादर, सज्जीखार प्रत्येक ३५ टंक, फटकरी, सौंचलनमक (कालानमक), समुद्रखार, रेहमिट्टी प्रत्येक १५ टंक, सब का महीन चूर्ण कर कपड़े में छानकर, मिला देवे। और पुनः आग पर चढ़ाकर उवाले, हिलाता जावे, रस थोड़ा रह जाने पर, उतारकर परीक्षा करले। उसमें कौड़ी यदि गल जाय तो शुद्ध अन्यथा अशुद्ध समझे। अशुद्ध हो तो पुनः नीबू का रस निचोड़े और पकावे। फिर कांच की शीशी में भर कर रख देवे। हमारे ख्याल से इसे आग पर न पकाकर वैसे ही सब द्रव्यों को मिला, मुख सन्धान कर १५ या २० दिन जमीन में गाढ़ कर रख देने से यह उत्तम जम्बीरासव तैयार हो जावेगा। —सम्पादक।

मात्रा—१ टंक (४ माशे)।

गुण—इसके २१ दिन तक सेवन करने से भूख बढ़ती है; शूल; गुल्म; तिल्ली; वातोदर; पित्तोदर; कफोदर; जलोदर; सन्निपातोदर; कष्ठोदर आदि संपूर्ण वातविकार दूर होते हैं। (अ० योगमाला)

---

२३० जम्बीरासव नं० ३—(जम्बीरीद्राव)—अफारा, अजीर्णादि नाशक।

विधि—जंबीरी (नीबू) का रस २॥ सेर, हींग भुनी हुई २ तो०; अजवायन; सोंठ घारकी, पीपल छोटी; कालीमिरच; प्रत्येक ५-५ तो०; सेंधानमक २५ तो०; वायविडंग; लोंग; सोराकलमी; छोटी हरड़ प्रत्येक ५-५ तो०; राई १० तोले; सब

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

को दरदरी कूट कर; जंवीरी नीबू के रस में डाल; एक शुद्ध मटके में भर; मुख मुद्राकर; १ महीने तक रक्खा रहने देवे। इसे एक तोले की मात्रा से भोजनोपरांत सेवन करने से दस्त साफ़ होता है; भूँख खुल कर लगती है; पेट का भारीपन; अफारा, अजीर्ण और पेट का दर्द दूर होता है।

(धन्वन्तरि–प्रयोगाङ्क)

---

२३१ जम्बीरासव नं° ४—(स्वकृत)—मन्दाग्नि नाशक।

विधि—अच्छे पके हुए बड़े काग़ज़ी नीबू का रस ४ सेर निकाल; एक शुद्ध चिकने मटके में भरे; और उसमें–सोंठ का चूर्ण; हरड़ का चूर्ण, सेंधानमक और कालानमक प्रत्येक एक–एक पाव और भुना हुआ सफेद जीरा १० तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खा रहने देवे। या जमीन में गाढ़ कर रक्खे तो बहुत ही उत्तम होगा। १५ दिन के बाद निकाल कर बोतलों में छान कर भर दे।

मात्रा—१ माशा से ६ माशे तक।

गुण—भोजन के बाद इसका सेवन करने से शीघ्र ही हज़म हो जाता है। दस्त साफ़ होता है। कुछ दिन के सेवन से मन्दाग्नि हमेशा के लिये बिदा हो जाती है।

---

२३२ जम्बीरासव नं° ५—यकृत, प्लीहादि नाशक।

(श्री० पं० लीलाधर जी शर्म्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—नीबू का रस दो सेर निकाल, शुद्ध चिकने घड़े में

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

भर, उसमें भुना हुआ चौकिया सुहागा ८ तोले, सेंधानमक ६ तोले; कालानमक ४ तोले, भुना हुआ जीरा २ तोले; सब को पीसकर मिलावे, तथा भुनी हींग ६ माशे (जिन्हें हींग प्रकृति अनुकूल न हो वे न डालें) मिलाकर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, १५ या २० दिन रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे। यह वर्षों नहीं बिगड़ता।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक। अनुपान-दुगुना जल मिलाकर सेवन करे।

गुण—यकृत; प्लीहा (तिल्ली) के विकार, बदहज़मी, शूल; अरुचि और अफ़ारा नाशक है।

जम्बीरासव नं० ६, ७ और ८—देखिये, निम्बुकासव नं० १, २ और ३।

२३३ जम्बीरारिष्ट नं० १—मन्दाग्नि नाशक।

(श्री० पं० लीलाधर जी शर्म्मा वैद्यशास्त्री)

विधि—नीबू का रस और अदरख का रस दोनों १-१ सेर लेकर; कलई के पात्र में, आग पर चढ़ा कर इतना पकावे कि रस १॥ सेर शेष रहे; पश्चात् शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें-कालानमक, सेंधानमक और कालीमिरच का महीन चूर्ण कर प्रत्येक १०-१० तोले, भुना हुआ सफेद जीरा और काला जीरा प्रत्येक २-२ तोले मिला (७ दिन तक मुख मुद्रा कर रक्खे) पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक।

गुण—जठराग्नि तीव्र होती है, बदहज़मी, वात के विकार, अरुचि आदि शीघ्र नष्ट होते हैं।

नोट—लेखक ने 'निम्बुकद्राव' लिखा था, नाम हमने बदल दिया है। —सम्पादक।

---

२३४ जम्बीरारिष्ट नं० २—जलोदरादि नाशक।

(श्री पं० हरिनारायणजी शर्म्मा, आयुर्वेदाचार्य)

विधि—५०० नीबू (अच्छे बड़े काग़ज़ी नीबू) का रस निकाल कर, ५ सेर पुराना गुड़ मिला, कलईदार कढ़ाई में रख, आग पर पकावे, थोड़ा रस जल जाने पर; उसे शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें जवाखार ८ तो०, सोंठ ३॥ तोले, सुहागा फुलाया हुआ २ तो०, नौसादर २ तो०, पठानीलोध २ तो०, नकछिकनी २ तो०, सिरस के बीजों का चूर्ण १ तोला; और चोये का तेल १ तोला मिला, पात्र का मुख बन्द कर, १५ दिन बाद, छानकर काम में लावे।

मात्रा—६ माशे से १ तो० तक।

गुण—जलोदर रोग २१ दिन के सेवन से दूर होता है। अग्निमांद्य शीघ्र दूर होता है। भगन्दर और अर्श पर भी लाभदायक है।

नोट—लेखक महोदय ने इस योग को (धन्वन्तरि-प्रयोगांक में) अवलेह रूप में बनाने को लिखा है। हमने अरिष्ट रूप में उपरोक्तानुसार बनाकर अनुभव किया पूर्ण लाभदायक है। —सम्पादक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२३५ जम्ब्वासव नं० १—(स्वकृत)—बहुमूत्र आदि पर ।

विधि—जामुन वृक्ष की छाल ५ सेर, बबूल (कीकड़) वृक्ष की छाल २॥ सेर और खैर की छाल २॥ सेर, सब को जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, उतार कर; एक शुद्ध चिकने घड़े में छानकर भर देवे। ठंडा होजाने पर उसमें शहद १० सेर, धायके फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, लोध; सोंठ, मिरच और पीपल प्रत्येक ४-४ तोले; चूर्ण कर मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—बहुमूत्ररोग, स्त्रियों का सोमरोग, प्रमेह और मधुमेह नाशक है।

---

२३६ जम्ब्वासव नं० २—मधुमेह पर ।

विधि–जामुन वृक्ष की छाल ऽ१। सेर, खैर की छाल आध सेर सेमल की छाल ५ तोले, आम्रवृक्ष की छाल आधसेर; बला छाल आध सेर, बेल की जड़ ५ तोले; त्रिफला १० तोले, आमले की गिरी ५ तोले, अडूसे के पत्ते ५ तोले, मरोड़फली ५ तोले, करंज की जड़ ५ तोले, बबूल की छाल ५ तोले, सब को कूट कर १ मन १६ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें पठानीलोध १ सेर, धायके फूल २० तोले, बबूल की फली के बीज, वायविडंग,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चिकनी सुपारी, अनार का बक्कल, महुआ प्रत्येक ४-४ तोले, तथा जामुन की गुठली, कालीमुसली, जायफल, लौंग, नागकेशर, और लाहौरी नमक प्रत्येक १-१ तोले, चूर्ण कर मिलावे, और शहद ८ सेर मिला, पात्र का मुख सन्धान कर, २० दिन तक जमीन में गाढ़ रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से २॥ तोले तक।

गुण—मधुमेह को शीघ्र दूर करता है।

(राकेश)

---

२३७ जम्बासव नं० ३—पाण्डु कामलादि रोगों पर।

(वैद्यराज मुन्नालालजी गुप्त, कानपुर)

विधि—जामुन के फलों (अथवा पत्र) का रस १० सेर, किसी शुद्ध अमृतवान या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, उस में २॥ सेर पुराना गुड़, २० तोले, लोहभस्म अथवा शुद्ध लोह चूर्ण १० तोले, मण्डूरभस्म, तथा सोंठ, मिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, चित्रक, वायविडंग, पीपलामूल, अजवायन, रुहेड़े (रोहितास) की छाल, नागरमोथा और धायके फूल प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले, तथा इन्द्रजौ, कुटकी और निसोथ का चूर्ण प्रत्येक २॥-२॥ तोले, मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, एक माह तक धूप या धान की राशि में दबा कर रक्खे। पश्चात् छानकर उपयोग में लावे।

मात्रा—१ तो० से दो तोले तक। प्रातः सायं भोजनोपरांत समभाग जल मिला कर सेवन करे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—पाण्डु, कामला, कफज व पित्तज ग्रहणी रोग, प्लीहा एवं यकृत की वृद्धि और अरुचि को दूर करता है। रक्त की वृद्धि करता है। बल, वर्ण तथा कान्ति को बढ़ाता है।

नोट—वैद्यराजजी ने इसका नाम 'फलेन्द्रासव' रक्खा है। राकेश (सिद्धयोगांक) में इसे प्रथम छपवाया, तथा फिर धन्वन्तरि में प्रकाशित कर हमें भी पत्र द्वारा सूचित किया है, उसमें हल्दी २॥ तोले तथा तज, पत्रज, छोटी इलायची, नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण १॥-१॥ तोला, ये द्रव्य और बढ़ाये हैं। और लिखा है कि जिन्हें आसवारिष्ट पीने से वमन होजाती है, उनके लिये इसका अर्क खींच कर देना चाहिये। यकृत तथा प्लीहा विकार ग्रस्त रोगियों को इसे प्रातःकाल ही (भोजन के पूर्व सेवन कराना हितकर है। रक्ताल्पता और संग्रहणी के रोगियों को कुछ खाना खा चुकने पर पिलाना चाहिये।

---

२३८ जम्बासव न०४—जलोदरादि पर।

विधि—जामुन के ताजे और पके हुए काले फल चुन कर, निचोड़ कर अर्क छानले पश्चात् मिट्टी के पात्र में भर दे। १५ दिन बाद पुनः छानकर बोतलों में भर लेवे, फिर निथर जाने पर ऊपर का लाल २ रस छानकर रख लेवे, नीचे की गन्दी गाद को फेंक दे। शुद्ध गंधक १ तोला को खूब महीन पीसकर तथा शोरा १ तोला और नवसादर १ तोला को भी पीसकर एक बोतल में भर देवे, पश्चात् उसमें उक्त जामुन का अर्क (सिरका) ५५ तोले मिलाकर, आध घंटे के बाद बोतल का मुख बन्द करके ४० दिन तक धूप में तपावे। फिर काम में लावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ माशा से ३ माशे तक। प्रातः सायं।

गुण—जलोदर (जालंधर), प्लीहा, और श्वास नाशक है। पथ्य में घी का विशेष सेवन करना चाहिये।

(प्रयोग साहस्त्री)

नोट—उक्त आसव अतिपाचक, अजीर्ण, शूल, अफारादि उदर रोगों को शीघ्र नष्ट करता है। —सम्पादक।

---

२३६ जम्ब्वासव नं० ९—हिस्टीरिया नाशक।

(कविराज भक्तराम जी वैद्यराज, लाहौर)

विधि—तीन सेर जम्बूफल (जामुन) को एक नवीन घड़े में डाल कर, उसमें एक मुट्ठी भर सैंधानमक डाल, पानी से भर कर (पानी ३ या ४ सेर मिलावे) ७ दिन तक धूप में रक्खे, इसके पश्चात् हिस्टीरिया (योषापस्मार) के रोगी को डेढ़पाव जामुन नित्य प्रातःकाल निहार मुँह खिलाकर, ऊपर से एक प्याली इसी जल की (उक्त आसव की) पिलावे। जिस दिन से इसका सेवन आरम्भ किया जावे, उसी दिन एक अन्य घड़े में उपर्युक्त विधि से जम्बु आदि डाल दे, ताकि पहिला घड़ा समाप्त होने तक दूसरा घड़ा सेवन के लिये तैयार हो जावे। दो सप्ताह के सेवन से एक देवी का १५ साल का हिस्टीरिया दूर हो गया था और उस देवी के स्वस्थ होने पर सन्तान भी हुई थी।

(अ० योगमाला)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२४० जम्बुपत्रासव—प्लीहादि नाशक ।

(वैद्यराज पं० शालिग्राम जी भड़ी)

विधि—जामुन के पत्तों का स्वरस १० सेर, घीकुआर का रस १० सेर; त्रिफला १ सेर; मंडूर बारीक पीसा हुआ २ सेर, पुराना गुड़ २ सेर, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक एक-एक तोला, कालानमक; सेंधानमक, शोरा, सुहागा, लोटासज्जी, प्रत्येक दो-दो तोले तथा सोंठ, अजवायन, वायविडंग, पोदीना, दारचीनी; मकोय और कालाजीरा प्रत्येक ३-३ तोले, लेकर सबको कूटकर; चिकने बर्तन में डाले । (गुड़ की चासनी जामुन के रस में बनाकर डालनी चाहिये) फिर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, उसे गोबर के ढेर में दबा देवें । शीतकाल में १५ दिन, और गर्मी में १० दिन बाद निकाल कर छान लेवे । और शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तो० तक । पथ्य-बेसन की रोटी, घी से खावे और दूध पीवे ।

गुण—प्लीहा के रोग, कब्ज, जिगर की खराबियाँ, मेदे के रोग, बलगमी सोजा, भूख का कम लगना, आदि सब नष्ट होते हैं ।

(राकेश)

---

२४१ जम्बुमज्जासव—मधुमेह पर ।

(कविराज पं० राजाराम जी शर्मा, मंगलौर)

विधि—जामुन की मींगी का चूर्ण १ पौंड (४० तोले)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लेकर, ४ पौंड जल में खूब खरल करे। ४ घंटे बाद उसमें १ पौंड और जल डालकर, कपड़े से छान ले, और एक पात्र में भर कर रख देवे, ४ घण्टे बाद पानी को नितार दे। नीचे जो चूर्ण सा जमेगा उसे खुश्क कर ले। फिर रेक्टिफाइड स्प्रिट १ पौंड में, उक्त चूर्ण डालकर, एक बोतल में भर, कार्क लगा दे। २१ दिन बाद इसमें १॥ पौंड स्प्रिट और ५ औंस (१२॥तो०) शहद मिला देवे। फिर कार्क लगा कर बन्द कर दे। ३० दिन के बाद छान कर काम में लावे।

मात्रा—१ ड्राम (६० बूँद) पानी के साथ दिन में ४ बार देवे। पथ्य में-जौ के आटे का लेह और हलका भोजन दे।

गुण—मधुमेह को नष्ट करने में बिजली के समान शक्ति रखता है, अनेक रोगियों पर परीक्षित है।

(धन्वन्तरि-मधुमेहाङ्क)

---

२४२ जम्ब्वरिष्ट—प्रमेह, मधुमेहादि नाशक।

(श्रीमान पं० वासुदेव जी शर्मा, वैद्यविशारद, अजितगढ़)

विधि—जामुन की हरी छाल, जामुन की हरी पत्ती, जामुन की गुठली, जामुन के फूल और जामुन के फलों का रस प्रत्येक एक-एक सेर, धाय के फूल ४० तोले, नागकेशर का चूर्ण २० तोले और शहद १० तोले लेकर, उक्त छाल, गुठली, पत्ते, फूलादि को ६४ सेर जल में पकावे। ८ सेर शेष रहने पर, ठंडा कर छान ले, फिर उसमें फलों का रस, धाय के फूल और शहद मिला, पात्र का मुख बन्द कर १ महीने तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर, नितार कर बोतलों में भरकर रख देवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यह जितना पुराना होगा, उतना ही उत्तम गुणकारी होगा।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। दूने जल में मिला प्रातः सायं सेवन करावे।

गुण—प्रमेह, मधुमेह, रक्तप्रदर, रक्तार्श, रक्तातिसार, मूत्रदाह, उदररोग, संग्रहणी और पित्तविकार को दूर करता है।

(धन्वन्तरि—सिद्धयोगाङ्क)

जहरमोदासव—देखिये, काकमाच्यासव।

ज्वरामृतासव—देखिये, 'शृङ्गिकासव' या वत्सनाभासव।

२४३ जातिफलासव—अतिसारादि नाशक।

विधि—जायफल के १ भाग चूर्ण में ५ गुना मद्यसार (६० प्रतिशत वाला) मिला, बोतल में, अच्छी तरह कार्क लगाकर रक्खे। ७ दिन के बाद, उसे खूब निचोड़ते हुए छान कर, शीशियों में भर कर रख दे।

अथवा—जायफल के शुद्ध तैल १ भाग में १० गुना मद्यसार (६० प्रतिशत वाला) मिला, बोतल में भरकर रख दे। और ७ अथवा १५ दिन बाद काम में लावे।

मात्रा—चूर्णासव की ३० से ६० बूँद तक और जातिफल तैलासव की १० से ३० बूँद तक है।

गुण—स्थानिक तथा सर्वाङ्ग उत्तेजक, आमाशय तथा ग्रहणी-आशय के लिये दीपक तथा कुछ ग्राही है। स्थानिक तथा सर्वाङ्ग वातशूल हर है। अतिसार, वमन, विशूचिका पर लाभप्रद है। ('वैद्य'-मासिकपत्र, मुरादाबाद)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जामुनआसव—देखिये, जम्व्यासव ।

जाळपासव—देखिये, जुलाफासव ।

जासवन्दासव—देखिये, जपाकुसुमासव ।

२४४ जीरकासव नं० १—(स्वकृत)—रक्तपित्त, ज्वरादि पर ।

विधि—काले जीरे के १ भाग चूर्ण में ५ गुना मद्यसार (६० प्रतिशत वाला) मिला, बोतल में भर अच्छी तरह कार्क बन्द कर रक्खे । ७ या १४ दिन बाद मोमियाई मोटे कपड़े से, खूब निचोड़ कर और छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१५ से ६० बून्द तक ।

गुण—विषमज्वर, जीर्णज्वर, मन्दाग्नि तथा वातजन्य सम्पूर्ण उपद्रव नष्ट होते हैं । रक्तपित्त पर इसे शक्कर के शर्वत के साथ देने से शीघ्र लाभ होता है ।

---

२४५ जीरकासव नं० २—(स्वकृत) जीर्णज्वरादि नाशक ।

विधि—काले जीरे का मोटा चूर्ण ५ सेर लेकर उसमें १३ सेर औटाया हुआ जल मिला, शुद्ध चिकने घड़े में भर कर, उस में गुड़ ७ सेर, धायके फूल १३ छटाँक, तथा पित्तपापड़ा, गिलोय (गुडूची) श्वेतजीरा और काली मुनक्का (बीज निकाली हुई) प्रत्येक ५–५ तोले कूटकर मिला देवे । पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे । २१ दिन बाद छानकर काम में लावे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक ।

गुण—उपर्युक्त नं० १ के अनुसार ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२४६ जीरकाद्यासव नं० ३--प्लीहा, यकृतादि विकारे ।

(कविराज शम्भुदत्तशर्मा कौशिक, भिवारि)

विधि—सफेदजीरा, कालाजीरा, सोंठ, कालीमिरच, पीपल और सैंधानमक प्रत्येक ४-४ तोले बारीक कूट पीसकर, ३॥ सेर पानी में मिट्टी के पात्र में भिगो देवे। पश्चात् उसमें १ तोला गन्धक का तेजाब डाल देवे। एक घन्टे के बाद उसमें १० तोले बूरा डालकर छान लेवे, और उसमें नीबू का अर्क (रस) १० तोले मिला देवे। फिर ६ बोतलें (जिनमें ३-३ पाव जल आजावे) लेवे। प्रत्येक बोतल में ६ माशे सोड़ाखार डालकर, तत्काल ही उक्त औषधियों के सिद्ध किये हुये जल को भरकर कार्क लगा कर रख देवे। ७ दिन के पश्चात् इसे काम में लावे

मात्रा—प्रतिदिन २॥ तोले।

गुण—प्लीहा, यकृतादि तथा सब प्रकार के उदरविकार दूर होते हैं। अत्यन्त पाचक है।

('वैद्य'—मुरादाबाद)

---

२४७ जीरकाद्यरिष्ट * नं० १--प्रसूति रोगादि पर।

---

* जीरकस्य तुलाद्वन्द्वं चतुर्द्रोणे जले पचेत्। द्रोणशेषे क्षिपेत्तत्र तुलात्रयमितं गुडम् ॥ धातकीं षोडशपलां शुण्ठीञ्च द्विपलोन्मिताम् । जातीफलं मुस्तकं च चातुर्जातं यमानिकाम् ॥ कंकोलं देवपुष्पं च पलमानेन निक्षिपेत्। मासं संस्थापयेद्भाण्डे मृत्तिकापरिनिर्मिते ॥ ततः कल्कान् विनिर्हत्य पाययेत् कर्ष मात्रया। अरिष्टो जीरकाद्योऽयं निहन्यात् सूतिकामयान् ॥ ग्रहणीमतिसारञ्च तथा वन्हेश्च वैकृतिम् ।

—भैषज्यरत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—१० सेर जीरे को कूटकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, छानकर, मिट्टी के स्वच्छ एवं घृत से चिकने किये हुये पात्र में भर कर, उसमें गुड़ १५ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, सोंठ का चूर्ण ८ तोले तथा जायफल, नागरमोथा, दारचीनी, तेजपात, नागकेशर, इलायची, अजवायन, कङ्कोल और लोंग प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिला देवे। पात्र के मुख को शराव से ढककर उस पर कपड़ मिट्टी करके रख देवे। १ मास बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला अथवा १। तोला।

गुण—सूतिका रोग, संग्रहणी, अतिसार और जठराग्नि के विकारों को नष्ट करता है।

नोट—उक्त अरिष्ट में यदि लोध ४ तोले प्रक्षेप कर दिया जाय तो प्रसूतरोगों पर विशेष प्रभावशाली होजाता है।

—सम्पादक।

---

२४८ जीरकाद्यरिष्ट नं०२—अजीर्ण, अग्निमांद्यादि नाशक।

(कविराज पं० गौरीशंकरजी आनन्द, हरिपुर)

विधि—कालाजीरा १५ सेर, सौंफ ५ सेर, दोनों को जवकुट कर, १६० सेर जल में मिला क्वाथ करे, चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें गुड़ २४ सेर घोल दे, धायके फूलों का चूर्ण १२८ तोले, सोंठ १६ तोले तथा जायफल, नागरमोथा, दारचीनी, तेजपत्र, छोटी इलायची, नागकेशर, अजवायन, लौंग, शीतलचीनी, प्रत्येक ८-८ तोले,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पिप्पली, कालीमिरच, पीपलामूल, पोदीना, और अकरकरा प्रत्येक ४-४ तोले सब का महीन चूर्ण कर मिलावे । पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक रक्खे पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक । अनुपान-अर्क सौंफ मिला कर सेवन करे ।

गुण—अजीर्ण, अग्निमांद्य, प्रसूतज्वर, मक्कलशूल, विशूचिका (हैजा) और उदरशूल में लाभकारी है ।

(अ० चि० संग्रह)

---

२४६ जुलाफासव—(स्वकृत)-उत्तम रेचक ।

विधि—जुलाफा (बड़ी हरड़ जैसा यूनानी द्रव्य) का मोटा चूर्ण ८ तोले और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले एकत्र मिला, बोतल में भर, कार्क से अच्छी तरह मुख बन्द कर, ७ दिन तक रक्खे । पश्चात् फिल्टर से या मोटे गाढ़े कपड़े से छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक ।

गुण—निर्मल रेचक है, मलावरोध, जलोदर, अजीर्ण, प्लीहोदरादि नाशक है ।

ज्योतिष्मत्यासव—देखिये, मालकांगुन्यासव ।

२५० ज्वरनाशकासव—ज्वर पर उत्तम प्रभावशाली ।

(वैद्यराज मोहनलाल जी आयुर्वेदविशारद, हरसोर)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—चिरायता १ सेर, गिलोय १० तो०, पित्तपापड़ा १० तो० और कुटकी ५ तो० जवकुट कर, १० सेर जल में २४ घंटे भिगो रक्खे। पश्चात् कढ़ाई में डाल आग पर चढ़ावें। आधा जल शेष रहने पर; उसे दूसरे कलईदार पात्र में गाढ़े कपड़े से छान कर रखे, फिर २४ घंटे बाद ऊपर का जल दूसरे पात्र में निथार कर, उसमें २॥ तोले क्विनाइन मिलाकर और हिलाकर फिर आगपर चढ़ावे। लगभग ३॥। सेर जल शेष रहने पर, उतार कर ठंडा कर लेवे। फिर इस जलमें गुलाबकी कली या पुष्पोंकी पखुरी (सूखी १० तो०, गीली हो तो २० तो०) डालकर; भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे। बिल्कुल साफ़ बोतलों में इस आसवार्क को भर कर रख दे।

मात्रा—अवस्थानुसार १ से २ तोले तक।

गुण—सब प्रकार के ज्वरों को, विशेषतः मलेरिया को शीघ्र ही भगाता है।

ज्वरवज्रारिष्ट—देखिये, निम्बकारिष्ट नं० २।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

झ

झिण्टिकासव—देखिये, कटसारिकासव।

२५१ झेन्डुकासव—अर्श, प्रमेहादि नाशक।

विधि—गेंदे के फूलों का रस १ सेर (रस निकालने के लिये 'हजारा गेंदा' लेना चाहिये, छोटा गेंदा नहीं लेवे) और उसी के पत्तों का रस २ सेर लेकर (फूलों को पीसकर, जल मिला कर निचोड़ना चाहिये और छान कर रस निकालना चाहिये); इस प्रकार ३ सेर रस एक बोतल में भर, उसमें शहद ५ सेर, मद्य (४५ प्रतिशत वाला) १० सेर और कालीमिरच का चूर्ण ८ तोले मिला, कार्क अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १५ दिन के बाद मोटे वस्त्र से छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१॥ मासे से १ तोला तक।

गुण—रक्तार्श; स्वप्नदोष, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, धातुरोग, प्रदर नाशक है। स्तम्भन शक्ति को बढ़ाता है।

(एक पुरानी हस्तलिखित पुस्तक से)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ट

२५२ टङ्कणासव—दन्तपीड़ा आदि पर।

विधि—सुहागा २ तोले, जल १२ छटाँक; ग्लीसरीन २ तो०; और संजीवनीसुरा में मिलाई हुई अफीम (अथवा अहिफेनासव) ३० बूँद सब को एकत्र मिला; एक शुद्ध बोतल में भरकर रख दे।

मात्रा—१ बूँद से १५ बूँद तक।

गुण—दाँतों की पीड़ा पर; या मुख के अन्दर दर्द हो तो फुरेरी से लगावे। दर्द गुर्दे पर १ तोला जल में चन्द बूँदे मिला पिलावे तथा ऊपर से लगावे।

('वैद्य'—मासिकपत्र)

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

२५३ टङ्कणाद्यासव—बालरोग हारी।

(श्री० पं० विश्वनाथ जी द्विवेदी, वैद्यशास्त्री, प्रिंसपिल ललितहरि कालेज, पीलीभीत)

विधि—सुहागा; सौंफ, बड़ी हरड़; सनाय, मुनक्का; हल्दी; पलाश पापड़ा, अमलतास; इन्द्रायन की जड़; सेंधानमक, कालानमक, वायविडंग, कबीला; कुटकी, गुलबनफसा, गुलाब के फूल, सफेदजीरा; अजवायन, सोंठ और देवदारु प्रत्येक का महीन चूर्ण ५-५ तोले और जल ७। सेर लेकर सब को शुद्ध धायपुष्प, अगर आदि से लेपित घड़े में भरकर, उसमें–२॥ सेर शहद, २० तोले धाय के फूल और ५ सेर नये गुड़ को मिला, घड़े का मुख सन्धान कर २५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् इसे निकाल कर, हाथ से अच्छी तरह मसल कर फलालेन के दुहरे कपड़े से छान कर, डाटदार बोतलों में भरकर रख दे। इसे भवके के द्वारा खींच कर भी रख सकते हैं।

मात्रा—अवस्थानुकूल चाय के चम्मच के आधे से १॥ चम्मच तक। अर्क खींचे हुए की मात्रा २ बूँद, अधिक से अधिक ३० बूँद तक।

गुण—बालकों के प्रत्येक रोग पर कल्याणप्रद है। ज्वर, कास; अजीर्ण, अग्निमांद्य, विबन्ध तथा उदर के सम्पूर्ण रोगों पर यह रामबाण है। बालशूल, उदराध्मान में यह जादू की तरह कार्य करता है। शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिये नित्य इसका उपयोग बालकों के पक्ष में हितकर है। प्रथम इसका प्रयोग करने पर एक दस्त खुलकर आता है, अधोवायु शुद्ध होते ही उदर के रोग शीघ्र दूर हो जाते हैं, उसके बाद दूसरे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बार के उपयोग से क्षुधा तीव्र होती है। इस आसव का उपयोग नवजात शिशु तक के लिये हितकर होता है। नवजात शिशु को यदि गर्भमल त्याग न हो तो चाय के छोटे चम्मच भर इसे पिलाते ही शीघ्रता के साथ मल त्याग हो जाता है। छोटे बच्चों को इसका खींचा हुआ अर्क विशेष लाभदायक है। दूध फेंकना, अपचन, उदरशूल, नाभिशूल इत्यादि सब रोग दूर हो जाते हैं। लगातार सेवन से शक्तिवर्धक है, कोई रोग नहीं होने देता।

पथ्य में-दूध पीने वाले शिशु को सिर्फ दूध, और बड़े बच्चे को लघु भोजन देवे। यदि शीघ्र लाभ न दीखे तो-बच्चे की माता को १ तोला से ३ तो० तक इसका सेवन करावे; शीघ्र लाभ होगा।

अपथ्य—शहद, कच्चे अनार, केले, घृत-पक्व अन्न, कुनैन, अफीम व कुचले के योग से बने हुये प्रयोग न देवे। अपथ्य सेवन से भ्रम, अतीसार, उदरशूलादि उपद्रव होने लगते हैं। परिहारार्थ-आसव का सेवन बंद कराकर, बीहदाना और सौंफ का अर्क या पोदीने का अर्क, अथवा उक्त आसव का ही खींचा हुआ अर्क देने से उपद्रवों की शान्ति होजाती है।

---

२५४ टुण्टुकासव—(स्वकृत)-रक्तातिसार नाशक।

विधि—टेन्टू (अरलू,-श्योनाक) की जड़ की छाल ताजी ५ सेर लेकर, जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे। ६॥ सेर जल शेष रहने पर छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें मिश्री,

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

५ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण ६० तोले, शहद ३ सेर और सौंफ का चूर्ण ३० तोले मिला, १ मास तक सन्धान कर रक्खे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—रक्तातिसार, रक्तप्रवाहिका और रक्तप्रदर को नष्ट करता है। गरमी को शीघ्र शांत करता है।

टेण्टूमूलासव—देखिये, टुण्टुकासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

त

२५५ तक्रासव नं० १—(स्वकृत)-पाण्डुरोगनाशक।

विधि—दो सेर तक्र (छाछ) को किसी शुद्ध घृत से चिकने किये हुये मटके में भर, उसमें शुद्ध लोहे का बुरादा १३ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पात्र को रोज एक बार हिलाते रहना चाहिये। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१॥ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—पाण्डुरोग को १५ दिन के अन्दर दूर करता है। रक्त को शुद्ध करता है।

---

२५६ तक्रासव नं० २—आमवातहर।

(स्वर्गीय वैद्यराज रावत उमरावसिंह जी)

विधि—गाय की छाछ ५ सेर, लोहचूर्ण २० तोले दोनों को एकत्र, एक शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें लहसुन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४ तोले, तथा हरड़, बहेड़ा, आंवला, कलौंजी और बायविडंग प्रत्येक का महीन चूर्ण २-२ तोले, तथा सेंधव, सोंचर, सांभर नमक और जवाखार प्रत्येक १-१ तोला कालीमिरच, पीपल और अजवायन प्रत्येक का चूर्ण ३-३ माशे अच्छी तरह मिला, पात्र का मुख बन्द कर कूड़े कचरे के ढेर में गाढ़ कर रक्खे। १० दिन बाद निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ से ५ तोले तक।

गुण—आमवात को शीघ्र ही भगाता है। पथ्य में गेंहू की रोटी, घी, मूंग की दाल, अदरख, पोदीने की चटनी दे। ७ से १४ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

---

२५७ तक्रारिष्ट * नं० १—अग्निदीपक, अर्शादि नाशक।

विधि—हाऊबेर, कालाजीरा, धनिया, सफेदजीरा, कलौंजी, कचूर, पीपल, पीपलामूल, चीते की जड़, गजपीपल, अजवायन और अजमोद प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले लेकर ५ सेर तक्र (मट्ठा) में मिलाकर, घृत के चिकने बरतन में भरकर; मुख बन्द करके रख देवे। ७ दिन के पश्चात् जब स्वाद में अम्ल और चरपरा होजाय तब जानना चाहिये कि अरिष्ट सिद्ध सेवनीय

---

* हपुषा सुपवी धान्यमजाजी कारवी शटी। पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रको गजपिप्पली॥ यवानी चाजमोदा च तच्चूर्णं तक्रसंयुतम्। मन्दाम्लकटुकं विद्वान् स्थापयेद्‌ घृतभाजने॥ व्यक्ताम्लकटुकं जातं तक्रारिष्टं सुखप्रियम्। पाययेन्मात्रया कालेऽन्नस्य तृषितं त्रिषु॥ दीपनो रोचनो वल्यः कफवातानुलोमनः। गुदश्वयथुकण्डार्तिनाशनो बलवर्धनः॥

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

होगया है। तब उसे छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—३ तोले से ४ तोले तक। दिन में ३ बार तथा भोजन के समय जब २ प्यास लगे तब इसे मात्रानुसार क्रम से भोजन के आदि, मध्य और अन्त में पिलावे।

गुण—अत्यन्त स्वादु, अग्निदीपक, रोचक (रुचि को बढ़ाने वाला), बलकारक, कफनाशक, वात को अनुलोमन करने वाला, बवासीर, सूजन एवं कण्ठ रोगनाशक, तथा गुदा की सूजन, खुजली, कोचन (कतरने जैसी पीड़ा) शामक है। जीभ पीत वर्णयुक्त मैल से भरी हुई, क्षुधामांद्य, पेट में अफारा, मल का रंग सफेद, सड़ी दुर्गन्ध युक्त डकार आती हो, ऐसे रोगी को तक्रारिष्ट अमृततुल्य है। १० से २१ दिन तक इसका सेवन क्रम पूर्वक करावे, जल के स्थान में रोगी को इसे ही पिलाना चाहिये।

नोट—इस अरिष्ट के बनाने में जिस तक्र की योजना की जावे, वह बहुत खट्टा नहीं होना चाहिए। दही में चतुर्थांश भाग जल मिला, बगैर घी निकाले जो घोल तैयार किया जाता है वही तक्र है। —सम्पादक।

---

२५८ तक्रारिष्ट * नं० २—गुल्म, शोथादि नाशक।

---

* यमान्यमलकं पथ्या मरिचं त्रिपलांशिकम्। लवणानि पलांशानि पंच चैकत्र चूर्णयेत्॥ तक्रकं संयुतं जातं तक्रारिष्टं पिवेन्नरः। दीपनं शोथ गुल्मार्श क्रिमिमेहोदरापहम्॥

—चरक।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

विधि—६॥ सेर तक्र (मट्ठा) में–अजवायन, आमला, हरड़ और कालीमिरच का चूर्ण प्रत्येक १२–१२ तोले, तथा सेंधा-नमक, कालानमक, बिड् (खारी) नमक, सामुद्रनमक और रेहनमक प्रत्येक ४–४ तोले चूर्ण करके, सब को घृत से चिकने किये हुये मटके में मिलाकर, भर देवे और उसका मुख अच्छी तरह बन्दकर रख देवे। ७ दिन के पश्चात् निकालकर छान ले।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—अग्निदीपक है तथा शोथ, गुल्म (गोला), बवासीर, किरम रोग, प्रमेह और उदर के कई रोगों को नष्ट करता है।

---

२८९ तण्डुलियासव—(स्वकृत)—रक्तातिसार नाशक।

विधि—चौलाई की १ सेर जड़ को जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे। ६ सेर शेष रहने पर; छानकर शुद्ध मटकी में भरे, उसमें—१ सेर धाय के फूलों का चूर्ण, ३ सेर शक्कर और २ सेर शहद मिला; पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—अतिसार, विशेषतः रक्तातिसार को शीघ्र ही दूर करता है।

तरबूजआसव—देखिये, कालिन्दासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२६० तरुण्यासव—हृद्रोग नाशक।

(श्री० वैद्यराज पं० टीकादत्त जी त्रिवेदी, मुरादाबाद)

विधि—सेवती के फूल १। सेर लेकर, किसी शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें १० सेर पानी डाल देवे (पानी को पका कर डालना ठीक होगा), फिर उसमें—मुनक्का १। सेर, मिश्री ३ सेर, शहद १ सेर, सेव १ पाव, किसमिस १ पाव, बादाम आध पाव और कस्तूरी १ माशा तथा गावजवाँ के फूल, सफेदइलायची, जाफ़रान; गिलोय, गोखरू, दारचीनी, बहमन सफेद, बहमन लाल, सफेद चन्दन; धनिया, आमले, कहरवा प्रत्येक ३-३ तोले चूर्ण कर मिलावे। यथाविधि सन्धान कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक।

गुण—हृदय रोग में बहुत लाभ कारक है, दस्त साफ़ आता है, भूँख बढ़ती है, बल वीर्य की वृद्धि होती है। इसे सेवन्त्यासव भी कहते हैं।

---

२६१ ताड़्यासव नं० १—शक्तिवर्धक, संग्रहण्यादि नाशक।

विधि—ताड़ी (जिसे 'सिन्धी' कहते हैं, खजूर के पेड़ जैसे ही इसके पेड़ और पत्ते आदि होते हैं, इसके मद को ही ताड़ी *

---

* सिन्धी की ताड़ी की अपेक्षा ताड़ वृक्ष की ताड़ी उत्तम होती है। इस आसव कार्य के लिये ताड़ की ही ताड़ी लेनी चाहिये।

—सम्पादक।

Digitization by American Academy of Indic Studies AAIS (USA)

कहते हैं) ५ सेर लेकर; एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-मिश्री ३ सेर और शहद १० सेर तथा धाय के फूल १ सेर मिला, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे।

मात्रा—१ तोला।

गुण—शक्तिवर्धक, संग्रहणी एवं संग्रहणीजन्य पाण्डुरोग, आनाह (अफ़ारा) और अग्निमांद्य नाशक है। क्षुधाको बढ़ाता है, शरीर में जोश तथा मन को प्रसन्न करता है।

(एक प्राचीन पुस्तक से)

---

२६२ ताड़्यासव नं० २—(स्वकृत) विषूचिका नाशक।

विधि—ताड़ी १ सेर; उत्तम देशी कपूर १ पाव और नागर-मोथे का चूर्ण ४ तोले, एकत्र मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, दृढ़ता से मुख मुद्रा कर, १ मास तक जमीन में गाढ़कर रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१० से १५ बूँद तक, शक्कर या बतासे में टपका कर, प्रति १५-१५ मिनट के बाद सेवन करावे।

गुण—हैजे पर अपूर्व लाभदायक है। साधारण दस्तों पर और अतिसार पर भी यह गुणदायक है।

---

२६३ ताम्बूलासव * नं० १—अर्श, कफरोगादि नाशक।

---

* जतुलिप्तं ननु कृत्वा भाण्डकमर्धं प्रवेशितं भूमौ। तत्तरुणहरित-जम्बूपत्रक्वाथेन संशुद्धम्॥ शुद्धे च शर्कराभिरगुरुं दद्यात्सुगन्धतरम्। वासार्थं धातक्याः पलानि खलु सप्त देयानि॥ पूगी फलानि खदिरं

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—प्रथम शुद्ध मटके को लेकर, उसे जामुन के नवीन हरे पत्तों के काढ़े से अच्छी तरह धोकर साफ़ करे, फिर उसके भीतर लाख का लेप कर, सूख जाने पर, खांड और अगर की धूनी देकर जमीन में गाढ़ देवे। आधा मटका ज़मीन के भीतर और आधा ऊपर रहना चाहिये। फिर उस मटके में-१५०० पान (ताम्बूल) कूट पीसकर डाले तथा धाय के फूल २८ तोले, सुपारी; खैरसार कूटकर प्रत्येक आध २ सेर, शहद ५ सेर, जल ७॥ सेर, कंकोल और पीपल का चूर्ण ८-८ तोले, एवं हरड़, बहेड़ा, आमला, जायफल, बड़ी इलायची और लोंग के फूलों का चूर्ण प्रत्येक ४—४ तोले मिलाकर, सब को तीन दिन तक; मटके में ही हाथों से विलोडन करता (मलता) रहे। जब सब द्रव्य एक रस हो जाय और उसमें सूँ सूँ शब्द होने लगे, तब १५ सेर गुड़ को, १३ सेर जल में मिला, आग पर

दशपळकानि दापयेत्तत्र। ताम्बूलीपत्रशतैर्दशभिः क्षुण्णैश्च पंचभिश्चान्यैः॥ पलशतमेकं मधुनः शतं च सार्धं तु वारिणो देयम्। कंकोलक कृष्णानां प्रत्येकं द्वे पले च स्युः॥ त्रिफला जातीफलैला लवङ्ग कुसुमानि चैक-पलिकानि। दत्वावलोड्यमेतत्त्रीणि दिनानि पाणिना पात्रे॥ समन्त्वेयदा सशब्दस्ततो गुडशत पळानि त्रीणि। देयानि प्रविलीनमग्नियोगात्तं तु जलद्रोण संयुक्तम्॥ पक्षद्वयेन पेयो रसनाक्षिमनोहरः सुरभिगन्धः। ताम्बूलासव एष रसायनानां भवेदग्र्यः॥ प्रीणयन्ति हन्ति गुदजान् सर्वांश्च कफोद्भवाँस्तथा रोगान्। बलवर्ण शुक्र जननो ह्युपयोगादश्मरीं हन्यात्॥ संवत्सरमुपयुक्तः स्थिरवयसं मानवं कुरुते।

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गरम कर, अच्छी तरह घोलकर, उस मटके में डाल देवे और मुख बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे। इसका रङ्ग, सुगन्ध और स्वाद अत्यन्त उत्तम होगा।

मात्रा—१ तोला।

गुण—बवासीर, सब प्रकार के कफ के रोग और पथरी, नाशक है, बलवर्धक, कान्तिकारक और वीर्योत्पादक है। एक वर्ष पर्यन्त, नियमपूर्वक इसका सेवन करने से आयुष्य की वृद्धि होकर, शरीर सदा स्वस्थ रहता है। यह अत्युत्तम रसायन है।

---

२६४ ताम्बूलासव-नं० २—(स्वकृत) कफ विकारादि नाशक।

विधि—ताम्बूल (नागरवेल पान) का रस १ सेर निकाल कर, कांच की शीशी या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें—शहद २॥ सेर, शुद्ध खांड १ सेर, मद्यार्क (८५ प्रतिशत वाला) आध सेर तथा सोंठ, अतीस, अकरकरा, दारचीनी, नागकेशर और तुलसी की मंजरी प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। १५ दिन के बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ माशा से १ तोला तक।

गुण—कफ की खाँसी वगैरह कफ के विकारों को शीघ्र दूर करता है। सन्निपात की अन्तिम अवस्था में उत्तम कार्य करता है। अग्निप्रदीपक, कामोद्दीपक, बलकारक तथा ज्वर नाशक भी है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२६९ तिन्तिड़ीकासव—(स्वकृत) दाह, पिपासादि नाशक ।

विधि—पकी हुई इमली के गूदे को जल में भिगो कर रख देवे, ४-५ घंटे के बाद मलकर, मोटे वस्त्र से छानकर लगभग ५ सेर रस निकाले। आग पर जोश देकर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-गुड़ २॥ सेर, धाय के फूल १ सेर, लौंग, छोटी इलायची, नागरमोथा और खस ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे। अच्छी तरह सन्धान कर, २१ दिन बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—दाह, प्यास और कोष्ठबद्धता नाशक है। स्वादिष्ट, रुचिकारक तथा छाती में जमे हुए कफ को निकाल बाहर करता है।

---

२३६ तुलस्यासव—नं० १—इन्फ्ल्युएन्जा नाशक।

विधि—तुलसी के पत्ते और बीजों का चूर्ण २॥ औंस (६। तोले), और शुद्ध मद्य १ पाइन्ट (१। पौंड) दोनों को एकत्र मिला, एक सप्ताह तक कांच की बोतल में भर कर रक्खे। फिर मोटे वस्त्र में निचोड़ते हुए छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१० बूँद से ६० बूँद तक।

गुण—इन्फ्ल्यूएन्जा के उपद्रवों को शीघ्र नष्ट करता है। अग्निवर्द्धक, वात कफ नाशक है। खाँसी, कृमि विकार, जीर्ण-ज्वर, पार्श्ववेदना, और अपस्मारादि पर लाभदायक है।

('वैद्य'–मुरादाबाद)

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

२६७ तुलस्यासव—नं० २—सूतिका शूळे।

विधि—तुलसी के पत्तों का स्वरस २॥ सेर लेकर, शुद्ध चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें-पुराना गुड़ १ सेर, मद्य ४० तोले और खांड १ सेर मिला, १५ दिन सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ माशा से १ तोला तक।

गुण—प्रसवकाल के समय स्त्री को जो अत्यन्त तीव्र वेदना होती है, वह इसको पिलाने से शीघ्र ही शमन हो जाती है।

(एक प्राचीन पुस्तक से)

---

२६८ तुलस्यासव—नं० ३—कास नाशक।

विधि—तुलसी के पत्तोंका स्वरस ४ ड्राम (लगभग १तो०), उत्तम शहद १ औंस (२॥ तोले), आदी (अद्रक) का रस दो ड्राम (७॥ माशे) और अजवायन का चूर्ण दो ड्राम, सब को एकत्र कर बोतल में अच्छी तरह कार्क लगा १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—बालकों की खांसी शीघ्र ही दूर होती है।

(वनौषधि)

---

२६९ तुलस्यासव—नं०४—जीर्णज्वर एवं कास नाशक।

विधि—तुलसी के पत्ते १ सेर, सोंठ, कालीमिरच और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छोटी पीपल प्रत्येक १-१ पाव और अजवायन आधपाव लेकर, सब को कूट कर १० सेर जल में भिगो रक्खे। दो दिन बाद भवके के द्वारा अर्क खींच कर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। अनुपान-सैंधव लवणयुक्त उष्णजल। इस जल में थोड़ा सा हरड़ का महीन चूर्ण मिला लेने से शीघ्र लाभ करता है।

गुण—जीर्णज्वर और खाँसी को तत्काल दूर करता है।

(एक प्राचीन पुस्तक से)

---

२७० तूतासव—(स्वकृत)—रक्त विकार नाशक।

विधि—सहतूत का रस ५० तोले, मिश्री १ सेर १० तोले और रेक्टिफाइड स्प्रिट ८ तोले लेकर, प्रथम रस और शक्कर (मिश्री) एकत्र मिला, कांच के पात्र में, मुख बन्द कर रक्खे। इस पात्र को धूप में या किसी उष्ण स्थान में रखना चाहिये। २४ घंटे के बाद उसे खोल कर, उसके ऊपर मलाई जैसा भाग जम आया हो उसे निकाल देवे और दूसरे कांच के पात्र में धीरे से नितार लेवे, जिसमें नीचे की तलछट या मलभाग न आने पावे। पश्चात् उसमें स्प्रिट मिला, पुनः मुख बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे और फिर काम में लावे।

मात्रा—आवश्यकतानुसार १ तोला से ५ तोले तक।

गुण—यह शीत गुण युक्त है, पित्तज्वर में अच्छा काम देता है। रक्त की उष्णता को शमन करता है। किंचित् मल-रोधक है, किंतु वात और पित्त के प्रकोप को शांत करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२७१ * त्वक्पत्रासव—अतिसारादि नाशक ।

विधि—दारचीनी का चूर्ण १ भाग और मद्य (७० से ६० प्रतिशत वाला) ५ भाग, एकत्र मिला, बोतल में भर मज़बूत कार्क लगा कर रख दे । ७ दिन के बाद, अच्छी तरह मसलते हुये छानकर शीशियों में भर ले ।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक ।

गुण—अतिसार, आमातिसार, अग्निमांद्य और अजीर्णादि उदर रोगों पर लाभदायक है । अन्य औषधियों को सुगन्धित तथा सुस्वादु करने के लिये भी इसका व्यवहार होता है ।

(मद्यासव)

नोट— दारचीनी का मोटा चूर्ण ७ तोले और रेक्टिफाइड स्प्रिट ५० तोले मिला, उक्त विधि से निर्माण करे । यह भी उक्त प्रकार से लाभदायक होता है । मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक । उत्तेजक, वातहर, पाचक और स्तम्भक है । —सम्पादक ।

---

२७२ त्रायमाणासव +—कास श्वासादि नाशक ।

+ त्रायन्ती कट्फलं दन्ती पौष्करं कंटकारिका । दुरालभाञ्जनं सिंही पिप्पलीमूलमेव च ॥ धात्री कृमिहरं भार्ङ्गी माचिका चैलवालुकम् । पथ्या शटी विशालाच भागानष्टपलोन्मितान् ॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा श्रृतं द्रोणावशेषितम् । शतत्रयं माक्षिकस्य धातक्या पलविंशतिम् ॥ श्यामापलानि चत्वारि त्वगेला पत्र केशरम् । भागान्द्विपलिकानेषां चूर्णं कृत्वा विनिक्षिपेत् ॥ त्राय माणासवो ह्येष कासश्वासामय प्रणुत् । पाण्डु हृद्रोग गुल्मार्शः सन्निपात ज्वरापहः ॥

—गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—त्रायमाणा (नीचे नोट देखें), कायफल, दन्ती, पोहकरमूल, कटेरी (छोटी भटकटैया), धमासा, रसौत (रसांजन), बड़ी कटेरी, पीपलामूल, आमला, बायविडंग, भारंगी, मकोय, एलुआ, हरड़, कचूर और इन्द्रायन ये प्रत्येक ३२-३२ तोले लेकर कूटकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और ठंडा हो जाने पर उसमें—शहद १५ सेर, धाय के फूल १ सेर, छोटी पीपल १६ तोले तथा बड़ी इलायची, दारचीनी, तेजपात और नागकेशर प्रत्येक ८-८ तोले चूर्णकर मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। समान भाग जल मिला कर सेवन करे।

गुण—खांसी, दमा, पाण्डुरोग, हृदय के रोग, गुल्म, बवासीर और सन्निपात ज्वर नाशक है।

नोट—त्रायमाण के विषय में अभी ठीक निर्णय नहीं हुआ है। कई विद्वान वैद्यगण बनपसे को ही त्रायमाण मानते हैं और कई गुजरात वाली बूटी (जो पारस की ओर खुरासान के पहाड़ों पर होती है; इसका क्षुप ६-७ अंगुल ऊँचा, छोटे २ पीले पत्ते तथा पीले ही कंटकयुक्त पुष्प होते हैं, इसके फलोंमें मधुर गन्ध होती है, फल को जल में डालने से डूब जाता है और जल को पीले रंग का तथा तिक्त कर देता है) को त्राय-माण कहते हैं। स्वर्गीय डा० वामनगणेश जी देसाई ने लिखा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है कि–यह औषधि ईरानी पहाड़ों पर होती है। नरम कांटेदार फूल वाली क्षुप की जाति है। इसमें दारुहल्दी का सा पीला सत्व निकलता है। इसे यूनानी लोग गुलजलील और अंग्रेज वनस्पति शास्त्री कहते हैं।

श्री सुरेन्द्रमोहन जी० बी० ए० आचार्य डी० ए० वी० कालेज लाहोर से लिखते हैं कि–यह ६–७ अंगुल ऊँचा क्षुप है। इसके पत्र, पुष्प नीले हरे पीले या अनेक वर्ण के होते हैं। रेचन करके ज्वर को नष्ट करता है। जम्मूस्टेट के उद्धमपुर स्थान में मिलता है। पहाड़ी लोग इसे त्रामान कहते हैं। त्रायमाण के सभी लक्षण इसमें मिलते हैं, मेरी समझ में यही त्रायमाणा है।

—सम्पादक।

त्रिकण्टकाद्यासव–देखिये, पुनर्नवासव नं० २।

२७३ त्रिफलासव—(स्वकृत)—अफारा, अनिद्रादि नाशक।

विधि—त्रिफला (हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक२–२सेर) ६ सेर (गुठली निकाल कर) ले कूटकर, २६ सेर जलमें; १२ घंटे तक भिगो कर, आग पर पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भरे, और ठंडा होने पर उसमें शहद १० सेर, मिश्री ५ सेर; धाय के फूल १३ छटांक और गिलोय २० तोले कूटकर मिलावे। यथाविधि सन्धान कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—पेट का अफ़ारा, अनिद्रा, मेदवृद्धि, स्थूलता और जीर्णज्वर को नष्ट करता है।

---

२७४ त्रिफलारिष्ट +—शोथ, हृद्रोगादि नाशक।

विधि—त्रिफला (हरड़, वहेड़ा, आमला), चीता; पीपल, अजवायन, शुद्ध लोह चूर्ण और वायविडंग का चूर्ण प्रत्येक १६-१६ तोले लेकर, १६ सेर जल में पकावे। ८ सेर जल शेष रहने पर घृत से चिकने मिट्टी के घड़े में भर कर उसमें-(ठंडा हो जाने पर)-शहद ३२ तोलें और पुराना गुड़ ५ सेर मिला कर, घड़े का मुख अच्छी तरह बन्द करके जौ के ढेर में दबा देवें। १ मास पश्चात् निकाल कर छान लेवें। और बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—हृद्रोग, पांडुरोग, बढ़ी हुई सूजन; तिल्ली का बढ़ना, भ्रम, अरुचि, खाँसी, श्वास तथा कुष्ठादि नाशक है। इसके गुण पुनर्नवारिष्ट के समान हैं।

---

२७५ * त्रिवृत्तासव—नं० १—कोष्ठवद्धता नाशक।

विधि—निशोथ १ भाग, जुलाफ़ा १ भाग दोनों का चूर्णकर,

+ फलत्रयं चित्रक पिप्पली च सदीप्यकं लोहरजो विडङ्गम्। चूर्णीकृतं कौडविकं द्विरंशं क्षौद्रं पुराणस्य तुलां गुडस्य ॥ मासं निदध्याद्घृतभाजनस्थं यवेषु तानेव निहन्ति रोगान् ॥

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

एक बोतल में भर, उसमें १२॥ भाग मद्य (७० से ९० प्रतिशत वाली) मिला, अच्छी तरह हिलाकर, कार्क लगाकर रक्खे। ७ या १५ दिन के पश्चात्; अच्छी तरह निचोड़ और छानकर, पुनः बोतलों में भरकर रख देवे।

मात्रा—१ माशा से ८ माशे तक।

गुण—प्रत्येक प्रकार के विष्टम्भ (कोष्ठबद्धता) के लिये यह औषधि उत्तम विरेचनीय मानी जाती है। जलोदर में भी इसके सेवन से लाभ होता है। इससे ऐंठन मरोड़ आदि तकलीफें (जयपाल के सदृश) नहीं होतीं।

(मद्यासव)

---

२७६ त्रिवृत्तासव नं० २—पित्त शामक, विरेचक।

विधि—निशोथ का क्वाथ ठंडा किया हुआ ३ भाग, खांड की राव दो भाग, अग्नि पर गरम करके, पीछे मिट्टी के पात्र में भर कर मुँह बन्द करके, एक महीने तक रख कर आसव बना ले और यथोचित मात्रा से देवे।

(पंचकर्म विवेचन)

---

२७७ त्रिवृत्तारिष्ट—विरेचनार्थ।

(प्रेषक-वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्म्मा, भूपाल)

विधि—निसोथ ६४ तोले लेकर, कूटकर, १५ सेर जल में पकावे। पौने चार सेर (३०० तोले) जल शेष रहने पर, उतार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कर छान ले, और एक शुद्ध मटके में भर, उसमें-गुड़ २॥ सेर, और मुलैठी १० तोले चूर्ण कर मिला देवें । यथाविधि सन्धान कर, दो मास तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। सवेरे खाली पेट थोड़े जल के साथ लेवें। रोगी की प्रकृति का विचार कर इसका सेवन कराना चाहिये।

गुण—अच्छा जुलाब होता है। उदर रोग, संग्रहणी, गुल्म रोग, शोथ, पांडु आदि दूर होते हैं और कोठा साफ़ हो जाता है।

(वैद्यक-चिकित्सासार)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

द

२७८ * दन्त्यरिष्ट—नं १—अर्श, ग्रहणी आदि नाशक।

विधि—दन्ती (जमालगोटे की जड़), चीते की जड़, दश-मूल (सालिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेल की जड़, सोनापाठा, कुंभेर, पाढ़ल और अरनी) और हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, सबको अधकुटा कर,

* दन्ती चित्रक मूलानामुभयोः पंचमूलयोः। भागान् पलांशा-नापोथ्य जलद्रोणे विपाचयेत्॥ त्रिपलं त्रिफलायाश्च दलानां तत्र दाप-येत्। रसे चतुर्थ शेषे तु पूते शीते समावपेत्॥ तुलां गुडस्य तत्तिष्ठेत् मासार्द्धं घृतभाजने। तन्मात्रया पिबेन्नित्यमर्शोभ्योऽपि प्रमुच्यते॥ ग्रहणी पाण्डुरोगघ्नं वातवर्चोऽनुलोमनम्। दीपनञ्चारुचिघ्नञ्च दन्त्यारिष्ट-मिदं विदुः॥

—चरक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

१३ सेर जल में पकावे। चौथाई अर्थात् ३। सेर जल शेष रहने पर, छान कर, तथा ठंडा करके, उसमें ५ सेर गुड़ मिला, मिट्टी के चिकने पात्र में भर, अच्छी तरह उसका मुँह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—बवासीर, ग्रहणी, पाण्डुरोग; कब्ज़ी और अरुचि नाशक है। यह मल और वायु को यथोचित् मार्ग से निकाल कर, जठराग्नि को दीप्त करता है।

नोट—मटकी में पहले धाय के फूल और लोध का पीस कर लेप कर देना चाहिये, और लेप के सूख जाने के पश्चात् उसमें उक्त अरिष्ट का सन्धान करना चाहिए। —सम्पादक।

---

२७९ * दन्त्यरिष्ट—नं० २—अर्श, कृमि आदि नाशक।

विधि—हरड़, बहेड़ा, आमला, दशमूल और दन्ती प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले लेकर, १३ सेर जल में पकावे। (३२ सेर जल में पकाना ठीक होगा), ८ सेर जल शेष रहने पर, उसे छान कर, घृत से चिकने किये हुए मटके में भरकर उसमें—

---

* त्रिफला दशमूलानि निकुम्भानां पलं पलम्।
वारिद्रोणे शृतं पादशेषे गुड तुलायुतम्॥
आज्य भाण्डे स्थितं मासं दन्त्यरिष्टो निषेवितः।
गुदज कृम्युदावर्त्त ग्रहणी पाण्डु रोगनुत्॥

—वंगसेन।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

५ सेर गुड़ को अच्छी तरह घोलकर, पात्र का मुख यथाविधि सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। गरमी के दिनों में १५ दिन में ही यह अरिष्ट सिद्ध हो जाता है। इसे कोई २ जमीन में गाड़कर रखते हैं। पश्चात् निकाल कर छान लेना चाहिए।

मात्रा—शक्तिमानानुसार १ तोला से २ तोले तक।

गुण—बवासीर, कृमि, उदावर्त, ग्रहणी रोग और पांडु नाशक है।

---

२८० दमनक-मरुवकासव—(स्वकृत)—विषूचिका नाशक।

विधि—दौना-मरुआ की पत्तियाँ १ भाग लेकर जवकुट कर, उसमें ५ गुनी मृतसंजीवनी सुरा मिला, बोतल में भर, अच्छी तरह दृढ़ कार्क लगाकर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। रोज एक बार हिला दिया करे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ से ४ बून्द तक। बताशे के साथ।

गुण—इसे नित्य प्रातःकाल के समय ४ दिन तक; केवल एक बार सेवन करने से, ४।५ मास तक हैजा होने का भय नहीं रहता। विशूचिका निवारणार्थ आजकल जो इन्जैक्शन लगाया जाता है; उसकी अपेक्षा यह अधिक लाभप्रद है।

---

२८१ * दशमूलासव नं० १—क्षय, उदररोगादि नाशक।

---

* दशमूलं तुलार्द्धं च पौष्करं च तदर्धकम् । हरीतकीनां प्रस्थार्धं धात्री प्रस्थद्वयं तथा ॥ चित्रकं पुष्करमितं चित्रकार्धं दुरालभा। गुडूच्या

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—सरिवन; पिठवन, बड़ी कटेरी; छोटी कटेरी; गोखरू; बेल की जड़, सोनापाठा, कुंभेर; पाढ़ल और अरणी इन १० औषधियों की जड़ प्रत्येक २०-२० तोले; पोहकरमूल १॥ सेर, हरड़ ६॥ छटांक, आमले १ सेर १० छटांक, चीता १॥ सेर; धमासा १२ छटांक, गिलोय ५ सेर, इन्द्रायन एकपाव (२०तो०), खैरसार ३२ तोले, विजयसार १६ तोले तथा मजीठ, मुलैटी; कूठ, कैथ; देवदारु; वायविडंग, चव्य, लोध, भारंगी, मेदा,

---

वै शतपलं विशाला पलपंचकम् ॥ खदिरस्य पलान्यष्टौ तदर्धं बीजकं तथा । मंजिष्ठा मधुकं कुष्ठं कपित्थं देवदारुच ॥ विडंगं चविकं लोध्रं भार्ङ्गी चाष्टवर्गकम् । कृष्णाजाजी पिप्पली च क्रमुकं पद्मकं सठी ॥ प्रियङ्गु सारिवा मांसी रेणुका नागकेशरम् । त्रिवृता रजनी रास्ना मेषश्रृंगी पुनर्नवा ॥ शतावरींचेन्द्रयवा मुस्ता द्विपलकाञ्जले । चतुर्गुणे पादशेषे द्राक्षा षष्टिपलं क्षिपेत् ॥ त्रिंशत्पलानि धातक्या गुड पल चतुःशतम् । मधु द्वात्रिंशत्पलं चैव सर्वमेकत्र कारयेत् ॥ भाण्डे पुराणे स्निग्धे च मांसीमरिच धूपिते । पृथक् द्विपलिकानेतान् पिप्पली चन्दनं जलम् ॥ जातीफलं लवङ्गं च त्वगेलापत्रकेशरान् । कर्पमात्रां च कस्तूरीं दत्वा पक्षं निधापयेत् ॥ कनकद्रुपलं चूर्णं क्षिपेन्निर्मलता भवेत् । पक्षादूर्ध्वं पिबेदस्तु मात्रया च यथाबलम् ॥ धातुक्षयं जयत्येव कासं पंचविधं तथा । अर्शांसि षट्प्रकाराणि तथाष्टावुदराणि च ॥ प्रमेहं च महाव्याधिमरुचिं पांडुरुक् तथा । सर्ववातांस्तथा शूलं श्वासं छर्दिमसृग्दरम् ॥ अष्टादशैव कुष्ठानि शोफं शूलं भगन्दरम् । शर्कराद्यं मूत्रकृच्छ्रमश्मरीञ्च विनाशयेत् ॥ कृशस्य पुष्टिं कुरुते पुष्टस्य च महाबलम् । महावेगो महातेजो महावीर्यो विलोक्यते । कामपुष्टिकरो ह्येष वन्ध्यानां पुत्रदो भवेत् ॥

—योगचिन्तामणि ।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीर-काकोली (इनके अभाव में-असगंध, सारिवा, गिलोय, वंश-लोचन, खिरेंटी, सहदेवी लेवे) कालाजीरा, पीपल, सुपारी, पद्माख, कचूर, फूलप्रियंगु, सारिवा, जटामांसी, रेणुका; नाग-केशर, निसोथ, हल्दी, रास्ना, मेढ़ासिंगी, पुनर्नवा (साठी), शतावर, इन्द्रजौ, और नागरमोथा प्रत्येक ८-८ तोले लेकर, सब को अधकुटा करके चौगुने पानी में पकावे। जब चौथाई पानी शेष रहे, तब उसे छानकर, घृत से चिकने किये हुए पुराने तथा जटामांसी और कालीमिरच से धूपित मटके में भर देवे और उसमें—३ सेर मुनक्का, १॥ सेर ८ तोले शहद, १॥ सेर धाय के फूलों का चूर्ण, २० सेर गुड़, तथा पीपल, सफेदचन्दन, सुगन्धवाला, जायफल, लोंग; दारचीनी, इला-यची, तेजपात और नागकेशर का चूर्ण प्रत्येक ८—८ तोले मिलाकर, मटके का मुख अच्छी तरह वन्द कर देवे। १५ दिन के वाद छानकर, एक वड़ी शीशी में भरकर, उसमें १ तोला कस्तूरी को कपड़े की पोटली में बाँध कर डाले या रेक्टीफाइड स्प्रिट (मद्यसार) में घोटकर मिला देवे, और साथ ही में ५ तोले धतूरे के फलों का चूर्ण मिला दे। जब आसव स्वच्छ हो जाय तब बोतलों में भरकर रख दे। १५ दिन के वाद इस का सेवन प्रारंभ करे।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

गुण—धातुक्षय, खाँसी, श्वास, ६ प्रकार की बवासीर, आठ प्रकार के उदररोग, प्रमेह, अरुचि, पाण्डु, सर्व प्रकार के वात विकार, शूल, वमन; रक्तप्रदर, १८ प्रकार के कुष्ट, शोथ,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भगन्दर, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और अश्मरी को नष्ट करता है। कृश को पुष्ट, पुष्ट को अत्यन्त बलवान, वेगवान, तेजयुक्त और वीर्य-वान बनाता है, वन्ध्या स्त्री यदि इसका नियमपूर्वक सेवन करे तो उसके सुन्दर सन्तान उत्पन्न होती है।

---

२८२ * दशमूलासव नं० २—संग्रहणी नाशक।

विधि—दशमूल, हल्दी, जीवक ऋषभक (इन दोनों के अभाव में विदारीकन्द लेवे) और चीते की जड़ ये प्रत्येक १-१ पाव लेकर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जलमें पकावे। १३ सेर जल शेष रहनेपर, उसे छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, फिर उसमें-गुड़ १६ तोले, शहद ३२ तोले तथा फूलप्रियंगु, मजीठ, वायविडंग, मुलैठी, पीपल और पठानी लोध का चूर्ण प्रत्येक ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख बन्द कर, भूमि में गाढ़ देवे। १५ दिन बाद निकालकर, छानकर, बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोले से २॥ तोले तक।

गुण—अग्निदीपक, रक्तपित्तनाशक तथा अफारा, कफ, हृद्रोग, पाण्डुरोग और शरीर की ग्लानि तथा अंगफूटन (पीड़ा)

---

* द्विपञ्चमूल रजनी जीवकर्षभक चित्रकान्। पृथक् पञ्चपलैर्भा-गैश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत्॥ द्रोणशेषे रसे पूते गुडस्य कुडवं क्षिपेत्। चूर्णितान्यपलिकान् सर्वान्दद्याच्चात्र समाक्षिकाम्। प्रियंगु पुष्पं मंजिष्ठा विडङ्गं मधुकं कणाम्। लोध्रं सावरकं चैव मासार्द्धं स्थापयेत्क्षितौ॥ दशमूलासवः सिद्धो दीपनो रक्तपित्तनुत्। आनाह कफहृद्रोग पाण्डुरोगाङ्गसादनुत्॥

—वंगसेन।

Digitization by American Academy of Indic Studies-AAIS(USA)

को नष्ट कर देता है।

नोट—देखिये—मूलासव।

२=३ दशमूलासव नं०—३—योषापस्मार नाशक।

विधि—दशमूल की प्रत्येक औषधि (सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेल, सोनापाठा, कुंभेर, पाढ़ल और अरनी प्रत्येक की जड़ लेवे) ५-५ तोले, हलदी, धमासा, शतावर और वाराहीकन्द प्रत्येक ५-५ तोले लेकर, सबको कूटकर, १५ सेर पानी में पकावे। जब ६ सेर जल वाकी रह जाय, तब उतार कर, छान लेवे और शुद्ध चिकने मटके में भरकर, उसमें—२॥ सेर गुड़ तथा महुये के फूल, नागरमोथा, फूलप्रियंगु, मजीठ, वायविडंग, सुगन्धवाला (या खस), मुलैठी और लोध प्रत्येक औषधि २-२ तोले कूटकर मिला देवे। वर्तन का मुँह अच्छी तरह बन्द करके २० दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। प्रातःसायं सेवन करे।

गुण—दो मास तक बराबर पथ्याचरण पूर्वक सेवन करने से हिस्टीरिया रोग दूर हो जाता है। तथा मंदाग्नि, पेट का अफारा, कफ के रोग, हृदयरोग; वायु के विकार, मस्तिष्क के रोग और मानसिकरोग दूर होते हैं। मूत्र साफ़ उतरता है।

("वैद्य"-मुरादाबाद)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२८४ दशमूलारिष्ट * नं० १—वाजीकरण,प्रसूति रोगादि नाशक।

विधि—सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, बेल की जड़ की छाल, सोनापाठा, कुंभेर, पादल की छाल और

---

* दशमूलानि कुर्वीत भागैः पंचपलैः पृथक् । पंचविंशत्पलं कुर्याच्चित्रकं पौष्करं तथा ॥ कुर्याद्विंशत्पलं लोध्रं गुडूची तत्समा भवेत् । पलैः षोडशभिर्धात्री रविसंख्यैर्दुरालभा ॥ खदिरो बीजसारश्च पथ्याचेति पृथक् पलैः । अष्टाभिर्गुणितैः कुष्ठं मंजिष्ठा देवदारु च ॥ विडंगं मधुकं भार्ङ्गी कपित्थोऽक्षः पुनर्नवा । चव्यं मांसी प्रियंगुश्च सारिवा कृष्णजीरकम् ॥ त्रिवृता रेणुकं रास्ना पिप्पली क्रमुकः शटी । हरिद्रा शतपुष्पा च पद्मकं नागकेशरम् ॥ मुस्तामिन्द्रयवः शृङ्गी जीवकर्षभकौ तथा । मेदा चान्या महामेदा काकोल्यौ ऋद्धिवृद्धिके ॥ कुर्यात् पृथक् द्विपलिकान् पचेदष्टगुणे जले । चतुर्थांशं शृतं नीत्वा मृद्भाण्डे सन्निधापयेत् ॥ ततः षष्टिपलां द्राक्षां पचेन्नीरे चतुर्गुणे त्रिपादशेषं । शीतं च पूर्वक्वाथे शृतं क्षिपेत् ॥ द्वात्रिंशत्पलिकं क्षौद्रं दद्याद् गुड चतुःशतम् । त्रिंशत्पलानि धातक्याः कंकोलं जल चन्दने ॥ जातीफलं लवंगं च त्वगेला पत्रकेशरम् । पिप्पली चेति संचूर्ण्य भागैर्द्विपलिकैः पृथक् ॥ शाणमात्रां च कस्तूरीं सर्वमेकत्र निक्षिपेत् । भूमौ निखातयेद् भाण्डं ततो जातरसं पिबेत् ॥ कनकस्य फलं क्षिप्त्वा रसं निर्मलतां नयेत् । ग्रहणीमरुचिं शूलं श्वास कास भगन्दरान् ॥ वातव्याधिं क्षयं छर्दिं पाण्डुरोगं च कामलाम् । कुष्टान्यर्शांसि मेहांश्च मन्दाग्निमुदराणि च शर्करामश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं धातुक्षयं जयेत् । कृशानां पुष्टिजननो वन्ध्यानां गर्भदः परः ॥ अरिष्टो दशमूलाख्यः तेजः शुक्रबलप्रदः ॥

—भैषज्यरत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

अरनी की जड़ प्रत्येक २०-२० तोले, चीते की जड़ तथा पोइ-करमूल प्रत्येक १।-१। सेर, पठानीलोध और गिलोय १-१ सेर, आमले ६४ तोले, धमासा ४८ तोले, खैरसार, विजयसार और हरड़ ३२-३२ तोले तथा कूठ, मजीठ, देवदारु, वायविडंग, मुलैठी, भारंगी, कैथ का गूदा, बहेड़ा, पुनर्नवा (बिसखपरा), चव्य, जटामांसी (बालछड़), फूलप्रियंगु, सारिवा, काला-जीरा, निसोथ, रेणुका (संभालू के बीज), रास्ना, पीपल, दक्षिणीसुपारी, कचूर, हल्दी, सौंफ, पद्माख, नागकेशर, नागर-मोथा, इन्द्र जौ, काकड़ासिंगी (इसके स्थान में सोंठ डाल सकते हैं), जीवक, ऋषभक (अभाव में विदारीकन्द), मेदा महामेदा (अभाव में शतावरी), काकोली, क्षीरकाकोली (अभाव में असगन्ध) और ऋद्धि वृद्धि (अभाव में वाराही कन्द) प्रत्येक ८-८ तोले लेकर जवकुट कर, २ मन २४ सेर १३ छटांक जल में पकावे। जब २६ सेर १६ तोले जल शेष रहे, तब उतारकर छान लेवे। पश्चात् ३ सेर मुनक्का को १२ सेर जल में पकाकर, ६ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे और इसे तथा उपरोक्त क्वाथ को मिट्टी के अच्छे बड़े तथा घृत से चिकने किये हुए मटके में भर, उसमें-शहद १ सेर १० छटांक, गुड़ २० सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १॥ सेर तथा कंकोल, सुगन्धवाला, सफेदचन्दन, जायफल; लौंग, दारचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर और छोटीपीपल प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले, मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर जमीन में गाड़ देवे। एक मास के पश्चात् निकालकर, दूसरे शुद्ध मटके में छानकर भरे, और उसमें-४ माशे कस्तूरी को कपड़े की पोटली

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में बाँधकर डाल देवे अथवा सुरा (रेक्टिफाइड स्प्रिट) में घोलकर डाल देवे, तथा थोड़ा सा निर्मली के फलों का चूर्ण भी उसमें मिलाकर रख देवे। ४ या ५ दिन बाद जब अरिष्ट साफ़ हो जाय, तब छानकर, या नितार कर बोतलों में भरकर मजबूत डाट (काग) लगा कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—प्रसूतिरोग; संग्रहणी, अरुचि, शूल, श्वास, खाँसी, भगन्दर, वातव्याधि, क्षय, वमन, पाण्डुरोग, कामला, कुष्ठ, बवासीर, प्रमेह, मन्दाग्नि, उदररोग, शर्करामेह; पथरी, मूत्रकृच्छ्र तथा धातुक्षय को नष्ट करता है। यह अरिष्ट पौष्टिक, बलकारक, वीर्यवर्धक, वन्ध्यत्वदोषनाशक और तेजवर्धक है। वातप्रधान क्षय तथा नजले (प्रतिश्याय) को शीघ्र दूर करता है, क्षय रोगी के ज्वर को शीघ्र भगाता है। श्वेतप्रदर से पीड़ित स्त्री यदि इसे दिन में ३ बार, प्रत्येक बार दो तोला अरिष्ट में ५ तोला जल मिलाकर सेवन करे तो उसका रोग शीघ्र ही दूर होकर दुग्ध की शुद्धि हो जाती है। यह अरिष्ट सूतिका रोग की महौषधि है। सद्य-प्रसूता स्त्री को; बिना जल मिलाये दो-दो तोले की मात्रा में, पिलाने से जनन-क्रिया की पीड़ा एवं तज्जनित उपद्रव (ज्वर, शूल, गुल्म, प्रलाप, अङ्गमर्द, योनिशूल, आध्मान, मूत्रसङ्ग, भ्रम, मूर्च्छादि तथा वातजन्य व्याधियाँ) नहीं होने पाते।

प्रसूता स्त्री को रक्तस्राव के कारण जो क्षीणता हो जाती है, वह इस अरिष्ट के सेवन से शीघ्र ही दूर हो जाती है और बालक को यथोचित शुद्ध दूध की प्राप्ति होती है। जिस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प्रसूता स्त्री को दूध कम या बिल्कुल ही न होता हो, उसे शतावरी (गीली मिले तो दो तोले और सूखी मिले तो १ तो०) अधकुटी कर, २० तोले जल में मिलाकर पकावे, ५ तोले शेष रहने पर; छानकर, उसमें यह अरिष्ट १ तोला मिला, प्रातःसायं आधा २ सेवन करावे। २१ या ४२ दिन में पूर्ण लाभ होता है।

वंध्यत्वदोष—किसी २ स्त्री को गर्भाशय के दोष के कारण या शारीरिक कमज़ोरी, संग्रहणी, वातव्याधि, श्वासकासादि विकारों के कारण, गर्भधारण ही नहीं होने पाता, या गर्भपात हो जाता है; यदि कोई संतति हो भी जावे, तो वह अशक्त; कफविकार, अपस्मार, डब्बा आदि रोगों से पीड़ित होकर शीघ्र ही चल बसती है-ये सब विकार इस अरिष्ट के सेवन से दूर हो जाते हैं तथा योग्य प्रकार से गर्भधारणा होकर पूर्णायुषी संतति होती है। किंतु ऐसी हालत में इसका सेवन पथ्याचरण एवं ब्रह्मचर्यपूर्वक लगभग १॥ साल तक करना चाहिये।

समुद्र यात्रा के कारण जिस स्त्री का ऋतुस्राव (मासिक-धर्म) बन्द हो गया हो, उसे इसका सेवन लाभदायक है। क्षय रोगी को यह अरिष्ट, 'काडलिव्हर आईल' के साथ, समभाग या न्यूनाधिक प्रमाण में मिश्रण कर सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है, ऐसा कई डाक्टरों का तथा हमारा अनुभव है।

इस अरिष्ट में दस्त साफ़ करने का गुण नहीं है, प्रत्युत इसमें अवरोधक गुण होने से ही संग्रहणी के समान विकारों पर यह विशेप उपयोगी है। इसमें वातनाशक, उत्साहजनक एवं पौष्टिक गुणों की विशेषता होने से क्षय के समान विकारों पर तथा प्रसूति रोगों पर यह अपना पूर्ण प्रभाव दिखलाती है,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

किंतु मलबद्धता निवारणार्थ कुमारी आसव आदि अन्य सौम्य रेचक औषधि देते रहना आवश्यक है।

नोट—स्वामी हरिशरणानन्द जी इस अरिष्ट की उक्त प्राचीन विधि में परिवर्तन करते हुए, उसे इस प्रकार बनाने की उपादेय सम्मति देते हैं। उसका सारांश यह है—अम्ल होने के कारण आमले और कैथ इसमें नहीं डालने चाहिये। तथा दश-मूल से लेकर ऋद्धि वृद्धि तक की सब औषधियाँ जवकुट कर, रात्रि में, १ मन गरम जल में भिगो देवे और सवेरे इसे किसी कलई किये हुए पात्र में या मिट्टी के मटकों में एक मन जल और छोड़कर पकावें, यदि एक बर्तन में न पके तो २। ३ बर्तनों में पकावे, जब आधा जल रह जाय तो उसे ठंडा होने देवे। फिर अरिष्ट बनाने योग्य, गूगल या लोबान की धूनि से धूपित शुद्ध पात्र को किसी निश्चित स्थान पर (यदि ग्रीष्म ऋतु हो तो उसे ऐसे खुले स्थान में रक्खे जहाँ उसके अनुकूल शीतलता बनी रहे, यदि शीतऋतु हो तो अन्नराशि आदि में रक्खे, जिससे पात्र बाहर की वायु के संपर्क से शीतल न होने पावे) उसमें उक्त क्वाथ को, शुद्ध हाथों से खूब मलते हुए छान कर भर देवे। पश्चात् ३ सेर मुनक्का जो खूब साफ़ की हुई हों १२ सेर जल में उबाले, जब मुनक्का गल जायँ, उतारकर सुखोष्ण होजाने पर, खूब शुद्ध हाथों से मल २ कर क्वाथ जैसा बना देवे, जब मुनक्का घुल जायँ, तब शहद दो सेर और खांड (चीनी) ४ सेर मिलावे। फिर दोनों क्वाथों का उत्ताप देखे। यदि शीत ऋतु हो और क्वाथ दोनों ठंडे हो गये हों, तो द्राक्षा-क्वाथ को पुनः खूब गरम करके दशमूलादि क्वाथ में मिला देवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

यदि ग्रीष्मऋतु हो तो दोनों क्वाथ शीतल होनेपर एकत्र करदेवें। शीतऋतु में क्वाथ सुखोष्ण और ग्रीष्म में शीतल होना चाहिए। यह स्मरण रहे कि जिस पात्र में ये एकत्र किये गये हों वह कुछ खाली रहे, मुख तक न भराजाय। पश्चात् उसमें किएव सूखा हुआ १ सेर, यदि यह न प्राप्त हो तो द्रवरूप किएव या आसवारिष्ट का जगल भाग २ से ५ सेर तक, छोड़कर घोल को खूब हिला दे, फिर शीतलचीनी, लौंग, चन्दन, दारचीनी, छोटी इलायची, नागकेशर आदि सुगन्धित द्रव्य ४-४ तोले खूब महीन किये हुये, तथा धायके फूल १ सेर मिला, पात्र को किसी जालीदार ढकने से या स्वच्छ कपड़े से ढक देवे। २४ घंटे के वाद इसमें कुछ न कुछ परिवर्तन होने लगता है। उत्ताप को अधिक उष्ण और उष्णकाल हो तो इसके परिवर्तन होने तक, शीतकाल हो तो इसके शीतल बने रहने पर दृष्टि रक्खे। जब परिवर्तन होने लगजाय तो कम से कम दिन में, इसे एक या दो बार अवश्य हिला दे। सप्ताह या डेढ़ सप्ताह के बाद जब परिवर्तन शांत होने लगे, तब उस समय इसमें १० सेर खांड और छोड़कर हिला दे। फिर दूसरे या तीसरे दिन इसे एक बार छानकर, दुबारा फिर और छान इसमें कस्तूरी ४ माशे, केशर १ तोला खूब इसी द्रव में घोटकर मिला देवे, और बोतलों में भर रख ले। कुछ दिन दिन के बाद यह बोतलों में रक्खा २ फट कर जगल भाग नीचे चला जायगा और स्वच्छ अरुण वर्ण का द्रव ऊपर रहेगा, प्रति बोतल में जगलभाग १ छटाँक के लगभग होता है। जिस समय इस द्रव के दोनों भाग भिन्न २ होजाँय, उस समय स्वच्छ द्रव को ऊपर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२ से नितार कर भिन्न बोतलों में भर कर रख देवे। देखने में भी यह स्वच्छ अरुण वर्ण का स्वादिष्ट दशमूलारिष्ट होगा। जो जगल (गाद) भाग बचे उसको संभाल कर रख छोड़े यह फिर किसी नये आसवारिष्ट बनाने के समय किएव या जाग का काम देगा।

और भी एक नूतन विधि—उपरोक्त योग जितना लिखा है, नूतन विधि से बनाने के समय इतना नहीं बनाना चाहिए चतुर्थांश या अष्टमांश बनावे। दशमूलारिष्ट की प्रत्येक वस्तु को खूब महीनकर, शाम को अष्टगुण जल में भिगो दे, सवेरे इसे पकावे। आधा शेष रहने पर, उतार कर और मलकर छान लेवे। यदि इसको आधुनिक फिल्टर पेपर में छाना जाय या ब्लाटिंग पेपर में छाना जाय तो ठीक होता है। पश्चात् इसमें सुगन्धयुक्त द्रव्यों को पीसकर मिला दे, और साथ ही में हली या हलाहल (?) पाव भर मिलाकर बोतलों में भरकर रख दे। कुछ दिन के बाद सुगन्ध-द्रव्यों का स्थूलभाग नीचे बैठ जायगा, उस समय ऊपर २ का द्रव भाग अलग उतारकर बोतलों में भरकर रख दे और पीते समय इसमें शहद मिला कर सेवन करे। इसकी मात्रा १ तोला से २ तोले तक। जल में मिलाकर देवे। इसी प्रकार सब अरिष्ट बनाए जा सकते हैं।

(आसव—विज्ञान)

---

२८९ दशमूलारिष्ट * नं० २—अर्श, ग्रहणी आदि नाशक।

* द्विपञ्चमूली दन्ती चित्रक पथ्यानां तुलामाहृत्य जलचतुर्द्रोणे विपाचयेत्। ततः पादावशिष्टं कषायमादाय सुशीतं गुडतुलया सहो-

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

विधि—दशमूल, दन्ती, चीते की जड़ और हरड़ प्रत्येक ५-५ सेर कुल मिलाकर ६५ सेर लेकर सब को जवकुट करके ३ मन ८ सेर जल में पकावे, जब १६ सेर जल शेष रहे तब उसे छानकर घृत से चिकने किये हुये मटके में भरदे; ठंडा होजाने पर उसमें ५ सेर गुड़ मिला, कर मुख अच्छी तरह बन्द करके जौ के ढेर में दबा देवे। १ मास पश्चात् निकाल छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—बवासीर, संग्रहणी, पाण्डुरोग, उदावर्त और अरुचि नाशक है। तथा अग्नि को प्रदीप्त करता है।

---

२८६ दाडिमासव--(स्वकृत) नं० १ बहुमूत्रादि पर।

विधि—अनार की जड़ की छाल, पत्र पुष्प और कच्चे फल सब लगभग ५ सेर लेकर, जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होजाने पर, उसमें शहद १५ सेर, धायके फूलों का चूर्ण १ सेर, नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी और वायबिडंग प्रत्येक ८-८ तोले चूर्ण कर मिला कर, पात्र का मुख यथाविधि सन्धान कर, १५ दिन तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

न्मिश्र्य घृतभाजने निक्षिप्य मासमुपेक्षेत यवपल्ले ॥ ततः प्रातः प्रातर्मात्रां पाययेत, तेनार्शोग्रहणी दोष पाण्डुरोगोदावर्त्तारोचका न भवन्ति दीप्तो-ऽग्निश्च भवति ॥ —सुश्रुत।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—बहुमूत्र, प्रमेहादि नाशक है, तथा आन्त्र के कृमियों को नष्ट करता है।

---

२८७ दाडिमासव नं० २--रक्तपित्त, क्षय आदि नाशक।

विधि—अनार का रस आधा सेर, अंगूर का रस १ पाव, सेवका रस १ पाव, दशमूल का चूर्ण १ पाव, छोटी कटेरी आधा सेर, पीपल और मुलैठी प्रत्येक १०-१० तोले लेवे। दशमूलादि को कूटकर १६ सेर जल में पकावे, शेष क्वाथ जल ४ सेर रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा हो जाने पर, उसमें उक्त अनार, अंगूर और सेव का रस तथा धायके फूलों का चूर्ण १। पाव और मिश्री २॥ सेर पीसकर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास पर्यन्त सुरक्षित स्थान में रखा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१। तो० से २॥ तो० तक।

गुण—रक्तपित्त, क्षय, उरक्षत, फेफड़े की बीमारी, सूखी खांसी और दाहज्वर पर लाभकारी है, हाथ पैर के तलुओं की जलन पर भी लाभप्रद है।

(अ० यो० माला)

नोट—लेखक (अज्ञात) ने इसका नाम 'सुधासव' रक्खा था।

—सम्पादक।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

२८८ दाडिमाद्यासव नं० ३—अजीर्णादिनाशक।

(श्री वैद्यभूषण पं० मक्खनलालजी शर्मा खेरली)

विधि—पके और मीठे अनार के दाने ३ सेर, छोटे अंगूर, ३ सेर दोनों का स्वरस खादी के कपड़े में खूब मसल और निचोड़ कर निकाल ले फिर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें ३ सेर शहद तथा लौंग, जावित्री, जायफल, और तेजपात प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले डालकर, पात्र का मुख अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक।

गुण—अजीर्ण, अग्निमांद्य, खून की कमी, घबराहट, जी मिचलाना, सिर का दर्द, आदि शीघ्र ही दूर करता है। पाचन-शक्ति को ठीक करते हुये बल की वृद्धि करता है।

दारचीन्यासव—देखिये, त्वक्पत्रासव।

२८९. * दारुहरिद्रासव—ज्वरनाशक।

विधि—दारुहल्दी के १ भाग चूर्ण में ८ भाग मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) मिला, एक शुद्ध बड़ी बोतल में या चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, दृढ़ मुख मुद्राकर, ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् अच्छी तरह मसलते हुये छानकर शीशियों में भरकर रख दे। सन्धानावधि में बोतल को बीच २ में हिलाते रहना चाहिए।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ माशा से ८ माशे तक। या ३० बूँद से १२० बूँद तक।

गुण—शीतज्वर को रोकने के लिये, ज्वर वेग के पूर्व ही देवे। यह ग्राही तथा दीपक है, अधिक मात्रा में हल्की दस्ता-वर है, स्वेद-जनक है। इसका ज्वर नाशक प्रभाव कुनैन से बढ़कर है। एकाहिक, द्वयाहिक आदि ज्वर तथा रोग जन्य निर्बलता में इसके सेवन से लाभ होता है।

(मद्यासव)

नोट—सरदी के ज्वर को रोकने के लिये शीत लगने से पहिले ही इसका सेवन कराना चाहिये। यह आसव पौष्टिक भी है। पौष्टिक गुणों के लिये इसे ३ से ६ ड्राम तक की मात्रा से देना चाहिए। —संपादक।

---

२६० दुरालभासव * —संग्रहणी, पाण्डु आदि नाशक।

विधि—धमासा १ सेर १० छटाँक, आमला १३ छटाँक, चीते की जड़ और दन्ती ८-८ तोले तथा उत्तम वज़नदार १०० हरड़ लेकर, उनको अधकुटा करके, १ मन १२ सेर जलमें

---

* प्रस्थौ दुरालभाया द्वौ, प्रस्थमामलकस्य च। मुष्टी चित्रकदन्त्योर्द्वे प्रत्यग्रं चाभया शतम्॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा शीतं द्रोणावशेषितम्। गुडस्य द्विशतं पूतं मधुनः कुडवान्वितम्॥ तद्वत्प्रियङ्गोःपिप्पल्या विडङ्गा-नाञ्च चूर्णितैः। कुडवैर्घृतकुम्भस्थं पक्षाज्जातं ततः पिवेत्॥ ग्रहणी पाण्डु रोगार्शः कुष्ठ वीसर्प मेहनुत्। स्वर वर्णकरश्चैव रक्तपित्त कफापहः॥

—चरक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, उसे छानकर, ठंडा करले, और शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ तथा शहद, फूलप्रियंगु, पीपल, और वायविडंग का चूर्ण प्रत्येक १६-१६ तोले मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—संग्रहणी, पाण्डु, बवासीर, कुष्ठ, विसर्परोग, प्रमेह, रक्तपित्त और कफ नाशक, तथा स्वर और वर्ण (कान्ति) को सुधारने वाला है।

नोट—गदनिग्रह ग्रन्थ में यह 'दुरालभारिष्ट' नाम से दिया गया है।

---

२८१ दुरालभारिष्ट * नं० १—अर्श, ग्रहणी आदि नाशक।

विधि—धमासा १३ छटाँक, चीते की जड़, बासा (अडूसा) मूल, हरड़, आमला, पाठा, सोंठ, और दन्ती ८-८ तोले लेकर

---

* दुरालभायाः प्रस्थः स्याच्चित्रकस्य वृषस्य च। पथ्यामलकयोश्चैव पाठाया नागरस्य च ॥ दन्त्याश्च द्विपलान् भागान् जलद्रोणे विपाचयेत् । पादावशेषे पूते च सुशीते शर्कराशतम् ॥ प्रक्षिप्य स्थापयेत् कुम्भे मासार्द्धं घृतभाजने । प्रलिप्ते पिप्पलीचव्य प्रियङ्गु क्षौद्र सर्पिषा ॥ तस्य मात्रां पिबेत्काले शार्करस्य यथाबलम् । अर्शांसि ग्रहणीदोषमुदावर्त्तमरोचकम् ॥ शकृन्मूत्रानिलोद्गार विबन्धानग्निमार्दवम् । हृद्रोगं पाण्डुरोगञ्च सर्वमेतेन साधयेत् ॥

—चरक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, क्वाथ को छान लेवे, तथा ठन्डा होने पर, एक शुद्ध मटके में (मटके को घी से चिकना कर, उसमें पीपल, चव्य, प्रियंगु के चूर्ण को शहद और घी में मिला कर लेप कर देना चाहिये) भर कर, उसमें खाँड ५ सेर, मिला कर, अच्छी तरह पात्र का मुख बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—बवासीर, ग्रहणी दोष, उदावर्त, अरुचि, को नष्ट करने वाला है, मलमूत्र, अपानवायु तथा ऊर्ध्व वायु (डकार) को खोलने वाला, मन्दाग्नि, हृद्रोग एवं पाण्डुरोग को नष्ट करता है।

नोट—गदनिग्रह और योगरत्नाकर में इसका नाम 'शर्करासव' रक्खा गया है।

---

२९२ दुरालभारिष्ट * नं० २—अर्श, ग्रहणी आदि नाशक।

---

* पचेद्दुरालभाप्रस्थं द्रोणेऽपां प्रासृतैः सह। दन्ती पाठाग्निविजया वासामलक नागरैः॥ तस्मिन्सिता शतं दद्यात्पादस्थेऽन्यच्च पूर्ववत्। लिम्पेत् कुम्भं तु फलिनी कृष्णा चव्याज्यमाक्षिकैः॥ दत्वा प्रस्थं च धातक्या स्थापयेद्द घृतभाजने। पश्चात् स शीलितोऽरिष्टः करोत्यग्निं निहन्ति च॥ गुदज ग्रहणी पाण्डु कुष्टोदर गरज्वरान्। स्वयथु प्लीह हृद्रोग गुल्म पक्ष्म वर्मा कृमान्॥

—वाग्भट।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—धमासा १३ छटाँक, दन्ती, पाठा, चीते की जड़, हरड़ (इसके स्थान में भांग ले सकते हैं) बासा, आमला और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले लेकर, १३ सेर जल में पकावे। जब ३। सेर जल शेष रहे, तब छानकर, एक शुद्ध मटके में (मटके के भीतर फूलप्रियंगु, पीपल, तथा चव्य के चूर्ण को घी और शहद में मिला लेप कर देवे) भर, उसमें मिश्री ५ सेर और धायके फूलों का चूर्ण १३ छटाँक मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—यह अग्निवर्धक, बवासीर, पाण्डु, संग्रहणी, कुष्ठ, उदररोग, विषदोष, ज्वर, सूजन, तिल्ली, हृदय के रोग, गुल्म (गोला) यक्ष्मा (क्षय) और वमन नाशक है। इसके सेवन से कृमि विकार भी दूर होजाता है।

---

२६३ देवदार्वासव * नं० १—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्रादि नाशक।

---

* देवदारोस्तुलार्धं तु वासायाः पल विंशतिः। दन्ती शक्राह्वमंजिष्ठा तगरं रजनी द्वयम्॥ रास्ना मुस्तं शिरीषं च कृमिघ्नः खदिरार्जुनौ। भागान्दशपलानेषां गुडूच्याश्चित्रकस्य च॥ चन्दनस्य यवान्याश्च रोहिण्या वत्सकस्य च। भागान्पंचपलानेयामष्टद्रोणेऽम्भसः पचेत्॥ द्रोणशेषे कषायें तु पूते शीते प्रदापयेत्। धातक्याः षोडशपलं माक्षिकस्य तुलात्रयम्॥ चतुष्पलं त्रिजाताच्च व्योषस्य च पलद्वयम्। केसरस्य पल द्वन्द्वं प्रियंगोश्च पलद्वयम्॥ घृतभाण्डे निदध्याच्च मासमेकं प्रयत्नतः। प्रमेहान्मूत्रकृच्छ्रांश्च वातरोगान् सुदारुणान्॥ ग्रहण्शों विकारांश्च देवदार्वासवो जयेत्।

—शदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—देवदारु २॥ सेर, बासा (अडूसा) की जड़ १ सेर, दन्ती, इन्द्रजौ, मजीठ, तगर, हल्दी, दारुहल्दी, रास्ना, नागरमोथा, सिरस की छाल, वायविडंग, खैरसार और अर्जुन की छाल प्रत्येक आध-आध सेर, तथा गिलोय, चीता, सफेद चन्दन, अजवायन, कुटकी और कुड़े की छाल प्रत्येक एक-एक पाव (२० तोले), लेकर, सब को जबकुट कर, २ मन २४ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर उसे छानकर, किसी शुद्ध चिकने पात्र में भरे, ठंडा होजाने पर उसमें १३ छटाँक धाय के फूलों का चूर्ण, १५ सेर शहद, दारचीनी, तेजपात और इलायची तीनों मिलाकर १६ तोले, तथा सोंठ, मिरच, पीपल तीनों मिलाकर ८ तोले, नागकेशर और फूलप्रियंगु का चूर्ण प्रत्येक ८-८ तोले, मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र (सोजाक), वातरोग, संग्रहणी, बवासीर, खुजली, दाद, कुष्ठ, आमवात नाशक है। उपदंश तथा प्रमेह-जनित बहुमूत्र या मधुमेह पर इसका उपयोग अच्छा प्रभावशाली होता है। पाचनशक्ति की वृद्धि होकर, कोष्ठशुद्धि एवं रक्तशुद्धि होती है। मूत्राघात, अश्मरी (पथरी), अग्निमांद्य, अम्लपित्त, श्वास, कास, प्रदर एवं गर्भाशय के दोष पर भी यह श्रेष्ठ लाभदायक है।

नोट—शार्ङ्गधर तथा भैषज्यरत्नावली में इसका नाम 'देवदार्व्यारिष्ट' है। और गिलोय से लेकर कुड़े की छाल तक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(६ द्रव्यों) प्रत्येक का प्रमाण ३२-३२ तोले तथा फूलप्रियंगु का प्रमाण १६ तोले लिखा है।

२९.४ देवदार्वासव नं०२—(स्वकृत)—कास, वातादि नाशक।

विधि—देवदारु का बुरादा ५ सेर लेकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, उसे छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर देवे। तथा ठंडा हो जाने पर, उसमें-शहद १० सेर, शुद्ध गूगल ८ तोले, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक तथा रास्ना, काकड़ासिंगी, धमासा, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल और वायविडंग प्रत्येक ४-४ तो० सब का चूर्ण कर मिला देवें। १ मासतक अच्छी तरह सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक।

गुण—सब प्रकार की खांसी, श्वास, सन्धिगतवात तथा सततज्वर नाशक है।

२९.५ देवदाल्यासव—प्रतिश्याय, अर्शादि नाशक।

(पं० शालिग्राम जी शर्मा, वैद्यराज)

विधि—देवदाली (बन्दाल) के फल १ पोंड (४० तो०) लेकर, ४ पौंड जल में खूब खरल करे, ४ प्रहर के बाद, १ सेर (२ पौंड) और जल डालकर कपड़े में छान लेवे और किसी पात्र में रख दे, २ घंटे के बाद जल को नितार ले। नीचे जो भूरे रंग का सफूफ़ (चूर्ण) जमें, उसे खुश्क कर लेवे। फिर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रेक्टिफाइड स्प्रिट १ पौंड में उक्त चूर्ण डाल दे और काग लगा कर रख दे २१ दिन के पश्चात्, उसमें १॥ पौंड (६० तो०) अल्कोहल (मद्य) और मिलाले और ६ औंस (१५ तो०) शहद डाल दे। पुनः काग लगाकर रख छोड़े, २१ दिन के बाद छानकर रख ले और काम में लावे।

मात्रा—१ बूँद से २० बून्द तक। अनुपान-गर्म जल।

गुण—प्रतिश्याय, खाँसी, नवज्वर, कामला, गुल्म, सूजन, कृमि, बवासीर, अरुचि, हिक्का, श्वास, आमवात की सूजन और क्षय नाशक है। इसके प्रयोग से वमन विरेचन होकर रोग का विष नष्ट हो जाता है। गीले प्रतिश्याय (जुकाम) में केवल गर्मजल में डालकर पीना चाहिए और कपड़ा ओढ़ कर लेट जाना चाहिए, थोड़े ही समय के सेवन से, प्रतिश्याय नष्ट हो जाता है। (धन्वन्तरि)

दौना-मरुआ आसव-देखिये, दमनक-मरुवकासव।

२८६ द्राक्षासव * -नं० १—अर्श, शोथादि नाशक।

---

* द्राक्षापलशतं दत्वा चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत्। द्रोणशेषे रसे तस्मिन्पूते शीते प्रदापयेत् ॥ शर्करायास्तुलां दत्वा तत्तुल्यं मधुनस्तथा। पलानि सप्तधातक्याः स्थापयेदाज्यभाजने ॥ जातीलवंगकंकोलल्वली-फलचन्दनैः। कृष्णां त्रिगन्ध संयुक्तां भागैरर्धपलांशकैः ॥ त्रिसप्ताहाद्ध-वेत्पेयं तत्र मात्रा यथाबलम्। नाम्ना द्राक्षासवो ह्येष नाशयेद्गुदकीलकान् ॥ शोफारोचकहृत्पाण्डुरक्तपित्तभगन्दरान्। गुल्मोदरकृमि ग्रन्थि क्षतशोषज्वरान्तकृत्। वातपित्तप्रशमनः शस्तश्च बलवर्णकृत् ॥

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—द्राख (मुनक्का) ५ सेर लेकर, अच्छी तरह साफ़ कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहनेपर, उसे छानकर, चिकने मटके (मटका शुद्ध होना चाहिये) में भर, ठंडा हो जानेपर उसमें—५ सेर खाँड, ५ सेर शहद, धाय के फूलों का चूर्ण २८ तोले तथा जावित्री, लवंग, कंकोल, लवलीफल (हरफारेवड़ी), सफेदचन्दन, छोटी पीपल, दारचीनी, बड़ी इलायची और तेजपात का चूर्ण २-२ तो० मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ तोले से ३ तोले तक।

गुण—बवासीर के मस्से, सूजन, अरुचि, हृदयरोग, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, भगन्दर, गुल्म, उदररोग, कृमि (किरम) ग्रन्थिरोग, उरक्षत, क्षय, ज्वर और वातपित्त के रोग नष्ट होकर, बल वर्ण की वृद्धि होती है।

नोट—यह आसव प्रायः शीघ्र ही खट्टा हो जाता है, जिस से खट्टा न होने पावे, इसलिये जिस मिट्टी के पात्र में वह रक्खा जावे, उसे पहिले सोड़ा डालकर खूब साफ़ कर लेना चाहिये, फिर कली-सफेदा से धो, घृत और चन्दन के बुरादे की धूनी देकर, फिर उसमें औषधियाँ एवं क्वाथ जल में डाले। पात्र के मुखपर मुद्रा न चढ़ा कर, केवल वस्त्र से उसका मुँह बाँध देवे, ७ दिन तक रोज एकबार पात्र को हिला दिया करे। एक सप्ताह बाद उसमें से साँय २ शब्द जब सुनाई देने लगे, तब उसे १५ दिन तक न हिलावे पश्चात् छान कर, बोतलों में (३ या ४ अंगुल खाली रख कर) भर लेवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२६७ नोट २—उक्त द्राक्षासव नं० १ की बनाने की हमारी अनुभूत विधि इस प्रकार है—

उत्तम काली दाख ५ रत्तल (२०० तोले) लेकर, अच्छी तरह धोकर साफ कर लेवे, फिर उसमें २५ रत्तल जल मिला कढ़ाई पर मन्दाग्नि से पकावे, चौथाई जल शेष रहने पर, छानकर चीनी मिट्टी की भरणी में भर, ठंडा होजाने पर, उसमें १ सेर शहद, ५ रत्तल मिश्री की शक्कर तथा धायके फूल, कंकोल, खस, सफेदचन्दन, जायफल, लौंग, दारचीनी, बड़ी इलायची के दाने, तमालपत्र, नागकेशर, और पीपल प्रत्येक का महीन चूर्ण २-२ तोले डालकर, मुख मुद्रा कर, जमीन के अन्दर जरा गहरा गढ़ा खोदकर गाढ़ दिया जाता है। पात्र के ऊपर कम से कम आधफुट मिट्टी रहनी चाहिये। यह गढ़ा ऐसी जगह हो जहाँ अच्छी कड़ी धूप उस पर पड़ती रहे। यदि ऐसा न हो सके तो उस पर रोज ५ या ६ घंटे तक आग जलानी चाहिये। एक माह के बाद पात्र को बाहर निकालकर उसमें २ या ४ तोले तक निर्मली के बीजों का चूर्ण डाल कर, ऊपर का स्वच्छ आसव छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला तक, चौगुना जल मिलाकर सेवन करे।

गुण—क्षुधावर्धक, मलबद्धता निवारक तथा संग्रहणी, कास, श्वास, वातरोग, वमन, अर्श, पांडुरोग, कामला, मूत्र-कृच्छ्र नाशक है। वीर्य की वृद्धि कर बल को बढ़ाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

२६८ द्राक्षासव * नं० २—वाजीकरण ।

विधि—मुनक्का ६। सेर लेकर (साफ़कर) १२८ सेर पानी में पकावे, जब ३२ जल शेष रहजाए, तब उसे छानकर, उसमें ६। सेर गुड़ और १ सेर धायके फूलों का चूर्ण मिला कर मिट्टी के चिकने मटके में भर दे तथा उसका मुख बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। १५ या २० दिन बाद जब आसव तैयार होजाय, उसे निकाल कर, भबके से अर्क खींचले, और उस खिचे हुये अर्क को दुबारा और खींचे, इसीप्रकार १० बार भबके से खींच कर उसमें यथोचित् परिमाण में (दो–दो तोले) दारचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, जावित्री, लौंग, कपूर, और केशर का चूर्ण मिला कर रक्खे।

मात्रा—अग्नि बलोचित् १ या २ तोला।

गुण—क्षय रोग को यह नष्ट करता है, इस पर स्निग्ध भोजन करना चाहिये। इसके सेवन से वृद्ध भी युवा के समान स्त्री समागम कर सकता है।

---

* द्राक्षा तुलामुपादाय जलद्रोण चतुष्टये। पक्त्वा चतुर्थशेषन्तु तं कषायमुपाहरेत् ॥ दत्त्वा गुडतुलां तत्र धातकी प्रस्थमेव च। निखात्य स्थापयेन्द्भूमौ यावतासौ वरो भवेत् ॥ ततस्तत्सारमादद्याद्वारुणी यन्त्रतः शनैः। पुनस्तं वारुणीयंत्रे समारोप्य तदा हरेत् ॥ एवं तु दशधा सारं पौनः पुन्येन संहरेत्। ततस्तास्मिञ्चतुर्जातं जातिकोशं लवंगकम् ॥ कर्पूरं कुङ्कुमं चापि यथालाभ नियोजयेत्। तं यथाग्निवलं मर्त्यः पिबेत्सर्वक्षयापहम् ॥ स्निग्धेन भोजनेनैव आसवं विधिना पिबेत्। नरो नवतिवर्षोयोप्यनेन दशकामिनीः। प्रत्यहं रमयत्येव पौरुषेण न हीयते ॥

—भा० भै० रत्नाकर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नोट—'बृहद्योगतरंगिणी' कारने इसी योग का नाम 'पञ्चसायकासव' रक्खा है । ध्यान रहे भवके के द्वारा अर्क निकालने से गुण अधिक बढ़ जाते हैं, किन्तु आधुनिक कानून की पाबन्दी अवश्य करनी होगी, कारण इसमें मद्य की विशेषता होजाती है । अतएव जिला मजिस्ट्रेट (कलक्टर साहब) से ॥) के स्टाम्प पर प्रार्थना पत्र भेजकर, स्वीकृति अवश्य ले लेनी चाहिये ।

—सम्पादक ।

---

२८८ द्राक्षासव * (महा) नं० ३—वाजीकर, क्षयादि नाशक ।

विधि—मुनक्का ५ सेर, खांड २० सेर, बेरी की जड़ १० सेर; धायके फूल ५ सेर तथा सुपारी; लौंग, जावित्री, जायफल, इलायची; तेजपात, नागकेशर, सोंठ; मिरच, पीपल,

---

* द्राक्षायाश्च पलशतं सितायास्तच्चतुर्गुणम् । कर्कन्धुमूलं तस्यार्द्धं मूलार्द्धं पुष्पधातुकी ॥ क्रमुकं च लवंगञ्च जातिपुष्पं फलानि च । घातुजातं त्रिकटुकं मस्तकी करहाटकम् ॥ आकल्लकरभं कुष्ठं पलानि दशमाहरेत् । एभ्यश्चतुर्गुणं तोयं भाण्डे चैव विनिक्षिपेत् ॥ स्थापयेद्भूमिमध्ये तु चतुर्दश दिनानि च । ततो जातरसं शुद्धं क्षिपेत्कच्छपयन्त्रके ॥ मुद्रयित्वा च तस्याधो वन्हिं प्रज्वालयेत्सुधी । तस्यांस्रावितं सीधुं गृह्णीयात् सर्वमेव तत् ॥ पुनरत्र च तत्सीधुं क्षिपेत्कच्छपयंत्रके । धाराधो निक्षिपत्तस्य मृगनाभिं सकुङ्कुमम् ॥ एतत्सिद्धं क्षिपेद्धीमान् काचभाण्डे निधापयेत् । त्रिदिनेषु व्यतीतेषु तत्पेयं पलसंख्यया ॥ मध्याह्ने द्विपलं ग्राह्यं सन्ध्याकाले चतुः पलम् । गरिष्ठं स्निग्धमाहारंभक्षयेदस्य सेवकः ॥ वर्यामिवृद्धिः प्रभवेन्नराणां रामासुतश्यो भवतीह लोके । त एव धन्या मनुजा नरेन्द्राः द्राक्षासवं ये किल सेवयन्ति ॥

—योगचिन्तामणि ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रूमीमस्तगी, पद्मकंद (कसेरू), अकरकरा और मीठा कूठ ये प्रत्येक आध २ सेर लेकर; कूटने योग्य द्रव्यों को कूटकर, मिट्टी के चिकने पात्र में भरकर; उसमें ४ गुना (लगभग ४॥ मन) जल डाल दे; और अच्छी तरह हिलाकर, पात्र का मुख अच्छे प्रकार बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। १४ दिन के बाद उसमें से आसव को निकाल, कच्छप यन्त्र (मदिरा खींचने के यंत्र) में डालकर; उसका अर्क खींच लेवे, और पुनः उस अर्क को दूसरी बार, उसी प्रकार अर्क खींच लेवे, किन्तु अबकी बार एक पोटली में केसर और कस्तूरी बांधकर, जहां से अर्क टपकता है उस जगह यंत्र के मुंह पर लगा देवे। फिर इस आसवार्क को बोतलों में भर कर रख देवे, और ३ दिन के पश्चात् सेवन करे।

मात्रा—१ तोला मध्यान्ह में और दो तोला रात्रि के समय में लेवे। (ग्रन्थ की मात्रा आधुनिक काल के लिये बहुत ज्यादह है)

गुण—अत्यन्त वीर्य की वृद्धि करने वाला, अत्यंत वाजीकरण, एवं पाचक और अग्निदीपक है। इसके सेवन से, क्षय (तपेदिक), खांसी, जुकाम, स्मरणशक्ति की न्यूनता, प्रमेह, नपुंसकता एवं निर्बलता शीघ्र ही दूर होजाती है।

---

३०० द्राक्षासव नं० ४—कास, श्वासादि नाशक।

(वैद्यराज श्री पं० गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—दाख ५ सेर लेकर, ६४ सेर जल में क्वाथ करे, चौथाई भाग (१६ सेर) जल शेष रहने पर, छानकर; एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ तथा दारचीनी,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छोटी इलायची, तेजपत्र; तालीसपत्र; नागकेशर; प्रियंगु, कालीमिरच पीपल; वायविडंग, काकड़ासिंगी, भारंगी, बहेड़ा; और आमला प्रत्येक का महीन चूर्ण ८-८ तोले और धायके फूलों का चूर्ण ६० तोले मिला, पात्र का मुख बन्द कर, १५ या २० दिन तक रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—कास; श्वास, रक्तपित्त, क्षय; अजीर्ण आदि में अत्यंत लाभप्रद है।

(अ० चि० संग्रह)

---

३०१ द्राक्षासव (महत्) नं० ५—वाजीकरण, क्षयादिनाशक।

विधि—मुनक्का २॥ सेर, किशमिश ५ सेर, छुआरे १। सेर, बादाम की गिरी १। सेर, नारियल का गोला १० छटाँक, गिलोय, गोखरू; शतावर, कौंच के बीज, सफेदमुसली, कालीमुसली, तालमखाना, बीजबन्द, प्रत्येक १६-१६ तोले, बेरी की जड़ की छाल १३ छटाँक, बबूर की छाल १३ छटाँक, तथा महुए की छाल, आम की छाल, जामुन की छाल, खिरेंटी की जड़, कंघी की जड़ कुश की जड़, दाभ की जड़, कांस की जड़, ईख की जड़, गोंदनी की छाल ये प्रत्येक ३२-३२ तोले तथा खस, बालछड़, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला, तेजपात, छोटी इलायची, तज, बड़ी इलायची, चीते की जड़, धनिया, चोवचीनी, मुलैठी, पाषाणभेद, सफेदचन्दन, लालचन्दन, अगर, तगर, जावित्री, जायफल, लोंग ये प्रत्येक ४-४ तोले धायके

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फूल १ सेर ८॥ छटांक; चीनी १० सेर और गुड़ ५ सेर; सबको कूटकर एक चिकने शुद्ध मटके में भर; उसमें २॥ मन जल मिला; पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर; जमीन में गाढ़ देवे। एक मास बाद निकाल कर भबके से अर्क़ खीच लेवे। अर्क़ खींचते समय; भबके के अन्दर के नाल मुखपर, केशर १। तोला, कस्तूरी ४ माशे; कपूर ८ माशे, धनिया १। तोला; की पोटली बांध रक्खे, फिर अर्क़ खींच कर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—३ माशे से २ तोले तक॥

गुण—यह अत्यन्त वाजीकरण, कामोद्दीपक, स्तंभक; मूत्रकृच्छ्र; मूत्राघात; प्रमेह; खांसी; दमा, ज्वर; क्षयनाशक, वीर्य तथा क्षुधा वर्धक, पाण्डुरोग; अरुचि, श्लेष्म रोग नाशक तथा उदरविकार नाशक है।

(खूबचन्द चिकित्सा)

---

३०२ द्राक्षासव-(महत्)—नं० ६—बलवर्धक।

(पं० लक्ष्मणदत्त जी वैद्य, चन्दोसी)

विधि—मुनक्का १॥ सेर, अंगूर ऽ॥= तथा किशमिस, मुण्डी, बादाम गिरी, सेव, अर्क़ केवड़ा, अर्क़ गुलाब और अर्क़ वेदमुश्क प्रत्येक ५–५ छटांक, धाय के फूल, पिश्ता, चिरौंजी, गोला-नारियल और मखाने प्रत्येक २॥–२॥ छटाँक, गन्ने का रस १० छटांक, खांड ऽ३= तथा सोंठ, कालीमिरच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, सफेदजीरा, कालाजीरा, दोनों-मुसली, सेंमल की मुसली, छोटे गोखरू, बड़े गोखरू, तालमखाना,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शकाकुल-मिश्री, शतावर, उटंगन के बीज, कौंच के बीज, सफेदचन्दन, लालचन्दन, अगर, तगर, नागरमोथा, नेत्रवाला, चीता, आम्बाहल्दी, दारूहल्दी, मुलैठी, तज, दारचीनी, तेज-पात, छोटी-इलायची, बड़ी इलायची, नागकेसर, बंसलोचन, लौंग, जायफल, जावित्री, अकरकरा, असगन्ध, बिदारीकन्द, नीलोफर, विधारा तालीसपत्र, कंकोल, शीतलचीनी, चोबचीनी, उसवा, चिकनी सुपारी, कत्था; खस, गुलाब के फूल, कमलगट्टा, पखाख, पठानीलोध, मजीठ, स्यातरा (पित्तपापड़ा), चिरायता, कुटकी, कचूर, पटोलपत्र, गजपीपल, उन्नाव, कुलिजन, अंजीर, छोटी हरड़, अमलतासका गूदा, पीपलामूल, इन्द्रायन की जड़; धनिया; सौंफ, वायविडंग, कचनार की छाल, कुम्भेर की छाल, जामुन की छाल, बकायन की छाल; कुश की जड़, कांस की जड़, बेंगन की जड़, बेल की छाल; संभालू के बीज, भाँगरा, करंज-पंचाङ्ग, ब्राह्मी, शङ्खपुष्पी; रतनजोत, सहदेवी, मोरसिखा, फालसे की छाल; अनार की छाल, वरुण की छाल, शालपर्णी, पृश्नपर्णी, अरलू की छाल, अरनी की जड़; पाढ़ल की छाल, जवासे की जड़, सरफोंका, बहुफली, बड़ के कोंपल, गूलर की छाल, लिसौड़े, कमल के फूल, भंसीडे, नीबू की छाल, चारों प्रकार की वला (खिरेंटी आदि), दोनों पुनर्नवा, बाँसे की जड़, शीशम का बुरादा; नीम की छाल, गोंदनी की छाल, बड़ी सुपारी प्रत्येक एक-एक छटांक और कीकड़ की छाल दो छटांक; छुआरे ऽ।, कस्तूरी ८ रत्ती; दूध २॥ सेर और जल १। मन, कटने योग्य द्रव्यों को अच्छी तरह कूटकर, सबको एकत्र मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख मुद्रा कर, २० दिन बाद भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे और बोतलों में भरकर रख दे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS (USA)

मात्रा—आधे तोले से २ तोले तक।

गुण—दुर्बलता चाहे स्वाभाविक हो या किसी रोग के दूर होने पर उत्पन्न हुई हो, उसे शीघ्र नष्ट कर, भोजन भली भांति पचाकर रस, रक्तादि समस्त धातुओं की वृद्धि करता है। भूख को बढ़ाता; अरुचि, ज्वर, कास, श्वास, उदररोग, वातरोग तथा रक्तविकार नाशक है।

---

३०३ द्राक्षासव-(बृहत्)-नं० ७—बल, वीर्य वर्धक।

(श्रीमान् स्व० वैद्यराज लाला नारायणदास जी)

विधि—मुनक्का ५ सेर, किशमिस ३ सेर; छुआरे १॥ सेर; पिस्ते १। सेर, चिलगोजे १ सेर, त्रिफला ४० तोले; सेमल की मुसली १० तोले तथा सोंठ, कालीमिरच; पीपल, हल्दी, तज, छोटी इलायची; तेजपात और इमली के चिये ये प्रत्येक ४—४ तोले तथा कायफल, कुलफा, काली निसोथ; माजूफल, कमल-गट्टा, सपिस्ता; अमलतास का गूदा, अंजीर, चोबचीनी, अंकोल, अकबरी, बनपसा; देवदारु, नेत्रवाला, बालंगा; विधारा; धाय के फूल, बेलगिरी, सालममिश्री, गावजवाँ, वायबिडंग, काहू, लिसोड़े, बावची, शीतलचीनी, हरछार, सुपारी सादी, मोच-रस और सुपारी चिकनी प्रत्येक २-२ तोले तथा-केशर; अतीस, लोध, सिपारे, कौंच के बीज; धनियाँ, मुलैठी, तालमखाना; कचूर, पोहकरमूल, उटंगन के बीज, असगन्ध; मोथा, शकाकुल मिश्री; भारंगी, सतावर, बालाईकन्द, अगर, चव्य, बालछड़; जायफल, चित्रक; गजपीपल, जावित्री, गोखरू, बीजबन्द, नागकेशर, भांगरा; पीपलामूल, लौंग, पद्माख; अकरकरा, दार-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चीनी; हंसराज, काकड़ासिंगी, खूबकला, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, गुड़हल, खस; ईसबगोल, नीलोफर, कालीमुसली, सफेद मुसली, मजीठ, कासनी; सफेदचन्दन; लालचन्दन और कसेरू ये प्रत्येक एक-एक तोला; कस्तूरी ३ माशे; अंगूर का रस ६० तोले; अनार का रस १ सेर; शहद १। सेर; देशीपान १५०, हरी नारङ्गी का रस ५ सेर और स्वच्छ जल ४० सेर लेकर; काष्ठादिक औषधियां जवकुट कर लें और केशर, कस्तूरी अलग रक्खे, शेष सब द्रव्यों को, एक शुद्ध मटके में भर दे और जल भरकर पात्र का मुख बन्दकर, एक मास तक धान्य राशि में गाढ़ देवे, पश्चात् निकालकर, भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे। अर्क खींचते समय भवके की नलो में, केशर कस्तूरी की पोटली बाँध कर रख दे।

मात्रा—१ तोला। नित्य भोजनोपरान्त।

गुण—बल, वीर्यवर्धक, यक्ष्मा (क्षय), खांसी, कफ के लिये अति लाभदायक, जीर्णज्वर, प्रमेह, वीर्यक्षयजनित नपुंसकता नाशक, अग्निदीपक और क्षुधावर्धक है। शीघ्र ही अपना चमत्कारी प्रभाव दिखलाता है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

---

३०४ द्राक्षासव-नं० ८—(स्वकृत)—पाचक, अग्निवर्धक।

विधि—दाख (मुनक्का) ५ सेर लेकर, अच्छी तरह साफ़ कर, बीजों सहित कूट कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें घीकुआर (ऊपर का छिलका निकाल, अन्दर का गूदा) ५ सेर तथा शक्कर (शुद्ध मिश्री की) ५ सेर और धाय के फूलों का

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

चूर्ण आध सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, रोज धूप में रक्खे। १५ दिन बाद निकाल कर, खूब निचोड़ते हुये मोटे वस्त्र में छान लेवे और बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—शास्त्रोक्त द्राक्षासव के इसमें सब गुण मौजूद हैं। क्षुधावर्धक, दीपक, पाचक और पौष्टिक है।

---

३०५ द्राक्षासव नं० ६—रक्तस्वल्पतानाशक।

(वैद्यभूषण कौशिकजी आयुर्वेदाचार्य)

विधि—द्राक्षारस १॥ सेर, दाड़िमरस आध सेर, मौसम्बी (नारंगीभेद) का रस आध सेर, शहद आध सेर, सब को एक शुद्ध चिकने (घृत से चिकने किये हुए) मिट्टी के पात्र में डाल देवे, ऊपर से आध सेर फौलाद का चूर्ण, १ पाव सोनामक्खी का चूर्ण तथा चित्रक की जड़ की छाल, छोटी पीपल, सोंठ, काली मिरच, जीरा, अजवायन, दारचीनी, नागरमोथा, आमले, छोटी हरड़, सौंफ, पोदीना, धायके फूल और आलूबुखारे प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, तथा १॥ सेर जल और आध सेर मिश्री मिलाकर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् उसे खोलकर और छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—रक्ताल्पता (अनीमिया), मन्दाग्नि, अजीर्ण, शिरशूल आदि नाशक है।

(ग० योगमाला)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

द्राक्षासव नं० १०—देखिये, शिशुसंजीवन्यासव।

३०६ द्राक्षारिष्ट * नं० १—क्षय, कासादिनाशक।

विधि—मुनक्का २॥ सेर (साफ़ कर), २६ सेर जल में पकावे। ६॥ सेर जल शेष रहने पर, उसे छानकर ठंडा करले, और घृत से चिकने किये हुये मटके में भर उसमें १० सेर पुराना गुड़, (या मिश्री डाल सकते हैं) धायके फूलों का चूर्ण ३२ तोले (पाठ में धायके फूल नहीं लिखे हैं, किसी पाठ में धायके फूल मुनक्का से चौथाई भाग अर्थात् ५० तोले लेने को कहा है) वायविडंग, फूलप्रियंगु, पीपल, दारचीनी, बड़ी इलायची तेजपात, नागकेशर और कालीमिरच ये प्रत्येक ४-४ तोले चूर्ण कर मिलावे, और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे। १५ दिन में यह आसव तैयार होजाता है।

मात्रा—छोटे बच्चों को २० से ४० बून्द तक, बड़ों को १। तो० से २॥ तोले तक।

गुण—उरःक्षत, क्षय, खाँसी, दमा, गलरोग नाशक है। तथा यह कफ को निकालने वाला, फेफड़ों को साफ़ और पुष्ट करने वाला और बलवर्धक है। इसका प्रयोग दिन रात में ३-४

---

* द्राक्षा तुलार्धं द्विद्रोणे जलस्य विपचेत्सुधीः। पादशेषे कषाये च पूते शीते विनिक्षिपेत्॥ गुडस्य द्वितुलां तत्र त्वगेलापत्रकेशरम्। प्रियङ्गुमरिचं कृष्णा विडङ्गं चेतिचूर्णयेत्॥ पृथक्पलोन्मितैर्भागैस्ततो भाण्डे निधापयेत्। समन्ततो घट्टयित्वा पिबेज्जातरसं ततः॥ उरःक्षतं क्षयं हन्ति कासश्वासगलामयान्। द्राक्षारिष्टाह्वयः प्रोक्तो बलकृन्मलशोधनः॥

—शार्ङ्गधर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बार करना चाहिये। क्षय वाले रोगी को कुछ पथ्य ले चुकने के बाद इसे अवश्य पिलाना चाहिये। यह पाचक और रोचक भी है। निमोनिया पर यह उत्तम कार्य करता है। पुरानी खाँसी या कालीखाँसी पर द्राक्षारिष्ट २॥ तोले, शरबत बनपसा १ तो० और अर्कज़ूफ़ा १ तो० इन तीनों को मिला भोजन के पश्चात् सेवन करावे। जब वातिक कास बहुत ही तीव्र हो, १-१ मिनिट पर खाँसी आती हो, तब-द्राक्षारिष्ट १ तो०, कनकासव १ तो०, वासारिष्ट ६ माशे और शुद्ध अफीम आधी रत्ती, एकत्र मिश्रण कर शक्ति के अनुसार सेवन करावे। आमातिसार में द्राक्षारिष्ट के साथ सोंफ का अर्क मिला उचित मात्रा में, पथ्य के पहिले प्रातःसायं देवे।

नोट—मधुयुक्त द्राक्षारिष्ट नं० २ की अपेक्षा यह द्राक्षारिष्ट नं० १ किंचित् उष्ण गुणधर्मयुक्त है। छोटे बच्चों की कुकुरखाँसी पर यह विशेष, शीघ्र लाभदायक है। चेचक या माता के विकार में उष्णता या विकार के अन्त में जो अत्यधिक उष्णता, अशक्ति, छाती में पीड़ा, बड़े कष्ट से कफ का निकलना, या खांसते समय रक्त निकलना, वमन होना, अन्न का न पचना इत्यादि विकारों पर लाभदायक है, दस्त साफ़ होता है, क्षुधा बढ़ती है, और कृमिविकार भी दूर होजाता है। कास के कफ़ को पतला करने के लिये और फुफ्फुसप्रदाह की शान्ति के लिये यह विशेष उपयोगी है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३०७ द्राक्षारिष्ट * नं० २—अर्श, ग्रहणीविकारादि नाशक।

विधि—दाख (मुनक्का अच्छी साफ़ की हुई) ५ सेर लेकर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर क्वाथ जल शेष रहने पर, छानकर, ठंडा होने पर उसे घृत से चिकने किये हुये तथा चन्दन एवं अगर से धूपित मटके में भर, उसमें ५ सेर खांड, ५ सेर शहद, १३ छटाँक धायके फूलों का चूर्ण तथा कंकोल, लोंग, जायफल, कालीमिरच, दारचीनी, इलायची, तेजपात, नागके-शर, पीपल, चीते की जड़, चव्य, पीपलामूल और रेणुका (सम्हालू के बीज) प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर उसमें सुगंध के लिये थोड़ासा कपूर कपड़े की पोटली में बांध कर डाल देवे, तथा ५ दिन के बाद पुनः छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक।

गुण— अग्नि को प्रदीप्त कर ग्रहणी विकार को नष्ट करता।

---

* मृद्धीकायास्तुलामेकां चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् । द्रोणशेषे सुशीते च पूते तस्मिन्प्रदापयेत् ॥ तुले द्वे क्षौद्रखण्डाभ्यां धातक्याः प्रस्थमेवच । कंकोलकं लवङ्गं च फलं जात्यास्तथैवच ॥ पलांशकं च मरिचत्वगेलापत्र-केसरम् । पिप्पलीचित्रकंचव्यं पिप्पलीमूलरेणुके ॥ घृतभाण्डे विनिक्षिप्य चन्दनागरुधूपिते । कर्पूरवासितो ह्येष ग्रहण्या दीपनः परः ॥ अर्शसां नाशनेश्रेष्ठ उदावर्तस्य गुल्मनुत् । जठरकृमिकुष्ठानि व्रणानि विविधानि च ॥ अक्षिरोगशिरोरोगगलरोगांश्चनाशयेत् । ज्वरं हन्तिमहाव्याधिं पाण्डुरोगं सकामलाम् । मृद्वीकारिष्टाह्वयः प्रोक्तो बृंहणो बलवर्णकृत् ॥

—शार्ङ्गधर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

है। अर्श (बवासीर), उदावर्त, गुल्म, रक्तपित्त, उदरोग, क्रिरम; कोढ़, अनेक प्रकार के व्रण, नेत्ररोग, गलरोग, ज्वर, पाण्डुरोग और कामला का नाशक है। तथा वल, वर्ण एवं वीर्य की वृद्धि करता है।

ज्वर की हालत में, या अत्यन्त प्यास; कब्ज या दस्त की हालत में, या गर्भावस्था अथवा शिशुओं के कामला विकार में; अथवा मेदे से जो पीड़ा प्रारंभ होकर यकृत और नाभि तक फैल जाती है; उसके निवारणार्थ रोगी का बल देखकर; भोजनोंपरान्त, ३ माशे से दो तोले तक की मात्रा से, प्रातः सायं आवश्यकतानुसार सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

सगर्भा स्त्री को ६ वें मास में कभी २ योनि मार्ग से रक्तस्राव होने लगता है। प्रसव वेदना नहीं होती, गर्भ का सब रक्त निकल जाने से, उभरा हुआ पेट (गर्भ) पटक जाता है, बच्चा बाहर नहीं निकलता। स्त्री अत्यन्त दुर्बल हो जाती है, अरुचि बढ़ जाती है। फिर धीरे २ स्वयं गर्भाशय में रक्त का संचय होकर, गर्भ पुनः बढ़ता है और फिर रक्तस्राव होकर पूर्वदशा प्राप्त होती है। ऐसी हालत में, जब रक्त का संचय होने लगे, तब उसका स्राव होने के पूर्व ही इस आसव (अरिष्ट) का सेवन कराने से ७। ८ दिन में ही, प्रसववेदना होकर, सुखपूर्वक बच्चा बाहर हो जाता है। ऐसा अपना स्वानुभव श्रीयुत शिवशरण जी वर्मा भिषगाचार्य ने धन्वन्तरि में प्रकाशित कराया है।

नोट—इस योग को मृद्वीकारिष्ट, मृद्वीकासव, द्राक्षासवादि भी कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३०८ द्राक्षारिष्ट नं० ३—बालरोग नाशक।

(श्री० पं० अनन्तदेव जी शर्मा दीक्षित, वैद्यशास्त्री)

विधि—दाख (मुनक्का, अच्छी साफ़ की हुई) आधा सेर तथा आम की छाल; जामुन की छाल और बेलगिरी प्रत्येक एक-एक पाव तथा सेमल की छाल; गिलोय; बबूल की छाल; मीठा चिरायता; पित्तपापड़ा ये प्रत्येक १०-१० तोले; रक्तचन्दन; पद्मकाष्ठ; नीम की छाल और धनिया ये प्रत्येक ५-५ तोले; लेकर जवकुट कर २४ सेर जल में पकावे। ८ सेर शेष रहने पर; मल कर छान लेवे और एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-२॥ सेर मिश्री तथा काकड़ासिंगी, अतीस, मुलैठी, इन्द्रजौ, नागरमोथा, बेलगिरी, छोटी इलायची, जायफल, लौंग, सफेद जीरा, छोटी हरड़, सोंठ, मोचरस, देशी कपूर प्रत्येक २-२ तोले और धाय के फूलों का चूर्ण ३० तोले मिला, पात्र का मुख बन्द कर, १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् फलालेन के कपड़े में छानकर, काम में लावे।

मात्रा—२ साल के बालक को अवस्थानुकूल १ माशे से ३ माशे तक, माता के दूध या पानी में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—सब प्रकार के बालकों के-ज्वर, अतिसार, अजीर्ण, अफारा, मन्दाग्नि, अरुचि, दुर्बलता आदि के लिये यह अत्यन्त उपयोगी और रामबाण है। दांत भी सुगमता से निकल आते हैं। बालशोष रोग में भी आशातीत लाभ होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ध

३०९. धत्तूरबीजासव नं० १—(स्वकृत)—वेदनाशामक आदि गुणयुक्त।

विधि—धतूरे के बीज ८ तोले लेकर मोटा चूर्ण कर, उसमें रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले मिला, काँच के पात्र में भर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द करके रख दे। और दिन में एक बार रोज़ हिला दिया करे। ८ दिन बाद फलालैन द्वारा छानकर, सब अर्क निचोड़ लेवे। यदि ५० तोले से कम उतरे तो स्प्रिट और मिलाकर पूरा ५० तोले कर, बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—५ बून्द से १५ बून्द तक।

गुण--दोष—यह शीघ्र वेदना शामक, स्तम्भक, ज्वरघ्न और मादक है। स्नायु को शिथिल करता है तथा श्वासमार्ग के विकारों पर अत्यन्त लाभदायक है। इसकी क्रिया ,बेलेडोना' या अफ़ीम की क्रिया जैसी ही शरीर में होती है। इसकी १० बून्दों का कार्य आधी रत्ती अफीम के कार्य जैसा होता है। इसे अंग्रेजी में 'टिंक्चर स्ट्रामोनियम्' कहते हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३१० * धत्तूरबीजासव-नं० २—कास, शूलादि नाशक ।

विधि—धतूरे के बीजों का चूर्ण १ भाग, मद्य (७० से ६० प्रतिशत वाला) ४ भाग में मिला, बोतल में भर अच्छी तरह मुख बन्द कर, ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवें। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ बूँद से १५ बूँद तक।

गुण—कास; श्वासादि रोगों पर निश्चित प्रभाव रखता है। इसे यदि अहिफेनासव और विजयासव के साथ मिलाकर दिया जाय तो श्वास का दौरा तत्काल कम हो जाता है। अनेक प्रकार के शूल रोग, अनिद्रा, वेदना, ज्वर, ग्रहणी, अतिसार, उन्माद, अपस्मार और नपुंसकत्व आदि रोगों में भी इसका सेवन लाभदायक है। (मद्यासव)

धत्तूरासव एवं अरिष्ट—देखिये, कनकासव एवं अरिष्ट।

धन्याक (धनिया) आसव—देखिये, धान्यकाद्यासव।

३११ धवपुष्पासव—(स्वकृत)—प्रमेह नाशक।

विधि—धाय के फूल १ सेर लेकर, कूटकर, ३२ सेर जल में पकावे। ८ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होने पर उसमें-३ सेर शहद, दारचीनी, छोटी इलायची और पत्रज प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले; हल्दी का चूर्ण १२ तोले और शिलाजीत २० तोले मिला; पात्रका मुख अच्छी तरह बन्दकर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

मात्रा—१ से २॥ तोले तक।

गुण—सब प्रकार के प्रमेह को दूर करता है।

---

३१२ धवासव—(स्वकृत) प्रदर नाशक।

विधि—धवई (धाय) की जड़ और फूल एकत्र ६० तोले लेकर, जवकुट कर २० सेर जल में पकावे। अष्टमांश शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होजाने पर उसमें लोध्र का चूर्ण ५ तोले और शहद १ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—रक्तप्रदर तथा त्रिदोषज प्रदर को शीघ्र ही नष्ट करता है।

धान्यासव—देखिये, आमलकासव।

३१३ धात्र्यारिष्ट *—पाण्डु कामलादिनाशक।

विधि—आमले २००० दो हजार (अच्छे बड़े पके हुये) लेकर; कूटकर उनका रस निकाल ले जितना स्वरस निकले,

---

* धात्रीफल सहस्रे द्वे पीडयित्वा रसं भिषक्। क्षौद्राष्टभागं पिप्पल्याश्चूर्णार्धं कुडवान्वितम्। शर्करार्धतुलोन्मिश्रं पक्वं स्निग्धघटे स्थितम्। प्रपिबेत्पाण्डुरोगार्त्तोजीर्णे हितमिताशन:॥ कामलापाण्डुहृद्रोगवातासृग्विषमज्वरान्। कासहिक्कारुचिश्वासानेषोऽरिष्टः प्रणाशयेत्।

—चक्रदत्त।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसका आठवाँ भाग शहद, १० तोले पीपल का चूर्ण तथा ३ सेर १० तोले खांड मिला, सब को आग पर जोश देकर, ठंडा करके, चिकने मटके में भर देवे और उसका मुख अच्छी तरह बन्दकर १५ दिन तक रक्खा रहने दे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा— २ तो० से ५ तोले तक।

गुण—पाण्डुरोग, कामला, हृदय के रोग, खाँसी, वातरक्त; विषमज्वर, हिचकी, अरुचि तथा श्वास रोग नाशक है।

नोट—औषध पचने के पश्चात् यथोचित् मात्रानुसार पथ्य भोजन करना चाहिये। इस अरिष्ट की विधि में आग पर जोश देने के लिये कहा है किन्तु हमारी राय से इसमें शहद मिलाने के पहले केवल आमले के स्वरस को एक बार जोश देकर, ठंडा होजाने पर उसमें शहद मिलाना अच्छा होता है। चरक संहिता में 'पक्व' के स्थान में 'पत्तं' पाठ है।

—सम्पादक।

---

३१४ धान्यकाद्यासव—(स्वकृत) अतिसार नाशक।

विधि—धनिया दो सेर, अलसी, बेलगिरी, और महुये के फूल प्रत्येक १-१ सेर, लेकर; जवकुट कर, १३ सेर जल में भिगोकर, शुद्ध चिकने मटके में भर; उसमें मिश्री ४ सेर, धाय के फूल १३ छटाँक और शहद १० सेर मिला अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—बच्चों को २ माशे से १ तोले तक और बड़ों को ४ तोले तक। दिन में ४।५ बार।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

गुण—बच्चों को जो गर्मी के कारण बार २ दस्त आते हैं, उसकी शान्ति होती है। बड़ों की संग्रहणी और अतिसार व्याधि पर भी यह लाभदायक है।

---

३१५ धान्यकाद्यरिष्ट *—ज्वर नाशक।

विधि—धनिया, खस और नागरमोथा प्रत्येक ४-४ तोले, पद्माख और कूठ प्रत्येक ८-८ तोले; नीम की छाल ४ तोले, गिलोय ३२ तोले और त्रिफला (हरड़; बहेड़ा, आमला) ३२ तोले, सब को जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। १ सेर १० छटाँक जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर छान लेवे। पश्चात् उसमें शहद १३ छटाँक, और दारुहल्दी का चूर्ण ४ तोले मिला, अच्छी तरह मन्थन करके, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक।

गुण—सब प्रकार के ज्वरों का नाशक है। पित्त शामक तथा ग्रीष्म ऋतु में जो लू लग जाती है उसे शीघ्र दूर करता है।

धात्र्यासव—देखिये, धत्रासव।

---

* धान्यकोशीरमुस्तानां पलमेकत्र कारयेत्। द्विपलं पद्मकं कुष्ठं कुर्यान्निम्बं तदर्धकम्॥ सर्वांशेन ततो दद्याच्छिन्नाङ्गाञ्च फलत्रिकम्। जलद्रोणद्वयं दत्वा षोडशांशेन संहरेत्॥ पलं दार्व्यास्ततस्तस्मिन् शीते पूते भिषग्वरः मधुनः षोडशपलं दत्वा सर्वं विमन्थयेत्॥ स्थापयेद्घृतभाण्डे तु मासादूर्ध्वं प्रयोजयेत्। धान्यकादिररिष्टोऽयं सर्वज्वर विनाशनः॥ —गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

न

३१६ नपुंसकसंजीवन्यासव—स्तंभक, कामोद्दीपक।

(पं० कुन्दनलालजी वैद्य, पैंजनिया, बिजनौर)

विधि–मुनक्का, मुंडी, आंवला प्रत्येक १०–१० तोले पोस्त के डोडे, छरीला; जायफल, अजवायन, खस, तज; तेजपात, नागरमोथा, कचूर, सफेदचन्दन, लालचन्दन, तुख्मबालिंगा, कालीमिरच, सफेदमिरच, सफेदमूसली, स्याहमूसली, सेंमल की मुसली, बहमन सुर्ख, तोदरी सफेद, इलायची छोटी, इलायची बड़ी, इन्द्रजौ, सौंफ, पिस्ते, चिलगोजे, उन्नाव, गुलाबके फूल; केवड़े की जड़, छतरावल, भांग, जावित्री, शीशम, कावुरादा देवदारु, ईसबगोल, गिलोय, धनिया, नीमके फूल, गोखरू बड़े; बीजबन्द, उटंगन के बीज, पठानीलोध, सुपारी रूमीमस्तगी; कसेरू, सिमलौटे, सुरंजानशीरी; तगर; और आबरेशम ये प्रत्येक ५–५तोले। अफीम ४तोले तथा दालचीनी, सालबमिश्री, सालब पंजेकी, और सालब चचूंदर प्रत्येक ३–३ तोले; छुहारा, बादाम, किशमिश, तालमखाना प्रत्येक १० तोले, ईसबगोल की भूसी १५ तोले, गूलर का दूध १० तोले, चीनिया गोंद ५ छटाँक, मिश्री ८ सेर और शहद ४ सेर लेकर कूटने योग्य द्रव्यों को जव कुटकर, सब को एकत्र मिला, ३० सेर

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

जल डालकर, एक शुद्ध मटके में भर रक्खे, मुख मुद्राकर १५ दिन रक्खा रहने देवे। पश्चात् जालीदार कपड़े में छानकर चौड़े मुख वाली शीशियों में भरकर रख दे। संपादक।

मात्रा—१से २ तोले तक। अनुपान-दूध। संपादक।

गुण—अत्यन्त कामोद्दीपक, स्तम्भक, नपुंसकता नाशक, वाजीकरण; मदकारक, वात कफ के विकार और अतिसार का नाशक है।

(आ० संग्रह)

नागफनी आसव—देखिये, कन्थार्यासव।

३१७ * नारंग्यासव—अजार्णादि नाशक।

विधि—नारङ्गी (संतरे) के छिलके जवकुट कर, उसमें चौगुनी मद्य (७० से ८० प्रतिशत वाली) मिला, कांच के या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, मज़बूती से मुख मुद्राकर, ७ दिन रक्खा रहने देवे। बीच २ में हिलाते रहना चाहिए। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा माशा से ८ माशे तक।

गुण—अग्निमांद्य, अजीर्ण, अरुचि और अम्लपित्तादि उदर रोगों पर लाभदायक है। इसे कटुकासवादि अग्निवर्धक औषधियों के साथ मिलाकर सेवन कराना चाहिये।

(मद्यासव)

नोट—इसे अंग्रेजी में टिंक्च्यूरा आरेनशिया कहते हैं। संतरों के सूखे छिलकों का चूर्ण ५ तोले में रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मिला, उक्त विधि से बनावे। मात्रा—६० बूँद से १२० बूँद तक। गुण—उपर्युक्तानुसार।

—सम्पादक।

---

३१८ नारिकेलासव + —वाजीकरण, क्षयादि नाशक।

विधि—नारियल का जल १३ सेर, ईख का रस ६॥ सेर, सेंमल का रस १३ छटांक, दशमूल (सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी, गोखरू, बेल की जड़, सोनापाठा, कुंभेर, पाढल और अरणी की जड़) का क्वाथ (स्वरस के अभाव में) १३ छटाँक, तथा—दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर; इन चारों का समभाग मिश्रित चूर्ण १३ छटाँक और धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, कस्तूरी ४ माशे; नागकेशर, तगर, सफेदचन्दन, लौंग प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले लेकर, सब को एकत्र मिला, घृत से चिकने किये हुए मटके में भरकर, मुख मुद्राकर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रखदे।

+ नारिकेलोदकं चैव द्रोणमात्रं प्रदापयेत्। द्रोणार्धं रसमिक्षोश्च रसप्रस्थं तु शाल्मलेः। दशमूलरसस्यापि प्रस्थमात्रं तथैव च॥ घृतभाण्डे विनिक्षिप्य मध्ये चूर्णं निवेशयेत्॥ चातुर्जातकधातक्योः पलानि खलु षोडश। शाणमात्रां च कस्तूरी केशरं तगरं तथा॥ चन्दनं देवपुष्पं च पलमात्रं पृथक् पृथक्। मासादूर्ध्वंपिबेच्चाशुंरूपेकामसमो भवेत्॥ वृद्धोऽपि तरुणीं गच्छेत्षण्डोपि पुरुषायते। वलीपलितसंत्यक्तः शतायुश्च भवेन्नरः॥ नारिकेलासवः प्रोक्तः शम्भुना परमेष्ठिना।

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नोट—उक्त विधि में, कस्तूरी को आसव तैयार हो जाने के बाद मद्य या रेक्टिफाइड स्प्रिट में घोल कर मिलाना चाहिए।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक। अनुपान-दूध और शक्कर अथवा शहद मिलाकर सेवन करे।

गुण—अत्यन्त वाजीकरण, कामोद्दीपक, नपुंसकता नाशक है। इसके सेवन से शरीर की शिथिलता, झुर्रियाँ, बालों का सफेद होना आदि रोग दूर होकर कामदेव-सदृश रूप होजाता है, वृद्ध पुरुष भी युवा के समान युवती समागम कर सकता है। इससे निश्चय ही आयुष्य की वृद्धि होती है।

---

३१९ * निम्बकासव नं० १—रक्तविकार नाशक।

विधि—नीमके वृक्ष का घनसत्व १ भाग, मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) ५ भाग मिला, बोतल में भर, मज़बूत काग लगाकर, ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख लें।

मात्रा—१ माशा से ४ माशे तक।

गुण—अनेक प्रकार के कुष्ठ, रक्तविकार, चर्मरोग और फिरंग, उपदंश में, इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है। उपरोक्त रोगों में लाभ करने वाली अन्य औषधियों के साथ मिलाकर इसका प्रयोग करना चाहिये।

(मद्यासव)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३२० निम्बकासव नं० २—ज्वरनाशक ।

विधि—नीम के पत्ते २० तो० गिलोय के पत्ते (अभाव में हरी गिलोय) १० तो०, करंज की मींग ३ तो०, चिरायता ५ तो०, अदरख २ तो०, कालीमिरच १ तो० सबका चूर्णकर मद्य (रेक्टिफाइडस्प्रिट) ४० तोले में मिला, बोतल में भर देवे और मजबूत डाट (काग) लगाकर, ७ दिन तक धूप में रक्खे प्रतिदिन बोतल को अच्छी तरह हिला दिया करे । पश्चात् नितरा हुआ अर्क छानकर शीशियों में भरकर रख दे ।

मात्रा-५ बूँद से ६० बूँद तक। अवस्थानुसार तथा बालकों को अपनी बुद्धि के अनुसार, जल में मिलाकर सेवन करावे ।

गुण—समस्त प्रकार के ज्वरों पर उत्तम लाभदायक है ।

(सिद्धप्रयोग)

---

३२१ निम्बकासव नं० ३—अर्श आदि नाशक ।

(वैद्यराज पं० शालिग्राम जी शर्मा)

विधि—नीम की अन्तर्छाल और हल्दी प्रत्येक १-१ सेर लेकर तथा कूट पीसकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें—१६ सेर जल, १ सेर शहद और १ सेर घीकुआर का रस मिलावे । पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक अनाज के ढ़ेर में दवाकर रक्खे । फिर निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ५ तोले तक । प्रातः सायं ।

गुण—बवासीर, रक्तविकार तथा कमजोरी नाशक है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

निम्बकासव नं० ४—देखिये, पारिभद्रासव ।

३२२ निम्बकारिष्ट नं० १—श्वास नाशक ।

(श्री वैद्य त्रिलोकीनाथजी शास्त्री)

विधि—जितना होसके उतने ही पुराने नीम की जड़ की छाल ५ सेर लेकर, जवकुट कर, २० सेर जल में पकावे । ५ सेर क्वाथ-जल शेष रहने पर, छानकर, काली बोतलों में एक २ पॉड (४० तो०) भर कर, २१ दिन के लिये धूप में रक्खे । पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रख दे । बस अरिष्ट तैयार होजाता है ।

मात्रा—१ तोला, समभाग शहद मिलाकर सेवन करना चाहिए ।

गुण—श्वास रोगी पर इसका बहुत ही अच्छा असर होता है । पथ्य में सिर्फ मूंग की दाल और गेंहू की बिना चुपड़ी रोटी देनी चाहिये । और संयम से रहना चाहिए ।

(धन्वन्तरि)

---

३२३ निम्बकारिष्ट नं० २—ज्वर नाशक ।

(कविराज श्री जगन्नाथप्रसादजी गुप्त, वैद्यशास्त्री)

विधि—५० वर्ष से अधिक के पुराने नीमवृक्ष की छाल १२॥ तो०, चिरायता २॥ तो०, लालचन्दन १ तो०, अतीस ६ माशे, पित्तपापड़ा ६ माशे, जीठ ६ माशे, कुटकी १। तो०, इन्द्रजौ ६ माशे, खस की जड़ ६ माशे, मोथा (नागरमोथा) ३ माशे, कल्पनाथ २॥ तो०, सनाय के पत्ते ४ तो०, गिलोय १। तो०, सोंठ १ तो०, पीपल १ तो०, कंटकारी (कटेरी) १ तो०,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पित्तपापड़ा १ तो०, हरँ २ तो० और अनन्तमूल २ तो०, लेकर सब को जबकुट कर ८ सेर जल में क्वाथ पकावे । १ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर कपड़े से छान, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें पुराना गुड़ १० छटाँक तथा काकड़ासिंगी १ तो०, चीते की जड़, कालीमिरच, नागरमोथा, अजवायन प्रत्येक ६-६ माशे और छोटी इलायची ३ माशे सब का चूर्ण कर मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह वन्द कर, १ मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे। (इसका नाम 'ज्वरवज्रारिष्ट' है। —सम्पादक।

मात्रा—२ तो० दूने जल में मिला; प्रातः सायं पीवे ।

गुण—सब प्रकार के ज्वरों को शीघ्र नष्ट करता है।

(अ० योगमाला-सिद्धप्रयोगांक)

---

३२४ निम्बुकासव—(निम्बुकद्राव)—अजीर्णादि नाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—क़ागजी नीबू का रस १ सेर; कुमारी (घीगुआर) का रस १ सेर और लहसुन का रस १ पाव; तीनों रसों को मिलाकर; शुद्ध मिट्टी के पात्र में भर; उसमें सुहागे की भस्म ८ तो० कौड़ी की भस्म ८ तो० नवसादर; जवाखार; शंखभस्म, सेंधानमक और कलमीसोरा प्रत्येक का महीन चूर्ण ४-४ तोले; अच्छी तरह मिलाकर, पात्र का मुख यथायोग्य रीति से सन्धान कर; १६ दिन तक भूसे में दबा कर रक्खे । पश्चात् निकाल कर, बोतलों में, छानकर भर देवे।

मात्रा—३ माशे से २ तो० तक। जल मिलाकर, भोजन के बाद सेवन करावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

गुण—अजीर्ण, अग्निमांद्य, यकृतविकार, प्लीहा-वृद्धि, उदरशूल आदि में लाभप्रद है।

(अ० चि० संग्रह)

---

३२५ निम्बुकासव नं० २—प्लीहा विकारनाशक।

(वैद्यवर अचलानन्दजी द्वारा प्रेषित)

विधि—३०० कागज़ी नीबुओं का रस शुद्ध कोरी मटकी में डाल, उसमें कालानमक ८ छटाँक और पीली कौड़ियाँ लगभग ५० पीसकर मिला देवे। फिर उस मटकी का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ऊंचे स्थान में या सींके पर लटका देवे। १४ दिन के बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—अग्निबलानुसार-१ तोला से २॥ तोले तक। प्रातः सायं सेवन करावे।

गुण—बढ़ीहुई प्लीहा (तिल्ली) १४ दिन के सेवन से अवश्य अच्छी होजाती है।

---

३२६ निम्बुकासव नं० ३—क्षुधावर्धक, उदरवातहर।

विधि—कागज़ी नीबू का रस १ सेर निकाल, शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें अमलतास का गूदा आध सेर, सैंधा नमक १ पाव, मुनक्का (दाख) और कालानमक ५-५ तोले, तथा छोटी पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीते की जड़, सोंठ, कालीमिरच, सुहागे का फूल, और निशोथ प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, सफेदजीरा ३ तो० कालाजीरा ३ तो०, जवाखार १ तोला और भुनी हुई हींग ३ माशे मिलाकर, पात्र का मुख बन्द

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कर १५ दिन के बाद छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से २ तोले तक।

गुण–इससे भूँख खूब लगती है, दस्त साफ़ आता है। पाचक एवं स्वादिष्ट है।

(एक प्राचीन पुस्तक से)

---

३२७ निम्बुकासव नं० ४–हैजानाशक।

(श्री राजवैद्य रामगोपालजी मिश्र, वैद्यशास्त्री)

विधि–कागजी नीबू का रस १ सेर, अदरख का रस १ सेर, दोनों को छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें हींग भुनी हुई २ तोले, सोंचर नमक ५ तोले तथा–सेंधानमक; वायविडंग; सोंठ; कालीमिरच, और छोटीपीपल प्रत्येक का चूर्ण १–१ तोला, मिला, मुख बन्द करके रख दे। ७ दिन के बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ माशे से १ तोला तक। रोग के बलानुसार बार २ देवे।

गुण—दस्त, कै को रोककर मूत्र को खोल देता है, अग्नि को प्रदीप्त करता है, तथा नानाप्रकार की उदर व्याधियों का नाशक है।

निम्बुकासव नं० ५–देखिये, जम्बीरासव।

३२८ निम्बुकत्वचासव—(स्वकृत)–पाचक।

विधि–नीबू के छिलके ८ तोले, जवकुट कर, उसमें ५० तोले

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला, बोतल में भर मुखमुद्रा कर ३ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—३० बूँद से १२० बूँद तक।

गुण—पाचक तथा रक्तपित्त, अतिसार, वमन और पित्त-ज्वर नाशक है।

---

३२९ निर्गुण्ड्यासव—(स्वकृत) अशक्ति नाशक।

विधि—निगुंण्डी (संभालू) की जड़ की छाल १ सेर लेकर, जवकुट कर, ८ सेर जल में पकावे, २ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ४ सेर शहद और २० तोले धाय के फूलों का चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक धानों के ढेर में दबा रहने दे। पश्चात् उसे निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। अनुपान-तक्र (मठा) या गोमूत्र अथवा शुद्ध जल के साथ।

गुण—शरीर में बल, वीर्य, आयु, मेधा और दृष्टिशक्ति की वृद्धि होती है तथा शरीर की झुर्रियाँ, बालों का सफेद होना आदि वृद्धावस्था की शिकायतें दूर हो जाती हैं। यह एक उत्तम रसायन है। इसे हमने 'वैद्य' के एक लेख के आधार पर बनाया था, पूर्ण लाभदायक सिद्ध हुआ। —सम्पादक।

निशोथासव—देखिये, त्रिवृत्तासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३३० नीलोत्पलासव—(स्वकृत)—पीड़ा निवारक ।

विधि—नीलकमल (नीलोफर) के फूल २ सेर, ८ सेर आकाश जल में २४ घण्टे तक भिगो रक्खे । पश्चात् अच्छी तरह मसलते हुए, मोटे स्वच्छ वस्त्र से छानकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें-४ सेर मिश्री, ५ सेर शहद और १ सेर धाय के फूलों का चूर्ण मिला, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक ।

गुण—पित्त प्रकोप को शान्त करता है तथा स्त्री की गर्भ-पात पीड़ा को दूर कर बल उत्पन्न करता है ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

प

३३१ पञ्चतृणासव—(स्वकृत) मूत्र विकार नाशक ।

विधि—पंच तृणों (कुश, कांस, दर्भ, शर, और गन्ना) की जड़ कुल २॥ सेर (प्रत्येक की जड़ आध २ सेर), हल्दी, दारु-हल्दी, आँवला, पाषाणभेद, बांसे की जड़ की छाल और अगर प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, मुनक्का १ सेर, शहद २॥ सेर और मिश्री ५ सेर, एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें २६ सेर जल मिला, अच्छी तरह हिला देवें, मुख मुद्राकर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। ५ या ६ दिन में इसे हिलाते रहना चाहिए। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—मूत्रदोष (मूत्रकृच्छ्र, बहुमूत्र, प्रमेहादि) तथा रक्त-पित्त के विकार नष्ट होते हैं। उत्तम पित्तनाशक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३३२ पञ्चमूत्रासव *—वातव्याधि नाशक ।

विधि—बकरी, गाय, सुरागाय (अभाव में भैंस का मूत्र लेवे, 'सैरभीणां' ऐसा भी पाठ है), गधी तथा ऊँटनी प्रत्येक का मूत्र ४-४ तोले लेकर, एक शुद्ध चिकने घड़े में भरकर, उसमें बच, पपीता (अरण्डखरबूजा), बड़ी इलायची, लहसुन और लोंग का चूर्ण प्रत्येक २-२ तोले तथा वायविडंग, सोंठ, कालीमिरच और पीपल प्रत्येक का चूर्ण ६-६ तोले और हरड़ का चूर्ण ४ तोले, मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, चूल्हे के सामने, जमीन में दबा देवे। ७ दिन के पश्चात् निकाल कर काम में लावे। यह आसव गाढ़ा होता है।

मात्रा—२ से ६ माशे तक। २ तोले पानी में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—तिल्ली, विकृतवायु, कफरोग तथा ८० प्रकार के वात रोगों का नाशक है।

---

* अजागोसुरभीणां च चतुःकर्षं खरोष्ट्रयोः ।
मूत्रं संग्राह्य कुम्भेच स्थाप्य चूर्णं प्रदापयेत् ॥
वचाया वातकुम्भस्य लशुनस्यैलया सह ।
लवङ्गस्यापि प्रत्येकं पलार्द्धं क्रमिनाशनः ॥
व्योपस्यापि पलंसार्द्धमभयैकपला मता ।
चुल्यग्रे वासरान् सप्त निक्षिप्याशु समुद्धरेत् ॥
प्लीहोदरहरं दिव्यं मूढवात कफापहम् ।
अशीतिवातशमनं पञ्चमूत्रासवं विदुः ॥

—गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

पञ्चसायकासव—देखिये, द्राक्षासव नं० २।

३३३ पत्रांगासव *—प्रदरादि नाशक।

विधि—पतंग, खैरसार, बांसा, सेमल के फूल, खरैंटी, शुद्ध भिलावे, दोनों प्रकार की सारिवा (अनंतमूल), गुडहल की कलियाँ, आम की गुठली, दारुहल्दी, चिरायता, पोस्त के डोडे, जीरा, अगर, रसौत, वेलगिरी, भांगरा, दारचीनी, केशर और लौंग का चूर्ण प्रत्येक ४–४ तोले और जल २६ सेर, एकत्र कर एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें—१। सवा सेर मुनक्का, १३ छटाँक धाय के फूलों का चूर्ण, ५ सेर चीनी और २॥ सेर शहद मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१। तोला से २॥ तोले तक।

गुण—वेदनायुक्त अत्यन्त बढ़ा हुआ रक्तप्रदर तथा श्वेत· प्रदर, ज्वर, पाण्डु, सूजन, मन्दाग्नि और अरुचि को नष्ट करता है।

---

* पत्राङ्गं खदिरं वासा शाल्मली कुसुमं बला। भल्लातकं सारिवे द्वे जपाकुसुममस्फुटम् ॥ आम्रास्थि दार्वी भूनिम्ब आफेनफलजीरकम्। लोहं रसाञ्जनं बिल्वं केशराजं त्वचं तथा ॥ कुंकुमं देवकुसुमं प्रत्येकं पलसम्मितम्। सर्वं सुचूर्णितं कृत्वा द्राक्षायाः पलविंशातिम् ॥ धातकीं षोडशपलां जलद्रोणद्वये क्षिपेत्। शर्करायास्तुलां दत्वा क्षौद्रस्यार्धतुलां तथा ॥ एकीकृत्य क्षिपेद्‌ भाण्डे निदिध्यान्मासमात्रकम्। हन्त्युग्रं प्रदरंश्वेतमरुणञ्च सवेदनम्। ज्वरं पाण्डु तथा शोफं मन्दाग्नित्वमरोचकम् ॥

—भैषज्यरत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३३४ पनसासव—(स्वकृत)—रक्तस्राव हारक।

विधि—कटहल की जड़ ५ सेर लेकर, जवकुट कर १३ सेर जल में पकावे। ६ सेर जल शेष रहने पर और छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर दे। ठंडा होने पर उसमें—शहद २॥ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटांक और मिश्री २ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, २० दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। कांजी या मांड के साथ सेवन करावे।

गुण—अत्यन्त पीड़ायुक्त रक्तप्रदर को शीघ्र दूर करता है।

परूषकासव—देखिये, फालसासव।

३३५ पर्णबीजारिष्ट—(अजूवारिष्ट)—प्लीहा, यकृत विकारादिनाशक।

(श्री पं० अनन्तदेव जी शर्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—अजूवा पत्र *१ सेर को कुचल कर, ५ सेर जल में पकावे। २॥ सेर शेष रहने पर, मलकर छान लेवे, और शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ३ पाव (६० तो०) शहद, धाय के

---

* इस पौधे के पत्र ही उसके बीज होते हैं। पत्ता सुंदर, दळदार, कंगूरेदार होता है, इसे इधर आम्वटा, धन्वन्तरि पत्र कहते हैं। पत्र को सरदीली भूमि में, जरा तिरछाकर गाढ़ देने से, इसके कंगूरों से शाखायें अंकुरित होकर बढ़ने लगती हैं। इसे अजूवा भी कहते हैं। यह सदैव हरा भरा रहता है। बाग बगीचों में अकसर लगाया जाता है।

—सम्पादक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फूल १० तोले तथा लौंग, जायफल, जावित्री, इलायची सौंठ, कालीमिरच और छोटी पीपल प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला मिला, पात्र का मुख बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। प्रातः सायं।

गुण—प्लीहा, यकृत, गुल्म, वायुगोला, अफ़ारा, अजीर्ण, मन्दाग्नि, अरुचि, शूल आदि पर रामबाण है।

(धन्वन्तरि-बूटीचित्राङ्क)

---

३३६ पर्पटाद्यारिष्ट *—पांडु, उदर रोगादिनाशक।

विधि—पित्तपापड़ा (स्यातरा) ५ सेर लेकर, कूटकर, १-मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा करके, शुद्ध चिकने मटके में भर कर, उसमें १० सेर गुड़, १३ छटाँक धायके फूलों का चूर्ण तथा गिलोय, नागरमोथा, दारुहल्दी, देबदारु, कटेरी, धमासा, चव्य, चीते की जड़, सोंठ, मिरच, पीपल; और वायविडंग का चूर्ण प्रत्येक ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, एक मास तक सुर-

---

* पर्पटं तुलामेकां चतुर्द्रोणे जले पचेत्। क्वाथे पादावशेषे च शीते पलशतद्वयम् ॥ दद्याद्गुडस्य धातक्याः पलषोडशिकामता। गुडूची मुस्तकं दार्वी दारुव्याघ्री दुरालभा ॥ चव्यं चित्रकमूलं च त्रिकटु क्रिमिनाशनः। सर्वाण्येतानि संचूर्ण्य पलांशेन विनिक्षिपेत् ॥ स्थापयित्वा ततो भाण्डे मासादूर्ध्वं पिबेदमुम्। पाण्डुगुल्मोदराष्ठीला कामलाञ्च हलीमकम् ॥ प्लीहानं यकृतं शोथं सर्वञ्च विषमज्वरम्। एषोऽरिष्टो निहन्त्याशु वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥

—भैषज्यरत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स्थित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण-पाण्डुरोग, गुल्म (पेटका गोला), उदररोग, अष्ठीला; कामला, हलीमक, तिल्ली, यकृत (जिगर की व्याधि); सूजन तथा सब प्रकार के विषमज्वरों का नाशक है।

---

३३७ पलाण्डुवासव—नं० १—(स्वकृत)—बालरोग नाशक।

विधि—प्याज का रस १ सेर निकाल, अच्छी तरह छानकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भर उसमें १ पाव (२० तोले) ब्रान्डी (शुद्ध मद्य) मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर; ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१० से ३० बूंद या ६० बूंद तक। अवस्थानुसार बालक को, माता के या गाय के अथवा बकरी के दूध में मिलाकर पिलावे।

गुण——बालकों का पसली या डब्बे का रोग शीघ्र ही दूर होजाता है। बालशोष (सूखा) रोग पर भी लाभदायक सिद्ध हुआ है। यह बड़ों को ६० बूंद की मात्रा में जल या दूध में मिला कर देने से कामशक्ति को जागृत करता है। हैजे-पर भी यह लाभदायक है।

---

३३८ पलाण्डुवासव-नं० २—(स्वकृत)-विशूचिकाहर।

विधि—प्याज का रस, अपामार्ग (ओंगा, या चिरचिटा) का रस और शहद तीनों समभाग लेकर, चीनी मिट्टी के पात्र

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

में भर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, एक मास तक जमीन में गाढ़कर रक्खे। पश्चात् निकाल कर, छान लेवे और शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। समभाग शीतल जल मिला कर सेवन करे।

गुण—हैजे की प्रथम और द्वितीयावस्था में पूर्ण लाभकारी है।

नोट—'धन्वन्तरि' में प्रकाशित वैद्यभूषण कविराज रामप्रसाद जी के एक प्रयोग के आधार पर हमने इस आसव को बनाकर, बहुत कुछ सफलता प्राप्त की है। इसे 'विषूचिकान्तकासव' भी कह सकते हैं।

---

३३९ पलाशमूलासव—प्रमेह, मधुमेहादि नाशक।

विधि—पलाश की जड़ की छाल के १ भाग स्वरस में चतुर्थ भाग मद्य (रेक्टिफाइडस्प्रिट २० तोले के साथ स्वरस १ सेर) मिला बोतल में भर कर रख दे। २ या ३ दिन के बाद छानकर शीशियों में भर कर रखले।

मात्रा—१ से ५ बूंद तक। दुगने जल में मिला कर देवे। दिन में ३ बार।

गुण—प्रमेह और मधुमेह का नाशक है।

(अ० यो० माला)

---

३४० पलाशासव—मधुमेह नाशक।

विधि—पलाश की कोपलें, जो खिली न हों; पलाश पुष्प,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और पलाश की जड़ की छाल को कूटकर फिर पलाश की छाल से संपुटित करे, और इसको एरण्ड व जामुन के पत्तों से लपेट मट्टी लगाकर भूभल में ४ घंटे पकाकर, पीछे दबाकर ४० तो० अर्क निकाल शीशियों में भरे, इसमें मुलैठी का महीन चूर्ण ४ तोले, शिलाजीत ४ तोले और मधु २० तोले मिला; मुख मुद्रा कर १५ दिन तक रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा–३ बूंद से १० बूंद तक मक्खन या मलाई के साथ।

गुण—मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है।

(अ० यो० माला)

नोट--उक्त आसव बहुमूत्र, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी मूत्रविकारों पर तथा कोष्ठबद्धता और उपदंश पर भी विशेष प्रभावशाली है।

—सम्पादक।

पाकडासव—देखिये, प्लक्षासव।

३४१ पारसिक्ययवान्यासव—वेदना नाशक, प्रदाह आदि शामक।

विधि–नं० १—खुरासानी अजवान के ताजे पत्तों, शाखों और फूलों को पीस कर, स्वरस निकाले, ३ भाग स्वरस में एक भाग मद्य (६० प्रतिशत शक्ति वाली) मिला, बोतलों में भर, मजबूती से कार्क बन्द कर, ७ दिन रक्खा रहने देवे, पश्चात् फिल्टर कर (अच्छी तरह फलालेन के वस्त्र से छानकर) शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बूँद से ६० बूँद तक।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

३४२ विधि—नं० २—खुरासानी अजवायन का चूर्ण (बीजों का चूर्ण) १ भाग में ८ भाग मद्य (६० प्रतिशत वाली) मिला बोतल में, अच्छी तरह, कार्क लगाकर रक्खे। ७ दिन पश्चात् उक्त विधि से छान कर रख ले।

मात्रा—उपर्युक्तानुसार।

३४३ विधि—नं० ३—खुरासानी अजवायन के पत्ते १ भाग का चूर्ण कर, मद्य (७० से ६० प्रतिशत वाली) १० भाग मिला, बोतल में, मज़बूती से काग लगाकर ७ या १५ दिनतक रक्खा रहने देवे। पश्चात् उक्त विधि से छानकर काम में लावे।

मात्रा—४ रत्ती से ४ माशे तक।

गुण—यह मादक गुण प्रधान होने से वेदनानाशक, प्रदाह शामक, निद्राजनक, स्तंभक, वाजीकरण एवं उत्तेजक है। दुर्बल एवं वृद्ध व्यक्ति के उन्माद (पागलपन) पर यह अच्छा लाभदायक है। शुष्क तथा आक्षेपयुक्त खाँसी पर भी यह गुण-कारी है। इसमें कृमिनाशक गुण की भी विशेषता है, यदि कृमि के कारण बालक के पेट में ऐंठन हो तो इसके प्रयोग से लाभ होता है। प्रसव के समय की अथवा प्रसव के बाद की ऐंठन में भी इससे शीघ्र लाभ होता है। अतिसार में जब कि मल हल्दी के रंग जैसा, पानी की तरह पतला और बेखबरी से निकल जाता है, तब इसके व्यवहार से तत्काल लाभ होता है।

३४४ विधि नं० ४—खुरासानी अजवायन के पत्ते छाया में सुखाये हुए ८ तोले लेकर मोटा चूर्ण करे और रेक्टिफाइडस्पिरिट ५० तोले, दोनों को एकत्र, कांच के पात्र में भर, मुख बन्दकर,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३ दिन तक सुरक्षित रक्खे। रोज एक बार हिला दिया करे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—श्वास, कास, हृदयरोग, उन्माद और मूत्रपिंड के विकारों पर भी इसकी योजना की जाती है। यह वेदनाशामक है। इसकी क्रिया शरीर में वेलाडोना या धत्तूरासव जैसी होती है, किंतु उनकी अपेक्षा वहुत सौम्य प्रकार से होती है।

—सम्पादक।

---

३४५ पारिभद्रासव—रक्तविकार नाशक।

(श्री० पं० तिलकराम जी शर्मा, वैद्यराज)

विधि—नीम की छाल ५ सेर चूर्ण कर, शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें-जल १६ सेर, पुराना गुड़ ३॥ सेर, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला और कालीमिरच प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह वन्द कर ७ से १४ दिन तक सुरक्षित रखे। फिर निकाल कर, ऊपर का नितरा हुआ आसव छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा तोला से दो तोले तक। प्रातःसायं।

गुण—१८ प्रकार के कुष्ठ; खाज, दाद, अपरस; विसर्प, फोड़ा, फुंसी इत्यादि सब रक्तविकार शीघ्र ही दूर होते हैं। अर्श, कृमि, प्रमेह और ज्वर में भी लाभदायक है।

(अ० यो० माला)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३४६ पार्थाद्यरिष्ट + —हृदयरोगादि नाशक ।

विधि—अर्जुन वृक्ष की छाल ५ सेर, मुनक्का २॥ सेर तथा महुये के फूल १ सेर लेकर, सब को जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावें। क्वाथ जल १३ सेर शेष रहने पर, छानकर, उस में-धाय के फूलों का चूर्ण १ सेर और गुड़ ५ सेर अच्छी तरह घोलकर, शुद्ध चिकने मटके में भरकर, मुख मुद्राकर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

गुण—हृदय और फेफड़े के समस्त रोगों को नष्ट कर; बल, वीर्य को बढ़ाता है। चिंता एवं शोक से उत्पन्न हुए क्षय में यह उत्तम लाभकारी है।

---

३४७ पिण्डासव * —ग्रहणी आदि विकार नाशक ।

+ पार्थत्वचस्तुलामेकां मृद्वीकार्धतुलां तथा । भागं मधूकपुष्पस्य पलविंशतिसम्मितम् ॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा द्रोणमेवावशेषयेत् । धातक्या विंशतिपलं गुडस्य च तुलां क्षिपेत् ॥ मासमात्रं स्थितो भाण्डे भवेत् पार्थाद्यरिष्टकः । हृत्फुस्फुसगदान् सर्वान् हन्त्ययं बलवीर्य कृत् ॥

—भैषज्यरत्नावली ।

* प्रास्थिकी पिप्पली प्रस्थं गुडं प्रस्थं विभीतकम् । उदकप्रस्थसंयुक्तं यवपल्ले निधापयेत् ॥ तस्मात्सुजातांस्तु पलं सलिलाञ्जलि संयुतम् । पिबेत्पिण्डासवोह्येष रोगानीकविनाशनः ॥ स्वस्थोऽपि यः पिबेन्मासं नरः । स्निग्धरसाशनः । तस्याग्निं दीपयत्येष आरोग्याय प्रकीर्तितः ॥

—चरक ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—पीपल का चूर्ण, गुड़ और बहेड़े का चूर्ण प्रत्येक १३-१३ छटांक लेकर सब को एक सेर जल में मिला, मिट्टी के चिकने पात्र में भर, उसका मुख अच्छे प्रकार बन्दकर, उसे जौ के ढेर में दवा देवे। एक मास पश्चात् यह पिण्डाकार अर्थात् बहुत गाढ़ा हो जावेगा। इसे काम में लावे।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक। अनुपान—चौगुना जल मिलाकर सेवन करे। (ग्रन्थोक्त मात्रा आजकल के लिये बहुत अधिक है।)।

गुण—यह सब रोगों को नष्ट करता है। यदि स्वस्थ मनुष्य इसे १ मास तक सेवन करे और स्निग्ध आहार करता रहे तो उसकी जठराग्नि दीप्त होती है और स्वास्थ्य स्थिर रहता है।

२४८ पिप्पल्याद्यासव * नं० १--क्षय ग्रहण्यादिनाशक।

विधि—पीपल, कालीमिरच, चव्य, हल्दी, चीता, नागरमोथा, वायविडंग, सुपारी, लोध, पाठा, आंवला, एलवालुक

---

* पिप्पली मरिचं चव्यं हरिद्रा चित्रको घनः। विडङ्गं क्रमुको लोध्रः पाठा धात्र्येलवालुकम् ॥ उशीरं चन्दनं कुष्ठं लवंगं तगरं तथा । मांसी त्वगेलापत्रञ्च प्रियंगुर्नागकेशरम् ॥ एषामर्धपलान् भागान्सूक्ष्मचूर्णीकृतान्शुभान्। जलद्रोणद्वये क्षिप्त्वा दद्याद् गुडतुलात्रयम् ॥ पलानि दश धातक्या द्राक्षा षष्टिपला भवेत्। एतान्येकत्र संयोज्य मृद्भाण्डे च विनिक्षिपेत् ॥ ज्ञात्वा गतरसं सर्वं पाययेदग्न्यपेक्षया। क्षयं गुल्मोदरं कार्श्यं ग्रहणीं पाण्डुतां तथा ॥ अर्शांसि नाशयेच्छीघ्रं पिप्पल्याद्यासवस्त्वयम् ।
—शार्ङ्गधर।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

(शीतलचीनी) खस, सफ़ेद चन्दन; कूठ, लौंग, तगर, बालछड़ (जटामांसी), दारचीनी, बड़ी इलायची, तेजपात, फूल-प्रियंगु और नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण दो-दो तोले, मुनक्का ३ सेर, धाय के फूल आध सेर और गुड़ १५ सेर लेकर, कूटने योग्य द्रव्यों को कूटकर, सबको २६ सेर जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छी तरह सन्धान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। इसे जमीन में गढ़ा खोदकर, १ मास तक गाढ़ कर रखने से ही उत्तम आसव तैयार होता है। पश्चात् छान कर बोतलों में भरकर रख दे।

नोट—योगरत्नाकर, गदनिग्रह और योगतरंगिणी ग्रन्थ में इसे 'पिप्पल्याद्यरिष्ट' कहा है और उक्त लौंग, बालछड़ और बड़ी इलायची के स्थान में-लवलीफल (हरफ़ारेवड़ी), सौंफ और कैवटीमोथा का चूर्ण प्रत्येक दो-दो तोले लेने को कहा गया है। शेष दोनों में बिल्कुल समानता है।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे या १ तोला तक।

गुण—क्षय, गुल्म, उदररोग, कृशता, संग्रहणी, पाण्डु और बवासीर नाशक है। मंदाग्नि, शोथ, यकृत, प्लीहा-वृद्धि, खांसी, ज्वर एवं अरुचि को नष्ट करता है। अतिसार में जब पतले दस्त अत्यधिक होते हों, साथ ही में रक्त भी जाता हो, ऐसी दशा में इसका सेवन शीघ्र ही लाभकारक है।

"क्षय की उस अवस्था में इसका उपयोग विशेष लाभदायक है, जब कि कफ़ अधिकता से निकल रहा हो, कफ़ निकलने से रोगी दुर्बल होगया हो। यदि साधारण कफ निकलने में एक बार इसका सेवन कराने से कोई हानि न दीखे तो प्रयोग

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

करना योग्य है। इसको परीक्षा कर देख लें, यह अग्नि की शक्ति को बहुत शीघ्र तीव्र करता है। यदि यह सात्म्य (प्रकृति के अनुकूल) होजाय तो रोगी को अन्न पर शीघ्र रुचि आती है"।

—क्षयादर्श।

पिप्पल्याद्यासव नं० २—देखिये, कणासव।

पिप्पल्याद्यरिष्ट * प्लीहादिनाशक।

विधि—पीपल, कालीमिरच, वायविडंग, एलवालुक (शीतलचीनी) और लोध प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले, इन्द्रायन एक पाव (२० तो०), कैथ की अन्तर छाल आध सेर, हरड़ की छाल ३२ तोले, और आंवले १३ छटाँक, लेकर सब को जवकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, ठंडा करले, फिर उसमें गुड़ १० सेर अच्छी तरह घोलकर, घृत से चिकने किये हुये मटके में भर, मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रूप से जौ के ढेर में दबा दे। पश्चात् निकाल कर, छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

---

* पिप्पली मरिच विडंगैलवालुक लोध्राणां द्वे द्वे पले इन्द्रवारुण्याः पंचपलानि कपित्थमध्यस्य दश पथ्याफलानामर्द्धप्रस्थः प्रस्थो धात्रीफलानामेतदैकध्यं जलचतुर्द्रोणे विपाच्य पादावशेषं परिस्राव्य सुशीतं गुडतुलाद्वयेनान्मिश्र्य घृतभाजने निक्षिप्य पक्षेमुपेक्षेत यवपल्ले। ततः प्रातः प्रातर्यथाबलमुपयुञ्जीत। एष खल्वरिष्टः प्लीहाग्निसङ्गार्शो ग्रहणी हृत्पांडुरोग शोफ कुष्ठगुल्मोदरक्रमिहरो बलवर्णकरश्चेति॥

—सुश्रुत।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—शक्ति के अनुसार १ तोला से २॥ तोले तक। प्रातःकाल के समय सेवन करे ।

गुण—तिल्ली, मंदाग्नि, बवासीर; संग्रहणी, हृद्रोग, पांडु-रोग, सूजन, कोढ़, गोला रोग; उदर रोग और कृमिरोग को नष्ट करता है। बल और उत्तम कांति की वृद्धि करता है।

नोट—यह योग 'अभयारिष्ट' नं० २ से बहुत कुछ मिलता जुलता सा है।

---

३५० पिप्पलीमूलाद्योरिष्ट *—क्षय, कासादिनाशक ।

---

* समूला पिप्पली शृङ्गी वृहती ह्यश्मभेदकः । पाटला देवकाष्ठञ्च श्वदंष्ट्राह्यभया तथा ॥ एकैकात्षोडशपलं कोलानामाढकं तथा । दन्ती चित्रक मूलानां पंचाविंशपलं पृथक् ॥ चतुर्गुणे जलद्रोणे पचेदर्धावशेषितम् । शीतं समावपेद्भाण्डे प्रलिप्ते मधुसर्पिषा ॥ खण्डस्य द्वे शते शुद्धे तद्वल्लोहं समावपेत् । पत्रीकृतं तिलोत्सेधंसूक्ष्मचूर्णान्यमूनिच ॥ प्रियङ्गुं पिप्पलीं रोध्रं मृद्वीकां सैलुवालुकम् । क्रमुकं शतपुष्पां च निम्बं तेजोवतीमपि ॥ पालिङ्कान्देवदारुं च खादिरस्य चतुःपलम् । क्षौद्रप्रस्थद्वयं चापि समासिच्य घटे शुभे ॥ सौम्ये पुष्ये तथा हस्ते रोहिण्यामुत्तरासुच। दशरात्रस्थितः पेयोऽरिष्ट आत्रेयपूजितः ॥ अश्विभ्यां कथितं पूर्वं रसायनमिदं शुभम् । यथाग्नि वलमात्रां तु पिवेदस्य हिताशनः ॥ धन्यं पुष्टिकरं मेध्यं वली पलित नाशनम् । क्षयकासज्वर प्लीह कुष्ठ गुल्माग्निमार्दवे ॥ श्वित्रेऽश्मर्यां तयोर्दर्दे विद्रध्यामन्त्र वृद्धिषु । पांडुरोगोदरस्तन्य रेतोदोषे च शस्यते ॥ नाडीपिडिकयोर्दोषे भूतापस्मारशङ्करे ॥

—गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—पीपलामूल, काकड़ासिंगी, बड़ी कटेरी, पाखानभेद, पाढल, देवदारु, गोखरू और हरड़ प्रत्येक ६४ तोले, बेर ३। सेर तथा दन्ती और चीते की जड़ प्रत्येक १। सवासेर, लेकर जवकुट कर सबको, १ मन १२ सेर जल में पकावे। (जल का प्रमाण कम है, इससे दुगुना जल लेना चाहिये) आधा जल शेष रहने पर, छानकर, एक शुद्ध मटके के भीतर घी और शहद का लेप कर, उसमें भर देवे, फिर उसमें १० सेर शुद्ध खांड, १० सेर लोहे का बुरादा, ४ सेर शहद तथा फूलप्रियंगु, पीपल, लोध; मुनक्का, शीतलचीनी, सुपारी, सोया, नीम की छाल, गजपीपल, और देवदारु प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा खैरसार का चूर्ण १६ तोले, मिला, मटके का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १० दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् निकाल कर छान ले।

नोट—इस आसव को पुष्य, रोहिणी, हस्त या उत्तरा नक्षत्र में बनाना अच्छा होता है।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक।

गुण—क्षय, खाँसी, ज्वर, तिल्ली, कोढ़, गुल्म; अग्निमांद्य, श्वित्रकुष्ठ; पथरी, उदर्द, विद्रधि, अन्त्रवृद्धि; पाण्डु, उदररोग, स्तन्यविकार, वीर्यविकार, नासूर, पिडिका और भूतापस्मार नाशक है। यह आसव रसायन, पौष्टिक, मेधावर्धक और वलीपलित नाशक है।

पियावांसासव—देखिये, कटसारिकासव।

पीतमूल्यासव—देखिये, रेवटचीन्यासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३९१ पील्वासव— + नं० १—अर्श, गुल्मादिनाशक।

विधि—पीलु का रस अच्छी तरह वस्त्र से छना हुआ १३ सेर लेकर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें ५ सेर गुड़ तथा धाय के फूल, मुनक्का, खजूर; आंवला; पाठा; अतीस धमासा; अमलबेंत, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, दारचीनी, बड़ी इलायची, कंकोल या शीतलचीनी, लाजवंती की जड़, बेर, लौंग, वायविडंग, पीपलामूल और चीता प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—बवासीर, गोला (गुल्म) तथा अग्निमांद्य नाशक है।

---

३९२ पील्वासव * नं० २—अर्श, प्लीहादि नाशक।

+ द्रोणं पीलु रसस्य वस्त्रगालितं न्यस्तंहविर्भाजने । युञ्जीत द्विपलैर्मदाम्धुफलाखर्जूरधात्रीफलैः । पाठामाद्रिदुरालभाम्लविदुल व्योपत्वगेलोल्लकैः स्पृक्काकोललनद्रुवेल्लचपलामूलाग्निकैः पालिकैः ॥

गुडशत विनियोजितं निवाते,
निहितमिदं प्रपिबेच्चपक्षमात्रात् ।
निशमयति गुदाङ्कुरान्सगुल्मा—
ननलबलं प्रवलं संविधत्ते ॥

—गदनिग्रह ।

* मूर्वा खजूर पाठानिलरिपु मधुकं कच्छुराहारहूरा । कोलत्वग्वेतसाम्लं दहनमिशिकणाकृष्णाविश्वालवंगम् । स्वग्लोध्राद्दाडिमाच्च पलमित-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—पीलु का स्वरस (पचाङ्ग का स्वरस निकाले) १३ सेर निकाल कर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-५ सेर गुड़ तथा मूर्वा, खजूर, पाठा, एरण्ड की जड़, मुलैठी, कौंच, मुनक्का, बेर की छाल, अमलबेंत, चीता, सौंफ़, पीपल, काली-मिरच, सोंठ, लौंग, दारचीनी, लोध, अनारदाना और दन्ती-प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख बन्द कर, अनाज के ढेर में दबा देवे. ३० दिन पश्चात् निकालकर, छानकर बोतलों में भरकर रख ले।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—बवासीर, तिल्ली, गुल्म, उदररोग और मन्दाग्नि को नष्ट करता है। तथा जठराग्नि और बल की वृद्धि करता है।

---

३९३ पुनर्नवासव * नं० १—हृद्रोग, शोथादिनाशक।

मपि पृथक् दन्तिमूलेन युक्तं। पीलुद्रोणे द्विपक्षं गुडपल शतयुक्धान्य राशौ निदध्यात्॥ अर्शः प्लीहं च गुल्मं जठरगदमथोनाशयेच्चाग्निमान्द्यम्। कुर्याच्चाग्निं प्रदीप्तं प्रबलबलयुतं पीलुसंज्ञासवोऽयम्॥ —गदनिग्रह।

* पुनर्नवे द्वे च पले सपाठे दन्तीं गुडूचीं सह चित्रकेण। निदिग्धिकांच त्रिपलां विपाच्य द्रोणावशेषे सलिले ततस्तु॥ पूत्वा रसं द्वे च तुले पुराणाद् गुडान्मधुप्रस्थयुतं सुशीते। मासं निदध्यात् घृतभाजनस्थं पल्लेयवानां परतश्च मासात्॥ चूर्णीकृतैरर्धपलांशकैस्तं हेमत्वगेलाभरिचाम्बुपत्रैः गन्धान्वितं क्षौद्रघृतप्रदिग्धं जीर्णे पिबेद् व्याधिबलं समीक्ष्य॥ हृत्पांडुरोगं श्वयथुं प्रवृद्धं प्लीहं भ्रमारोचकमेहगुल्मान् भगन्दरार्शोजठराग्निकास श्वास ग्रहण्यामयकुष्ठ कण्डुः॥ शाखानिलं बद्धपुरीषतां च हिक्कां किलासं च हलीमकं च। क्षिप्रं जयेद् वर्ण बलायुरोजस्तेजोन्वितो मांस रसान्नभोजी॥ —योगरत्नाकर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—सफ़ेद और लाल पुनर्नवा (विसखपरा), दोनों पाठा, दन्ती, गिलोय, और चीते की जड़ ये प्रत्येक ८-८ तोले, तथा कटेरी १२ तोले, लेकर सबको जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे। ठंडा होजाने पर, शुद्ध मटके में शहद और घी का लेप कर, उसमें भर देवे तथा १० सेर पुराना गुड़, १३ छटाँक शहद (शहद दो सेर तक डालना चाहिये) उसमें मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जौ के ढेर में दबा देवे। १ मास पश्चात् निकाल कर और छानकर पुनः दूसरे मटके में भर, उसमें नागकेशर, दारचीनी, बड़ी इलायची; कालीमिरच, सुगन्धवाला (नेत्रवाला) और तेजपात प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिला, मुख बन्द कर रख देवे। लगभग १ मास के बाद पुनः छानकर बोतलों में भर कर (कोई २ नागकेशरादि का चूर्ण न डालते हुये, उनकी केवल धूनी उक्त घृत शहद से प्रलिप्त मटके में देकर आसव सन्धान करते हैं) रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—हृदय के रोग; पाण्डुरोग, खूब बढ़ी हुई सूजन, तिल्ली, भ्रम, अरुचि, प्रमेह, गुल्म, भगन्दर, बवासीर, उदररोग, खाँसी, दमा, संग्रहणी, कोढ़, खुजली; शाखागत (हाथ पैर आदि को जकड़ने वाली) वायु, कब्ज, हिचकी, किलासनामका कोढ़ और हलीमक रोग का नाशक है। वर्ण; बल; आयुष्य, ओज एवं तेज की वृद्धि करता है। इस पर मांस रस या अन्य पुष्टिकारक शीघ्रपाची आहार करना चाहिये।

नोट—चरक में इसका नाम 'अरिष्ट' है, जो कि योग्य है, और 'द्वे च पले' के स्थान में 'द्वे च बले' (अर्थात् बला और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अतिबला) ऐसा पाठ है, तथा 'द्रोणावशेषे' के स्थान में 'द्रोणार्धशेषे' ऐसा पाठ है। किसी २ ग्रन्थ में 'त्रिपलां' के स्थान में 'त्रिफलां' ऐसा पाठ है।

---

३५४ पुनर्नवासव * नं० २—शोथादि नाशक।

विधि—सोंठ, मिरच; पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला; दारुहल्दी, गोखरू, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, बाँसा (अडूसे की जड़), एरण्ड की जड़, कुटकी; गजपीपल, पुनर्नवा (बिसखपरा), नीम की छाल, गिलोय, सूखी मूली, धमासा और पटोलपत्र ये प्रत्येक ४-४ तोले तथा धायके फूल १३ छटाँक लेकर, सब को कूट कर; २६ सेर जल के साथ एक चिकने मटके में भरे और उसमें-१ सेर मुनक्का, ५ सेर खाँड, और २॥ सेर शहद मिला पात्र का मुख बन्द कर एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—सब प्रकार की सूजन, उदररोग, तिल्ली, अम्लपित्त,

---

* त्रिकटु त्रिफला दार्वी श्वदंष्ट्रा बृहतीद्वयम्। वासामैरंडमूलं च कटुकीं गजपिप्पलीम्॥ शोथघ्नीं पिचुमर्दञ्च गुडूचीं शुष्कमूलकम्। दुरालभां पटोलं च पलांशेन विचूर्णयेत्॥ धातकी षोडशपलां द्राक्षायाः पलविंशतिम्। तुलामानां सितां दत्वा माक्षिकार्धतुलां तथा॥ जलद्रोणद्वये क्षिप्त्वा मासं भाण्डे निधापयेत्। पुनर्नवासवो ह्येष शोथोदरविनाशनः॥ प्लीहामम्लपित्तञ्च यकृद्गुल्मज्वरादिकान्। कृच्छ्रसाध्यामयान सर्वान् नाशयेन्नात्र संशयः॥

—भैषज्यरत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

यकृत (जिगर के विकार), गुल्म और ज्वर आदि कष्टसाध्य रोगों को नष्ट करता है।

नोट—इस आसव का नाम वास्तव में 'त्रिकट्वाद्यासव' होना चाहिये।

पुनर्नवासव नं० ३—शोथ पर अपूर्व प्रभावशाली।

(चि० चू० पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज, संपादक अ० यो० माला)

विधि—पुनर्नवे की जड़ (श्वेत मिले तो उत्तम है अन्यथा रक्त पुनर्नवा से भी काम होसकता है) ५ सेर, जबकुट कर, ३२ सेर जल में पकावे। ८ सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध मटकी में भर, ठंडा होजाने पर उसमें ५ सेर मधु, धायके फूल १ सेर, द्राक्षा १ सेर ८ छटाँक; तथा पुनर्नवा, नीम, पटोल-पात, सोंठ, कुटकी, गुडूची, दारुहल्दी, हरड़ काबुली प्रत्येक का चूर्ण १०-१० तोले डालकर, मुख बन्द कर रख दे। १ मास बाद छानकर बोतलों में भर कर रख ले।

मात्रा-गुणादि उक्त पुनर्नवासव नं० १ और २ के अनुसार।

नोट—शास्त्रीय पुनर्नवासव को (अर्थात् नं० १ और २ को) शोथ पर देने पर भी अपूर्व लाभ न होते देखकर हमने सोचा कि पुनर्नवे का नाम जब शोथघ्नी है तो पुनर्नवासव में उसकी इतनी न्यून मात्रा से गुण आना असंभव है। शास्त्रों में आसवादिक प्रधान वस्तुओं से ही बनाये गये हैं और उनमें उस प्रधान वस्तु की मात्रा अधिक रहती है, तभी गुणकारी होते हैं। अतः अनुभवार्थ हमने उक्त विधि के अनुसार पुनर्नवासव को तैयार कर, उचित मात्रानुसार शोथ रोग पीड़ित रोगियों को सेवन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कराया । इसके सेवन कराने पर १ या २ घंटे बाद रोगी को १ या २ दस्त आते हैं, और दूसरे ही दिन से शोथ में परिवर्तन होने लगता है, कुल १५ दिन में ही सर्वाङ्गशोथाक्रान्त रोगी संपूर्णतया आरोग्यलाभ करता है।

पुनर्नवाद्यासव--नं० ४--देखिये, वृश्चीवाद्योरिष्ट ।

पुनर्नवाद्यरिष्ट—देखिये, अभयारिष्ट नं० ३ ।

२९६ पुष्करमूलासव *—क्षय अपस्मारादि नाशक ।

विधि—पोहकरमूल ५ सेर, धमासा २॥ सेर, धनिया १। सेर, सोंठ, मिरच, पीपल ये तीनों एकत्र १ सेर तथा मजीठ, कूठ, कालीमिरच, कैथ, देवदारु, बायविडंग, चव्य, लोध, पीपलामूल, खस, खम्भारी के फल, रास्ना, भारंगी और सोंठ ये प्रत्येक ८-८ तोले लेकर, सब को कूटकर; १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर ठंडा होने

---

* तुलां पुष्करमूलस्य तदर्धं तु दुरालभा । तदर्धेन तु धान्याकं व्योषाच्च पलविंशतिः ।। मंजिष्ठा कुष्ठमरिचं कपित्थं देवदारु च । विडंगं चविका लोध्रं पिप्पलीमूलमेव च । काश्मर्यं च तथोशीररास्ना भार्ङ्गी च नागरम् ।। एषां द्विपलिकान् भागाँश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् । द्रोणशेषे कषाये तु पूते शीते प्रदापयेत् । गुडस्य त्रिशतं तत्र धातक्याः पलविंशतिम् ।। मरिचं केसरं श्यामा एलात्वक्पत्रकं पलम् । कुडवं पिप्पलीनां तु चूर्णीकृत्य प्रदापयेत् ।। घृतभाण्डे स्थितं मासं पिबेन्मात्रां यथाबलम् । क्षयापस्मारकासासृक्शोफ गुल्मभगन्दरान् । पुष्करासव इत्येष प्रयोगादेव नाशयेत् ।

—गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और उसमें-१५ सेर गुड़, १ सेर धाय के फूलों का चूर्ण तथा कालीमिरच, नागकेशर, निसोथ, इलायची, दारचीनी और तेजपात प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, तथा पीपल का चूर्ण १६ तोले; मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—क्षय, अपस्मार, खांसी, रक्तदोष, सूजन, गुल्म और भगन्दर नाशक है।

पुष्पासव—देखिये, शतपुष्पासव।

३५७ पूतीकाद्यरिष्ट +—कुष्ठ, प्रमेहादि नाशक।

विधि—पूतिकरंज (कोई २ बावची लेते हैं), चव्य, चित्रक, देवदारू, सारिवा (अनन्तमूल), दन्तीमूल, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक २४-२४ तोले, बेर की जड़ की छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १६-१६ तोले लेकर सब का महीन चूर्ण कर, घृत से चिकने किये हुए घड़े के भीतर पीपल, शहद और घृत

+ पूतीक चव्य चित्रक सुरदारु सारिवा दन्तीत्रिकटूनां प्रत्येकं षट्पलिकां भागा बदरकुडवस्त्रिफला कुडव इत्येतेषां चूर्णामि ततः पिप्पली मधुघृतैरंतः प्रलिप्ते घृतभाजने प्राकृत संस्कारे सप्तोदक कुडवानयो-रजोऽर्द्ध कुडवमर्द्धतुलां च गुडस्याभिहितानि चूर्णान्यावाप्य स्वनुगुप्तं कृत्वा यवपल्ले सप्तरात्रं वासयेत्ततो यथाबलमुपयुंजीतैषोऽरिष्टः कुष्ठ मेह मेदः पांडुरोगश्वयथूनपहन्ति।

—सुश्रुत।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का लेपकर, उसमें जल १ सेर ३२ तोले (जल का परिमाण बहुत कम है; कम से कम १० सेर तक जल डालना ठीक होगा), शुद्ध लोहचूर्ण ८ तोले और गुड़ २॥ सेर (गुड़ भी कम है, कम से कम ५ सेर होना चाहिये) मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ७ दिन तक जौ के ढेर में दबा कर रख देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक, यथाबल उचित मात्रा में सेवन करे।

गुण— कोढ़, प्रमेह, स्थूलता (मेदोरोग); पांडुरोग तथा सूजन को नष्ट करता है।

---

३५८ पौष्टिकासव—नं० १—पुष्टिकारक।

(वैद्यराज–विष्णुकान्त जी जैन, सम्पादक "वैद्य" मुरादाबाद)

विधि—मुनक्का १ सेर, छुहारे १ सेर, बादामगिरी आध सेर तथा महुये के फूल, धाय के फूल, शतावरी और असगंध प्रत्येक २०–२० तोले एवं दारचीनी, जायफल, तेजपात; इलायची, लौंग, धनिया, बालछड़ (जटामांसी) और नागरमोथा प्रत्येक २–२ तोले, केशर १ तो०, खस १ तोला, खैरसार ३ तोले, पीपल १ तो० सब का चूर्ण कर शुद्ध चिकने मटके में डालकर, उसमें जल १५ सेर, शक्कर ५ सेर और शहद १। सेर मिलावे, अच्छी तरह मुख का सन्धानकर, ४० दिन तक, सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर, अथवा भवके के द्वारा अर्क खींच कर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आसवार्क की १ से २ तोले तक।

गुण—इसका नियमित रूप से कुछ दिन तक सेवन करने

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

से बल की वृद्धि होती है, भूँख खूब लगती है, मन में मोद, उत्पन्न होता है। शरीर में स्फूर्त्ति होती है। रक्त का संचार सुचारू रूप से होने लगता है। पीते ही तत्काल बल मालूम होता है, चेहरा कान्तियुक्त और तेज सम्पन्न हो जाता है।

---

३५९ पौष्टिकासव—नं० २—निर्वलतानाशक, वाजीकरण।

(पं० बालकृष्णजी शर्मा वैद्यराज)

विधि—मुनक्का २। सेर, बबूल की छाल आध सेर; आँवले १० तोले, मुण्डी १०तोले, शतावरी १० तोले, कपिकच्छु ५ तोले, गोखरू५ तोले, छरीला, जटामांसी, खस, तज, तेजपात; नागरमोथा, नरकचूर, सफेदचन्दन, और अजवायन प्रत्येक ३-३ तोले, बहिमन सफेद, बहिमन सुर्ख, छोटी इलायची, इन्द्रजौ, सौंफ, तोदरीसफेद, तोदरीसुर्ख, प्रत्येक २॥-२॥ तोले, बादाम, किसमिस और छुहारा प्रत्येक आध-आध सेर लेकर सबको अधकचरा कर, ४० सेर जल में डाल देवे, उसी में १० सेर मिश्री भी घोल देवे, फिर ऊपर से ढककर, कपड़े से पात्र का मुख बाँध देवे, तीसरे दिन उसे लकड़ी से चलाता रहे। तब तक सड़ावे, जब तक शराब की भाँति ख़मीर न उठे। पश्चात् उसमें ५ सेर गाय का दूध और २॥ सेर शन्तरों का रस डाल कर, भबके के द्वारा अर्क निकाल लेवे। ध्यान रहे यह आसवार्क ६ बोतल से अधिक न निकाला जाय, अन्यथा गुणहीन हो जावेगा।

मात्रा—१ से २ तोला तक।

गुण—पौष्टिक है, सब प्रकार की निर्वलता नाशक, स्तम्भक,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

वाजीकरण, ज्वर, सिरदर्द, प्रमेह, सुजाक, तिमिर (नेत्रों के सन्मुख धुंधला सा दीखना) एवं अजीर्ण नाशक है। स्फूर्त्ति-दायक अर्थात् शरीर में नये जोश को पैदा करता है, और रक्त-शोधक है। अनुपान भेद से सैंकड़ों रोगों पर अनुभूत है।

---

३६० प्रमेहखंडनासव—प्रमेहादि नाशक।

विधि—घृतकुमारी (ग्वारपाठा) का रस २॥ सेर, सावर-कन्द, शतावर, गोखरू और कांस की जड़ प्रत्येक ५-५ तोले, कबाबचीनी २ तोले, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक २॥-२॥ तोले, वंगभस्म १ तोला, धाय के फूल २० तोले, गुड़ १। सेर, शहद १॥ सेर लेकर, कूटने योग्य चीजों को जव-कुटकर, सब को एकत्र कर, घी के चिकने पात्र में भर, जमीन में गाढ़ दे। १ मास के बाद, निकाल, छान नितारकर शीशियों में भरकर रख ले।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। दिन में ३ बार।

गुण—प्रमेह, धातु की निर्बलता, पतलापन, इन्द्रिय की व शारीरिक कमजोरी, स्वप्नदोष, पेशाब में तार जाना, मूत्र-कृच्छ्र, उदरशूल आदि के लिये रामबाण है।

(धन्वन्तरि)

---

३६० प्रसारण्यासव *—नं० १—आमवात नाशक।

---

* प्रसारण्यादकक्काथे प्रस्थो गुडरसोनयोः।
पक्वः पंचोषणरजः पादः स्यादामवातहा॥

—चक्रदत्त।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

विधि—प्रसारणी ८ सेर लेकर जवकुट कर ६४ सेर जल में पकावे । १६ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें गुड़ १ सेर, और लहसुन का कल्क १ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ७ दिन तक पड़ा रहने देवे । पश्चात् छानकर उसमें पंचकोल (पिप्पली, पीपलामूल; चव्य, चीते की जड़ तथा सोंठ) का महीन चूर्ण १६ तोले मिलाकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक ।

गुण—आमवात शीघ्र नष्ट होता है ।

---

३६१ प्रसारण्यासव-नं० २—प्लीहा, यकृतादि नाशक ।

विधि—गंधप्रसारणी (पसरन) २॥ सेर, गोरखमुण्डी १। सेर, सोंफ १। सेर तथा मकोय, अनन्तमूल, नीमके फूल, गिलोय (नीम के ऊपर की), कंजा की गिरी, मेंहदी के पत्ते सेमल की मुसली, कंटकारी की जड़, गूमाकी जड़, चीते की जड़, और नीम की छाल प्रत्येक १०-१० छटाँक तथा चिरायता ६ छटाँक, छोटी हरें, बड़ी हरें, लालचन्दन, सफेदचन्दन, वाय-विडंग, चोपचीनी प्रत्येक ५-५ छटाँक, सनाय के पत्ते २॥ छटाँक, मुलैठी १। छटाँक, सबको जवकुट कर, छः गुने जल में मिलाकर, शुद्ध मिट्टी के वर्तन में रख मुँह बन्द कर रख देना चाहिये । ७ दिन के बाद बारुणी यंत्र से अर्क खींच लेवे ।

मात्रा—१ तोला । समभाग जल में मिला, प्रातः सायं सेवन करावे ।

गुण—प्लीहा, यकृत, जीर्णज्वर, बातव्याधि, कास; श्वास,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कफ, दुर्बलता, सुस्ती, हाथ पांव की जलन, दूषित रक्त, कुष्ठ, प्रमेह, धातुदौर्बल्य इत्यादि रोगों का नाशक है। पाचनशक्ति बढ़ाता है; पाखाना साफ लाता है। और शरीर में शुद्ध रक्त को पैदा करता है।

(अ० योगमाळा)

---

३६२ प्रसूताऽमृत (अरिष्ट)—प्रसूता स्त्री के लिये हितकर।

(राजवैद्य डा० इन्द्रदत्तजी शर्मा, जलालाबाद)

विधि—पीपल, अजवायन, पीपलामूल, पीलीसरसों, काली मिरच, भारंगी, गजपीपल, पाढ़, सोंठ, मीठे इन्द्रजौ, चीता, सफेदजीरा, बड़ी इलायची के बीज, चव्य, बकायन की छाल, अतीस, कुटकी और वायविडंग प्रत्येक ५-५ तोले, सबको जव-कुट कर २० सेर जल के साथ पकावे, (१० सेर जल शेष रहने पर) फिर छानकर एक शुद्ध चिकने मटके में भर, (ठंडा होजाने पर) उसमें मुनक्का (बीजरहित) साफ की हुई १। सेर, गुड़ देशी १। सेर और शहद १ सेर मिला, पात्र का मुख बंद कर, ४० दिन तक जमीन में गाढ़ कर रक्खे । पश्चात् निकाल, छान-कर बोतलों में भर, (बोतलों में कडी डाट लगा) १० दिन कड़ी धूप में रक्खे। फिर छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ तोले। अर्क दशमूल अथवा उष्णोदक के साथ मिलाकर सेवन करे।

गुण—प्रसूता को इसके सेवन से शीघ्र बल आता है, तथा प्रसूति-सम्बन्धी कोई उपद्रव नहीं होने पाता।

(धन्वन्तरि-सिद्धयोगांक)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३६३ प्रसूतिकाज्वरघ्नासव—प्रसूता विकार नाशक ।

(श्री स्वामी चैनदासजी वैद्य, लाडनू, मारवाड़)

विधि—चिरायता, सौंफ, सरफोका, नीम का पंचाङ्ग, सहचर, देवदारु, पुष्करमूल; पीपल, कालीमिरच और सोंठ प्रत्येक १-१ तोला तथा प्रसारिणी, गिलोय, बबूल की जड़ की छाल, हरड़ की छाल, कुशा की जड़ और फालसा प्रत्येक २॥-२॥ तोले, तथा श्वेत पुनर्नवे की जड़ की छाल, इन्द्रायन की जड़ की छाल, हिरणखुरी, सिरस की छाल, रोहेड़े (रोहितक) की छाल; नागरमोथा और कंटकारी (कटेरी) प्रत्येक ५-५ तोले, लेकर सबको जवकुट कर, ३० सेर जल में पकावे । १५ सेर जल शेष रहने पर छानकर ठंडा कर लेवे । पश्चात् उसमें १। सेर असली शहद मिला कर; एक छोटे मुख के मिट्टी के पात्र में भर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। गरमी के दिनों में लगभग २० दिन तक, और सरदी के दिनों में करीब ३० दिन तक उस पात्र को गढ़ा रहने दें। पश्चात् उसे बाहर निकाल, आसव को एक गाढ़े वस्त्र से छानले और निथार कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ तोले से २॥ तोले तक । मध्यान्ह (दोपहर) के समय और रात्रि को १० बजे सेवन करावे।

गुण—कब्ज, अफारा; दर्द, श्वास, कास, शोथादि शिकायतों सहित प्रसूतिका ज्वर दूर करने में यह अत्युत्तम है।

(धन्वन्तरि)

---

३६४ प्राणाप्रतारिष्ट—उत्तम रक्त शोधक ।

(पं० कालीचरणजी दुवे वैद्यशास्त्री, नागपूर)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—नीम के ऊपर की गिलोय २ सेर, करंजमज्जा आध सेर, चिरायता और भिलावे प्रत्येक १०-१२ तोले तथा—दारुहल्दी, इन्द्रजौ, मजीठ, ब्राह्मी, देवदारु, भूमिआंवला, पित्तपापड़ा, निशोथ, तगर; गजपीपल, नीम की छाल, कटेरी, नागरमोथा, अमलतास, सोंठ, पाढ़ल, कुटकी, छोटी पीपल, कुश की जड़, धनिया, जावित्री, जायफल, लौंग, विष्णुकांता; अजवायन, पीपलामूल; अजमोद, कालीमिरच, चित्रक, सफेदजीरा, स्याहजीरा, सोंफ, बच, बायबिडंग, रास्ना, चोक, भारंगी; काकड़ासिंगी, हरिद्रा, रसौत, बाबची; पंवार के बीज, लोध, दारचीनी, तेजपात, नागकेशर, जटामाँसी, कचूर, मुसब्बर, अड़ूसा, बकायन की छाल, गूमा, हरड़, बहेड़ा, आमला और दशमूल के दश द्रव्य, प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, सबको जवकुट कर, १॥ मन जल में पकावे, २० सेर शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होने पर, उसमें २ सेर शहद, १ सेर धायके फूल और २॥ सेर गुड़ मिला कर, मुख मुद्रा कर सुरक्षित रखे। १ माह के बाद छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—बड़ों को १ तोला तक। बालकों को ३ माशे तक।

गुण—उत्तम रक्तशोधक, बच्चों के फोड़े, फुन्सी आदि रक्त विकारों को तथा खाँसी, श्वास आदि कफ के रोगों को शीघ्र दूर करता है। उपदंश पर श्रेष्ठ लाभदायक है। इसे ही कोई २ सुरवल्लीकषाय या अमृतवल्लीकषाय भी कहते हैं।

प्रातिकाकुसुदासव—देखिये, जपाकुसुमासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

३६५ प्लक्षासव—(स्वकृत)—उदावर्त्तादि नाशक।

विधि—पाकड़ वृत्त की जड़ की छाल २॥ सेर और पाकड़ के ही फल २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे। ६ सेर जल शेष रहने पर छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे। और ठंडा होने पर, उसमें–शहद ३ सेर; धाय के फूलों का चूर्ण आध सेर और गुड़ ५ सेर मिला, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—उदावर्त और वातगुल्म पर लाभदायक है। रक्त-दोष नाशक और अतिसार पर भी गुणदायक है।

---

३६६ प्लीहादिहरासव–नं० १—प्लीहादि रोग नाशक।

(श्री० वैद्यराज पं० शालिग्राम जी भड़ी)

विधि—घृतकुमारी (घीकुआर) का रस १० सेर; हरड़, बहेड़ा, आमला तीनों का चूर्ण १ सेर; मंडूर शुद्ध बारीक २ सेर, पुराना गुड़ २ सेर, सोंठ, मिरच, पीपल, तीनों का चूर्ण ५ तोले, पोदीना, दालचीनी और बबूल की जड़ प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले तथा वायविडंग, कजवायन की जड़, मकोय डोडी और कालाजीरा प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा कालानमक, देशी नमक, शोरा और सुहागा प्रत्येक ३—३ तोले चूर्ण कर, सबको एकत्र, एक बड़े चिकने मटके में भरे। (इसमें गुड़ की चाशनी करके मिलाना चाहिये) मटके का मुख अच्छी तरह बन्दकर रेह या भूसे में दबा देवे। शीतकाल में २० दिन तक और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उष्णकाल में १० दिन तक रक्खे। पश्चात् निकालकर; छान लेवे और बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—यथाबल देखकर १ से ४ तोले तक।

गुण—प्लीहा, यकृत, मेदे के रोग, कफ़ज-शोथ (सूजन), कब्जी, गुल्म और उदर विकारों पर कभी निष्फल नहीं जाता।

(धन्वन्तरि)

नोट—लेखक ने इसका नाम केवल 'प्लीहाप्रहार' रक्खा है।

—सं०।

---

३६७ प्लीहादिहरासव—नं० २—

(प्रो० डाक्टर० के० डी० तलनिया जी वैद्यशास्त्री)

विधि—प्रथम ३ सेर ग्वारपाठे के गूदे को निकाल, एनामल्ड (कलईदार) बर्तन में १०५ फा० हीट तक अग्निताप की उष्णता देकर; स्वच्छ वस्त्र से छानकर अर्क को अलग निकाल रक्खे। फिर इस अर्क में उत्तम नवीन त्रिफले (हरड़, बहेड़ा, आमला) का महीन चूर्ण २ सेर तक मिला, २४ घंटे धूप में रक्खे पश्चात् छानकर, उसमें उत्तम मन्डूर भस्म ५ तोले मिला, रोजाना ७ दिन तक धूप में रक्खे। धूप में सूखने के बाद जब रस १ सेर शेष रहे (यदि धूप से सब अर्क सूख जाय तो १० तोले त्रिफले को २ सेर पानी में डाल, चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर, उसमें डाल देना चाहिए।) तब तक इस अर्क में पुनः उक्त विधि से निकाला हुआ घृतकुमारी (ग्वारपाठे) का अर्क ३॥ सेर मिला तथा उसे शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-कौड़ी की भस्म और अमृतसत्व (नौसादर का जौहर) प्रत्येक १५-१५ तोले, चीते की जड़ की छाल का चूर्ण १० तोले तथा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सज्जीखार, कालानमक, खाने का सोड़ा (सोड़ाबाईकार्ब) और जवाखार प्रत्येक ५-५ तोले, चूर्ण कर मिलावे और धाय के फूलों का चूर्ण १ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, (मुख पर ७ कपड़ मिट्टी कर देवे) १ मास तक खाद की राशि में दबाकर रक्खे। पश्चात् नवीन मलमल के वस्त्र में छान, स्वच्छ बोतलों में भर; दृढ़ कार्क लगा कर रख देवे।

मात्रा-१ तोला से २॥ तोले तक। खालीपेट, आवश्यकतानुसार, सेवन करे।

गुण—बढ़ी हुई प्लीहा तथा गुल्म पर अव्यर्थ है। वातजनित खांसी (सूखी खांसी) पर भी यह तत्काल गुणप्रद है।

('वैद्य'-मुरादाबाद)

---

३६८ प्लीहादिहरासव—नं० ३—

(प्रो० डाक्टर के० डी० तलानिया जी वैद्यशास्त्री)

विधि—घृतकुमारी (ग्वारपाठा) का लुआब ४ सेर, अमृतसत्व (नौसादर जौहर) १० तोले तथा मंडूरभस्म; कौड़ी की भस्म, सज्जीखार, कालानमक; खाने का सोड़ा; जवाखार और चीते की जड़ की छाल का महीन चूर्ण प्रत्येक ५-५ तोले तथा हीरा हींग घी में भुनी हुई १ तोला लेकर सबको एक बड़े चीनी मिट्टी के पात्र में भर तथा अच्छी तरह मज़बूती से मुख मुद्राकर; खाद की राशि में १५ दिन तक दबाकर रक्खे। पश्चात् छान कर, उसमें टिंचरजिंजर (देखिये शुण्ठ्यासव) ५ तोले मिला, स्वच्छ बोतलों में भर दृढ़ कार्क लगाकर रखदे।

मात्रा—६० बून्द से १। तोला तक। प्रातः सायं।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—बढ़ी हुई प्लीहा (तिल्ली) और गुल्म पर अक्सीर है । १५ दिन से १ माह के अन्दर पूर्ण लाभ नज़र आता है । हर किस्म के पेट के दर्दों पर तत्कालिक गुणप्रद है । वातजकास (सूखी खांसी) पर अनुभव सिद्ध है; फेफड़ों में चिपटे हुए कफ़ को तोड़ तुरन्त बाहर धकेलता और स्वरनलिका को दुरुस्त कर देता है । रक्तशोधक तथा अग्निप्रदीपक है । कोष्ठाश्रित बढ़े हुए दोषों का भेदक है, किंतु किंचित् पित्तकारक है, वात और कफ़ का नाशक है ।

---

३६९ प्लीहादिहरासव—नं० ४—

(प्रेषक० श्री० बालकृष्ण जी शर्मा वैद्यराज)

विधि—घृतकुमारी का रस ५ सेर, कालीमुनक्का ५ सेर; शहद २॥ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण आध सेर और हीराकसीस ५ तोले, लेकर सबको एक चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर अच्छी तरह मुख बन्दकर, धूप में १ मास तक रक्खा रहने देवे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक । समय-प्रातः सायं । अनुपान-प्रत्येक मात्रा में पानी दो तोला और नौसादर १ माशा (यथोचित मात्रानुसार) मिलाकर सेवन करे ।

गुण—प्लीहा और यकृत के विकारों को शीघ्र ही दूर करता है, पेट साफ़ करता है, भूँख को बढ़ाता है ।

(वैद्यक चिकित्सासार)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३७० प्लीहादिहरासव नं० ५–

(श्री० शालिग्रामजी देव शुक्ल वैद्यराज)

विधि—घृतकुमारी का गूदा, नौसादर, शहद, चित्रक, प्रत्येक एक-एक सेर; एकत्र कर, कांच के पात्र में भर मुख बन्द कर रख दे। २१ दिन के बाद छानकर पुनः बोतलों में भर ले।

मात्रा—६ माशे।

गुण—२१ दिन तक बराबर सेवन करने से तिल्ली नष्ट होजाती है।

(अ० योगमाला)

नोट—इसमें नौसादर और चित्रक का प्रमाण चिंतनीय है।

—संपादक।

३७१ प्लीहादिहरासव–नं० ६

(कविराज गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—कुमारी (ग्वारपाठा) का रस ५ सेर, एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें गुड़ १ सेर, मण्डूरभस्म आध सेर, पांचों नमक मिलित १० तोले तथा अजवायन, हरड़, सौंफ, कुटकी, सोंठ, पीपल; कालीमिरच, नवसादर, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा और वायबिडंग प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले, चीते की जड़ का चूर्ण ५ तो० और हींग भुनी हुई १ तोला, सबका चूर्ण कर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। इसे रोज धूप में रखना चाहिये। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख ले।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—प्लीहा (तिल्ली) और यकृत के विकार, उदररोग, कास, श्वास, तथा स्त्रियों के रजस्राव (मासिकधर्म) बन्द हो जाने पर भी लाभदायक है। अत्यन्त पाचक और गुणकारी है।

प्लीहादिहरासव—नं० ७—देखिये, यकृतान्तकासव।

प्लीहान्तकासव—देखिये, कुमार्यासव नं० १२।

प्लीहा-प्रहारासव—देखिये, प्लीहादिहरासव नं० १।

प्लेगहरासव—देखिये, कट्फलाद्यासवार्क।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

फ

३७२ फलारिष्ट *--संग्रहण्यादि नाशक ।

विधि—हरड़ और आमले प्रत्येक १३-१३ छटाँक, इन्द्रायन की जड़, कैथ का गूदा, पाठा और चीते की जड़ ये प्रत्येक ८-८ तोले लेकर, सबको कूटकर, २६ सेर जल में पकावे । ६। सेर जल शेष रहने पर, छानकर उसमें ५ सेर गुड़ घोलकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे, या जमीन में गाढ़ कर रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर देवे ।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक ।

गुण—संग्रहणी, बवासीर, हृदय के रोग, पाण्डुरोग, तिल्ली, कामला और विषमज्वर नाशक है। वायु तथा मलमूत्र

* हरीतकी फलप्रस्थं प्रस्थमामलकस्य च । विशालाया दधित्थस्य पाठाचित्रकमूलयोः ॥ द्वे द्वे पले समाक्षिप्य द्विद्रोणे साधयेदपाम् । पादावशेषे पूते च रसे तस्मिन्प्रदापयेत् ॥ गुडस्यैकां तुलां वैद्यः संस्थाप्यो घृतभाजने । पक्षस्थितं पिबेदेनं ग्रहण्यर्शो विकारवान् ॥ हृत्पांडुरोगं प्लीहानं कामलां विषमज्वरम् । वर्चोमूत्रानिलकृतान्विबन्धानग्नि मार्दवम् ॥ कासं गुल्ममुदावर्तं फलारिष्टो व्यपोहति । अग्निसन्दीपनो ह्येष कृष्णात्रेयेण भाषितः ॥

—चरक ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

का अवरोध, अग्निमांद्य, खाँसी, गुल्म और उदावर्त को नष्ट, कर, अग्नि को प्रदीप्त करता है।

फलेन्द्रासव--देखिये, जम्ब्वासव नं० ३।

३७३ फालसासव-(स्वकृत)-रक्तप्रदर नाशक।

विधि—फालसे के वृक्ष की छाल ५ सेर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे, १३ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होजाने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें मुण्डी के फूल १ सेर, धायके फूल १३ छटाँक, मिश्री ५ सेर और शहद ३॥ सेर (फूलों का और मिश्री का चूर्ण कर) मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—रक्तप्रदर को शीघ्र ही नष्ट करता है। मूत्रकृच्छ्र, और मूत्रमार्ग-निरोध को भी दूर कर देता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ब

बनप्सासव—देखिये, वनप्सासव।

३७४ बब्बुल्यासव * नं० १—क्षयादि नाशक।

विधि—बबूल (कीकर) की छाल १० सेर लेकर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहनेपर, छानकर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-गुड़ १५ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटांक, पीपल ८ तोले, जायफल (अथवा जावित्री), लौंग, कंकोल, बड़ी इलायची, दारचीनी, तेजपात, नागकेशर, और कालीमिरच का चूर्ण प्रत्येक ४-४ तोले, मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भरकर रख दे।

---

* तुलाद्वयं तु बब्बुल्याश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत्। द्रोणशेषे रसे शीते गुडस्य त्रिशतं क्षिपेत् ॥ धातक्याः षोडशपलं पिप्पलीनां पलद्वयम्। जातीलवङ्गकङ्कोलमेलात्वक्पत्र केसरम् ॥ मरिचेन समायुक्तं पलिकांस्तत्र कल्पयेत्। मासमात्रं स्थितो ह्येष बब्बुल्यासव संज्ञितः। क्षयं कुष्ठं प्रमेहांश्च कालश्वासांश्च नाशयेत् ॥

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक, आवश्यकतानुसार।

गुण—क्षय, कोढ़, प्रमेह, खांसी और दमा का नाशक है। यह आसव अतिसार, क्षय के दस्त, मूत्रातिसार (बहुमूत्र), शुक्रमेह, त्वचा के रोग, प्रदर, उरःक्षत, रक्तपित्त और रक्त के विकारों को नष्ट करता है। इसके सेवन से दस्त बँधा हुआ साफ होता है, खांसी में कफ़ के साथ रक्त निकलता हो, छाती में दर्द हो तो शीघ्र ही लाभ पहुंचाता है। भूँख को बढ़ाकर, शक्ति को बढ़ाता है। लिंग फूलना, पेशाब में जलन, मूत्रनली में सुरसुराहट, स्त्री-संग की अत्यन्त कामना होना, पेशाब में पीलापन या सब्जीपन होने और वाघी होने पर यह शीघ्र ही लाभदायक है। यह क्षय की सूखी खाँसी को गीली करता है, फुफ्फुसादि में चिपटे हुए कफ़ को बाहर निकालता है। धातु-क्षय में पूर्ण लाभकारी है। पुरानी खाँसी या काली खाँसी पर इस आसव की मात्रा २॥ तोले, गुलाबजल, चन्दन का शर्बत यथावश्यक मात्रा में मिला, भोजन के बाद सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है। श्वासयुक्त क्षय में यह उत्तम है।

नोट—भैषज्यरत्नावली, शार्ङ्गधरादि ग्रन्थों में इसे 'बब्बूल्याद्यरिष्ट" कहा गया है।

---

३७९ बब्बुलासव—नं० २—श्वासकास नाशक।

(रसायनाचार्य—आर० के० शर्मा, जगराओं)

विधि—बबूल (कीकर) की छाल दो सेर तथा इन्द्रायनकी जड़, कचनार की छाल, कटेरी (व्याघ्री) के फल, बाबूना, मुलैठी, जूफा, अंजबार, बच, कीकड़ का गोंद, कतीरा गोंद,

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

अकरकरा ये प्रत्येक १०-१० तोले लेकर, सब का चूर्ण कर, शुद्ध चिकने छड़े में भर, उसमें-६ सेर गुड़ और २६ सेर जल मिला, सबको अच्छी तरह घोलकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १० दिन तक लीद में गाढ़कर रक्खे। पश्चात् छानकर उसी मटके में पुनः ६ सेर गुड़ मिला और १० दिन तक लीद में दवाकर रक्खे, फिर छानकर काम में लावे।

मात्रा—२॥ तोले तक।

गुण—पुराना श्वास (दमा), कास, निर्बलता तथा सब प्रकार के कफ रोगों में अत्यन्त लाभप्रद है। वीर्यबर्धक एवं कामोत्तेजक भी है।

बब्बूल्याद्यरिष्ट—देखिये, श्वासान्तकारिष्ट।

३७६ बलारिष्ट *—वातव्याधि नाशक।

विधि—खरैंटी की जड़ और असगन्ध प्रत्येक ५-५ सेर लेकर, जवकुटकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, चिकने मटके में भर देवे और उसमें—१५ सेर गुड़, १३ छटांक धाय के फूलों का चूर्ण तथा शतावर और एरण्ड की छाल; प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले,

---

* बलाश्वगन्धयोर्ग्राह्यं पृथक् पलशतं शुभम्। चतुर्द्रोणे जलेपक्त्वा द्रोणमेवावशेषयेत् ॥ शीते तस्मिन् रसे पूते क्षिपेद्गुड तुलात्रयम्। धातकीं षोडशपलां पयस्यां द्विपलांशिकाम् ॥ पंचाङ्गुलपल द्वन्द्वं रास्नामेलांप्रसारिणीम्। देवपुष्पमुशीरं च श्वदंष्ट्रां च पलांशिकाम् ॥ मासं भाण्डेस्थितस्त्वेष बलारिष्टो महाफलः। हन्त्युग्रान् वातजान् रोगान् बल्पुष्ट्यग्निवर्धनः ॥ —भैषज्यरत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रास्ना, इलायची, प्रसारणी, लौंग, खस और गोखरू प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, १ मास तक, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तोले से ४ तोले तक।

गुण—प्रबल से प्रबल वातव्याधि को नष्ट करता है और बल, पुष्टि तथा अग्नि की वृद्धि करता है।

---

३७७ बल्लभारिष्ट—नं० १—कुष्ठादि नाशक।

विधि—उसवा ४० तोले, अनन्तमूल १ सेर, कटेरी की जड़ २० तो०, कचनार की छाल ४० तो० तथा सिरस की छाल, मजीठ, चिरायता, स्यातरा (पित्तपापड़ा), गिलोय, देवदारु, मुंडी, सरफोंका, बबूर (कीकर) की छाल, जवासे की जड़, देवदारु, बकायन की छाल ये प्रत्येक २०-२० तोले और इन्द्रायन की जड़ ४० तोले, सब को जवकुट कर, १ मन १० सेर जल में पकावे। १२ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें—कत्था २० तोले, त्रिफला ६ तोले, कुटकी, उन्नाव, मुनक्का, नीम के फूल और मेंहदी ये प्रत्येक २-२ तोले, चन्दन दोनों २० तो०, गुलबनपशा २ तो०, शतावर २ तो०, धाय के फूल २ तो०, इन्द्रायन की जड़ ५ तो०, बच २ तो०, बावची २ तो०, शहद २ सेर और गुड़ ५ सेर, मिला पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ५ तो० तक। अनुपान—२॥ तो० जल तथा १ तो० शर्बत उन्नाव या शहद।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—कुष्ठ, उपदंश तथा अन्य किसी भी प्रकार से उत्पन्न रक्तविकार, वातरक्त तथा व्रण नाशक है। रक्तविकार की यह अनुपम अव्यर्थ औषधि है।

(धन्वन्तरि–प्रयोगांक)

---

३७८ वल्लभारिष्ट–नं० २—रक्तविकार नाशक।

(वैद्यराज गौरीशंकर जी आनन्द)

विधि—उसवा, कचनार की छाल, चोबचीनी और इन्द्रायन की जड़ प्रत्येक ४०–४० तोले, अनन्तमूल १ सेर तथा शीशम की छाल, कटेरी की जड़, सिरस की छाल, मजीठ, चिरायता, पित्तपापड़ा, गिलोय, मुण्डी, सरफोंका, हरड़; बहेड़ा, आमला, कोकड़ की छाल; देवदारु, बकायन की छाल, जवासे की जड़ प्रत्येक २०–२० तोले। सबको जवकुट कर ५० सेर जल में २४ घंटे भिगो, क्वाथ करे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें कत्था २० तोले, जंगी हरड़ ६ तो० तथा कुटकी, उन्नाव, मुनक्का, नीम के फूल, मेंहदी के पत्ते, रसौत, धाय के फूल, वच, गुलाब के फूल प्रत्येक २–२ तोले, इन्द्रायन की जड़, धमासा, गोखरू, दारुहल्दी, चित्रक, वायविडंग और कचूर प्रत्येक ५–५ तोले, दोनों चन्दन २० तो०, शहद २ सेर गुड़ २ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ३ तो० तक। अनुपान–जल, या शर्बत उन्नाव अथवा अर्क उन्नाव में मिला कर दे।

गुण–रक्तदुष्टि, व्रण, खाज और उपदंश में अत्यंत उपकारी है।

(अ० चि० संग्रह)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नोट—यह नं० १ की ही नकल मालूम होती है, द्रव्यों में किंचित् परिवर्तन होने से हमने इसे भी लिख दिया है।

—संपादक ।

---

३७९ बाकुच्यासव—श्वेतकुष्ठ पर ।

(वैद्यराज पं० टीकादत्तजी त्रिवेदी, मुरादाबाद)

विधि—बावची १। सेर, खैरसार की लकड़ी का बुरादा १। सेर, आमले, १। सेर; सबको जवकुट कर, १० सेर जल मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और उसमें पुराना गुड़ ४ सेर, शहद २॥ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—श्वेतकुष्ठ, पामा, खुजली आदि रोगों में अत्यन्त हितकर है।

बालछड़ासव—देखिये, जटामास्यासव ।

३८० बाळजीवन सिन्धु (आसव)—बाल-विकारनाशक ।

(श्री डा० के० डी० तलनियाजी—अल्मोड़ा)

विधि—चूना (कलई का बिना बुझा हुआ) २॥ सेर लेकर, साफ़ औटते १॥ऽ मन पानी में बुझा कर १-१ घंटे बाद, एक बड़ी कलईदार करछी से हिलावे, ऐसा १७ बार करके, ३ घंटे बाद, चूने के ऊपर जमी हुई मलाई फेंक देवे, और पानी को धीरे २ कलईदार एक बड़े डेग या मिट्टी के मटके में डाल कर,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उसमें अमलतास का गूदा २० तोले, काबुली हरड़ और सुहागे का फूल १५–१५ तोले, तथा गुलबनफसा, सौंफ, सफेदजीरा; गुलाब के फूल; उन्नाव, वायविडंग, मुनक्का और सोंठ का चूर्ण १०–१० तोले, मुलैठी, पीपल और काकड़ासिंगी का चूर्ण प्रत्येक ५–५ तोले, और अतीस का चूर्ण २॥ तोले, सबको मिला कर, आग पर हल्की आंच से पकावे। औषधियों के तोल का चौगुना (अष्टमांश) क्वाथ शेष रहने पर, साफ कपड़े से ३ बार छान; उसमें २॥ सेर चीनी (दानेदार बूरा) (अथवा २॥ सेर शहद मिला), पुनः आँच देवे। एक तार की चाशनी जैसा होजाने पर, उतारले; और शीतल होजाने पर, पुनः छानकर, उसमें नीबू का सत २॥ तो० और नौसादर का महीन चूर्ण १ तोला मिलाकर पात्र का मुख बन्द कर रख देवे। दो रोज तक घन्टे २ बाद हिलाते रहना चाहिये। फिर बाद में ७ दिन तक दवा के पात्र को न हिलावे। पश्चात् ६ वें दिन ऊपर का अर्क (आसव) या तो पिचकारी से खींच लेवे, या धीरे से नितार लेवे। नीचे का जमा हुआ फोक-उसमें न मिलने पावे। पश्चात् इस आसव में देशी कपूर ६ माशे, पीपरमेंट (सत पोदीना) ६ माशे और अजवायन का सत ३ माशे एकत्र मिला (इन तीनों का पिघला हुआ अर्क) मिला दे, और गुलाब का इत्र, चन्दन का तैल (असली), और दारचीनी का असली तैल प्रत्येक १-१ तोला, मिला कागदार शीशियों में भर ले।

मात्रा—१ से ६ माह के बालक को १० बूंद, ६ माह से १ साल तक १५ बूंद, १ से ५ साल तक २५ बूंद, दूध या पानी के साथ देवे।

गुण—बच्चों के सब रोग, खाँसी, अजीर्ण, कै, दस्त, कृमि-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रोग, सूखारोग, चर्मरोग, खुजली आदि तथा दूध फेंकना, संग्रहणी, अतिसार आदि विकार दूर होते हैं। बालकों को मोटा; ताजा बनाता है।

(धन्वन्तरि–सिद्धयोगांक)

---

३८१ बालरक्षकासव—बाळरोग हारक ।

(श्रीयुत वैद्यराज बालकृष्णजी शर्म्मा)

विधि—मुलैठी का सत, अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी; पीपल; मीठी बच, वायविडंग, जायफल, जावित्री, और केशर प्रत्येक १-१ तोला, कस्तूरी ३ माशे और रेक्टीफाइडस्प्रिट ४० तोले, लेकर, सबको जवकुट कर, स्प्रिट में मिला; बोतल में भर देवे, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, ७ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् फलालेन में छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से १५ बून्द तक, आयु के अनुसार । अनुपान दूध या पानी में मिला कर सेवन करावे।

गुण—बालकों की सरदी, ज्वर, कफ, खाँसी, न्युमोनिया, तिल्ली; कमजोरी, आक्षेपक (आकड़ी) आदि नाशक है। यदि बालक को कब्जी हो तो इसमें एलुआ या रेवन्दचीनी मिला कर देने से दस्त साफ होजाता है। यदि उसे दस्त अधिक होते हों तो इसमें यथोचित परिमाण से अफीम मिला कर देवे; तत्काल दस्त बन्द होजाते हैं।

---

३८२ बालसुधासव नं० १—बालरोग हर।

(श्री० स्वामी चैनदास जी वैद्यराज लाडनूं)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—थूहर के पक्के फल १ तो०, सफेद अतीस, बेलगिरी, काकड़ासिंगी, पीपल, कपूर और मोचरस प्रत्येक का चूर्ण ६-६ माशे तथा गुडूची, सौंफ़ और इलायची के दाने प्रत्येक का चूर्ण १॥-१॥ तोले, नागरमोथे का चूर्ण २॥ तोले, बड़ी हरड़ें (करीब २-२॥ तोले वजन वाली) का चूर्ण ५ तोले, शहद १ सेर और चूना बुझाया हुआ जल ५ सेर लेकर, प्रथम थूहर के फल को काँटों से रहित कर, टुकड़े २ कर लेवे। फिर सब द्रव्यों को एक शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छी तरह कपड़ मिट्टी से पात्र का मुख बन्द कर, जमीन में गाड़ देवे। १ मास के बाद निकाल, मजबूत वस्त्र से छान लेवे, कुछ देर नितर जाने पर शीशियों में भरकर रख ले।

मात्रा—४ माशे से ६ माशे तक तथा १ तोला से १। तोला तक अवस्थानुसार, दिन में ३ या ४ बार जल के साथ सेवन करावे।

गुण—ज्वर, अतिसार, हैजा, कफ़, खांसी, सूखारोग आदि बालकों की बीमारियों को दूर करने में अद्वितीय है।

(अ० यो० माला० सिद्धयोगांक)

---

३८३ बालसुधासव नं० २—बालरोग हर।

(वैद्यराज गुरुदयाल जी उपमन्यु, वाह, आगरा)

विधि—बड़ी हरड़ का छिलका, अनार का बक्कल बहेड़े की मींगी और छिलका, प्रत्येक ५-५ तोले, बबूल की अन्तर छाल १० तोले, जावित्री दो तोले, जायफल १० नग, कूठ दो तोले और पीपल ५ तोले. इन सबको कूटकर, २॥ सेर जल में मिला,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-गुड़ १ सेर और शहद २० तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। २० दिन के बाद निकालकर, छान लेवे।

मात्रा—१ माशा से १ तो० तक।

गुण—बालकों के ज्वर, कास, पाचनशक्ति की कमजोरी तथा अन्यान्य रोगों पर रामबाण है।

---

३८४ बालसुधासव—नं० ३—बालरोग हर।

(वैद्यराज श्री बालकृष्ण जी शर्म्मा,—भूपाल)

विधि—सोये के बीज, जीरा और सौंफ प्रत्येक १०-१० तोले, पोदीना ५ तोले इन चारों को जवकुट कर ६०० तोले (७॥ सेर) जल में १२ घंटे तक भिगोने के बाद, नलिका यन्त्र द्वारा अर्क खींच लेवे। जब ४०० तोले अर्क खिच जावे तब उसमें-सोडा बाईकार्ब (खाने का सोड़ा) ४ तोले और सादा शर्बत ६० तो० मिला, मुख बन्दकर ७ दिन तक रक्खा रहने देवें। पश्चात् फलालेन से छानकर बोतलों में भरकर रख ले।

मात्रा—३० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—बालकों को प्रतिदिन सेवन करना चाहिये। इससे वायुरोग, बेहोशी, दस्त, वमन, खांसी दूर हो जाती है, दूध पचता है। बालक नीरोग होकर आनन्द में रहता है।

---

३८५ बालसुधासव—नं० ४—बालरोग हर।

(श्री० पं० अनन्तदेव जी दीक्षित, वैद्यशास्त्री)

विधि—अर्क सौंफ १ सेर, शतावरी का स्वरस १ सेर, चूने

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

का पानी ५ तोले और बढ़िया मिश्री ऽ१॥। सेर इनको एकत्र मिला चासनी करे, शर्बत के समान चाशनी आने पर शुद्ध अफ़ीम २॥। तोले गरम जल में घोलकर अच्छी तरह चाशनी में मिला देवे और शुद्ध चिकने चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, उसमें-अतीस असली, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सफेदमिरच, अजवायन का सत्त, पीपरमेंट प्रत्येक का चूर्ण ६॥-६॥ माशे और सत्व गिलोय १। तोले अच्छी तरह मिलाकर, कागजी नीबू का स्वरस ३ छटांक बाद में मिला; पात्र का मुख बन्द करके रख दे। तीसरे या चौथे दिन से ही इसे कार्य में ला सकते हैं।

मात्रा—१ मास के बालक को दो बून्द, दो मास के बालक को ३ बून्द, इसी प्रकार ८ मास तक १-१ बून्द बढ़ाकर देवे। १ वर्ष तक १० बून्दे दे। २ वर्ष से ४ वर्ष तक १५ बून्दे, ५ वर्ष से ८ वर्ष तक २० बून्दे, ८ वर्ष से अधिक आयु के बालक को २५ बून्द से ३० बून्द तक देवे। अनुपान-माता का दूध, गाय का दूध या जल।

गुण—अतिसार, संग्रहणी, शूल, दर्द, सिर दर्द, कास, श्वास, वमन, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, हरे, पीले दस्त, अजीर्ण, अफ़ारा, आदि पर उत्तम लाभदायक है।

---

३८६ बालामृतारिष्ट—बालरोग नाशक।

(श्री पं० देवदत्तजी शर्मा वैद्यशास्त्री, शंकरगढ़)

विधि—सनाय की पत्ती (लकड़ी रहित), अमलतास का गूदा, मुनक्का बीजरहित प्रत्येक १-तोला, निसोथ की छाल और कचूर प्रत्येक ५-५ माशे, बड़ी हरड़, मरोड़फली, गुलबन-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुशा, सौंफ ६-६ माशे गुलाब के फूल, इन्द्रायन का गूदा, छोटी हरड़, पलाश पापड़ा, इन्द्रजौ मीठे, सफेदजीरा, स्याहजीरा, अजवायन, अजमोद, सुहागा-भुना हुआ, मुलैठी का चूर्ण प्रत्येक ३-३ माशे, एलुवा, रेवन्दचीनी, कालानमक और हल्दी की गांठ भुनी हुई प्रत्येक १॥-१॥ माशे, कालीमिरच और छोटी इलायची के दाने एक एक माशा, हींग भुनी हुई १ रत्ती और बहुत बढ़िया शीरेखिश्त २ तोले। इन सब द्रव्यों का चूर्णकर ४ सेर जल में पकावे, १ सेर शेष रहने पर, छानकर-शुद्ध चिकने पात्र में भर, उसमें आधसेर गुड़ और ५ तोले देशीसुरा मिला, पात्र का मुख बन्दकर, सुरक्षित पड़े रहने देवे, १५ दिन बाद छानकर, उसमें १ पाव बढ़िया शहद मिला बोतल में भर कर रख दे।

मात्रा—अवस्थानुसार १० बून्द से १ तोला तक। माता के दूध अथवा जल में मिलाकर देवे।

गुण—बालकों के समस्त रोगों पर यह प्रभावशाली है।

वासारिष्ट—देखिये, वासकारिष्ट।

३८७ बिल्वपत्रासव—(स्वकृत)—मधुमेहादि नाशक।

विधि—बेल के पत्रों का स्वरस (जल मिलाकर पीसकर, वस्त्र में छानकर निकाले) १ सेर, कालीमिरच को चूर्ण ५ तो० और रेक्टिफाइडस्प्रिट १० तोले मिलाकर बोतलों में भर मजबूत कार्क लगाकर रख दे। ७ दिन पश्चात् काम में लावे।

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक। जल के साथ सेवन करावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

गुण—मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है, त्रिदोषजन्य शोथ, मलरोध, बवासीर और कामलारोग को भी दूर करता है।

---

३८८ बिल्वफलासव—(स्वकृत) नं० १—अतिसार नाशक ।

विधि—बेल के कच्चे कोमल फलों को कूटकर धूप में सुखा डाले। फिर महीन चूर्णकर, आध सेर चूर्ण में २० सेर जल मिला कर पकावे, १० सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर कर उसमें ३ सेर मिश्री, १ सेर धायके फूलों का चूर्ण और २ सेर शहद तथा सोंठ का चूर्ण ५ तोले और अफीम १ तोला मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१तोला से २॥ तोले तक। यथाशक्ति सेवन करावे। जल के साथ।

गुण—हर प्रकार के अतिसार (पेचिश) के लिये राम बाण है।

---

३८९ बिल्वफलासव-(स्वकृत) नं० २-वमन दाहादिनाशक ।

विधि—बेल के पके फलों का गूदा निकाल कर, आध सेर गूदे में ३ सेर शीतल जल मिला, घोलकर वस्त्र में छान लेवे। इस छने हुये जल को शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें २ सेर मिश्री, आध सेर धायके फूलों का चूर्ण, तथा इलायची, काली-मिरच, लौंग, नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, और कपूर १ तोला, मिला, पात्र का मुख बन्द कर, ७ दिन तक रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—तृषा, वमन, दाह, थकावट और आमदोष को नष्ट करता है। अग्निदीपक, रुचिवर्धक है।

---

३९० बीजकारिष्ट *—संग्रहणी आदि नाशक।

विधि—विजयसार की छाल १३ छटाँक, हरड़, बहेड़ा, आमला तीनों १ सेर, मुनक्का २० तोले और पीपल की लाख २८ तोले लेकर, सबको जवकुट कर १३ सेर जल में पकावे। ३। सेर जल शेष रहने पर छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होने पर उसमें ५ सेर खांड, १३ छटाँक शहद, तथा सोंठ, मिरच, पीपल, नख (सुगंधित द्रव्य), खस, सुपारी, शीतलचीनी, मुलैठी और कूठ प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जौ के ढेर में दबा कर रक्खे। ग्रीष्मऋतु में १० दिन पश्चात् तथा शीतकाल में २० दिन पश्चात् निकाल कर छान लेवे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

---

* बीजकात्षोडशपलं त्रिफलायाश्च विंशतिः । द्राक्षायाः पंच लाक्षायाः सप्तद्रोणे जलस्यतत् ॥ साध्यं पादावशेषेतुपूते शीते समावपेत् । शर्करायास्तुलां प्रस्थं माक्षिकस्य च कार्षिकम् ॥ व्योष व्योघ्रनखोशीरं क्रमुकं सैलवालुकम् । मधूकं कुष्ठमित्येतच्चूर्णितं घृतभाजने ॥ यवेषु दशरात्रं तद्ग्रीष्मे द्विः शिशिरे स्थितम् । पिवेत्तद्ग्रहणीपांडुरोगार्श शोथगुल्मनुत् ॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीमेहकामलासान्निपातनुत् । बीजकारिष्टएवैष आत्रेयेण प्रकीर्तितः ॥ —चरक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—संग्रहणी, पाण्डुरोग, बवासीर, सूजन, गोला, मूत्र-कृच्छ्र, पथरी, कुष्ट, कामला, प्रमेह और सन्निपात का नाशक है।

बुद्धिवर्धकासव—देखिये, ब्राह्मयासव नं० १।

३९१ बृहन्मूलासव *—क्षयादिनाशक।

विधि—सेहुण्ड, बड़ और आक (मदार) प्रत्येक के (पत्ते, छाल, फल और फूल) मूल रहित पंचाङ्ग ५-५ सेर, और दश-मूल (सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी, गोखरू, वेल, स्योनापाठा कुम्भेर, पाढल और अरणी इन सब की जड़ लेवे) १५ सेर, सबको जवकुट कर, ८ मन ३॥ सेर जल में पकावे। जब १ मन ८॥ सेर जल शेष रहे तब छानकर, उसमें २॥ मन गुड़ मिला कर, ३ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् शुद्ध चिकने मजबूत

* महावृक्षवटार्काणां विनामूलैः परैः शुभैः। अष्टोत्तर शतैरम्भस्त्रिंश-द्घटामितं पचेत्॥ तुलात्रयप्रमाणंच दशमूल्यास्तथैव च। अष्टावशेषमु-त्तार्य गुडस्यानुदिनद्वयम्॥ पलानां विंशतिशतं क्षिपेत्तच्च दृढे घटे। आतपे तं विनिक्षिप्य धारयेत्त्रिदिनं ततः॥ उद्धृत्य धूपिते पात्रे वस्त्र-पूतं क्षिपेद्भिषक्। पलाष्टकं हरीतक्या धातक्या पल विंशतिम्॥ पूगानां विंशतिपलं पिप्पल्याः पलपंचकम्। एळालवंगकंकोळजातीत्वक्पत्रकेशरम्॥ पलं पलं समरिचं चूर्णीकृत्य भिषग्वरः। आसवे निक्षिपेत्तत्र मधुनः कुडव-द्वयम्॥ संजातेऽष्टादिने तस्मादुद्धृत्यान्यत्र तं न्यसेत्। आसवे सकषाये तु गुडमन्यं प्रदापयेत्॥ निष्कास्य पूर्वचूर्णंतु नवंतत्र नियोजयेत्। नाम्ना बृहन्मूलासवो ह्येष रोगराज निकृन्तनः॥ श्वासामवात विध्वंसी पाण्डुप्लीहोदरापहः। कृमिगुल्मप्रमेहाणां नाशनो वन्हिदीपनः॥

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मटके में भर कर उसमें हरड़ ३२ तोले, धायके फूलों का चूर्ण १ सेर, सुपारी का चूर्ण १ सेर, पीपल २० तोले इलायची, लौंग, कंकोल, जावित्री, तेजपात, नागकेशर, और कालीमिरच ४-४ तोले प्रत्येक का चूर्ण कर मिलावे, तथा मधु (शहद) ३२ तोले मिला कर; पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर ८ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् आसव तैयार होजाने पर, छानकर दूसरे चीनी मिट्टी के पात्र में भर देवे। यदि स्वाद में कसैला हो तो आवश्यकतानुसार उसमें गुड़ एवं अन्य उक्त हरड़ आदि प्रक्षेप द्रव्यों का चूर्ण मिला, मुख मुद्राकर पुनः १० या १५ दिन तक रखा रहने देवे। पश्चात् फिर से छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—क्षय, दमा (श्वास), आमवात, पाण्डु, तिल्ली, उदररोग, कृमि, गोला, प्रमेहादि नाशक है। तथा अग्निदीपक है।

---

३९२ बेलाडोनासव—(स्वकृत)—वेदना शामक।

विधि—बेलाडोना (सूचि) के पत्तों का जवकुट चूर्ण २॥ तो० में मद्य (रेक्टिफाइडस्प्रिट) २॥ रत्तल (पौंड) मिला, कांच के पात्र में दृढ़ काग लगा कर रख दे, ७ दिन के बाद छान लेवे।

मात्रा—५ बूंद से १५ बूंद तक। अनुपान जल।

गुण—श्वास विकार को, तथा अन्य वातकफ की वेदना को शमन करता है। कंप, अपस्मार, हिस्टेरिया, कुकुरखाँसी आदि विकारों को भी दूर करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३९३ बोलासव—अग्निदीपक ।

विधि--बोल (बीजाबोल या मुरमकी भी कहते हैं) के १ भाग चूर्ण में १० गुना मद्य ((६० प्रतिशतवाला) मिला, बोतल में भर दृढ़ काग लगा कर रक्खे । ७ दिन बाद मोटे फलालेन के वस्त्र से छान शीशियों में भर कर रखले ।

मात्रा—१० बून्द से ६० बून्द तक । जल के साथ ।

गुण— आमाशय के लिये दीपक, श्वासमार्ग के लिये कफ स्रंसक, गर्भाशय के लिये आर्तव प्रवर्त्तक तथा शोधक है। दन्त-मांस-शोथ तथा दन्तपूय रोग में-बोलासव, वत्सनाभासव, आयोडीनासव और ग्लीसरीन समान २ भाग मिला कर लगावें।

(अ० योगमाला)

---

३९४ ब्रह्मदण्डयासव--(स्वकृत)—रक्तदोष हारक ।

विधि—ब्रह्मदण्डी (ऊंटकटीरा) की जड़ जो कन्द के समान होती है, उसे ४ सेर और गोरखमुण्डी का पंचाङ्ग १ सेर लेकर दोनों को जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे । ५ या ६ सेर तक जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, और ठंडा होजाने पर उसमें शहद ३ सेर, मिश्री २॥ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १ सेर और कालीमिरच का चूर्ण ५ तोले मिला, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—रक्तदोष, उपदंशजनित व्रण, कुष्ठ आदि नाशक है। रक्त को शुद्ध करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

३६५ ब्राम्ह्यासव–नं० १–बुद्धि वर्धकासव ।

विधि–ब्राह्मी का स्वरस ३ सेर ४ छटाँक, कूष्माण्डस्वरस १३ छटाँक तथा शंखपुष्पी, कूठ, मालकांगनी, सफेद बच, नागौरी असगंध, सतावर, मुलैठी और पाठा प्रत्येक ४–४ तोले सबको जबकुट कर १ मन १२ सेर जल में पकावे। ६॥ सेर जल शेष रहने पर, उसमें १३ सेर गाय का दूध मिला सबको एक मिट्टी के चिकने मज़बूत वर्तन में, जिसमें कि लाख आदि का अन्दर प्रलेप हो, डालकर निम्नलिखित औषधियों का प्रक्षेप करे। खिरेंटी, भोंफली (बहुफली), ब्राह्मी, सेमल की मुसली, हरड़, बहेड़ा, आमला, कूठ, हल्दी और असगंध प्रत्येक का चूर्ण २–२ तोले, सोंठ, मिरच, पीपल ये तीनों मिला कर दो तोले चूर्ण करके मिलावे, तथा केसर १ तोला और स्वर्णभस्म ३ माशे मिला, मुखमुद्रा कर रक्खे । ७ दिन के बाद (जब उसमें उफान सा आने लगे) भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे ।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक। अनुपान–दूध । प्रातः सायं ।

गुण—बुद्धि, धृति और स्मृति की वृद्धि होती है ।

(अ० योगमाला)

---

३९६ ※ ब्राम्ह्यासव नं०–२––क्षीणस्मृति, अपस्मारादिनाशक ।

विधि–ब्राह्मी का चूर्ण १ भाग और मद्य (४० से ६० प्रतिशतवाला) ५ भाग एकत्र कर, कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, दृढ़ मुख मुद्रा कर ७ वा १५ दिन तक रक्खा रहने देवे । पश्चात् फलानेल से या मलमल से अच्छी तरह निचोड़ते हुये छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—आधा मासा से ४ माशे तक।

गुण—क्षीणस्मृति, स्वरकार्कश्य, उन्माद, अपस्मार, अपतंत्रक तथा अनेक प्रकार के रक्तविकार और चर्म रोगों के लिये लाभप्रद है। उक्त रोगों में लाभ करने वाली अन्य औषधियों के साथ मिला कर इसका व्यवहार करना चाहिये।

(मद्यासव)

ब्राह्मयाद्यासव--देखिये, रक्ताल्पताहरासव।

ब्राह्मयारिष्ट--देखिये, सारस्वतारिष्ट।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भ

३२७ भल्लातकासव * —अर्श आदि नाशक।

विधि—शुद्ध किये हुए भिलावे ३ सेर १६ तो०, दूध ८ सेर और जल ३२ सेर, एकत्र कर पकावे। जब द्रव भाग लगभग १२ सेर तक शेष रहे (यह हमारा स्वयं प्रमाण है), तब उसे छानकर, उसमें ८ सेर घी और १ सेर मिश्री मिला, पुनः पकावे, जब वह किंचित् गाढ़ा सा हो जाय तब उसको एक शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें–१ सेर शहद, १ सेर आमले का चूर्ण, ४० तोले हरड़ का चूर्ण, २० तो० लोहभस्म और २० तोले गिलोय का सत मिला, मटके का मुख अच्छी तरह बन्द कर, अनाज के ढेर में दबा देवे। ७ दिन पश्चात् (हम १५ दिन तक रखते हैं) निकालकर काम में लावे।

---

* भल्लातकचतुःषष्टिपलं दुग्धं च तत्समम्। दुग्धाच्चतुर्गुणं वारि पाच्यं दुग्धावशेषकम्॥ दुग्धतुल्यं घृतं योज्यं घृतपादं सितां क्षिपेत्। मधुधात्रीसितातुल्यं सितार्धमभयारजः॥ मृतलोहं गुडूची च प्रत्येकमभयार्धकम्। क्षिपेत्–स्निग्धघटे सर्वं धान्यराशौ निवेशयेत्॥ सप्ताहादुद्धृतं तत्तु खादेदक्षिप्कत्रयं त्र्यम्। भल्लातकामृतं नाम हन्ति रक्तार्शसां किल॥ क्षारं तीक्ष्णं न भोक्तव्यं तैलाभ्यङ्गं च वर्जयेत्॥

—वृ० नि० रत्नाकर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१॥ माशा से १ तोला तक। अनुपान-दूध या जल।

गुण—रक्तार्श को शीघ्र ही दूर करता है। ग्रहणी विकार में भी लाभदायक है। रक्तविकार नाशक, अग्निप्रदीपक, बल, वीर्य, पुष्टिदायक है। शास्त्र में इसका नाम-"भल्लातकामृत्" रक्खा गया है।

नोट—इसके सेवन काल में क्षार और तीक्ष्ण पदार्थों से परहेज करना चाहिये, तथा शरीर पर तैल मर्दन न करे, तैल भी नहीं खाना चाहिए।

३९.८ भल्लातकारिष्ट—बल-बुद्धि वर्धक।

(वैद्यराज कन्हैयालाल जी स्वर्णकार)

विधि—वे भिलावे जो कि पेड़ पर ही फूल गये हों और पक कर अपने आप गिर पड़े हों उनको एक आढ़क (३। सेर) लेकर, ईंट के चूर्ण के साथ घिसकर; जल से धोकर, हवा में सुखावे, फिर इन भिलावों को पीसकर एक घड़े में पकावे। चौथाई शेष रहने पर, उतार ले, ठंडा होने पर छान ले। इस काढ़े को एक घड़ा दूध के साथ पकावे, चौथाई शेष रहने पर, उतार कर छान ले। फिर इसके साथ समान जल डालकर पकावे। पश्चात् इसमें उचित प्रमाण में घी, शक्कर मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख मुद्रा कर, अनाज के ढेर में गाढ़ देवे। एक मास बाद निकाल छानकर साफ़ बोतलों में भरकर रख दे।

मात्रा—बलाबल देखकर १ माशा से २ तोले तक।

गुण—इसे नित्य प्रातःकाल के समय सेवन करने से स्मृति मेदा, बल, बुद्धि बढ़कर, शरीर दीर्घायु होता है, स्वर्ण जैसी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कान्ति उत्पन्न होती है। सफेद बाल काले हो जाते हैं। इसपर यथेष्ट दुग्ध, घी आदि शक्तिवर्धक चीजें खानी चाहिये।

(अ० योगमाला)

---

३९९. * भूनिम्बासव—ज्वरादि नाशक।

विधि—चिरायते का चूर्ण १ भाग और मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) १० भाग, एकत्र मिला, कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, दृढ़ मुख मुद्रा कर, ७ या १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् शुद्ध बन्नात या फलालेन की चलनी में छान कर बोतलों में भरकर रख दे। (यदि इसमें यथोक्त मात्रा से मद्य कुछ कम हो जाय तो ऊपर से और मिलाकर मात्रा पूरी कर देनी चाहिये)।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—अग्निमांद्य, अजीर्ण, ज्वर, अरुचि और रक्तविकार के लिये लाभप्रद है।

(मद्यासव)

---

४०० भृङ्गराजासव *—क्षय, कासादिनाशक।

---

* भृङ्गराजरसद्रोणं गुडस्य द्वितुलां तथा । प्रस्थार्धं तु हरीतक्याः स्निग्धे भाण्डे निवेशयेत् ॥ पक्षादूर्ध्वं पिवेदेनं मात्रया च यथावलम् । जाते ह्यस्मिन्पुनर्दत्वा पिप्पल्याश्च पलद्वयम् ॥ जातीफलं लवंगानि त्वगेला पत्रकेशरम् । धातुक्षयं जयेत्पीतः कासं पंचविधं तथा । कृषानां च महा-पुष्टिं कुरुते च महावलम् । कामवृद्धिं करोत्येष वन्ध्यानां पुत्रदो भवेत् ॥

—गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—भांगरे का स्वरस १३ सेर लेकर, उसमें १० सेर गुड़ और ६॥ छटाँक हरड़ का चूर्ण मिलाकर, चिकने मटके में भर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर रख दे। १५ दिन पश्चात् छानकर, उसमें पीपल, जायफल, लौंग; दारचीनी, इलायची, तेजपात और नागकेशर का चूर्ण प्रत्येक ८-८ तोले मिला कर, पुनः मटके में भर, मुख अच्छी तरह बन्द कर दे, और १५ दिन बाद निकाल कर, छानकर बोतलों में भर कर रख ले।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक। भोजनोपरान्त।

गुण—धातुक्षय, हर प्रकार की खाँसी और कृशता नाशक है। अत्यन्त बलकारक और कामोद्दीपक है। इसके सेवन से वन्ध्या स्त्री को सन्तान होती है। क्षयके रोगी को इसका सेवन कराने से, उसके पेशाब में बहकर जानेवाली धातुओं को यह शीघ्र ही रोकता है। यह आसव सुस्ती, निर्बलता, २० प्रकार के प्रमेह, स्मरणशक्ति की कमी, नेत्ररोग, श्वास और नजले के कारण होने वाला नेत्र विकार, बालों का सफेद होना, इत्यादि रोगों को दूर करता है, तथा बिगड़े हुये खून को साफ करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

म

मकोयासव—देखिये, माचिकासव ।

४०१ मञ्जिष्ठाद्यासव नं० १—(स्वकृत)—रक्तविकार नाशक ।

विधि—मजीठ १ सेर, सोंफ ३२ तोले, सनाय के पत्ते २४ तोले, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक ८-८ तोले, गुलबनपसा ३२ तोले, सबको जवकुटकर, रात्रि के समय २४ सेर जल में भिगो देवे (कलई किये हुए पात्र में भिगोना चाहिये), सबेरे उसे चूल्हे पर चढ़ा मन्दाग्नि से पकावे । ६ सेर जल शेष रहने पर, उसे छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और उसमें-मिश्री दो सेर, शहद ३ सेर, असली गुलाब जल १ सेर और धाय के फूल आध सेर चूर्ण कर मिलावे। पात्र का मुख बन्द कर १५ दिन रक्खा रहने देवे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से ४ तोले तक। प्रातः सायं सेवन करे।

गुण—रक्त दूषित हो जाने के कारण शरीर पर जो लाल २ चट्टे हो जाते हैं उन्हें एवं श्वित्रकुष्टादि विकारों को यह नष्ट करता है। पथ्य में-चने के पदार्थ, घृत, दूध, ताजा दही, चौलाईकी भाजी लेवे, नमक तैल और अम्लपदार्थ आदि अपथ्य हैं।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

४०२ मञ्जिष्ठाद्यासव (महा) नं० २—कुष्ठनाशक ।

विधि—शास्त्रोक्त महामंजिष्ठादि क्वाथ के कुल द्रव्यों को महीन कूटकर, उसमें १० गुनी रेक्टिफाइडस्पिट (मद्य) मिला कांच के पात्र में या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, मज़बूती से मुखमुद्रा कर, ७ या १५ दिन तक रखा रहने देवे। बीच २ में पात्र को हिलाते रहना आवश्यक है। पश्चात् फलालेन या ऊनी चिकने वस्त्र से छान शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—१ से ३ माशे तक। आठभाग जल मिला प्रातः सायं सेवन करावे।

गुण—कोढ़, सफेद कोढ़ आदि रक्त के विकार से उत्पन्न होने वाले रोगों को दूर करता है। रोगी को नमक, तैल, लाल-मिरच, गुड़, खटाई आदि से परहेज करना आवश्यक है।

मञ्जिष्ठाद्यरिष्ट—देखिये, सारिवाद्यरिष्ट नं० १ ।

४०३ मण्डूरारिष्ट *—पाण्डु, कामलादिनाशक ।

विधि—शुद्ध मंडूर २॥ सेर, शुद्ध लोहचूर्ण (लोहे का बुरादा)

---

* मण्डूरस्य तु शुद्धस्य तुलार्धं परिकल्पितम् । तद्वल्लोहस्य पत्राणि तिलोत्सेधप्रमाणतः ॥ गुडाज्जर्णाच्चु पंचाशत्कोलप्रस्थत्रयं तथा। निकुम्भचित्रकाभ्यांच पले द्वे द्वे सुचूर्णिते ॥ पिप्पलीनां विडङ्गानां कुडवं कुडवं पृथक्। त्रींश्चापि त्रिफलाप्रस्थान् जलद्रोणे समावपेत् ॥ अर्धमासस्थितोधान्ये पेयोऽरिष्टः प्रमाणतः। ऊर्ध्वाधोदोषनिर्हन्ता पांडुरोगं नियच्छति ॥ कृमीनर्शांसिकुष्ठंच कासश्वासकफामयांन् । एषोऽरिष्टस्तुमाण्डूरः शोफपाण्ड्वामयापहः ॥ —योगरत्नाकर ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२॥ सेर, पुराना गुड़ २॥ सेर और बेर की जड़ २ सेर ७ छटाँक तथा दन्ती और चीते की जड़ प्रत्येक ८-८ तोले, छोटी पीपल और बायबिडंग प्रत्येक १६-१६ तोले तथा हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक १३-१३ छटाँक सबका महीन चूर्ण कर, १३ सेर जल मिलाकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छी तरह मुख बन्द कर, अनाज के ढेर में दबा कर रक्खे । १५ दिन बाद, निकाल कर, छानकर, बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक ।

गुण—पाण्डु, कामला, किरम, बवासीर, कोढ़, खाँसी, श्वास (दमा), कफ़ के रोग तथा शोथ (सूजन) को नष्ट करता है । रोगी को वमन और विरेचन कराने के बाद इसका सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है । यह ऊर्ध्व तथा निम्न दोषों को नष्ट करता है ।

---

४०४ मदनफलाद्यासव—वमनार्थ ।

(स्वर्गीय ला० राधावल्लभजी वैद्यराज)

विधि—कचनार की छाल आधपाव, लिसोड़े आधपाव, दन्ती आधपाव, वायविडंग आधपाव, नीम के पत्ते दो पाव, इन्द्रायन आधपाव, सबको जवकुट कर, १० सेर जल में भिगोकर भबके से अर्क खींच लेवे । पश्चात् इस अर्क को शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें मैनफल आधपाव, कडवी तोरई २॥ तोले, बन्दाल के फल २०, तुम्बी का गूदा ५ तोले, गुड़ पुराना १ सेर अच्छी तरह घोलकर, पात्र का मुख बन्द कर धान्य की राशि में दबा देवे । २१ दिन बाद निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—३ या ४ तोले। अनुपान-नमक और शहद मिला हुआ जल।

गुण—कफ की अधिकता में वमन कराने के लिये इसका अच्छा प्रभाव होता है।

(पंचकर्म विवेचन)

---

४०८ मधुमेहासव—प्रमेह, मधुमेह हारक।

विधि—गूलर के बीज, सोंठ, जामुन की गुठली, काली-मुसली, जायफल, जावित्री, लौंग, नागकेशर, सुपारी के फूल, पीपल की लाख, धायके फूल, धनिया, और नागरमोथा प्रत्येक का चूर्ण १०-१० तोले, जामुन की छाल, गूलर की छाल और बरिया (शायद खिरैंटी) की छाल प्रत्येक जबकुट कर २॥-२॥ सेर, जवकुट की हुई आमकी छाल १। सेर, अर्जुन की छाल १ सेर, खैर की छाल, सेमल की छाल, महुये की छाल, आंवले की गिरी और त्रिफला प्रत्येक २०-२० तोले, कुड़े की छाल, बेल की जड़, बांसे के पत्ते, मरोड़फली, करंज के फूल, पठानी लोध, वायविडंग, सुपारी, नागरमोथा, जाठौन (शायद यह शमी वृक्ष की गांठ है) और अनार के वक्कल प्रत्येक १०-१० तोले और बबूर की फली २० तोले, लेकर सबको जवकुट कर, २ मन ३६ सेर जल में पकावे। २८ सेर जल शेप रहने पर, ठंडा होने पर छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे और उस में १४ सेर शहद मिला, मुखमुद्रा कर, २५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ तोले प्रातः तथा २ तोले सायं, जल मिला कर सेवन करे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—प्रमेह विशेषतः मधुमेह को यह शीघ्र दूर करता है इस आसव के उक्त कल्क में यदि २० तोले गुड़मारबूटी और मिला दीजावे तो मधुमेह के नाशार्थ अव्यर्थ रामवाण योग होजाता है। किन्तु। इसका सेवन लगातार करते ही रहना चाहिये। तीन मास में पूर्ण लाभ होता है । साधारण मधुमेह २१ दिन में ही दूर होजाता है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

---

४०६ मधुमेहारिष्ट—मधुमेह नाशक ।

(श्री पं० अनन्तदेवजी शर्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—महुये की जड़ की छाल, पीपल वृक्षकी जड़ की छाल, स्योनाक की जड़ की छाल, वट वृक्ष की जड़ की छाल और आमले की जड़ की छाल, तथा काला (?) वृक्ष के मध्य की नरम डाण्डी प्रत्येक एक-एक पाव और जामुन की छाल आध सेर, सबको जवकुट कर, १६ सेर जल में डाल मन्दाग्नि से क्वाथ करे। ८ सेर शेष रहने पर छानकर एक चिकने मटके में डालकर उसमें जामुन की गुठली, कसेरू, कमल की जड़, और मुनक्का प्रत्येक २०-२० तोले, असली चन्दन का बुरादा, धाय के फूल; प्रत्येक १०-१० तोले, नागकेशर, छोटी इलायची, पलाश का गोंद और शिलाजीत प्रत्येक ५-५ तोले, तज, पत्रज, सोंठ प्रत्येक दो-दो तोलें, मुलैठी ३ तोले, मिश्री ४० तोले, शहद दो सेर और आमले का स्वरस १ सेर लेकर, कूटने योग्य चीजों को कूट पीसकर मिलावे और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे या धान्य की राशि में दबा देवे। १ मास पश्चात् निकाल कर अरिष्ट को मलकर

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

(फलालैन से कई बार छान) बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २ तोले तक। दोनों शाम, भोजन के बाद सेवन करे। अनुपान-जल।

गुण—तीनों प्रकार के मधुमेह के लिये रामबाण है, चाहे वह साध्य हो या कष्टसाध्य।

(धन्वन्तरि-मधुमेहाङ्क)

मधुयष्ट्यासव—देखिये, यष्टिमध्वासव।

४०७ मधुशुक्तयोग *—(आसव)-कर्ण रोगे।

विधि—जम्बीरी नीबू का रस १३ छटाँक, शहद १६ तोले और पीपल का चूर्ण ४ तोले सबको एकत्र मिला, घृत के मटके में भर, उसका मुख बन्दकर, अनाज के ढेर में दबा देवे। १ मास पश्चात् निकालकर छान लेवे।

नोट—शार्ङ्गधरजी इसमें वच, नागरमोथा, सोंठ और गुड़ भी डालने को कहते हैं, और कहते हैं केवल ३ दिन में ही यह मधुशुक्त तैयार होजाता है, अर्थात् १ मास तक रखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

गुण—इसे क्षारतैल में चौगुना मिला, पकाकर, कान में डालने से कान से पीब का बहना, गुन २ आवाज होना, शूल होना, कान के अन्दर कीड़े होजाना इत्यादि कान के कई रोगों को दूर करता है। मुख रोग में इसके कुल्ले कराने से लाभ होता है।

---

* जम्बीराणां फलरसः प्रस्थैकः कुडवोन्मितम्। माक्षिकं तत्रदातव्यं पिप्पली च पलोन्मिता॥ घृतभाण्डे विनिःक्षिप्य धान्यराशौ निधापयेत्। मासेन तज्जातरसं मधुशुक्तमुदाहृतम्॥

—योगरत्नाकर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४०८ मधूकपुष्पासव नं० १ *—संग्रहणी आदि नाशक।

विधि—महुये के फूल १३ सेर, वायविडंग ६॥ सेर, चीते की जड़ ३। सेर, भिलावे ३। सेर और मजीठ १२ तोले, सबको जबकुट कर, ३६ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे (इस मटके के अन्दर इलायची, खस, अगर तथा लालचन्दन का लेप करके दवा भर देवे), फिर उसमें शहद १ सेर १० छटाँक (शहद ३। सेर मिलाना ठीक होगा) मिला, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—२ माशे से १॥ तोला तक।

गुण—संग्रहणी, कफ, पित्तरोग, रक्तपित्त, कुष्ठ, किलास कुष्ठ और प्रमेह नाशक है। पुष्टिकारक भी है।

नोट—देखिये-मधुकारिष्ट।

---

४०९ मधूकपुष्पासव नं० २ *—संग्रहणी नाशक।

---

* द्रोणं मधूकपुष्पाणां विडंगानां ततोऽर्धतः। चित्रकस्य ततोऽर्धं स्यात् तथा भल्लातकाढकम् ॥ मंजिष्ठात्रिपलं चैव त्रिद्रोणेऽपां विपाचयेत्। द्रोणशेषे तु तच्छीतंमध्वर्धाढकसंयुतम् ॥ एलामृणालागुरुभिःचन्दनेन च रूपिते। कुंभेमासस्थितंजातमासवं तं प्रयोजयेत् ॥ ग्रहणीं दीपयत्येषबृंहणः कफपित्तजित्। शोथं कुष्ठं किलासं च प्रमेहाँश्च प्रणाशयेत् ॥ —चरक।

नोट—* वाग्भटे मंजिष्ठाष्टपलमिति पाठभेदः।

मधूकपुष्प स्वरसं शृतमर्धक्षयीकृतम्।

क्षौद्रं पादयुतं शीतं पूर्ववत्सन्निधापयेत् ॥

तं पिबन् ग्रहणीदोषान् जयेत्सर्वान्हिताशनः। —चरक।

नोट—वाग्भटे 'मधूकपुष्पकुडवमिति पाठभेदः'।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

विधि—महुये के फूलों का स्वरस लगभग १० सेर तक निकाल कर पकावे (अथवा ५ सेर महुये के फूलों को कुचल कर २० सेर जल मिला पकावे, ५ सेर जल शेष रहने पर छान कर) आधा शेष रहने पर छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे (मटके में इलायची, खस, अगर तथा चन्दन का लेप पहले ही कर देना चाहिये), फिर उसमें १। सेर शहद मिला, मटके का मुख अच्छी तरह बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खा रहने देवे, पश्चात् छानकर बोतलों में भर देवे।

मात्रा—१ मासा से २ तोले तक।

गुण—यह सब प्रकार की संग्रहणी और अतिसार को नष्ट करता है।

---

४१० मधूकपुष्पासव—नं० ३—श्वास, कासादिनाशक।

(वैद्यराज गुलदयाळजी उपमन्यु, वाह, आगरा)

विधि—महुये के फूल २॥ सेर तथा छुआरे २॥ सेर, दोनों को कूटकर, ६४ सेर जल में पकावे, १६ सेर शेष रहने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें सुपारी १ सेर, इलायची, दारचीनी, पत्रज, और नागकेशर सम्मिलित १० तोले, गुड़ ५ सेर, शहद ५ सेर, मिलाकर (सुपारी आदि का महीन चूर्ण कर मिलावे), पात्र का मुख बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर, काम में लावे। मात्रा–२ तोले तक।

गुण—श्वासरोग के वेग को रोकता है। कास, अरुचि, अजीर्ण का नाशक है। वात की पीड़ा को एक ही मात्रा में दूर करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४११ मध्वासव--नं० १ *प्रमेह नाशक ।

विधि—इन्द्रायण की जड़, अतीस, भारंगी की जड़, कूठ, नागरमोथा, फूलप्रियंगु, वायविडंग, हरड़, बहेड़ा, आमला, पीपल, चव्य, पीपलामूल और अजवायन प्रत्येक एक-एक तोला लेकर, सबको जवकुट कर १३ सेर जल में पकावे । ३। सेर जल शेष रहने पर छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होजाने पर उसमें शहद १ सेर १० छटाँक मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ से ४ तोले तक ।

गुण—प्रमेह को नष्ट करता है।

---

४१२ मध्वासव-- + नं० २—कुष्ठ नाशक ।

---

* विशालाति विषाभार्गी कुष्ठमुस्ता प्रियंगवः ।
विडंगत्रिफलाकृष्णचव्यग्रन्थिक दीप्यकाः ॥
अक्षाँशान् सलिलद्रोणे पक्त्वा पादावशेषिते ।
दत्वा क्षौद्रं तदर्धंहि स्निग्धे भाण्डे निधापयेत् ॥
एष मध्वासवो हन्ति मेहद्विपलयोगतः ।
—गदनिग्रह ।

\+ खदिर सुरदारुसारं श्रपयित्वा तद्रसेन तोयार्थम् ।
क्षौद्रप्रस्थे कार्यः कार्ये ते चाष्टपालिके च ॥
ततश्चायरचूर्णानामष्टपलं प्रक्षिपेत्तथाऽमूनि ।
त्रिफलैलेत्वग्मरिचं पत्रं कनकं च कर्पांशम् ॥
मत्स्यण्डिका . मधुसमातन्मासमादसे भाण्डे ।
मध्वासवमाचरतः कुष्ठकिलासे शमं यातः ॥ —चरक ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४२४ मुस्तकारिष्ट + —अजीर्णादि नाशक ।

विधि—नागरमोथा १० सेर लेकर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें-गुड़ १५ सेर, धाय के फूल १३ छटांक तथा अजवायन, सोंठ, कालीमिरच, लौंग, मेथी, चीते की जड़ और कालाजीरा प्रत्येक ८-८ तोले, सबका चूर्ण कर, मिला देवे । पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रखदे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक ।

गुण—अजीर्ण, मन्दाग्नि, हैजा और भयंकर संग्रहणी रोग को नष्ट करता है ।

---

४२५ मूलासव * —अग्निमांद्यादि नाशक ।

+ मुस्तकस्य तुलाद्वन्द्वं चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् । पादशेषे रसे तस्मिन् क्षिपेद्गुडतुलात्रयम् ॥ धातकीं षोडशपलां यमानीं विश्वभेषजम् । मरिचं देवपुष्पं च मेथीं वन्हिं च जीरकम् ॥ पलयुग्ममितं क्षिप्त्वा रुद्ध्वा भाण्डे निधापयेत् । संस्थाप्य मासमात्रन्तु ततः संस्रावयेद्भिषक् ॥ अजीर्णमग्निमान्द्यञ्च विषूचीमपि दारुणाम् । ग्रहणीं विविधां हन्ति नात्रकार्या विचारणा ॥ —भैषज्य रत्नावली ।

* द्विपञ्चमूलरजनी जीवकर्षभजीरकम् । पृथक् पंचपलैर्भागैश्चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत् ॥ द्रोणशेषे रसे पूते गुडस्य द्विशतं तथा । चूर्णितान्कुडवार्धो शान्दत्वाचात्र समाक्षिकान् ॥ प्रियंगुमुस्तमांजिष्ठा विडंगमधुकप्लवान् । रोध्रं सावरकं चैव मासार्धं स्थापयेद्भृशम् ॥ एष मूलासवः सिद्धो दीपनोरक्तपित्तहा । आमहृत्कफहृद्रोगपाण्डुरोगाङ्गसादनुत् ॥ —गदनिग्रह ।

नोट—चरके-'वीरकर्षभजीवकामिति पाठभेदः' ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—दशमूल (सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी, गोखरू, बेल, स्योनापाठा, कुंभेर, पाढ़ल, अरनी प्रत्येक की जड़) हल्दी, जीवक (अभावे गुडूची), ऋषभक (अभावे बिदारीकंद) और जीरा (काला) प्रत्येक २०-२० तोले, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें १० सेर गुड़, १६ तोले शहद, (८ तो० शहद बहुत कम होता है) तथा प्रियंगु, नागरमोथा, मजीठ, वायविडंग, मुलैठी, केवटीमोथा; पठानीलोध प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला देवें । फिर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खा रहने देवें । पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक ।

गुण—यह परमसिद्ध योग-दीपन, पाचन तथा रक्तपित्त, आमरोग, अफ़ारा, कफ़रोग, हृदय के रोग, पाण्डुरोग और शरीर की शिथिलता को दूर करता है ।

नोट—यह मूलासव, दशमूलासव नं० २ का किंचित् रूपान्तर मात्र है । किंतु है, उससे उत्कृष्ट ।

---

४२६ मृगमदासव * नं० १—विशूचिकादि नाशक ।

---

* मृतसंजीवनी ग्राह्या पंचाशत्पलसंमिता । तदर्धं मधु संग्राह्यं तोयं मधुसमं तथा ॥ कस्तूरी कुडवं तत्र मरिचं देवपुष्पकम् । जातीफलं पिप्पलीत्वग्भागान् द्विपलिकान् क्षिपेत् ॥ भाण्डे संस्थाप्य रुद्ध्वा च निदध्यान्मासमात्रकम् । विषूचिकायां हिक्कायां त्रिदोषप्रभवेज्ज्वरे ॥ वीक्ष्य कोष्ठं बलंचैव मिषङ् मात्रां प्रयोजयेत् । —भैषज्यरत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—मृतसंजीवनी सुरा (इसकी कृति आगे देखें, अथवा इसके स्थान में रेक्टीफाइडस्प्रिट ले सकते हैं) २॥ सेर लेकर, कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें–शहद १। सेर, कस्तूरी १६ तोले तथा कालीमिरच, लौंग, जायफल, छोटी पीपल; दारचीनी प्रत्येक का चूर्ण ८–८ तोले मिला (कस्तूरी को प्रथम सुरा में घोलले) पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् फलालेन या ऊनी वस्त्र से छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—५ बुन्द से ३० बून्द तक। रोगी के बलाबल का विचार कर मात्रा की योजना करनी चाहिये।

गुण—हैज़ा, हिचकी तथा सन्निपात ज्वर में शीघ्र लाभ-दायक है। हैजे की अन्तिम दशा में, जब कि शरीरस्थ उष्णता शांत होकर सर्वांग बर्फ जैसा शीतल होगया हो, धमनियों की गति बिल्कुल गिर गई हो, श्वास एकदम बन्द सा हो गया हो, किंतु छाती में कुछ धड़कन और गर्मी हो, नाखूनों में रक्तता हो, रोगी मूर्छित दशा में हो, ऐसी हालत में इसकी दूनी मात्रा लेकर, उसमें अदरक का स्वरस और थोड़ा शहद मिला कर पिला देना चाहिए। यदि इसकी एक भी मात्रा रोगी के हलक़ के नीचे उतर जाय तो आध घंटे के अन्दर ही सर्वाङ्ग में गरमी आकर, नाड़ी रास्ते पर आ जाती है। श्वासोच्छ्वास भी ठीक चलने लगता है। दो घंटे बाद फिर इसकी दूसरी मात्रा देनेसे रोगी आँखें खोल देता है, –अर्थात् पूर्ण होश में आजाता है। पश्चात् चन्द्रोदय या मकरध्वज की मात्रा देकर पथ्य देना चाहिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४२७ मृगमदासव—नं० २—विशूचिकादि नाशक ।

विधि—उक्त विधि नं० १ में शहद और जल न मिलाकर, कस्तूरी आदि शेष सब द्रव्यों का चूर्ण, मद्य (७० से ८० प्रतिशत वाली अथवा मृतसंजीवनी सुरा) में मिलाकर, आसव उक्त विधि से ही तैयार कर लेंवे ।

मात्रा—आधा माशा से २ माशे तक ।

गुण—हैजा, अग्निमांद्य, सन्निपातज्वर, पार्श्वशूल, निमोनिया और हृदय के रोगों पर उत्तम लाभप्रद है ।

मृगमदासव—नं० ३—देखिये, स्तंभनासव ।

४२८ मृतसंजीविन्यासव * (सुरा)—नं० १—शक्तिवर्धक, वाजीकरण ।

---

* नवं गुडं च संगृह्य शतमेकं पलं तथा । वावरीत्वचमादाय बदरीत्वचमेव च ॥ प्रस्थं प्रस्थं प्रदातव्यं पूगं देयं यथोदितम् । लोध्रं च कुडवं दत्वा चार्द्रकस्य पलद्वयम् ॥ तोयमष्टगुणं दत्वा गुडं संगोलयेत्सुधीः । प्रथमेचार्द्रकं दद्यात् द्वितीये वावरीत्वचम् ॥ तृतीये बदरीं दत्वा गोलयित्वा भिषग्वरः । मुखेशरावकं दत्वा यत्नात् कृत्वा च बन्धनम् ॥ मुखसंबन्धनं कृत्वास्थापयेद्दिनाविंशतिम् । मृण्मये मोचिकायंत्रे मयूराख्येऽपियंत्रके ॥ यथाविधिप्रकारेण मन्दमन्देन वह्निना । चुल्लीमध्ये विधातव्यं मृत्तिकादृढभाजने ॥ तदौषधं च तन्मध्ये समुद्धृत्य विनिक्षिपेत् । नलस्य युगलं दत्वा कुम्भौ च गजकुम्भवत् ॥ कुंभमध्ये विधातव्यं पूगंच सैलवालुकम् । देवदारुलवंगं च पद्मकोशीरचन्दनम् ॥ शतपुष्पायमानीच मरिचंजीरकद्वयम् । शठी मांसी त्वगेला च जातीफलमुस्तकम् ॥ ग्रन्थिपर्णी तथा शुंठी मेथीमेषी च चन्दनम् । एषां चार्धपलान् भागान् कुट्टयित्वा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—खैरसार और देवदारुसार प्रत्येक ३२-३२ तोले लेकर, १३ सेर जल में पकावे। शेष जल ४ सेर रहने पर, छान कर, शुद्ध लोहपात्र में भर देवे और ठंडा हो जाने पर, उसमें-१३-१३ छटांक शहद और चीनी, ३२ तोले शुद्ध लोहचूर्ण तथा हरड़, बहेड़ा, आमला, इलायची, दारचीनी, कालीमिरच, तेजपात और नागकेशर प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला, मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १ मास पश्चात् छान कर काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से ४ तो० तक।

गुण—कुष्ठ और किलासकुष्ठ का नाशक है।

---

४१३ मध्वासव-नं० ३—श्वास, कासादि नाशक।

(रसायनाचार्य आर० के० शर्मा, जगराओं-पंजाब)

विधि—मधु (शहद उत्तम) १ सेर, सुरा (ब्रान्डी नं० १) १ सेर, मृगमद (कस्तूरी) ६ माशे, इन तीनों को एकत्र शुद्ध कलई किये हुए पात्र में भर कर, कचरे के ढेर में ४० दिन तक दबा कर रखना चाहिये। पश्चात् निकाल और छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ माशे तक। प्रयोग-प्रेषक इसकी मात्रा २॥ तो० बतलाते हैं। भोजनोपरान्त, एक समय।

गुण—दुस्साध्य श्वास, पांचों प्रकार की कास, क्षय, स्वरभेद, पीनस, क्षीणता, जीर्णज्वर, उरःक्षत आदि रोगों को शीघ्र नष्ट करता है। निर्बलता एवं वातरोगों पर उत्तम लाभप्रद है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मध्वासव-नं० ४-(प्रमेहादि नाशक)—देखिये, लोध्रासव नं० १ ।

४१४ मध्वरिष्ट + —मन्दाग्नि संग्रहणी आदि नाशक ।

विधि—एक नवीन मटका लेकर, उसके भीतर पीपल और शहद का लेप करके, अगर की धूनी देवे। पश्चात् उस मटके में शहद ३। सेर, जल ३। सेर, वायविडंग ८ तोले, पीपल १६ तो०, बंसलोचन ८ तोले तथा नागकेशर, कालीमिरच, दारचीनी, बड़ीइलायची, तेजपात, कचूर, सुपारी, अतीस, नागरमोथा, पित्तपापड़ा (रयातरा), शीतलचीनी, चव्य, पीपलामूल प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला मिलाकर, घड़े को विधिवत् बन्द कर, एक मास तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—मन्दाग्नि को चैतन्य करता है, विषमाग्नि को समाग्नि बनाता है तथा हृदय के रोग, पाण्डु रोग, संग्रहणी, कोढ़, बवासीर, सूजन, ज्वर, वात और कफ के रोगों को नष्ट करता है। इसीप्रकार के अन्य रोगों को भी यह दूर कर देता है।

+ नवे पिप्पलीमध्वाक्ते कलसेऽगुरु धूपिते । मध्वाढकं जलसमं चूर्णानीमानि दापयेत् ॥ कुडवार्धं विडंगानां पिप्पल्याः कुडवं तथा । चतुर्थिकांशान् त्वक्क्षीर्याः केशरं मरिचानि च ॥ त्वगेलापत्रकशटीं क्रमुकातिविषाघनम् । हरेण्वेलुकतेजोह्वा पिप्पलीमूलचित्रकान् ॥ कार्षिकांस्तान् स्थितं मासमतऊर्ध्वं प्रयोजयेत् । मन्दं सन्दीपयत्यग्निं करोति विषमं समम् ॥ हृत्पाण्डु ग्रहणीरोग कुष्टार्शः श्वयथुज्वरान् । वातश्लेष्मामयाश्चान्यान्मध्वरिष्टो व्यपोहति ॥ —चरक ।

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

४१५ मधुकारिष्ट—

मधूकपुष्पासव नं० १ को ही मधुकारिष्ट कहते हैं। यह रक्त की ऊष्मा को शांत करता है। रक्त को शुद्ध करता है। फुफ्फुस तथा हृदय के विकार के कारण जो कष्टदायक खांसी एवं कफ की विकृति होती है उसको यह शीघ्र ही दूर करता है, अतएव क्षय की दशा में यह विशेष गुणदायक सिद्ध हुआ है। इसमें मादकपना नहीं है। यह तीव्र गुणदायक-अरिष्ट अग्निमांद्य; कामला, यकृत के विकार, बवासीर, सब प्रकार के कोढ़ (विशेषतः रक्त और श्वेतकुष्ठ), रक्तपित्त-(उष्णता के कारण मुख नासिकादि किसी भी मार्ग से बहने वाले रक्त विकार) को अपने प्रभाव से शीघ्र ही दूर कर देता है। रक्त-शुद्धि का गुण इसमें होने से पामा, खुजली आदि रोगों पर शीघ्र लाभप्रद है। पेट तथा रक्त के कृमि को यह शीघ्र नष्ट करता है। यह पौष्टिक भी है। रोग एवं रोगी के बलाबल के अनुसार, यथोचित मात्रा में, इसका सेवन १ मास से ३ मास तक कराना चाहिये।

---

४१६ मन्दाग्निहरासवार्क—उदर रोग नाशक।

(वैद्यराज श्री० पं० शिवचन्द्र जी आयुर्वेदमार्तण्ड)

विधि—घीकुआर का छिला कुचला हुआ अर्क ३ सेर, गीले पोदीने का अर्क १ सेर, कागज़ी नीबू का रस १ सेर, गंगाजल ३ सेर तथा दारचीनी, बड़ी इलायची, पत्रज, सफेदजीरा, चौकिया सुहागे की खील और चीते की छाल प्रत्येक का चूर्ण ३-३ तोले और देशी पान ५० नग कुचल कर, सबको एकत्र

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, दो दिन तक, पात्र का मुख बन्द कर रख छोड़े। फिर भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे। अर्क खींचते समय श्वेत चन्दन का बुरादा नाल के मुख में डाल दे या पोटली बना रख देवे। कुल ५ बोतल अर्क खींचना चाहिये।

मात्रा—१ से २ तोले तक। प्रातःसायं भोजन के बाद।

गुण—पेट के रोग नष्ट होकर, मंदाग्नि नष्ट होती है और शनैः शनैः भोजन में रुचि बढ़ती है। २१ दिन में पूर्ण लाभ होता है। (धन्वन्तरि)

---

४१७ मयूरकाद्यरिष्ट—कास, श्वासादि नाशक।

(रसायनाचार्य श्रीयुत आर० के० शर्म्मा, जगरांओं)

विधि—अपामार्ग, वासा (अडूसा), कदलीगोभ (केले के वृक्ष के बीच का गाभा) और जंगली वेरी की छाल प्रत्येक ४-४ सेर लेकर, जवकुट कर, क्वाथ विधि से २६ सेर जल में पकावे। चौथाई भाग शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने अगर से धूपित मटके में भर, ठंडा होने पर, उसमें ८ सेर गुड़, लोटा सज्जी १० तोले, जवाखार ५ तोले और नवसादर २॥ तोले मिला, २० दिन तक सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—२॥ तोले तक।

गुण—सब प्रकार की असाध्य पुरानी खाँसी, श्वास हिक्का, पाण्डु, कामला आदि रोग शीघ्र ही नष्ट होते हैं। रोगी को खटाई, मिठाई, तैल; लालमिरच आदि से परहेज़ करना चाहिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४१८ मस्त्वासव *—पाण्डु, उदररोगादिनाशक ।

विधि—एक शुद्ध मटके के अन्दर बच तथा कूठ का अच्छी तरह लेप कर उसमें १३ सेर दही का नितरा हुआ जल (४ सेर दही में १० सेर या ८ सेर जल मिला कर मथले १३ सेर शुद्ध निर्मल मस्तु की प्राप्ति होगी) अथवा मस्तु, ५ सेर गुड़, १३ छटाँक पीपल, हरड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १३-१३ छटाँक तथा वायविडंग, कालीमिरच, गंभारी के फल, मुनक्का, फालसा, इन्द्रजौ प्रत्येक १६-१६ तोले, लघुपंचमूल (सरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू) पीपलामूल, दन्ती, चीते की जड़ और शुद्ध भिलावे ये प्रत्येक ८-८ तोले सबका महीन चूर्ण कर मिला देवे। और पात्र का मुख अच्छी तरह वन्द कर, लगभग १५ दिन तक, जौ के ढेर में दबा कर रक्खे । पश्चात् निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तो० तक ।

गुण—पाण्डु, उदररोग, संग्रहणी, बबासीर, भगन्दर,

---

* वंशपत्री प्रतीकाश मस्तुद्रोणे सुनिर्मले । क्षिपेद् गुडतुलां भाण्डे वचाकुष्ठविलेपिते ॥ तस्मिन् दद्यात्तु कृष्णायाः प्रस्थं प्रस्थत्रयं तथा । त्रिफलाया विडंगानां कुडवं मरिचस्यच ॥ काश्मरीफलमृद्वीकापरूषकफलानि च । वत्सकस्य च बीजानि समानि मरिचेन तु ॥ पंचमूलं च षड्ग्रन्थां दन्तीं चित्रकमेवच । द्वे द्वे पले च भल्लाताद्भिषक् समुपकल्पयेत् ॥ यवपल्ले स्थितः पेयोऽरिष्टो मात्रा बलं प्रति । पाण्डुरोगोदरेहन्ति ग्रहण्यर्शो विकारनुत ॥ परं भगन्दरप्लीहशोषकासामयापहः । अग्निसन्दीपनः पथ्यो वार्द्धक्य स्थौल्यनाशनः । मस्त्वासव इति ख्यातो लेखनो मेदुरोहितः ॥

—गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तिल्ली, क्षय, खाँसी, मन्दाग्नि, बद्दराएन और स्थूलता (मेद) नाशक है।

महाद्राक्षासव-देखिये, द्राक्षासव नं० ३ ।

महारसोनासव—देखिये, रसोनासव नं० १ ।

महासारस्वत्यासव—देखिये, सारस्वतासव ।

महासुदर्शनारिष्ट—देखिये, सुदर्शनारिष्ट।

११९ माचिकासव *—कास, श्वासनाशक ।

विधि—मकोय २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, १३ सेर जल में पकावे, ३। सेर जल शेष रहने पर छानकर ठंडा होजाने पर, घृत से चिकने किये हुये घड़े में भर, उसमें १० सेर गुड़ तथा पीपल ८ तोले, वायविडंग, दारचीनी, तेजपात, नागकेशर, इलायची और कालीमिरच प्रत्येक ४-४ तोले सबका चूर्ण कर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—खाँसी, दमा, गलरोग, क्षय और उरःक्षतः नाशक है।

---

* माचिकायाः शतार्धं तु द्रोणेऽपां च विपाचयेत् । तस्मिंश्चतुर्थशेषे तु पूते शीते प्रदापयेत् ॥ गुडस्य द्विशतं दत्त्वा तत्सर्वं घृतभाजने । विडंगं पिप्पलीकृष्णा त्वगेलापत्रकेसरैः ॥ मरीचैश्च तथा चूर्णं सम्यक्कृत्वा विचक्षणः । क्षिपेच्च पालिकैर्भागैर्घटनीयं समन्ततः ॥ ततो यथाबलं पीत्वा कासश्वासगलामयान् । हन्ति यक्ष्माणमत्युग्रमुरःसन्धानकारकः ॥ माचिकासव इत्येष ब्रह्मणा निर्मितः पुरा ॥ —गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

माजूफलासव—देखिये, मायाफलासव ।

४२० मायाफलासव—(स्वकृत)-अतिसार, प्रदरादिनाशक ।

विधि—माजूफल का मोटा चूर्ण ७ तोले और रेक्टिफाइड-स्प्रिट ५० तोले, एकत्र मिला कांच की बोतल में भर, दृढ़ काग बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे, पश्चात् फलालेन से खूब निचोड़ते हुये छानकर, शीशियों में भर कर रख दे ।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक ।

गुण—अतिसार, प्रदर और शिथिलतानाशक, वातनाशक, रक्तावरोधक है । प्रदर पर इसे आमले के हिमके साथ (५ तो० आमले के चूर्ण को १ पाव जल में रात्रि के समय भिगोकर, प्रातःकाल छानकर थोड़ा शहद मिला) पिलाने से ७ दिन में दोनों प्रकार के प्रदर दूर होते हैं । रक्तातिसार पर इसे गाय के दूध में मिला कर पिलाना चाहिये ।

---

४२१ मालकांगन्यासव—शक्तिवर्धक ।

विधि—मालकांगनी का शुद्ध तैल १। सवा सेर, शहद १। सवा सेर, गायका दूध १॥ सेर और धायके फूलों का चूर्ण १ पाव सबको एकत्र कर; शुद्ध चिकने घड़े में भर, मुखमुद्रा कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे । (गाय का दूध खूब गरम करके डालना चाहिये) पश्चात् छानकर काम में लावे । इसे धान की राशि में दबा कर रखना चाहिये ।

मात्रा—१ से ४ माशे तक ।

गुण—यह अपूर्व वीर्यवर्धक और मेधाशक्तिबर्द्धक है ।

(एक प्राचीन पुस्तक के आधार पर)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मुक्तवर्च्चासव—देखिये, अरितमंजर्यासव।

४२२ मुण्डयासव नं० १—रक्तदोष हारक।

विधि—गोरखमुण्डी का पञ्चाङ्ग ४ सेर और उसका आध सेर लेकर जबकुट कर १५ सेर जल में पकावे। ६ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, और ठंडा होजाने पर, उसमें शहद ५ सेर, धायके फूलों का चूर्ण १ सेर, मिश्री २॥ सेर, सौंफ और कालीमिरच प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले मिला, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, २१ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर दे। प्रत्येक बोतल में ५-५ तोले रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला कर दृढ़ काग लगाकर रक्खे। ४ दिन के बाद काम में लावे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—उपदंश, फिरंग एवं पारदजनित विकारों को नष्ट कर, रक्त को शुद्ध करता है।

---

४२३ मुण्ड्यासव नं० २—शक्ति वर्धक।

(श्री० पं० शालिग्राम जी वैद्यराज)

विधि—गोरखमुण्डी का पञ्चांङ्ग कूटकर और कपड़े में छान कर, उसमें दुगुना शहद मिला, चीनी के अमृतवान में भर, मुखमुद्रा कर, ४० दिन गेहूँ के ढेर में दवा कर रक्खे, फिर निकाल कर काम में लावे।

मात्रा—६ माशे से १ तो० तक। अनुपान-गर्म दूध से प्रातःसायं सेवन करे।

गुण—शारीरिक शक्ति बढ़ाने में अद्भुत है। (धन्वन्तरि)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—नवीन गुड़ ५ सेर, कीकड़ (बबूल) की छाल, बेरी की छाल और सुपारी प्रत्येक १३-१३ छटाँक, पठानीलोध १६ तोले और अदरक ८ तोले, सबको अलग २ जबकुट कर रक्खे। पश्चात् एक शुद्ध चिकने मटके में जल १ मन १६ सेर डालकर, प्रथम दिन उस जल में गुड़ को घोलकर अदरक पीसकर मिला, देवे। दूसरे दिन बबूल की छाल, तीसरे दिन बेर की छाल, सुपारी और लोध पीसकर मिला देवे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर सुरक्षित रक्खे। २० दिन के बाद पात्र का मुख खोलकर सुपारी, एलुये के बीज, देवदारु, लौंग, पद्माख, खस, सफेदचन्दन, सौंफ, अजवायन, कालीमिरच, सफेदजीरा, स्याहजीरा, कच्चूर, जटामांसी (बालछड़), दारचीनी, इलायची, जायफल, नागरमोथा, गठिवन (इसे गन्दरायण भी कहते हैं, यह काले रंगवाली लेनी चाहिये), सोंठ, मेथी, मेढ़ासिंगी और लालचन्दन, प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोला, एकत्र कर, युक्तिपूर्वक कपड़े की ढीली पोटली में बांध कर, उक्त पात्र के गले में लटका देवे, और भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक। बलाबल देखकर यथोचित मात्रा में देवे।

गुण—आरोग्यवर्धक, बलवर्धक, देहदृढ़कारक, स्मरणशक्ति अग्नि तथा वीर्यवर्धक, वातनाशक, कामोद्दीपक, अत्यन्तस्तम्भक

निनिक्षिपेत् ॥ यथाविधि प्रकारेण चालनं दापयेत्सुधीः । बुद्धिमान सौजनं कृत्वाउद्धरेद् विधिवद् सुराम् ॥ एतन्नद्यं पिबेन्नित्यं यथाधातुवयः क्रमम् । आरोग्यजननं देह दार्ढ्यकृद् बलवर्धनम् ॥ इत्यादि ।

—भैषज्यरत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

एवं आनन्ददायक है। यह ब्रान्डी से कई गुनी लाभदायक है, तथा सस्ती भी पड़ती है। क्षय रोगी के लिये विशेष हितकारी है।

नोट—मद्य विभाग की आज्ञा लेकर बनाना चाहिये । हैजे पर मृतसंजीवनी सुरा ६ माशे, नीम का स्वरस १ तोला, नीबू का रस १ तो०, सैंधानमक ६ माशे, शक्कर ६ माशे मिश्रण कर दो मात्रायें बनावे, इस तरह ४ मात्रायें १–१ घंटे के अन्तर से देकर ऊपर से १॥ माशे सोंठ का चूर्ण मिला छाछ के साथ पीने को देवे ।

(रामगोपालजी मिश्र)

---

*४२९. मृत संजीविन्यासव (सुरा) नं० २ बळवर्धक, ज्वरनाशक।

* गुडं द्रोणमितं ग्राह्यं वर्षादूर्ध्वं पुरातनम् । बावरीत्वचमादाय दापये त्पलविंशतिम् ॥ दाडिमीवृषभाचेञ्च वराक्रान्तारुणा तथा । अश्वगंधा देवदारु बिल्वश्योनाकपाटलाः । शालिपर्णी प्रश्निपर्णी बृहतीद्वयगोक्षुरम् । वदरीन्द्र वारुणीचित्रं स्वयंगुप्ता पुनर्नवा ॥ एषां दशपलान् भागान् कुट्टयित्वा उदूखले । सुगम्भीरे च मृद्भांडे तोयमष्टगुणं क्षिपेत् ॥ गुडसंगोलनं कृत्वा एतैः संपूरयेद् बुधः । मुखे शरावकं दत्वा रक्षयेद्दिनाविंशतिम् ॥ षोडशादिवसादूर्ध्वं द्रव्याणमिानि दापयेत् । पूगप्रस्थद्वयं चात्र कुट्टयित्वा विनिक्षिपेत् ॥ धत्तूरं देवपुष्प च पद्मकोशीरचन्दनम् । शतपुष्पा यमानी च मारिचं जरिकद्वयम् ॥ शठीमांसीत्वगेळा च सजातीफलमुस्तकम् । ग्रन्थिपर्णी तथा शुंठी मेथी मेषी च चन्दनम् ॥ एषां द्विपालिकान् भागान् कुट्टयित्वा विनिक्षिपेत् । मृण्मये मोचिकायन्त्रे मयूराख्येऽपि यन्त्रके ॥ यथाविधिप्रकारेण चालनं दापयेद् बुधः बुद्धिमानसौजलंकृत्वा उद्धरेत्विधिवत्सुराम् ॥ एतन्मद्यं पिबेन्नित्यं यथाधातुवयः क्रमम् । देहदार्ढ्यकरं पुष्टिबलवर्णाग्निवर्धनम् ॥ सन्निपातज्वरे घोरे विषूच्यान्च मुहुर्मुहु । शीते देहे प्रयोक्तव्यं मृतसंजीविनी सुरा ॥ —भैषज्यरत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—एक साल से अधिक पुराना गुड़ १३ सेर, कीकड़ की छाल १ सेर, अनार की वकली या छाल, बांसे की छाल, मोचरस, पाठा, हरड़, बहेड़ा, आमला, अतीस, असगन्ध, देव-दारु, वेलकी छाल, अरलू की छाल, पाढल, खरिवन, पिठवन, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरु, बेर की जड़, इन्द्रायन की जड़, चीता, कौंच के बीज और पुनर्नवा (बिसखपरा) ये प्रत्येक आध-२ सेर लेकर जवकुट कर, २ मन २४ सेर जल में मिला, शुद्ध चिकने घड़े में भर, अच्छी तरह मुख बन्द कर, १६ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् पात्र का मुख खोल कर सुपारी १ सेर १० छटाँक, शुद्ध धतूरे के बीज (अथवा धतूरे की जड़) लोंग, पद्माख, खस, सफेदचन्दन, सौंफ, अजवायन, कालीमिरच, सफेदजीरा, स्याहजीरा, कचूर, जटामांसी (बालछड़), दारचीनी, बड़ी इलायची, जायफल, नागरमोथा, गंठिवन, सोंठ, मेथी, मेढ़ासिंगी, लालचन्दन प्रत्येक ८-८ तोले महीन चूर्ण कर मिलावे। और खूब हिला दे। पुनः उसका मुख बन्द कर, १४ दिन के बाद जब खूब फेन उठ आवें, तब भबके के द्वारा अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—शरीर की शिथिलतानाशक, धातु तथा आयुवर्धक, बलवर्धक, कान्तिकारक, अग्निवर्धक, भयंकर सन्निपात तथा विशूचिका आदि में शरीर के शीतल होजाने पर, थोड़ी २ देर बाद सेवन करावे।

नोट—इसे मद्य विभाग की आज्ञा लेकर बनाना चाहिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नोट—उक्त विधि में—पुराना गुड़ १६ सेर, बबूलकी छाल ६। सेर, अनार की छाल ३=सेर डालकर तथा दोनों कटेरी, त्रिफला और पाढ़ल को निकाल कर, शेष द्रव्यों के साथ में बिष्णुकान्ता की जड़ लेवे, तथा प्रत्येक क्वाथ्य-द्रव्यको २॥-२॥ सेर लेवे, और उन्हें कूटकर १४ मन जल में भिगोदे, फिर गुड़ को घोलकर, मुख बन्द कर १६ दिन तक रक्खे, पश्चात् खोलकर उसमें सुपारी २ सेर, तथा शेष द्रव्य, धतूरे के बीज इत्यादि उपर्युक्तानुसार ही लेवे। गठिवन के स्थान में पीपलामूल लेवे। शेष सम्पूर्ण विधि उपर्युक्तानुसार करे। इस विधि से बहुत ही श्रेष्ठ संजीवनीसुरा तैयार होती है।

* सान्निपात की अंतिमावस्था में जब शरीर शीतल और आंखें सफेद हों तो इसका प्रयोग उत्तम लाभदायक है। यदि नेत्र लाल हों और श्वास एकदम कमजोर होगया हो तो, ऐसी हालत में यह विशेष लाभदायक नहीं है।

* हृदय की गति मंद हो, नाड़ी अधिक क्षीण हो, मद २ स्वेद आता हो, रोगी अचेत हो तो १ तो० सुरा में १ रत्ती कस्तूरी मिला १-१ घंटे के बाद देवे जबतक गर्मी न आवे। कस्तूरी के अभाव में रुद्राक्ष घिस कर दिया जासकता है।

---

४३० मृतसंजीवन्यासव—नं० ३—संग्रहणी, अतिसारादिनाशक।

(श्रीयुत पं० अनन्तदेवजी शर्मा, वैद्यशास्त्री)

विधि—जायफल, लौंग, जावित्री, पीपल, नागरमोथा, सुगंधबाला, धायके फूल और मोचरस प्रत्येक १।-१। तो०, केशर असली ६ माशे, कपूर देशी ५ तोले, मिश्री १५ तोले, मुनक्का ३० तोले, पीपरमेंट (पोदीने का सत) ४ माशे और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अजवायन का सत २ माशे लेकर, काष्ठादि औषधों को पीसकर और मुनक्का के बीज निकालकर, समस्त औषधों में-१॥ सेर उत्तम सुरा (मद्य या रेक्टिफाइडस्प्रिट) मिला, बड़ी २ बोतलों में डालकर दृढ़ काग लगाकर, ११ दिन तक धूप में रक्खे। पश्चात् मोटे फलालैन के वस्त्र में कई बार छानकर, साफ़ बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ माशे से ४ माशे तक। तीनों समय, समान भाग पानी मिलाकर सेवन करावें।

गुण—हर प्रकार के अतिसार, संग्रहणी (पेचिश), अफ़ारा, शूल, अग्निमांद्य आदि रोगों के लिये अमृत के समान है।

(धन्वन्तरि)

मृद्वीकासव
मृद्वीकारिष्ट } देखिये द्राक्षारिष्ट नं० २।

४३१ मेथिकासव—(स्वकृत)—संग्रहणी नाशक।

विधि—मेथी के पत्तों का चूर्ण १ भाग और रेक्टीफाइड स्प्रिट ५ भाग एकत्र मिला कांच के पात्र में रख, दृढ़ मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। बीच २ में हिलाते जाना चाहिये। पश्चात् छानकर शीशियों में भरकर रख दे।

मात्रा—१० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—सब प्रकार की संग्रहणी को दूर करता है तथा अग्निदीपक और रक्तपित्त नाशक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

य

४३२ यकृतान्तकासव—यकृत विकारहारी।

(वैद्यराज शान्तिदेव जी त्रिपाठी, वैद्यशास्त्री)

विधि—घृतकुमारी का स्वरस, नीबू का स्वरस, सिरका अंगूरी और अदरक का स्वरस प्रत्येक आध-आध सेर लेकर, चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर, उसमें-रोहितक का क्वाथ १ पाव, लौंग, वायविडंग, पीपलामूल, सोंठ, मिरच, पीपल प्रत्येक का चूर्ण १-१ तो०, सफेदजीरा, कालाजीरा प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले तथा चीता, नौसादर और सुहागा प्रत्येक ५—५ तोले, पपीते का क्षार ८ तोले और सल्फ्यूरिक एसिडड्रिल (गंधक का तेजाब) ५ तो० सबको मिलाकर, पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १२ दिन तक धूप में रखना चाहिये। फिर छानकर शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—४ माशे से १ तो० तक।

गुण—यकृत तथा प्लीहा के रोगों को नष्ट करता है। गुल्म शूल शामक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

४३३ यवतिक्तासव—ज्वर पर अपूर्व प्रभावशाली ।

(श्री० पं० गयादत्त जी शर्मा वैद्य, भिवाल)

विधि—यवतिक्ता (कल्पनाथ-कालमेघ) के पञ्चाङ्ग को सुखाकर कूट लेवे, एक पाव चूर्ण को ४ सेर जल में, सायंकाल के समय कढ़ाई में भिगो देवे। सवेरे मन्दाग्नि से पकावे, जब आध सेर क्वाथ शेष रहे, तब उतार कर ठंडा कर ले तथा साफ़ वस्त्र से छान, शुद्ध चिकनी मटकी में भर, उसमें ३ पाव असली शहद मिला, बन्दकर रक्खे। १५ दिन बाद छानकर काममें लावे।

मात्रा—१० से ३० बून्द तक, जल ६ तोले में मिला प्रातः सायं सेवन करावे।

गुण—इकतरा, तिजारी, चौथिया आदि किसी भी प्रकार के शीतज्वर पर यह शीघ्र लाभदायक है। जठराग्नि को दीपन करने वाला, बलवर्धक, ज्वरातिसारनाशक एवं बालकों के लिये सदैव कल्याणकारी है। यह अपना कुनैन से बढ़कर प्रभाव दिखलाता है। यकृतप्लीहा विकारयुक्त कामला, पाण्डुरोग एवं विशेषकर बालकों के कामला रोग पर आश्चर्यजनक लाभ पहुंचाता है।

---

४३४ यवासाद्यासव—आतपमूर्च्छा निवारक।

विधि—अर्क जवासा आध सेर, अर्क वेदमुश्क १ पाव, पिसी हुई मिश्री १ पाव, नीबू का स्वरस १० तोले और गंधक का तेजाब २० बून्दे सबको एकत्र कर बोतलों में भर, दृढ़ कार्क लगाकर रक्खे। ७ दिन के बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ से ५ तोले तक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—लू से पीड़ित रोगी को पूर्ण शांतिदायक है और नाना प्रकार के पित्तजन्य विकारों को शमन करता है।

(राकेश)

---

४३५ यष्टिमध्वासव—नं० १—खांसी नाशक।

(रसचिकित्सक ठा० चूल्हनसिंह जी वर्मा, वैद्यराज, गया)

विधि—मुलहठी १ सेर, खूब बारीक कूट, चलनी में छान कर, ४ सेर जल और ४ सेर तालमिश्री मिला, एक शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसका मुख सिमेंट से अच्छी तरह बन्दकर रक्खे। १ मास के बाद, खोलकर छान ले और बोतलों में भरकर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। प्रातः सायं किंचित् भोजन के बाद सेवन करे।

गुण—कालीखांसी, कुकुर खांसी और दुष्टखांसी को शीघ्र नष्ट करता है।   (अ० योगमाला (फुफ्फुसाङ्क)

---

४३६ यष्टिमध्वासव—नं० २-(स्वकृत)—कास, बद्धकोष्टादि नाशक।

विधि—मुलैठी का घनक्वाथ ४ तोले और मुसब्बर (एलुआ) का चूर्ण १॥ तोला दोनों को कांच के पात्र में भरकर, उसमें लगभग ६२ तोले रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला, पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक सुरचित रक्खे। बीच २ में हिला दिया करे। पश्चात् फलालेन से छानकर बोतलों में भरकर रख दे। कुल आसव ५० तोले तक होना चाहिये। कम हो तो ऊपर से उसमें स्प्रिट और मिला देनी चाहिये।

मात्रा—६० बून्द से १२० बून्द तक।

गुण—कास (खांसी) नाशक, रेचक तथा यकृत और प्लीहा के विकारों को नष्ट करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४३७ योगराजआसव *—रक्तविकार नाशक।

विधि—मुनक्का, चीनी और गुड़ प्रत्येक आध-आध सेर, हरड़, १६ तोले, मजीठ ८ तोले, तथा लौंग, बेर की छाल, चीड़ की छाल, अर्जुन की छाल, देवदारु, चीते की जड़ लोध, पीपलामूल, धायके फूल और सुपारी ये प्रत्येक ४-४ तोले, लेकर सबको अधकुटा कर, २६ सेर जल में पकावे, १३ सेर जल शेष रहे तब छानकर एक स्वच्छ मटके में भर उसमें लौंग, जावित्री तेजपात, बड़ी इलायची, नागकेशर, कालीमिरच, पीपल, सोंठ, दारचीनी, जटामांसी (बालछड़), चव्य, नागरमोथा, कूठ, जायफल, गठिवन, थूहरका डंडा और कुटकी प्रत्येक का चूर्ण

---

* द्राक्षायाः शर्करायाश्च गुडस्य च पृथक् पृथक् । पलानि दशकार्षाणि पथ्यापलचतुष्टयम् ॥ लवंगबदरीसर्जार्जुनानां तु त्वचस्तथा । पलं पलं पृथग्ग्राह्यं देवदारु पलं तथा ॥ चित्रकस्य च लोध्रस्य पिप्पलीमूलकस्य च । धातकीकुसुमानां तु तद्वद्देयं पलं पलम् ॥ तथा पूगफलानांतु कषायाणां पलं मतम् । मंजिष्ठायाः पले द्वे तु क्वाथ्यसंज्ञानि तानिच ॥ लवङ्गकालिकाजातिपत्रैलानागकेसरम् । मरिचं पिप्पली शुंठी त्वङ्मांसीचव्य मुस्तकम् ॥ कुष्ठं जातिफलं ग्रन्थिपर्णं स्नुक् कटुरोहिणी । एषां पलं पलं ग्राह्यं तज्ज्ञेयं चूर्ण संज्ञितम् ॥ क्वाथ्यद्रव्यात्ततः सम्यग्जलषड्गुणं क्षिपेत क्वाथं तदुदकेकुर्यादर्धभागावशेषितम् ॥ तत्क्वाथ वस्त्रपूतं तु भाण्डेऽन्यस्मिन्मनोहरे । कृत्वात्रप्रक्षिपेच्चूर्णं तद्भाण्डं धान्यराशिशम् कृत्वासप्तदिनं शीते काले चोष्णमये तथा । यावद्दिनानि त्रीणि स्युः पश्चाद् भाण्डं समुद्धरेत् ॥ पुनस्तद्वस्त्रपूतं तु भाण्डे कर्पूरवासिते । निक्षिप्यसेवयेत्प्रातः पलमात्रोपलक्षितम् ॥ स दत्तोवातपित्तघ्नो दीपनो रक्तरोगनुत् । योगराज इति ख्यात आसवोऽयंगुणोत्तरः ॥ —गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४-४ तोले मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर देवे, और उसे अनाज के ढेर में दबा देवे। शीतकाल में ७ दिन के पश्चात् और ग्रीष्मकाल में ३ दिन के बाद निकाल कर, छान-कर, कर्पूरवासित पात्र में भर कर सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। समय प्रातःकाल।

गुण—वात तथा पित्तजन्य रोगों को और रक्त विकारों को नष्ट करता है। यह उत्तम अग्निदीपक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

र

४३८ रक्तबोलासव—(स्वकृत)—नष्टार्त्तवनाशक।

विधि—रक्तबोल (हीराबोल) का चूर्ण ७ तोले और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले एकत्र मिला, शुद्ध बोतल में भर, दृढ़ कार्क बन्द कर रक्खे, ३ दिन के बाद फलालैन से छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—३० बूंद से ६० बूंद तक।

गुण—उष्ण, कफघ्न और वातहर है। जिस स्त्री को मासिक धर्म न होता हो या साफ स्रावन होता हो उसको इसे लोहासव या बोलासव के साथ मिला कर देवे। श्वासमार्ग के रोग एवं कफक्षय पर भी इसका उत्तम गुण प्रकट होता है। मुख रोग पर ऊपर से इसका लेप करे अथवा कुल्ले करे।

नोट—अंग्रेजी में इसे 'टिंक्चर ऑफ मन्ह कहते हैं।

---

४३९ रक्तमरिचासव—(स्वकृत)—अजीर्ण, अतिसार नाशक।

विधि—लालमिरचें जवकुट की हुई दो तोला लेकर, उसमें रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले मिला कांच की बोतल में भर, अच्छी तरह मुख बन्द कर, ३ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् फलालैन से निचोड़ते हुये छानकर, बोतल में भर कर रख दे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१० बूंद से ६० बूंद तक।

गुण—अजीर्ण तथा अतिसार के उपद्रवों को शीघ्र नष्ट करता है। इसे अंग्रेजी में-'टिंक्चयूराक्यापसिसाय' कहते हैं।

---

४४० रक्तशोधकासव-नं० १—उत्तम रक्तशोधक।

(श्रीकृष्णचन्द्रजी शर्मा, वैद्यराज, गुरदासपुर, पंजाव)

विधि—शीशम का बुरादा, आवनूस का बुरादा, दारचीनी, और जायफल प्रत्येक १-१ तोला, लोहचूर्ण, बुरादा बबूल (कीकड़), बुरादा बकायन, खुरासानी अजवायन, देशी अजवायन और केशर बढ़िया प्रत्येक २-२ तोले, तालमखाना और कपूर डेलीदार ३-३ तोले, उसवा, रक्त चंदन, श्वेतचन्दन, छोटी इलायची, कवाबचीनी, बनपसा, तुरंजवीन, मोथा और जटामांसी प्रत्येक ५-५ तोले, कचनार की छाल, चिरायता, स्यातरा (पित्तपापड़ा), जलनीम, उन्नाव, गुलाब के फूल, सत्यानाशीका पंचाङ्ग, नीमकी छाल; खस, बुरादा-तूणी (तुन) और पत्रवांस हरे प्रत्येक १०-१० तोले, गोरखमुण्डी बूटी १५ तोले; चोबचीनी २० तोले, नीमके पत्ते २० तोले, गिलोय (गुडूची) हरी २० तोले, हंसराज १५ तोले, कदू आधसेर, पेठा आधसेर, कस्तूरी बहुत बढ़िया ६ माशे, और अम्बर १ माशा। काष्ठौषधियों को कूट कर; १ मन पानी में भिगो देवे, दो दिन भीगने के बाद, तीसरे दिन प्रातःकाल केशर, कस्तूरी, अम्बर, और कपूर की पोटली भवके के मुँह में जमाकर अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१० तोले, दिन में २ या ३ वार। बहुत बढ़िया शहद दो दो तोले मिलाकर सेवन करावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—यह आसवार्क रक्तशोधक, हृदय को बलदायक और शक्तिवर्धक है। प्रमेह, शुक्रमेह और मूत्रोष्णवात (सोजाक) आदि रोगों पर इसका विशेष प्रभाव देखा गया है।

(अ० योगमाला)

---

४४१ रक्तशोधकासव नं० २—रक्तविकार नाशक।

(आयुर्वेदमार्तण्ड श्री पं० र वरदयालजी भट्ट, वैद्यशास्त्री)

विधि—चिरायता, नीमका पंचाङ्ग, सफेदचन्दन का बुरादा, सरफोंका, बावची, मुनक्का, त्रिफला, कासनी, बकायन की छाल, मुलैठी, अगर, तगर, चोबचीनी, भटकटैया, उन्नाव, मजीठ, शीसम का बुरादा, सूखी मकोय, नीलकंठी, मेंहदी, छोटी हरड़, ब्रह्मदंडी, सौंफ, रूसा (बांसा), धनिया, गिलोय, कपूरकचरी, नागकेशर ये प्रत्येक ४-४ तोले, रेवन्दचीनी १६ तोले, स्यातरा ३२ तो०, उशवा ३२ तो०, मुण्डी १६ तोला बिस्फैज ४ तो० और केशर १ तो०, सब द्रव्यों को कूटकर चौगुने जल में ३ दिन तक शुद्ध मटके में भर, मुखमुद्रा कर रक्खे। पश्चात् भवके के द्वारा अर्क खींच ले।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—खुजली, रक्तविकार और उपदंश आदि के विकारों को शीघ्र नष्ट करता है।

---

४४२ रक्तशोधकारिष्ट नं० १—उपदंश विकार नाशक।

(वैद्यराज श्री पं० जगन्नाथप्रसादजी, आगरा)

विधि—कचनार की छाल, मुण्डी, सिरसकी छाल, अनन्त-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मूल, कुटकी, कटेरी, की जड़, इन्द्रायन की जड़, गिलोय, सर-फोंका, बबूल की छाल और उसवा प्रत्येक १-१ सेर लेकर जव-कुट कर, १ मन २० सेर जल में २४ घंटे भिगोकर, पकावे, १५ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर ठंडा होने पर उसमें ४ सेर शहद, २ सेर गुड़, सत्यानाशी का पवस्त ५ सेर तथा धायके फूल, नीमके फूल, भांगरा, वावची, बनफ्से के फूल; देवदारु और चोवचीनी प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले; मिलाकर, पात्रका मुख अच्छी तरह संधान कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। फिर छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक।

गुण—उपदंश विकारनाशक, रक्तशोधक है।

---

४४३ रक्तशोधकारिष्ट नं० २—रक्तविकार नाशक।

(श्री पं० वालकृष्णजी शर्मा, वैद्यराज)

विधि—चिरायता, गिलोय, जवासे की जड़, मजीठ, चोप-चीनी हरड़, पित्तपापड़ा, नीमकी छाल, सरफोंका, लालचन्दन, खस, गुलाव के फूल; अनंतमूल, हरड़, बहेड़ा और आमला, प्रत्येक ५-५ तोले लेकर सबको जवकुट कर, ६ सेर जल में भिगोकर दिन भर रक्खा रहने देवे। पश्चात् नलिकायंत्र (भव-का) द्वारा ४ सेर अर्क खींच कर बोतलों भर कर रख दे।

मात्रा—१। तो० से २॥ तो० तक, दिन में दो बार सेवन करावे।

गुण—रक्तविकार, रक्त बिगड़कर शरीर में फोड़े, फुन्सी आदि होना इत्यादि कई व्याधियों को यह नष्ट करता है। दाद,

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

खुजली, उपदंश और संधिवात मिटाकर रक्त को शुद्ध करता है।

(वैद्यक चिकित्सासार)

रक्तशोधकारिष्ट नं० ३—देखिये, इन्द्रवारुण्याद्यरिष्ट नं० २।

४४४ रक्तात्पताहरासव—रक्तस्वल्पतानिवारक।

(वैद्यभूषण कौशिकजी आयुर्वेदाचार्य)

विधि—ब्राह्मी स्वरस २॥ सेर, अंगूर का रस, संतरे का रस और अनार का रस प्रत्येक एक-एक सेर तथा अर्क-पोदीना, अर्क सौंफ और अर्क गुलाब प्रत्येक आध-आध सेर तथा बादाम के बीज, कद्दू के बीज, खर्बूजे के बीज, ईसबगोल और श्वेत चन्दन का कल्क प्रत्येक २०-२० तोले तथा शतावरी, असगंध, ऊंटकटेरे की जड़, तुलसी के बीज; तोदरी सुर्ख, बहमन सफेद, सालम मिश्री, शकाकुल मिश्री, रूमीमस्तगी, कौंच के बीज, बोजबन्द, छोटी पीपल, और मुलैठी का चूर्ण प्रत्येक दो २ तोले एवं लोहचूर्ण और स्वर्णमाक्षिक चूर्ण प्रत्येक एक-एक सेर लेकर, सबको एकत्र कर, एक मिट्टी के पात्र में, जो घी से चिकना किया हुआ हो तथा उसमें चन्दन और अगर चूर्ण का लेप किया हुआ हो, उसमें सब पदार्थों को डाल, मुखमुद्रा कर दो मास तक ऐसी भूमि में गाढ़ देवे, जिसके ऊपर पशु बँधते हों, उनका गोबर गिरता हो। दो महीने के बाद, उसको साफ करके छानके चुवालेवे, फिर उसमें ४ तोले स्वर्णपत्र चूर्ण, ८ तोले रौप्यपत्र चूर्ण, दो तोले मुक्ता, और सब के बराबर शुद्ध शंखनाभि चूर्ण डालकर, मुखमुद्रा कर १ वर्ष तक धानके ढेर में गाढ़ देवे, पश्चात् खोलकर, छानकर देख लेवे। यदि कुछ छूंछ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बचे तो फिर कुछ दिनों के लिये गाढ़ देवे । पश्चात् तैयार होने पर, उसे भोजनोपरान्त शक्ति अनुसार १ माशे की मात्रा से पिलाना चाहिये । क्रमशः बढ़ाया भी जासकता है ।

मात्रा—आधा तोला से १ तोला तक ।

गुण—सब प्रकार की रक्तस्वल्पता के लिये चमत्कारिक गुणकारी है ।

(अ० योगमाला)

---

४४९ रमणीसुधासव—प्रदरादि स्त्री रोग नाशक ।

(वैद्यराज श्री पं० रामगोपालजी मिश्र)

विधि—अशोक की छाल २० तोले, लोध, रसौत, मुलैठी और धायके फूल प्रत्येक ५–५ तोले लेकर जवकुट कर, ४ सेर जल में पकावे । आध सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भरे, और उसमें शहद २० तोले तथा देशी मदिरा १० तोले मिला, पात्र का मुख बन्द कर गर्म स्थान में रक्खे । ३ या ७ दिन बाद छानकर काम में लावे ।

मात्रा—आधा तोला, दो तोला जल के साथ दिन में ३ बार देवे ।

गुण—प्रदर, सोमरोग, आर्तव विकार आदि स्त्री रोगों पर अचूक गुणकारी है । इसका सेवन २१ या ४१ दिन तक करावे ।

(धन्वन्तरि)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४४६ रसायनारिष्ट * नं० १—पुष्टिकारक।

विधि—पीपलामूल, काकड़ासिंगी, बड़ी कटेरी, पाषाणभेद, पाढलकी छाल, देवदारु, गोखरू और हरड़ प्रत्येक १३-१३ छटाँक तथा बेर की जड़ ३। सेर एवं दन्तीमूल (जमालगोटे की ज़ड़) और चीते की जड़ १।-१। सेर लेकर सब को अध-कुटा कर, १ मन ६ सेर जल में पकावे। जब २४॥ सेर जल शेष रहे, तब छानकर, एक शुद्ध मटके में घी और शहद का लेप करके, ठंडा होजाने पर भर देवे। और उसमें चीनी १० सेर, शुद्ध लोहचूर्ण १० सेर तथा फूलप्रियंगु, पीपल, लोध, मुनक्का, शीतलचीनी, सुपारी, सोंफ, नीम की छाल (अथवा नीम के फूल), मूर्वा और देवदारु प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, एवं खैरसार १६ तोले और शहद १ सेर १० छटाँक, मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १० दिन तक सुरक्षित

---

* ससूलां पिप्पलीं शृङ्गीं बृहतीमश्मभेदकम्। पाटलां देवकाष्ठञ्च श्वदंष्ट्रामभयां तथा॥ शोडषपलमेकैकं कोलानामाढकं पृथक्। दन्तीचित्रकमूलानां पलानि पंचविंशतिम्॥ चतुर्गुणे जले पक्त्वाग्राह्यमर्धावशेषितम्। शीते समावपेद्भाण्डे प्रालिप्ते मधुसर्पिषा॥ खण्डस्य द्विशतं शुद्धं तद्वल्लोहस्य दापयेत्। पत्रीकृतं तिलोत्सेधं सूक्ष्मचूर्णान्यमूनिच॥ प्रियंगु पिप्पलीं लोध्रं मृद्वीकां चैळवालुकम्। क्रमुकं शतपुष्पां च निम्बं तेजस्वनीमपि॥ पळिकं देवदारोश्च खदिराच्च चतुष्पलम्। क्षौद्रप्रस्थद्वयं चापि समावाप्य घटे शुभे॥ सौम्ये पुष्ये तथा हस्ते रोहिण्यामुत्तरासु च। दशरात्रस्थितः पेयोऽरिष्टश्चात्रेयपूजितः॥ अश्विभ्यां कथितः पूर्वं रसायनवरोह्ययम्। मात्रामग्निबलापेक्षीपिबेदस्य हिताशनः॥ धन्यः पुष्टिकरो वल्यो वलीपालितनाशनः। —गदानिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक ।

गुण—बलवर्धक, पौष्टिक, झुर्रियाँ तथा बालों की सफेदी नाशक है । वृद्धावस्था को दूर करता है ।

---

४४७ रसायनारिष्ट नं० २—बलवर्धक ।

(श्री कविराज गौरीशंकरजी आनन्द)

विधि—शतावर, असगन्ध, मूलसी, मुनक्का प्रत्येक १॥-१॥ सेर, विदारीकन्द आध सेर लेकर सब को जवकुट कर, २ मन जल में २४ घंटे तक भिगोकर क्वाथ करे । १० सेर शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें प्रथम शिलाजीत ४ तोला अच्छी तरह घाल देवे, (शिलाजीत शुद्ध होनी चाहिये) पश्चात् केशर दो तोला पीस कर घोले, फिर कुचला (शुद्ध) २ तोला महीन पीस कर घोलें, तदनन्तर लोंग, जायफल, जावित्री, नागकेशर, अकरकरा, सोंठ, कालीमिरच; दारचीनी, उटंगन के बीज, तेजपत्र, बालछड़, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख तोदरी सफेद, तोदरी ज़र्द, अगर, छोटी इलायची, गिलोय, चिरायता, कौंच के बीज, नकछिकनी, विधारे के बीज, हरड़, बहेड़ा, आमला, कालीमुसली, पान की जड़, वाराहीकन्द, पोहकरमूल, बहुफली, समुद्रशोष, गोखरू, सुपारी, सालबमिश्री तालमखाना, कूठ, बीजबन्द, शकाकुल मिश्री, और आमला प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा मिश्री ४ सेर, शहद २ सेर, धाय के फूल आध सेर चूर्ण कर, सब को मिला देवे । फिर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर १५ दिन तक सुरक्षित

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

रक्खे । पश्चात् छानकर, उसमें कस्तूरी ६ माशे घोलकर, बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक ।

गुण—रसायन, वाजीकरण, बल वीर्य वर्धक, प्रमेह नाशक, अत्यन्त गुणवान और लाभप्रद वस्तु है ।

---

४४८ रसोनासव (महा) नं० १—वातव्याधि आदि नाशक ।

विधि—छिला हुआ लहसुन ५ सेर, छिलके रहित तिल २॥ सेर तथा सोंठ, कालीमिरच, पीपल, धनिया, चव्य, चीते की जड़, गजपीपल, अजमोद, दारचीनी, बड़ी इलायची और पीपलामूल ४-४ तोले, चीनी ३२ तोले, जीरा २० तोले, काला

---

* तुला क्षुण्ण रसोनस्य तदर्धं लुञ्चितास्तिलाः । पात्रे तु गव्यतक्रस्य पिष्टद्रव्यैः समं क्षिपेत्॥ऽत्रूषणं धान्यकं चव्यं चित्रकं गजपिप्पली। अजमोदा त्वगेलाच ग्रन्थिकं च पलांशकम् ॥ शर्करायाः पलान्यष्टौ पंचाजाज्याः पलानि च । कृष्णाजाज्याश्च चत्वारि राजिकायास्तथैवच ॥ पळप्रमाणं दातव्यं हिङ्गोर्लवणपंचकम् । आर्द्रकस्य च चत्वारि सर्पिषोऽष्टौ पलानिच ॥ तिलतैलस्य तावन्ति शुक्तस्यापि च विंशतिः । सिद्धार्थकस्य चत्वारि द्विगुणं मधुनस्तथा ॥ एकीकृत्य दृढे भाण्डे धान्यराशौ निधापयेत् । द्वादशाहात्समुद्धृत्य प्रातः खादेद्यथाबलम् ॥ सुरां सौवीरकं चाथ मधुवाऽपि पिबेन्नरः । जीर्णे यथेप्सितं भोज्यं दधिपिष्टकवर्जितम् ॥ एकमासोपयोगेन सर्वव्याधिहरो भवेत् । अशीतिर्वातजारोगा चत्वारिंशच्च पित्तजाः ॥ विंशतिः श्लेष्मजांस्तद्वन्नश्यन्ते तस्य सेवनात् । योनिशूलं प्रमेहांश्च कुष्टोदरभगन्दरान् ॥ अर्शोगुल्मक्षयांश्चापि जयेद्रुचिबलप्रदः॥

—योगरत्नाकर ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जीरा १६ तोले, राई १६ तोले एवं हींग ५ तोले, और पांचों नमक (सेंधा, काला, खारी, कचलोना और सामुद्रलवण) प्रत्येक २०-२० तोले, अदरक १६ तोले, घी, तिल का तैल और शहद ३२-३२ तोले, सिरका एक सेर, लेकर, पीसने योग्य चीजों को पत्थर पर पीसले, और कूटने योग्य चीजों को कूट छान महीन चूर्ण बनालें फिर सब द्रव्यों को शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें लगभग ३ सेर तक गाय का मठा (तक्र) मिला पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, अनाज के ढेर में दबा देवे। १२ दिन के बाद निकाल कर काम में लावे।

नोट—शास्त्र में इसे 'महारसोन पिण्ड' कहा जाता है । इसमें शहद, घृत, तक्रादि द्रव पदार्थों का जो परिमाण ऊपर लिखा है, उसे दुगना कर लेने से उत्तम आसव तैयार होता है। समस्त पदार्थों को पात्र में भर कर धूप में रख देना चाहिये, जलांश के सूख जाने पर पात्र का मुख बन्द कर, अनाज के ढेर में दबाना चाहिये । तब यह कीच जैसा पिण्डाकार आसव तयार होता है ।

भैषज्यरत्नावली में कुछ पाठ भेद है—सफेदजीरा १६ तोले, कालेजीरे के स्थान में कूठ तथा ४ तोले कालीमिरच अधिक लिखी है एवं हींग और पांचों नमक का परिमाण १-१ तोला लिखा है।

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक । प्रातःकाल यथोचित् मात्रानुसार सुरा, सौवीरक कांजी या शहद के साथ सेवन करे तथा औषध पचने पर यथेच्छ भोजन करे,किन्तु दही और पिट्ठी के बने पदार्थों का कदापि सेवन न करें।

गुण—इसका १ मासतक नियमित सेवनकरने से ८०प्रकार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

के वातज रोग, ४० प्रकार के पित्तज रोग, २० प्रकार के कफ रोग, योनिशूल, प्रमेह, कुष्ठ, उदर रोग, भगन्दर, अर्श, गुल्म एवं क्षयादि रोग नष्ट होकर, रुचि और बल की वृद्धि होती है।

---

४४९ रसोनासव*—नं० २—आमवातादि नाशक।

विधि—एक शुद्ध घड़े में वल्कलसुरा (कीकड़ की छाल आदि के द्वारा निर्मित)५ सेर, और छिलके रहित पीसा हुआ लहसुन २॥ सेर, एवं पीपल, पीपलामूल, जीरा, कूठ, चीतेकी जड़, सोंठ, कालीमिरच और चव्य प्रत्येक का महीन चूर्ण १-१ तोला, डाल कर, सबको अच्छी तरह मिला कर, घड़ेका मुख बन्द कर रख देवे। ७ दिन पश्चात् छान कर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—३ माशे से २॥ तोला तक।

गुण—आमवात, कृमिरोग, कुष्ठ, क्षय, अफारा (आनाह) गुल्म, बवासीर, तिल्ली, प्रमेह, तथा पांडुरोग नाशक है, अत्यंत जठराग्नि दीपक है। इसे 'रसोनसुरा' कहते हैं।

---

४५० रसोनासव * नं० ३—आमवातादि नाशक।

---

* वल्कलायाः सुरायास्तु सुपक्वायाः शतं घटे । ततोऽर्धंजरसोनन्तु संसुद्धं कुट्टितं क्षिपेत् ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलमजाजीकुष्ठचित्रकम् । नागरं मरिचं चव्यं चूर्णितञ्चाक्षसम्मितम्॥सप्ताहात्परतःपेया वातरोगामनाशिनी। कृमि कुष्ठ क्षयानाह गुल्मार्शः प्लीहमेहनुत् ॥ अग्निसन्दीपनीचैव पाण्डु-रोगविनाशनी ॥ चक्रदत्त।

* रसोनस्य पलशतं तिलस्य कुडवं तथा । हिंगुत्रिकटुकं क्षारौ द्वौ पंचलवणानि च ॥ शतपुष्पा तथा कुष्ठं पिप्पलीमूलचित्रकौ । अजमोदा-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—छिलके रहित लहसुन का कल्क ५ सेर, कूटे हुये तिल १ सेर तथा हींग, सोंठ, कालीमिरच, पिप्पली, जवाखार, सज्जीखार, पांचों नमक (सेंधा, काला, बिड़ या कांचनमक, सांभर और सामुद्रनमक), सोये के बीज, कूठ, पीपलामूल, चीतेकी-जड़, अजमोद, अजवायन, और धनिया, प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले लेकर, लहसुन और तिलों को एकत्र कूट कर, उसमें अन्य औषधियों का चूर्ण मिला, अच्छी तरह कूटे, और फिर सबको घृत से चिकने किये हुए पात्र में भरकर, उसमें १ सेर तिलका तैल तथा दो सेर कांजी मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, धान्यराशि में १६ दिन तक पड़ा रहने देवे। पश्चात् निकाल कर काम में लावे।

मात्रा—१ माशे से ६ माशे तक। अनुपान जल या मद्य के साथ।

गुण—आमवात, सर्वाङ्गवात, एकाङ्गवात, अपस्मार, अग्निमांद्य, कास, श्वास, विषदोष, उन्माद, वातभग्न, शूल तथा कृमि आदि रोगों का नाशक है।

यमानी च धन्याकं चापि बुद्धिमान् ॥ प्रत्येकन्तु पलैचषां श्लक्ष्णचूर्णानि कारयेत्। घृतभाण्डे दृढे चैतत्स्थापयेद्‌ दिनषोडशम् ॥ प्राक्षिप्य तैलभाणीं च प्रस्थार्द्धं कांजिकस्य च। खादेत कर्षप्रमाणन्तु तोयं मद्यं पिबेदनु ॥ आमवाते तथा वाते सार्वाङ्गिकाङ्गसंश्रिते । अपस्मारेऽनले मन्दे कासे श्वासे गरेषु च ॥ सोन्मादवातभग्ने च शूले जन्तुषु शस्यते ।

—चक्रदत्त ।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS (USA)

४५१ * रसोनासव—वातव्याधि नाशक।

विधि—लहसुन का कल्क १ भाग और मद्य (४० से ६० प्रतिशतवाली) ४ भाग, एकत्र मिला, कांच की बोतल में भर, दृढ़ काग लगा कर रक्खे। ७ दिनके बाद फलालैन से छान, शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ माशा से ४ माशे तक।

गुण—वातव्याधि, अग्निमांद्य, अजीर्णादि रोग नाशक है।

(मद्यासव)

रास्नाद्यासव—देखिये श्वासहरासव नं० १—

४५२ रेवटचीन्यासव—(स्वकृत)— पाचक और रेचक।

विधि—रेवन्दचीनी का मोटा चूर्ण ५ तोले, बड़ी इलायची का चूर्ण १। तोला, धनिये का चूर्ण १। तोला और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले, इनको एक कांच के पात्र में एकत्रित कर, अच्छी तरह मुख बन्दकर, ३ दिनतक सुरक्षित रक्खे। रोज एक बार हिलाते रहना चाहिये। पश्चात् फलालेन से छान कर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—पाचनार्थ ६० बून्द से १२० बून्दतक, और रेचनार्थ इसकी चौगुनी मात्रा देवे। बालकों के डब्बा रोग पर इसका उत्तम उपयोग होता है। अजीर्ण विकार से जब मलावरोध होता है तब इसका उपयोग अत्यन्त श्रेष्ठ लाभदायक होता है।

रोध्रासव—देखिये, लोध्रासव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४९३ रोहितकासव * नं०—१ प्लीहादि नाशक।

विधि—रुहेड़े की छाल ५ सेर लेकर जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, ठंडा होजाने पर, मिट्टी के स्वच्छ एवं घृत से चिकने पात्र में भर, उसमें—धाय के फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, गुड़ १० सेर, तथा दारचीनी, तेजपात, बड़ी इलायची, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीते की जड़ और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, मिला पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, १५ दिनतक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—प्लीहा, प्लीहोदर, प्लीहाशूल, हृदय का शूल, पार्श्व शूल, हर प्रकार की अरुचि, कब्जी, उदरशूल, पांडु, कामला, क्षय, दस्त, तथा जीर्णज्वर नाशक है। प्लीहा (तिल्ली) के नाशार्थ तो यह रामबाण ही है।

नोट—रोहितासव और रोहितकारिष्ट में विशेष भेद नहीं है।

---

* रोहितकतुलामेकां चतुर्द्रोणेऽम्भसः पचेत्। द्रोणशेषे रसे तस्मिन् पूते शीते प्रदापयेत्॥ पलानि खलु धातक्या षोडशाद्विशतं गुडात्। पलं पृथक् त्रिजातस्य पंचकोलपलं तथा॥ चूर्णीकृतं क्षिपेत्सर्वं घृतलिप्ते तु भाजने। पक्षादूर्ध्वं पिबेच्चापि ततो मात्रां यथाबलम्॥ प्लीहं प्लीहोदरं चैव प्लीहशूलं तथैव च। हृच्छूलं पार्श्वशूलञ्च तथा सर्वमरोचकम्॥ हन्ति विबन्धशूलञ्च पाण्डुरोगं सकामलाम्। नाशयेच्छर्द्यतीसारं ज्वरं जीर्णं तथैव च॥ रोहीतकासवो ह्येष प्लीहं च शमयेद्ध्रुवम्।

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४५४ रोहीतकासव * नं० २--गुल्मज्वरादि नाशक ।

विधि--रुहेड़े की जड़ की छाल १० सेर लेकर, जवकुट कर, २६ सेर जल में (१२ घंटे भिगोने के बाद) पकावे । ६॥ सेर जल शेष रहने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़, तथा हरड़, बहेड़ा, आमला, लोंग, जायफल, धायके फूल और शुद्ध लोहका चूर्ण प्रत्येक २४-२४ तोले तथा दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण २०-२० तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रखे। १५ दिन के बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ से २॥ तोला तक ।

गुण—गुल्म (गोला), ज्वर, अरुचि, हृदय के रोग, भगन्दर, तिल्ली, रक्तविकार, और श्वास रोग नाशक है ।

---

४५५ * रोहीतकासव नं० ३--ज्वर गुल्मादि नाशक ।

---

* तुलाद्वयं रोहितमूलकानां, द्विद्रोण मात्रेण जलेन पक्त्वा । क्षेप्यं गुडस्य द्विशतं पलानामष्टादश स्युस्त्रिफला पलानि ॥ लवंग जातीफलधातकीनां पलानि लोहस्य षडेव दद्यात् । देयं चतुर्जातकपंचकोलं पृथक् पृथक् पंचपलं तथैव ॥ गुल्मज्वरारोचकहृद्विकार भगन्दरं प्लीह निपीडितानाम् । रक्तामयश्वास निपीडितानां सदासवोऽयं विधिनां प्रयोज्यः ॥ —गदनिग्रह ।

* रोहीतकशतमेकं क्वाथितं द्रोणे चतुर्थशेषेतु । तस्मिन्गुडशतमेकं योज्य शेषैः सुचूर्णितैरेभिः ॥ पलमेकं त्रिफलायाः देयं त्रिपलं च धातकी पुष्पात् । पालिकं च पंचकोलाद् घृतभाण्डे स्थापयेत्पक्षम् ॥ ज्वरगुल्मार्शः प्लीहरुगस्थिग्रह पाण्डुरोगघ्नः ॥ —गदनिग्रह ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—रुहेड़े की छाल ५ सेर, जवकुट कर, १३ सेर जल में (१२ घंटे भिगोकर) पकावे। ३। सेर जल शेष रहने पर, (जल का परिमाण कम है, २६ सेर जल में पकाकर ६॥ सेर क्वाथ जल शेष रखना ठीक होता है) छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भर कर, उसमें ५ सेर गुड़, तथा हरड़ बहेड़ा, आमला, प्रत्येक का चूर्ण ४-४तोले, धायके फूलों का चूर्ण १२ तोले, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीते की जड़ और सोंठ प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर रक्खे। १५ दिन के बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक।

गुण—ज्वर, गोला, बबासीर, तिल्ली, हड्डियों का जकड़जाना, तथा पाण्डुरोग नाशक है।

---

४५६ रोहितकारिष्ट *—अर्श, ग्रहण्यादि नाशक।

विधि—रुहेड़े की जड़ की छाल ५ सेर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में (१२ घंटे भिगोकर) पकावे। १३ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें १० सेर गुड़, धायके फूलों का चूर्ण १३ छटाँक, पीपल, पीप-

---

* रोहीतकतुलामेकां चतुर्द्रोणे जले पचेत्। पादशेष रसे शीते पूते पलशतद्वयम् ॥ दद्याद्गुडस्य धातक्याः पळषोडशिकं मतम्। पंचकोलं त्रिजातं च त्रिफलां च विनिक्षियेत् ॥ चूर्णयित्वा पळशेन ततो भाण्डे निधापयेत्। मासादूर्ध्वं च पिबतां गुदजाः यान्ति संक्षयम् ॥ ग्रहणी पाण्डु हृद्रोग प्लीह गुल्मोदराणि च। कुष्ठशोफारुचिहरो रोहितारिष्ट संज्ञकः ॥

—शार्ङ्गधर।

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

लामल,चव्य, चीते की जड़,सोंठ,दारचीनी, इलायची, तेजपात, हरड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १ मास पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तो० तक।

गुण—बवासीर, ग्रहणी; पाण्डु, हृदय के रोग, तिल्ली, गुल्म, अष्ठीला, कामला, और सब प्रकार के उदररोग, कोढ़ सूजन, तथा अरुचि, नाशक है।

नोट-प्लीहा (तिल्ली) के बढ़जाने से या असक्त होजाने से पचन-क्रिया तथा रक्त शुद्धि ठीक २ नहीं होने पाती, ऐसी अवस्था में रोहित-कारिष्ट अच्छा कार्य करता है। यकृत विकार, वायगोला तथा स्वरभंग पर भी इसका लाभदायक उपयोग होता देखा गया है।

---

४८७ रोहितकारिष्ट--नं० २-

विधि—उक्त रोहितकारिष्ट नं० १ में लोहभस्म ४ तोला और मिला, यथोक्त सन्धान कर रक्खे। १ मास बाद छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा-१ वा २ तोले। प्रातःसायं भोजन के बाद। ५ तोला ताज़ा जल मिलाकर कांच या मिट्टी के पात्र में पीना चाहिये।

गुण-यकृतविकार, पाचन की कमी, बदन का पीला होना, हलकी हरारत, मन्दाग्नि, कफ और पित्त की विकृति नाशक है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ल

४५८ लवङ्गासव * नं० १--प्रमेहादि नाशक।

विधि—लौंग, दारचीनी, नागकेशर, कालाजीरा, कलौंजी, कौंचके बीज, सफेद मुसली, कालीमुसली, गोखरू, खिरेंटी के बीज (बीजबन्द), पोस्त का छिलका, पोस्तके दाने और अकरकरा प्रत्येक २०–२० तोले लेकर, सब को अधकुटा कर, १ मन १२ सेर जल में (१२ घन्टे भिगोने के बाद) क्वाथ करे। १३ सेर शेष रहने पर, छानकर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें कचूर, पीपलामूल, कालीमिरच, असगंध, सोंठ, जायफल, केसर, जावित्री, अकरकरा, कबाबचीनी, बड़ी इलायची; कालाअगर, तालीसपत्र, सफेद चन्दन, भांग, क्षीरविदारी; विधारे के बीज सुपारी, बंसलोचन और

---

* देवपुष्पं वरांग च केशरं पृथुकां तथा। कलौंजी मर्कटीबीजं मूसली-द्वयगोक्षुरम् ॥ बलावीजानि पोस्तत्वग्बीजं च करहाटकम्। पृथक् प्रथक प्रकुर्वीत पलानां पंचकं तथा ॥ चतुर्द्रोणेऽम्भसः पक्त्वा कुर्यात्पादावशेषितम्। शटीचापिप्पलीमूलंमरिचंसाश्वगन्धकम् ॥ शुण्ठी जातिफलंचापि कुंकुमं जातिपात्रिका। आकल्लकं कबावं च हेला कृष्णागुरुस्तथा ॥ तालीसं चन्दनं चैव विजया क्षीरकन्दका। वृद्धदारुभवं बीजं क्रमुकं वंशरोचना ॥ धत्तूरस्य च बीजानि पलमात्राणि कारयेत्। सर्वमेकत्र संचूर्ण्य पूते शीते निनिक्षिपेत् ॥ द्वात्रिंशत्पलिकं क्षौद्रं धातक्याश्च पलाष्टकम्। तुलार्धं तु गुडाज्जीर्णाद् घृतभाण्डे विनिक्षिपेत् ॥ मासादूर्ध्वं पिबेदेनं हन्ति प्रमेहं दुर्जयम्। धातुक्षयं जयेच्छीघ्रं लवंगाद्यासवस्त्वयम् ॥ —गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

धतूरे के बीज प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले तथा शहद १ सेर ४८ तोले (शहद का परिमाण कम है, लगभग ३ सेर तक डालना चाहिये) धाय के फूलों का चूर्ण ३२ तोले और पुराना गुड़ २॥ सेर मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर रक्खे। १ मास पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तो० तक।

गुण—दुर्जय प्रमेह एवं धातुक्षीणता को शीघ्र ही नष्ट करता है।

---

४५९ लवङ्गासव * नं० २--अर्शादिनाशक।

विधि--लोंग, पीपल, शुद्ध लोह चूर्ण, कालीमिरच और एलवालुक (शीतलचीनी) प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले लेकर, १ मन १२ सेर जल में (१२ घंटे भिगोकर) पकावें, १३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, ठंठा हाजाने पर शुद्ध चिकने मटके में भर, उस में १० सेर गुड़ घोल कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

---

* लवंग पिप्पली लोह मरिचं सैलवालुकम्। द्विपलांशं जलस्यैतच्चतुर्द्रोणे विपाचयेत् ॥ द्रोणशेषे रसे तस्मिन्पूते शीते प्रदापयेत् । गुडस्य द्विशतं तिष्ठेत्तत्सर्वं घृतभाजने ॥ पक्षादूर्ध्वं जातरसे दद्यान्मात्रां यथावलम्। अस्याभ्यासादरिष्टस्य गुदजा यान्तिसंक्षयम् ॥ ग्रहणी पाण्डु हृद्रोग प्लीह गुल्मोदरापहः। कुष्ठशोफारुचिहरो वलवर्णाग्निवर्धनः। सद्यः क्षयहरोऽरिष्टः कामलाश्वित्रनाशनः। कृमिग्रन्थ्यर्बुदव्यङ्ग राजयक्ष्मज्वरान्तकृत् ॥

—गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक ।

गुण—बवासीर, संग्रहणी, पाण्डु, हृदय के रोग, तिल्ली, गोला, उदर रोग, अरुचि, कोढ़, सूजन, क्षय, कामला, श्वित्र, कृमि, ग्रन्थि, अर्बुद, व्यङ्ग और ज्वर नाशक है। बल, वर्ण एवं अग्नि की वृद्धि करता है।

लशुनासव—देखियें, रसोनासव ।

४६० लक्ष्मणारिष्ट * स्त्रीरोगनाशक ।

विधि—लक्ष्मणा (इसकी जड़ सफेद मूसली जैसी चिकनी और लुआबदार होती है, पत्तों पर रक्त वर्ण की बूंदें होती हैं, यह बिहार प्रान्त में, तिरहुत में, विशेष रूपसे पाई जाती है। इसके अभाव में श्वेतपुष्पकी अथवा नीले पुष्पकी कटेरी अर्थात् भटकटैया की जड़ या मयूरशिखा लेसकते हैं) की जड़ अथवा पंचाङ्ग ५ सेर लेकर, जवकुट कर, १ मन १२ सेर जल में पकावे। १३ सेर जल शेष रहे, तब छानकर, शुद्ध मजबूत एवं घृतसे चिकने हुये मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ घोल देवे। धाय के फूल १३ छटाँक, नागरमोथा, मुलैठी, खिरैंटी, हरड़, बहेड़ा, आमला, हल्दी, दारुहल्दी, जीरा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, अजमोद, अजवायन और बेलगिरी प्रत्येक का चूर्ण

---

* लक्ष्मणायाः पलशतं चतुर्द्रोणे जले पचेत् । पादशेषे कषायेऽस्मिन् क्षिपेद् गुडतुलांद्वयम् ॥ धातकीं षोडशपलां मुस्तकं मधुकं बलाम् । फलत्रयं निशाद्वन्द्वं जीरकं चंदनद्वयम् ॥ अजमोदां यवानीञ्च विल्वञ्च पलमानतः । मासादूर्ध्वन्तु सिद्धोऽयमरिष्टः स्त्रीगदान्तकृत् ।

—भैषज्यरत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४-४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—सब प्रकार के स्त्री रोगों को नष्ट करता है। गर्भप्रद है।

---

४६१ लक्ष्मीअरिष्ट—स्त्रीरोगहारक।

[कविराज गौरीशङ्करजी आनन्द, रसवैद्य]

विधि-घृत कुमारी (घीगुवार) का रस १॥ सेर, कपासकी जड़ की छाल १॥ सेर, वरुण (वरना) की जड़ की छाल १ सेर, सहँजने की छाल आध सेर, लाल चीते की जड़ आध सेर, तथा दशमूल, सौंफ और अमलतास का छिलका प्रत्येक आध २ सेर लेकर, जवकुट कर, ६४ सेर जल में पकावे। शेष जल ८॥ सेर रहने पर छान कर, ठण्डा होजाने पर शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें मेथी के बीज, खयारैन के बीज (खीरे और ककड़ी के मिले हुए बीज),अजवायन, अनीसून; सोया, मजीठ, करफसबीज (अजमोद), गाजर के बीज,कासनी के बीज, गुग्गुलु, पुनर्नवा, जटामांसी, मरमक्की (बीजाबोल), सुहागा और भांग प्रत्येक ५-५ तोले चूर्ण कर मिलावे और बाबूना पुष्प (इसे अंग्रेजी में 'कैमोमाइल' और लेटिन में 'एन्थीमिस नोबिलिस' कहते हैं।) आध सेर, दाख आध सेर, शहद १। सेर, पुराना गुड़ ५ सेर, अच्छी तरह मिलाकर, १ मास तक बन्दकर रक्खे। गुड़ जितना पुराना हो उतना ही लाभदायक होता है।

मात्रा--१ से २ तोला तक।

गुण—रजका बन्द होना, कष्ट से रजका आना और गर्भा-

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शय शोथ–नाशक है। प्रसव के समय यदि बालक शीघ्र पैदा न होता हो और बहुत कष्ट हो तो दो तोला अरिष्ट में १ रत्ती केशर मिलाकर पिलाने से शीघ्र ही बालक पैदा होजाता है।

---

४६२ लोध्रासव * नं० १–प्रमेहादि नाशक।

विधि–लोध, कचूर, पोहकरमूल, बड़ी इलायची, मूर्वा, बायविडंग, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजवायन, चव्य, फूलप्रियंगु, सुपारी, इन्द्रायन की जड़, चिरायता, कुटकी, भारंगी की जड़ तगर, चीते की जड़, पीपलामूल, कूठ, अतीस, पाठा, इन्द्रजौ, नागकेसर, कुड़ेकी छाल, नखी, तेजपात, कालीमिरच, और नागरमोथा प्रत्येक १–१ तोला लेकर, अधकुटा कर, १३ सेर जल में पकावे। ३। सेर जल शेष रहने (जल का परिमाण कम है लगभग ३२ सेर जल में पका कर ८ सेर अवशिष्ट क्वाथ जल लेना ठीक होता है) छानकर, ठंडा होने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें शहद १ सेर १० छटाँक (८ सेर अवशिष्ट क्वाथ में ४ सेर शहद मिलावे) मिलाकर पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। या जमीन में

---

* लोध्रं शठीं पुष्करमूलमेलां मूर्वाविडङ्गं त्रिफलां यवानीम्। चव्यं प्रियङ्गुं क्रमुकं विशालां किराततिक्तं कटुरोहिणीं च॥ भार्गीनतं चित्रकपिप्पलीनां मूलं सकुष्ठातिविषां च पाठाम्। कलिङ्गकान्केसरमिन्द्रसाह्वं नखं सपत्रं मरिचं प्लवं च॥ द्रोणेऽम्भसः कर्षसमानि पक्त्वा पूते चतुर्भागजलावशेषे। रसेऽर्धभागे मधुनः प्रदाय पक्षं निधेयो घृतभाजनस्थः॥ लोध्रासवोऽयं कफपित्तमेहान्क्षिप्रं निहन्याद् द्विपलप्रयोगात्। पाण्डवामयाशांस्यरुचिं ग्रहण्या दोषं किलासं विविधं च कुष्ठम्॥ —गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

गाढ़ कर रक्खे। पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—६ माशे से २ तोले तक।

गुण—कफ तथा पित्त के प्रमेहों को शीघ्र नष्ट करता है। इसके सिवा यह पाण्डु, बवासीर, अरुचि, संग्रहणी या ग्रहणी दोष, किलास तथा अनेक प्रकार के कुष्ठों को भी नष्ट करता है। मूत्राशय के विकार जैसे मूत्र में जलन होना, मूत्र वार २ बहुत प्रमाण में या बून्द २ होना, मूत्रमार्ग में सूजन होना, वीर्यस्राव, या स्वप्नधातु होना इत्यादि विकारों पर भी यह उत्तम लाभ दायक है। कफ के विकार, खाँसी, भ्रम (या चक्कर आना) को भी यह दूर करता है। इससे भूख अच्छी लगती है। यह गर्भाशय की शुद्धि कर, प्रदरादि स्त्रियों की अनेक व्याधियों पर रामबाण जैसा काम करता है। यदि प्रमेह रोगी को इसके सेवन से दस्त अधिक आने लगें तो इसमें से 'इन्द्रायन की जड़ निकाल देनी चाहिये।

नोट—चरकादि ग्रन्थों में इसे 'मध्वासव' नाम दिया गया है। वाग्भट में कालीमिरच के स्थान में दारचीनी लिखा है। यह रोध्रासव वातरक्त (निकरस) रक्तपित्त,रक्तप्रदर आमवात पक्षाघात, अर्दित, शीतला, मसूरिकादि अनेक वातश्लेष्म व्याधियों के लिये अनेक बार अनुभव किया है। यह इन रोगों के लिये एकमात्र अचूक महोषधि है। मात्रा–बड़ों के लिये २॥ तो० प्रातः सायं दोनों समय देवे, छोटों के लिये अवस्थानुसार आधी मात्रा देनी चाहिये। वातरोगियों को जब आसव सेवन करावे तब उनके शरीर पर विषगर्भ तैल या नारायण तैल की मालिश कराना हितकर है। विस्फोटक, मसूरिकादि में बालकों के शरीर पर, आसव सेवन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

काल में महा मरिच्यादि तैल का मर्दन प्रातःसायं करावे। पथ्य में रक्तपित्त और प्रदर में दही चावल देवे। वातरक्त और आमवात में, गेहूं की रोटी, मूंग की दाल, चनों का यूष, मेथी का शाक, कोला आदि देवे। पक्षाघात और अर्दित में तैल मिश्रित पदार्थों को छोड़ सब कुछ खा सकता है। आमवात और वातरक्त के रोगियों को हर चौथी रात्रि को मधुर विरेचन चूर्ण या कोई भी सौम्य विरेचन देते रहना चाहिये, जिस से मलावरोध न रहे। (वैद्यशास्त्री प० देवदत्तजी शर्मा)

---

४६३ लोध्रासव—नं० २—प्रमेह प्रदरादिनाशक।

(वैद्यक चिकित्सासार से, पं० बालकृष्ण शर्मा वैद्यराज द्वारा प्रेषित)

विधि—पठानी लोध २० तोले लेकर, शेष द्रव्य उक्त लोध्रासव नं० १ के अनुसार एक-एक तोला लेवे, किन्तु इन्द्रायण की जड़ के स्थान में कलिहारी १ तो० और कुड़े की छाल के स्थान में सोंफ १ तोला तथा सफेदचन्दन १ तोला लेवे। सबका महीन चूर्ण कर, ६ सेर १ पाव जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर देवे, उसमें २॥ सेर शहद मिला, (धायके फूलों का चूर्ण भी १३ छटाँक मिलाना चाहिये) पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, २ मास तक (सन्धानावधि बहुत होगई, आसव बिगड़ने का डर है, अतः १ मास तक ही रखना ठीक होगा) सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१। तोला से २॥ तोले तक। प्रातःसायं।

गुण—पाण्डु, अरुचि, बवासीर, संग्रहणी, कफ और पित्त के प्रमेह, कुष्ठ आदि में अत्यन्त लाभदायक है। प्रदर तथा स्त्रियों के अनेक गर्भाशय सम्बन्धी विकारों को नष्ट करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४६४ लोध्रासव नं० ३—स्त्री रोगनाशक।

विधि--पठानीलोध का महीन चूर्ण १० तोले लेकर, रेक्टीफाइडस्प्रिट २० तोले और १० तोले जल एकत्र मिला कर, कांच के पात्र में, खूब मजबूत डाट लगाकर बन्द कर देवे। २ हफ्ते तक रोजाना बोतल को धूप में रख दिया करे। बाद को छानकर, दूसरी शीशी में भर लेवे।

मात्रा—६० बून्द से १२० बून्दें तक, ठंडे जल के साथ रोज तीन बार सेवन करावे।

गुण–इसके सेवन से कष्ट से स्राव होना और अधिक मात्रा में रक्त का गिरना, पेट की पीड़ा, कमजोरी, सिर का घूमना, इत्यादि सब प्रकार के स्त्री रोग शान्त होजाते हैं। शरीर स्वस्थ और सबल होता है। पुष्टता और लावण्यता बढ़ती है।

(वैद्य–मुरादाबाद)

---

४६५ लोबानासव–(स्वकृत) श्वास कासादि नाशक।

विधि–लोबान का मोटा चूर्ण ५ तोले, शुद्ध शिलारस ४ तोले, एलुए का मोटा चूर्ण १० माशे और बालसम आफ़टोलू (बालसम नामक वृक्ष अमेरिका कार्थजीना तथा टोलू के पहाड़ों पर होता है। इसके गोंद को 'बालसम आफटोलू' कहते हैं) का चूर्ण १। तोला, सबको एकत्र कर, ४५ तोले रेक्टिफाइडस्प्रिट में मिला, शुद्ध बोतल में भर, दृढ़ काग बन्द कर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् मोटे वस्त्र से खूब निचोड़ते हुये छान कर, शीशियों में भर कर रख ले।

मात्रा—३० बून्द से ६० बून्दें तक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—उत्तेजक और कफघ्न है। वमन, कास एवं मूत्रदाह पर गुणकारी है। यह श्वासमार्ग के विकारों पर प्रशस्त है। मूत्र में रस जाता हो (खलजाती हो), तो इसके सेवन से शीघ्र लाभ होता है।

---

४६६ लोहासव * नं० १—पाण्डु शोथादिनाशक।

विधि—शुद्ध लोह चूर्ण (नीचे नोट १ देखिये) सोंठ, कालीमिरच, पीपल, हरड़, वहेड़ा, आमला, अजवायन, वायविडङ्ग, नागरमोथा और चीते की जड़ प्रत्येक १६-१६ तोले; धायके फूल १ सेर, पुराना शहद ३। सेर, गुड़ ५ सेर और शुद्ध जल २६ सेर लेकर, कूटने योग्य चीजों को कूटकर, सबको शुद्ध चिकने मटके में भर, उसका मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। अथवा जमीन में गाढ़कर रखदे। पश्चात् निकाल कर, छान लेवे।

मात्रा—आधा तोला से १॥ तोला तक।

गुण—अत्यंत अग्निवर्धक है, पाण्डु, सूजन, हलीमक, कामला, यकृत विकार, गोला और समस्त उदर रोग, ववासीर, कोढ़,

---

* लोहचूर्णं त्रिकटुकं त्रिफलां च यवानिकाम्। विडंगं मुस्तकं चित्रं चतुः संख्यापलं पृथक्॥ धातकीकुसुमानां तु प्रक्षिपेत्पलविंशतिः। चूर्णीकृत्य ततः क्षौद्रं चतुः षष्टिपलं क्षिपेत्॥ दद्याद्गुडतुलां तत्र जलद्रोणद्वयं तथा। घृतभाण्डे विनिक्षिप्य निदध्यान्मासमात्रकम्॥ लोहासवममुं मर्त्यः पिबेदग्निकरं परम्। पाण्डुश्वयथुगुल्मानि जठराण्यर्शसां रुजम्॥ कुष्ठं प्लीहामयं कण्डूं कासं श्वासं भगन्दरम्। अरोचकं च ग्रहणीं हृद्रोगं च विनाशयेत्॥

—शार्ङ्गधर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

खुजली, पुराना बुखार, खांसी, दमा, भगन्दर, अरुचि, संग्रहणी तथा हृदय रोग नाशक है । जिस रोगी को लोहभस्म प्रकृति के अनुकूल न आती हो उसे यह आसव उत्तम लाभदायक है । क्षय की पूर्वस्थिति में तथा प्लीहायुक्त ज्वर पर और पाण्डु पर यह विशेष गुणदायक है । अत्यंत बढ़े हुये पाण्डुरोगी को इसके साथ 'नवायसलोह' की मात्रा सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है । ज्वररोगी को लोहासव १ तो०, कलमीशोरा १ मासा, नौसादर १ मा०, पानी २॥ तोले सबको एकत्र मिला पिलावे । यह बड़े आदमी की खुराक हुई, बालकों को १-१ चायका छोटा चम्मच हर ३-३ घंटे के बाद पिलावे । इससे पसीना आकर ज्वर १ या १॥ घंटे में ही उत्तर जाता है और प्लीहा विकार दूर होता ।

नोट (१) लोह चूर्ण की विधि— लोहेको तपाकर, उसपर गंधक डाळ पानी में बुझाले, इस बुझे हुये लोह को हस्तिशुंडी के रस में डाळ दे, १५ दिन के बाद निकाल कर कूट डाले, महीन चूर्ण होजाता है । लोह चूर्ण के स्थान में लोहभस्म डालना और भी अधिक अच्छा है, इस विषय में देखें, नोट लोहारिष्ट के अन्त में ।

नोट २-यह लोहासव परिणामशूल परभी हितकारी है। यदि इसके सेवन से हृदय में जळन की प्रतीति हो तो मात्रा कम कर देनी चाहिए।

---

४६७ लोहासव नं० २-(स्वकृत)—पाण्डुरोगनाशक ।

विधि—पुरानी तलवारों का लोह चूर्ण १३ छटाँक, तथा त्रिकुटा, त्रिफला आदि उक्त लोहासव नं० १ के ही अनुसार प्रत्येक १६-१६ तोले तथा शहद, गुड़, और जल भी उसी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

परिमाणानुसार लेकर,उसी विधि से सन्धान कर १ मास तक जमीन में गाढ़ देवे, अथवा दो मास तक अन्धेरे में रख छोड़े, फिर निकाल और छान कर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ से १॥ तोला तक, समभाग जल मिला, प्रातः सायं सेवन करावे।

गुण—पाण्डु और कामला को शीघ्र नष्ट करता है।

---

४६८ लोहासव नं० ३–[वैद्यराज गौरीशङ्करजी आनन्द]

विधि—लोहभस्म १६ तो०, शेष द्रव्य सोंठ, कालीमिरच आदि उक्त आसव नं० १ के अनुसार १६-१६ तो० तथा कुटकी, चिरायता, मजीठ और नवसादर प्रत्येक १६-१६ तो० तथा धाय के फूल, शहद, गुड़ और जल उक्त परिमाणानुसार ही लेकर, उक्त विधि से आसव तैयार कर लेवे।

मात्रा—उपर्युक्तानुसार।

गुण—पाण्डु, रक्तहीनता, अजीर्ण, प्लीहा और यकृतविकार में लाभप्रद है।

---

४६९ लोहासव * नं०४—पाण्डुरोगादि नाशक।

---

* फलात्रिकं निम्बपटोलमुस्ता पाठामृताचन्दन चित्रकं च। वेल्लं समङ्गाच मधूकसार कर्चूर वासा त्रिवृता हरिद्राः॥ दुरालभा-पर्पट कण्टकारी शक्रासनं यासकचर्मरङ्ग। शशाङ्कलेखाकपिकच्छुमूलं मेथी च विल्वं कुटजश्च तिक्ता॥ त्रायन्तिका पुष्करकस्य मूलं पलैकमानानि महौषधानि। षष्टिः पलानां खदिरस्य साराह्वयोरजः स्यात् पलयुग्ममानम्॥ स्याल्लोहकीटं च तुलाप्रमाणं तत्पञ्चकं केवुकजावनीयम्। प्रक्षिप्य भाण्डे शशियुयुग्मघस्रान् सूर्यातपे स्थाप्य ततस्तु योज्यः। लोहासवोऽयं भिषजोपदिष्टः सर्वोत्तमोरोगविनाश हेतुः॥ —गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—लोह किट्ट (मण्डूर) ५ सेर, शुद्ध लोह चूर्ण ८ तोले तथा हरड़, बहेड़ा, आमला, नीमकी छाल, पटोलपत्र, नागरमोथा, पाठा, गिलोय, सफेद चन्दन, चीते की जड़, बायबिडंग, मजीठ, महुये का गोंद, कचूर, बासा; निसोथ, हल्दी, धमासा, पित्तपापड़ा, (स्यातरा) कटेरी, इन्द्रजौ, जवासा, सनाय, बाबची, कौंचकी जड, मेथी, बेलकी छाल, कुड़ेकी छाल, कुटकी, त्रायमाना और पोहकरमूल प्रत्येक ४-४ तोले तथा खैरसार ३। सेर, केउँआ (शलगम काली), जीवन्ती (अभावे गिलोय), काकोली, क्षीरकाकोली (अभावे असगंध), मेदा, महामेदा (अभाव में शतावर), जीवक, ऋषभक (अभावे विदारीकन्द), मुद्गपर्णी, (मुगवन-बनमूंग), माषपर्णी (वनउड़द) और मुलैठी प्रत्येक २०-२० तोले लेकर, सबका चूर्ण कर, २ मन २४ सेर जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, लगभग २५ सेर तक गुड़ उसमें घोलकर, यथाविधि सन्धान कर, २१ दिन तक धूपमें रक्खें। पश्चात् छानकर, बोतलों में भरकर रखदे।

मात्रा—१ से २॥ तोले तक।

गुण—पांडुरोग को शीघ्र नष्ट करता है। शरीर में रक्त की शुद्धि करके बल को बढ़ाता है। प्लीहा, यकृत विकार, जीर्णज्वर, कास, श्वास आदि नाशक है। अग्निदीपक होने से कई रोगों को दूर करता है।

---

४७० लोहासव नं० ९—बुद्धिवर्धक (रसायन)

विधि-लोहपत्रों को अग्नि में खूब लाल तपा २ कर, त्रिफले के स्वरस (या क्वाथ में) में, गोमूत्र में, यवक्षार के पानी में,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लवण जल में, इंगुदीक्षार और पलासक्षार के जल में २१-२१ बार बुझावे। फिर महीन चूर्ण कर, उसे मधु और आमले के रस में डाल, अवलेह के समान बना घृतभावित घृतपात्र में भर मुखमुद्रा कर, पात्र को जौ के ढेर में दबा देवे। बीच २ में हर महीने; लोहे के या लकड़ी के डंडे से अच्छी तरह चलाता रहे। १२ मास के पश्चात् निकाल कर सेवन करे।

मात्रा—अवस्थानुसार यथोचित्। अनुपान शहद और घी नित्य प्रातःकाल सेवन करे। जब औषध पचजाय तब सात्म्य-आहार करे।

गुण—रोग, जरा, मृत्यु के हमले से सुरक्षित रखता है, समस्त इन्द्रियाँ बलवान होकर धीमान, यशस्वी, वाग्मी बनाता है, एवं दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

(चरकसंहिता)

---

४७१ लोहारिष्ट *—प्रमेहादि नाशक।

---

* शालसारादिनिर्यूहे चतुर्थांशावशेषिते। परिस्रुते ततः शीते मधु माक्षिकमावपेत् ॥ फाणितीभावमापन्नं गुडं शोधितमेवच। श्लक्ष्णपिष्टानि चूर्णानि पिप्पल्यादि गणस्य च ॥ ऐकध्यमावपेत्कुम्भे संस्कृते घृतभाविते। पिप्पलीचूर्णमधुभिः प्रलिप्तेऽन्तःशुचौ दृढे ॥ श्लक्ष्णानि तीक्ष्णलोहस्य तत्र पत्राणि बुद्धिमान्। खदिराङ्गारतप्तानि बहुशः सन्निपातयेत्। सुपिधानं तु तं कृत्वा यवपल्ले निधापयेत् ॥ मासाँस्त्रींश्चतुरोवापियावदाळोहसंक्षयात्। ततोजातरसं तंतु प्रातः प्रातर्यथाबळम् ॥ निषेवेत यथायोगमाहारं चास्य कल्पयेत्। कार्श्यकृद्बलिनामेष सन्नस्याग्नेः प्रसाधकः ॥ शोफनुद् गुल्महृत् कुष्ठ मेहपाण्ड्वामयापहः। प्लीहोदरहरः शीघ्रं विषमज्वर नाशनः ॥ अभिष्यन्दापहरणो लोहारिष्टो महागुणः ॥ —सुश्रुत।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—शालसारादिगण (शाल, चिरौंजी, खैर, तिन्दुक, सुपारी, भोजवृक्ष की छाल, मेढ़ासिंगी, तिरिच्छ की छाल, दोनों चन्दन, सीसम की छाल, सिरस की छाल, विजयसाल की छाल, धावड़ा की छाल, अर्जुन की छाल, तालमूल, करंज की छाल, बावची, सर्जसाल की छाल, अगरु, पीलाचन्दन) की औषधियाँ समानभाग कुल मिलाकर ५ सेर लेवे । और जव-कुटकर, १ मन १२ सेर जल में पकावे । १३ सेर जल शेष रहने पर, छान लेवे । ठंडा होजाने पर, शुद्ध घृत भावित (घी से चिकने किये हुये) मटके में भर, उसमें शहद इतना मिलावे कि वह मीठा होजाय (अथवा मध्वासव नं० १ या मधूकपुष्पा-सव नं० १ वाला २॥ सेर मिलावे), शुद्ध राब २॥ सेर, तथा पिप्पल्यादिगण (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीतामूल, सोंठ, कालीमिरच, गजपीपल, संभालू के बीज, बड़ी इलायची, अज-मोद, इन्द्रजौ, पाठामूल, सफेदजीरा, सरसों, बकायन के फल, घृतमें भुनी हुई हींग, भारंगी, मूर्वा इसके अभाव में जिंगनी की छाल, अतिविष, बच, बायबिडंग, और कुटकी) की सब औष-धियों का समानभाग कुल चूर्ण १। सेर और खैर के अंगारों में अनेक बार तपाया गया शुद्ध लोह का चूर्ण १। सेर तक मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर,(ध्यान रहे इस मटके में औषध भरने से पहले, शहद मिले हुये पीपल के चूर्ण का लेप कर देना चाहिये) जौ के ढेर में दबा देवे । २ मास या ३ अथवा ४ मास अर्थात् जब तक लोह गल न जावे तब तक मटके को अनाज के ढेर में ही रहने देना चाहिये । पश्चात् निकाल और छानकर बोतलों में भर लेवे ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा–६ माशे से २॥ तोले तक । प्रातःकाल, उचित पथ्यापथ्य–पालन करते हुये सेवन करे ।

गुण—स्थूलता (मेदवृद्धि) दूर होकर, जठराग्नि दीप्त होती है अर्थात् मन्दाग्नि दूर होती है, तथा सूजन, हृदय के रोग, गुल्म, कोढ़, प्रमेह, पाण्डुरोग, तिल्ली (प्लीहा), अभिष्यन्द, विषमज्वर और मूत्रकृच्छ्र को यह नष्ट करता है ।

नोट—उपर्युक्त लोहासवों में और लोहारिष्ट में लोहचूर्ण के स्थान में लोहभस्म डालीजाय तो उत्तम है । लोहभस्म को प्रथम, जल मिश्रित हरड़ के चूर्ण में भिगो देवे, और तीन दिन पश्चात् उसमें आमले और बहेड़े का चूर्ण मिला दे । इसके ४ दिन बाद इस मिश्रण को आसव या अरिष्ट के मटके में डालना चाहिये । इस क्रिया से लोह अच्छी तरह विलीन होजाता है ।

(भा० भैषज्यरत्नाकर)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

व

४७२ वटजटासव--(स्वकृत)-प्रमेहादि नाशक।

विधि—बरगद की कोमल जटायें दो सेर लेकर जवकुट कर १२ सेर जल में पकावे। ४ सेर जल शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर देवे। ठंडा होजाने पर उसमें शहद ३ सेर, मिश्री २॥ सेर, धायके फूलों का चूर्ण २० तोले, नागकेशर, कालीमिरच और प्रियंगु प्रत्येक का चूर्ण ८-८ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक।

गुण—प्रमेह; मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, रक्तार्श नाशक है। जिन स्त्रियों को मासिकधर्म में खून बहुत जाता हो, तथा कई दिनों तक खून का जाना ज़ारी रहता हो, उन्हें इसके सेवन से आशातीत लाभ होता है।

---

४७३ वटदुग्धासव—प्रमेहादि नाशक।

(श्री पं० बाबूलालजी जैन वैद्यराज)

विधि--बरगद का दूध ५० तोले और मृतसंजीवनी सुरा (आसव) नं० १ की दोनों को, कांच की बोतलों में एकत्र मिलाकर भर देवे तथा अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, ७ दिन तक रखा रहने देवे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१० से २० बून्द तक।

गुण—इसे धारोष्ण दुग्ध के साथ सेवन करने से, प्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, सोमरोग, बहुमूत्र और रक्तार्श नष्ट होता है। शोथ व्रण पर इसे शतधौत घृत में मिलाकर लगाने से चमत्कारिक प्रभाव होता है। भगंदर, नासूर पर इसे मनुष्य के नाखून की भस्म में मिलाकर लगावे। तथा कंठमाला, कुष्ठ, दाद, पर बावची के चूर्ण में इसे मिलाकर प्रलेप करे। पूर्ण सिद्ध प्रयोग है।

---

४७४ * वत्सनाभासव—ज्वर, शोथादि पर।

विधि—मीठातेलिया (वच्छनाग) का चूर्ण एक भाग और मद्य (७० से ६० प्रतिशत वाली) १० भाग एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा, ३ या ७ दिन तक, रक्खा रहने देवे। बीच २ में हिलाते जाना चाहिये। पश्चात् बन्नात या फलालेन से छानकर रखदे।

मात्रा—आधी बून्द से ८ बून्द तक।

गुण—ज्वर नष्ट करने में श्रेष्ठ है। इसके सेवन से हृदय की गति मन्द होजाती है, तथा रक्तप्रवाह भी कुछ कम होजाता है, अतएव प्रत्येक स्थान के शूल तथा वेदना में इससे बड़ा लाभ होता है, शिरःशूल में इसका प्रभाव तत्काल होता है। तीव्रज्वर में इसके सेवन से स्वेद (पसीना) आकर ज्वर तत्काल कम हो जाता है। शोथ रोगों में भी इसके सेवन से लाभ होता है। मूत्राशय और गर्भाशय पर भी इसका उत्तम प्रभाव होता है। मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, प्रमेह, स्त्रियों के रजोरोध और कुक्षिशूल आदि रोगों में इसका सेवन लाभप्रद होता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

किन्तु हृदय के रोगों में इसका व्यवहार कभी नहीं करना चाहिये ।

(मद्यासव)

---

४७९ वनपलाण्डवासव--हृदय रोगहारी ।

विधि--जंगली प्याज का चूर्ण १ भाग और मद्यरस (६० प्रतिशत वाला) अथवा रेक्टिफाइडस्प्रिट ५ भाग, दोनों को एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा कर रक्खे । ७ या १५ दिन के बाद फलालेन या मोटे वस्त्र से छान कर फिर बोतलों में भर कर रखदे ।

मात्रा—५ से १५ बून्द तक ।

गुण—हृदय पर इसका प्रभाव–'डिजिटेलिस' के समान होता है । यह श्वासनलियों में से श्लेष्मा को बाहर निकालता है, तथा वृक्कों को उत्तेजित करता है । मूत्रल है, श्वासनालियो, मूत्रमार्ग तथा आँतों के स्रावों के द्वारा कफको शरीर से बाहर निकालता है । कास में जब श्लेष्मा, श्वासनालियों में बढ़जाय और उसे निकालना अभीष्ट हो, ऐसी हालत में यह बहुत उपयोगी है । किन्तु खांसी की प्रथमावस्था में इसे नहीं देना चाहिये । उस समय देने से खाँसी अधिक बढ़ जाती है, श्वासनालियों में श्लेष्मा का स्राव बढ़जाता है । यदि हृदय की निर्बलता के कारण, श्वयथु हो तो, इसे देने से जहाँ हृदय उत्तेजित होता है, वहाँ मूत्र भी अधिक आता है, जिससे सूजन कम हो जाती है । श्वास, ज्वरादि रोगों में निर्बल हृदय को उत्तेजित करने के लिये इसे दिया जाता है ।

(अ० योगमाला)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४७६ वनप्सासव--(स्वकृत) प्रतिश्यायादि निवारक ।

विधि—बनपसे के फूल १॥ सेर लेकर, कूट कर, २० सेर जल में पकावे ६। सेर जल शेष रहने पर, उसे छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें २ सेर मिश्री, १३ छटाँकर धायके फूलों का चूर्ण तथा छोटी पीपल और वंसलोचन प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले, मुलैठी का चूर्ण ८ तोले; कालीमिरच २ तोले, और केशर १ तोला खूब पीसकर मिलावे। और पात्रका मुख अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर और २० तोले रेक्टिफाइडस्प्रिट मिलाकर बोतलों में कार्क लगाकर रक्खे। ४ दिन के बाद काम में लावे।

मात्रा--६ माशे से २ तोले तक।

गुण—बिगड़ा हुआ जुकाम, कफज्वर, खाँसी, निमोनिया, सिरदर्द, और क्षयपर भी लाभदायक है। यह पसीना लाकर ज्वर को उतार देता है।

---

४७७ वनप्साद्यासव--(स्वकृत) प्रतिश्ययादि नाशक ।

विधि--बनपसे के फूल, गावजवाँ, रेशाखतमी,मुलैठी, बहेड़े की बकली और स्यातरा प्रत्येक का मोटा चूर्ण ४-४ तोले, मुनक्का १ सेर और उन्नाव १ पाव जवकुट कर सबको ८ सेर जल में २४ घन्टे भिगो रक्खे, पश्चात् पकावें। ३ सेर जल शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें शर्बत अनार १३ छटाँक, धायके फूलोंका चूर्ण १ पाव, गुड़ १ सेर मिला, अच्छे प्रकार मुख मुद्राकर १५ दिन तक सुरक्षित रखे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। प्रातः सायं सेवन करे।

गुण—खाँसी, सर्दी, जुकाम (प्रतिश्याय), हरारत, दम-फूलना, दस्त की कब्जियत, भूख न लगना इत्यादि शिकायतों को दूर करता है।

---

४७८ वरुणासव *--प्लीहा, विद्रधि आदि नाशक।

विधि--बरने की जड़की छाल ५ सेर, शीशम की छाल २॥ सेर, पोहकरमूल २॥ सेर, चीते की जड़ १। सेर तथा पिया-बांसा (पीली कटसरैया), रुहेड़े की छाल, सहंजने की छाल, और दशमूल (सरिवन, दोनों कटेरी गोखरू, बेल, सोनापाठा, कुंभेर, पाढल, अरनी प्रत्येक, की जड़) प्रत्येक १०-१० छटाँक, देवदारु और कटेरी १॥-१॥ सेर, दाभकी छड़ २० तोले, बाल-

---

* शतं पलानां वरुणस्य मूलं त्वक् शिंशपायाश्च तदर्धमात्रा। तावत्तथा पुष्करमूलमुक्तं तदर्धमाग्निश्च तदर्धमात्रः ॥ कुरण्टकारोहीतिकत्व-चश्च तावच्च शिग्रुर्दशमूलकं च। पलानि त्रिंशत्खलुदेवदारोः क्षुद्रा च तुल्या सुरदारुणा च॥ दर्भस्य मूलानि पलानि पंच हिंस्रातरोस्त्रीणि च कंटकायाः। राजादनस्यापि पलानि सप्त शतावरीमूलपलत्रयंच॥तत्तुल्यकाश्मर्यकमर्जुनश्च श्रृङ्गीशताह्वा गजपिप्पलीच । बला शटी नागबला करंज त्रायन्तिका कंचुकमपश्रृंग्यः॥ कुष्टं च वासासितकंचुकं च विडंगकृष्णातिविषाश्च जीरम्। चव्यं च रास्नोत्पलसारिवाच स्यात्कौटजश्चाप्यथदीप्यकं च। वातारिरिष्टारु-गनार्यतिक्तं रक्ताऽमृता तेजनिवल्कलंच ॥ सव्याधिघाता हपुषा च भृङ्गी प्रत्येकमेषां हि पलद्वयं तु । पचेज्जलद्रोणचतुष्टये च तत्पादशेषे पलषट्शतं च॥ क्षिपेद्गुडं माक्षिक धातकीनां पलानित्रिंशत्सकलंपुनस्ततः। निधा-पयेच्चागुरुमांसिधूपिते भाण्डे ततः कुंकुमचन्दनद्वयम् । ॥ पलं क्षिपेद्वै

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

छड़ (जटामांसी) तथा बड़ी कटेरी १२-१२ तोले, ढाकके फूल २८ तोले, शतावर की जड़ १२ तोले, तथा खम्भारी (गंभारी) की छाल, अर्जुन की छाल, काकड़ासिंगी, सोया और गजपीपल प्रत्येक १२-१२ तोले एवं खरैंटी, कचूर, नागवला, कंजुआ, त्रायमाणा, कैवटीमोथा, मेढासिंगी, कूठ, बांसा, कच्ची हल्दी, वायविडंग, पीपल, अतीस, जीरा, चव्य, रास्ना, कमल, अनन्तमूल, इन्द्रजौ, अजवायन, एरंड की जड़, नीम की छाल, लाल खैर, चिरायता, मजीठ, गिलोय, मूर्वा, दारचीनी, अमलतास, हाऊबेर और अतीस ये प्रत्येक ८-८ तोले लेकर सबको एकत्र कूटकर, २ मन २४ सेर जल में पकावे। २६ सेर जल शेष (पानी का प्रमाण यथा योग्य बढ़ाकर हमने लिखा है) रहने पर, छानकर, उसे अगर एवं बालछड़ से धूपित किये हुये मटके में भर उसमें ६ सेर गुड, ३ सेर शहद, १॥ सेर धायके फूलों का चूर्ण तथा केशर, सफेदचन्दन, लालचन्दन, निर्मली के बीज, कपूर, लौंग, अकरकरा, वंसलोचन, भारंगी, सोरठी मिट्टी,

---

कतकं सचन्द्रं लवंगसाकल्लकवंशरोचनम् ॥ भार्ङ्गी सुराष्ट्री तगरं कवावं जातीफलं पत्रकजातिपत्रिके। लोहं चतुर्जातकवालकं च प्रत्येकमेषां द्विपलं विनिक्षिपेत् ॥ मासं निधेयो यवमध्यतस्तु पेयोयथाव्याधिवलं समीक्ष्य। प्लीहोदरं विद्रधि गुल्मकासं श्वासं तथा रक्तविकार हिक्के। शूलामवातार्बुद पाण्डुरोगं कुष्ठं तथा छर्दिमरोचकंच ॥ शोफं तथाध्मानमगन्दरं च शुक्राश्मरीं ग्रन्थिसनेकभेदम्। शोषापतानार्दितपक्षघात सन्धिग्रहार्तांश्च हलीमकं च ॥ निहन्ति वन्ध्यासुतदोऽथ वृष्यः प्राणप्रदोऽयं वरुणासवो हि। पित्तानिलश्लेष्मरुजापहश्च वैतालरक्षो ग्रहभीतिहन्ता। ग्रन्थान्समालोक्य चिकित्सकानां हिताय नूनं कथितो मया हि ॥ —गदनिग्रह।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तगर, कबाबचीनी, जायफल, तेजपात, जाविश्री, लोहभस्म, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर और सुगंधबाला (नेत्रवाला) प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, जौ के ढेर में दबा देवे। १ मास पश्चात् आसव को छानकर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—आधा तोला से दो तोले तक।

गुण—तिल्ली, विद्रधि, गुल्म, खाँसी, दमा, रक्तविकार, हिचकी, शूल, गठिया (आमवात), अर्बुद, पाण्डु, कुष्ठ, उलटी, अरुचि, सूजन, अफ़ारा, भगन्दर, शुक्राश्मरी, अनेक प्रकार की ग्रन्थि, क्षय, अपतानक, अर्दित, पक्षाघात (लकवा) जोड़ों का दर्द, हलीमक, बांझपना, अन्य बहुत से वातज पित्तज एवं कफज रोगों को नष्ट करता है, तथा वीर्य की वृद्धि करता है।

---

४७९ वाजीकरणासव—अपूर्व गुणकारी।

विधि—अम्बर ६ माशे, एलुआ ६ माशे, कौडियालोबान १३ माशे और कस्तूरी ·१ माशा, इन चारों को एकत्र शुद्ध खरल में खरल करे। फिर उसमें उतना ही ऐलकोहल (मद्य) डाले, जिससे कि वह सारी औषधि शर्बत की समान पतली होजाय। इसमें १॥ तोला एलकोहल (रेक्टिफाइडस्प्रिट) काफी होता है। अधिक डाल देने पर भी कोई हानि नहीं। पश्चात् उस रस को एक शीशी में भर कर, अच्छे प्रकार से मुँह बन्द कर, थोड़े गरम रेत में देर तक रक्खे (अथवा ७ दिन तक धूप में रक्खे)। पश्चात् फिल्टर के द्वारा छान लेवे, अथवा मोटे और गाढे लट्ठे के कपड़े से छान लेवे, और शीशी में भर मुँह अच्छी तरह से बन्द कर रख देवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—४ बून्द से ५ बून्द तक।

गुण—यदि सायंकाल में, मलाई में मिलाकर लीजावे तो पहिले ही दिन अपना प्रभाव दिखाती है। रोज प्रातःसायं इसे मक्खन, मलाई या एक चम्मच भर दूध में मिला कर सेवन करे, और ऊपर से दूध पीवे तो अत्यन्त बल की वृद्धि होती है। यह आसव अत्यन्त वाजीकरण और स्वाभाविक ही स्तम्भक है। विशेष गुण इसमें यह है कि इसमें एलुआ होने के कारण कोष्ठबद्धता नहीं होती। अम्बर और कस्तूरी होने से यह समस्त सूक्ष्म अवयवों के लिये उपयोगी है, और लोबान होने से यह कफज एवं वातज रोगों यहाँ तक कि श्वास व गठिया तक के लिये लाभदायक है। ('वैद्य' मासिकपत्र–मुरादाबाद)

---

४८० वातघ्नासव—वातविकार नाशक।

(श्रीमान् स्वामी चैनदासजी वैद्यराज लाडनू)

विधि–प्रसारणी ५ तो०, असगन्ध, अग्निमन्थ, शुद्ध कुचला, घाघरवेल, श्वेतपुनर्नवेकी जड़ की छाल, आमले, रास्ना, कुड़े की छाल, नागरमोथा, पीपलामूल, एेलियो प्रत्येक २॥–२॥ तोले, धतूरे का पंचाङ्ग और बलापंचाङ्ग १२॥–१२॥ तोले, बड़ी हरड़ की छाल ५ तोले, इन सबको जवकुट कर २१४८ तोले (२६ सेर २८ तो०) जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें १३०० तो० (१६। सेर) पुराना गुड़, ६० तोला दाख मिला, पात्र का मुख अच्छे प्रकार बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे। १ मास के पश्चात् निकाल, वस्त्र से छानकर और नितार कर, बोतलों में भर कर रखदे।

Digitization by American Academy of Indic Studies-AAIS(USA)

मात्रा-अवस्थानुसार १। तो०से २॥ अथवा ३॥ तोले तक की मात्रा से सेवन करावे।

गुण—सब प्रकार के वातजन्य विकारों पर अत्यन्त ही लाभप्रद है। (अ० योगमाला, सिद्धयोगाङ्क)

---

४८१ वातपीड़ाहरासव—वातरोग नाशक।

विधि—अफीम २॥ तो०, वत्सनाभ (बच्छनाग) विष ५ तो०, लहसुन ५ तोले, कण गुग्गुल १० तोले, निम्बफल १० तोले, मदार का दूध ४० तोले, भेड़ का दूध ४० तोले और गोमूत्र ५ सेर लेकर, कूटने योग्य सब द्रव्यों को अलग २ पीस कर गोमूत्र में भिगोकर, सब का मिश्रण कर पात्र का मुख बन्द कर, ७ दिन तक पड़ा रहने देवे। फिर वारुणीयंत्र से अर्क खींचलेवे।

व्यवहार—यह अर्क २० तोले, मोटर का तैल (पेट्रोल) १० तो० और कर्पूरार्क (स्प्रिट कैंफर) १० तोले, एकत्र मिला बोतल में भर कर रखदे और दर्द के स्थान पर लगा कर हाथ से धीरे धीरे मलना चाहिये।

गुण—समस्त वात पीड़ाओं को शान्त करने में अव्यर्थ है. दर्द को शीघ्र ही बन्द करता है। (धन्वन्तरि)

वालआसव—देखिये, किनागिचासव।

४८२ वासकासव नं० १—कास श्वासादि नाशक।

विधि—वांसे (अडूसा) के पत्तों का स्वरस १०० तो०, मृतसंजीवनी सुरा १०० तो० तथा मुलैठी का सत्व, बहेड़े का बक्कल, लौंग, छोटी इलायची और तालीसपत्र प्रत्येक का चूर्ण

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२-२ तोले, तथा कपूर, अफीम, भारंगी, जायफल, कालीमिरच और काकड़ासिंगी प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला, तथा मिश्री ४० तोले, सब को शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख अच्छे प्रकार बन्द कर १ मासतक सुरक्षित रखे। पश्चात् छानकर साफ करलेवे।

मात्रा—१ माशे से ६ माशे तक।

गुण—बढ़े हुये कफको नष्टकर खांसी को दूर करता है, तथा श्वास, क्षय, ज्वर और प्रतिश्याय को नष्ट करता है। श्वास को तो अतिशीघ्र बन्द करता है।

(क्षयादर्श)

नोट—उक्त तथा नीचे के प्रयोगों को अरिष्ट नाम से कहा गया है, किन्तु हमने इन्हें 'आसव' नाम से ही पुकारना उचित समझा है।

---

४८३ वासकासव नं० २—कास श्वासादि नाशक।

विधि—वासा (अडूसा) पत्र स्वरस ५ सेर, मृतसंजीवनी सुरा ५ सेर, मिश्री २ सेर, मुलैठी का घनसत्व, तालीसपत्र, बहेड़े की बकली, छोटी इलायची के दाने, और लौंग प्रत्येक ८-८ तोले तथा कालीमिरच, भारंगी, काकड़ासिंगी, कपूर, जायफल और अफीम प्रत्येक ५-५ तोले लेकर, चूर्ण कर, सब को शुद्ध चिकने घड़े में भर, मुख बन्द कर दे। फिर उसे अनाज के ढेर में, भूसा के ढेर में, अथवा जमीन में गाड़ कर रक्खे। शीत ऋतु में २० या २५ दिन तथा और उष्णऋतु में १५ या १६ दिन तक रक्खे रहने के पश्चात्, भवके में डालकर, अर्क खींच लेवे। भवका मिट्टीका, टीन का अथवा कलई किया हुआ होना चाहिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies- AAIS(USA)

मात्रा—१ से ३ माशे तक । सुखोष्ण जलमें मिला कर सेवन करे।

गुण—श्वास और खांसी को तत्काल दबाता है, मुंह और कफके साथ खून आने को रोकता है।

(धन्वन्तरि)

---

४८४ वासकासव नं० ३—कास श्वासादि नाशक ।

विधि—वासकासव नं० १ के अनुसार सब द्रव्य लेवे, किन्तु लौंग के स्थान में लोध २ तोला और कालीमिरच १ तोला के स्थान में केशर ३ माशे लेकर, मुलैठी सत्व आदि का बारीक चूर्ण कर, मृतसंजीवनी सुरा और वासापत्र स्वरस में मिला कर, १ मास तक चीनी के पात्र (मर्तबान) में डाल; मुख बन्द कर, भूसे में रक्खे । पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा माशा से ३ माशे तक अथवा ३० से ६० बून्द तक। समान भाग जल मिला कर सेवन करावे।

गुण—कास, श्वास, तथा क्षय की खांसी में अत्यन्त लाभकारी है।

(अ० चिकित्सा संग्रह)

नोट—इसे श्वाहरासव या श्वासहरबिन्दु भी कहते हैं।

---

४८५ वासकासव * नं० ४—कासश्वासादि नाशक ।

---

* वासास्वरसमादाय मृतसंजीवनी समम् । संमिश्रय भिषगन्योऽन्यं वासरे शुभतारके ॥ मृद्भाण्डे काचभाण्डे वा निरुध्य तन्मुखं दृढम् ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—वासे (अडूसा) के हरे पत्ते एवं हरी छाल का स्वरस तथा मृतसंजीवनी सुरा (अभाव में रेक्टीफाइडस्प्रिट) सम भाग किसी कांच के पात्र में भरकर, मुँह अच्छी तरह बन्द कर, ७ दिन रक्खा रहने देवे। पश्चात् फलालेन या बन्नात में छान कर रख दे।

मात्रा—१-१ माशा, समभाग जल मिला, दिन में कई बार सेवन करावे।

गुण—खाँसी, दमा, रक्तपित्त, उरःक्षत, राजयक्ष्मा (क्षय), और कण्ठ रोगों पर लाभप्रद है।

---

४८६ वासकासव नं० ९—उरःक्षतादि नाशक।

विधि—वासे (अडूसा) की जड़ की छाल १ भाग चूर्णकर, उसमें मद्य (४० से ६० प्रतिशतवाली) ४ भाग मिला, बोतल में भर, अच्छी तरह काग लगा कर रक्खे। ७ या १५ दिन के बाद, फलालेन या बन्नात में छान कर सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—६ बूंद से २० बूंद तक। अथवा आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—उरःक्षत, रक्तपित्त, यक्ष्मा, कास, श्वास, आमाति-

सप्ताहं स्थापयेत् तस्मात् पूतीकुर्यात्तु वाससा॥ वासारिष्टः (वासासवः) सुसेव्योऽयं माषमात्रो दिने दिने। एतत्सेवी सुपथ्याशी देवभूदेवभक्तिमान्॥ कासं श्वासं रक्तपित्तं कण्ठरोगमुरःक्षतम्। अन्यांश्च विविधान् रोगान् जयेदाशु न संशयः॥ उरःक्षते यक्ष्माणिरक्तपित्ते श्वासे च कासेऽपि हिता विभज्य। येच गदावैद्यविमूढचेतः सुखावबोधाय यथाधिकारम्॥

—भैषज्यरत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सार में इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है । अभ्रहरारिष्टादि अन्य औषधियों के साथ मिला कर देने से इसकी और भी गुण-वृद्धि होती है । उठते हुये श्वास को यह शीघ्र ही रोकता है ।

(भद्यासव)

---

४८७ वासकारिष्ट * नं० १—शोथनाशक ।

विधि—वासा (अडूसा) १२॥ सेर लेकर जवकुट कर, ६४ सेर जल में पकावे । १६ सेर शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ६। सेर गुड़,४० तोले धाय के फूलों का चूर्ण तथा दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, कंकोल, सोंठ, मिरच, पीपल और सुगंधवाला प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, पात्रका मुख अच्छे प्रकार बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रखे । पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रख दे ।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक ।

गुण—समस्त प्रकार के शोथों (सूजन) को नाश करता है । श्वास, कास पर अपूर्व प्रभाव रखता है ।

४८८ वासकारिष्ट नं० २—शोथादि नाशक ।

---

* वासकस्य तुले द्वे तु द्विद्रोणेऽपां विपाचयेत् । कृत्वा द्रोणार्धशेषं तु पूते शीते प्रदापयेत् ॥ गुडस्यैकां तुलां तत्र धातक्यास्तु पलाष्टकम् । क्षिपेच्चूर्णीकृतं तस्मिन् त्वगेलापत्रकेसरम् ॥ कङ्कोलव्योषतोयानि पलिकान्युपकल्पयेत् । सम्यक् पक्वं ततो ज्ञात्वा पक्षादूर्ध्वं पिबेदसुम् ॥ वासकासव (वासकारिष्ट) इत्येष सर्वश्वयथुनाशनः ॥

—योगरत्नाकर ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—वासे (अडूसा) के ताजे पत्र २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, २० सेर जल में पकावे। ६। सेर जल शेष रहने पर, छान-कर, शुद्ध चिकने घड़े में भर, उसमें ३। सेर गुड़, ३२ तोले धाय के फूलों का चूर्ण, तथा दारचीनी, इलायची तेजपात, नागके-सर, शीतलचीनी कालीमिरच, और खस प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर काम में लावे।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक।

गुण—शोथ (सूजन), कास, श्वासादि नाशक है।

नोट—श्वास पर उक्त दोनों वासारिष्ट उत्तम कार्य करते हैं, यदि केवल इसके प्रयोग से लाभ प्रतीत न हो तो इसके साथ किञ्चित् कनका-सव का मिश्रण कर सेवन कराने से तत्काल लाभ होता है।

(वैद्यक-चिकित्सासार)

---

४८९ वासकारिष्ट—नं० ३—कास, श्वासादि नाशक।

(श्री. रामेशवेदी स्नातक गुरुकुलकांगड़ी)

विधि—वांसे के पत्तों का कषाय ५ सेर, एक शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें मृतसंजीवनी सुरा ५ सेर (सुरा की मात्रा अत्यधिक है), गुड़ २ सेर,. धायके फूल १६ तोले और चातु-र्जात (दारचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर) प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले मिला, मुखमुद्रा कर रक्खे। (१५ दिन पश्चात् निकाल और छानकर काम में लावे)।

मात्रा—२ से ८ ड्राम तक।

गुण—कास, श्वास, क्षय, रक्तपित्त पर पूर्ण गुणकारी है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विजयसारासव--देखिये, बीजकारिष्ट ।

४९० विजयासव नं० १--धनुस्तम्भादि नाशक ।

(कविराज पं० शशिकान्तजी मिश्र, भिषगाचार्य सं० जीवनसुधा)

विधि—भांग के हरे ताज़े पत्ते खूब कूटकर १ भाग और रेक्टिफाइडस्प्रिट (अथवा संजीवनी सुरा) ५ भाग एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ काग लगा कर रक्खे । ७ या १५ दिन के बाद फलालेन या बन्नात में छानकर उपयोग में लावे ।

मात्रा—२ से १० बून्द तक ।

गुण–धनुस्तम्भ के दौरे के बाद कुछ दिन तक इसके सेवन से रोग दूर होता है । हैज़े में इसे कर्पूरासव के साथ देना चाहिये । अतिसार में कुटजादि के साथ । ठंडाई में इसकी कुछ बूंदें डालकर सेवन कर सकते हैं । जिस अतिसार का रात्रि में वेग होता हो, या अधिक मात्रा में बार २ दस्त आरहे हों तो इसे अहिफेनासव के साथ देवे । अथवा इसी को, जल मिला कर देने से लाभ होता है । (जीवनसुधा)

---

४९१ * विजयासव--नं० २--अजीर्णादि नाशक ।

विधि—भांग का घनसत्व एक्सट्रेक्ट केनिबिसइन्डिका सोलेड) १ भाग और मद्य (७० से ८० प्रतिशतवाली) २० भाग एकत्र कर बोतल या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ दिन सुरक्षित रक्खे । बीच २ में हिलाते जाना आवश्यक है । फिर छानकर रक्खे ।

मात्रा—५ से १५ बूंद तक ।

गुण—अग्निमान्द्य, अजीर्ण, अरुचि और ग्रहणी आदि उदर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रोगों पर लाभप्रद है। कभी २ इसके सेवन से क्षुधा की इतनी वृद्धि होती है कि अत्यधिक भोजन से भी तृप्ति नहीं होती। किन्तु लगातार और अधिक मात्रा में सेवन करने से इससे मन्दाग्नि होजाती है। वेदना, अनिद्रा, बहक, धनुर्बात, उन्माद, अपस्मार और हिस्टीरिया आदि रोगों के लिये भी यह बड़ी लाभदायक है। शिरःशूल और बच्चों के कमेड़ों में इसके सेवन से तत्काल लाभ होता है। यह कामोत्तेजक भी है, किन्तु इसके अधिक सेवन से नपुन्सकत्व पैदा होजाता है। (मद्यासव)

नोट—जिन मद्यासवों में औषधि के घनसत्व ही पड़ते हैं, वे केवल एक ही दिन में तैयार होजाते हैं।

---

४९२ विडङ्गाद्यासव * उरुस्तंभ, भगंदरादि नाशक।

विधि--वायविडंग, पीपलामूल, पाठा, आँवला, एलवालुक, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ, रास्ना और भारंगीमूल प्रत्येक का चूर्ण २०-२० तो० लेकर, २ मन २४ सेर जल में पकावे। १२ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होजाने पर, छानकर घृत से चिकने

---

* विडंगं पिप्पलीमूलं पाठा धात्र्येलवालुकम्। कुटजत्वक्फलं रास्ना भार्ङ्गी पंचपलोन्मितान् ॥ अष्टद्रोणेऽम्भसः पक्त्वा द्रोणशेषं तु कारयेत्। पूते शीते क्षिपेत्तस्मिन्माक्षिकस्य शतत्रयम् ॥ धातक्या विंशतिपलं चूर्णं कृत्वा तु दापयेत्। व्योषस्य तु पलान्यष्टौ त्रिजातं द्विपलं तथा ॥ फलिनी हेमतोयानां सरोध्राणां पलं पलम्। घृतभाण्डे समाधाय मासमेकं विधारयेत् ॥ एषयोगो हरत्येव प्रत्यष्ठीला भगंदरान् । ऊरुस्तम्भाश्मरीमेह गण्डमालां सविद्रधिम्। आढ्यवातं हनुस्तम्भं विडंगाख्यो महासवः ॥

—योगरत्नाकर।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

किये हुये मटके में भर, उसमें १५ सेर शहद, १ सेर धायके फूलों का चूर्ण, सोंठ, कालीमिरच और पीपल तीनों का एकत्र चूर्ण ३२ तो०, दालचीनी, तमालपत्र और इलायची तीनों का का चूर्ण ८ तोले, फूलप्रियंगु, नागकेसर, सुगन्धबाला और लोध प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक जमीन में गाढ़ कर रक्खे। पश्चात् निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक।

गुण—उरुस्तम्भ, प्रत्यष्ठीला, भगन्दर, पथरी, प्रमेह, गण्ड-माला, विद्रधि, आढ्यवात तथा हनुस्तंभ को नष्ट करता है। सब प्रकार के रक्तदोष एवं कृमि नाशक है। गुल्म पर भी यह प्रभावशाली है।

नोट-इसे वास्तव में 'बिडंगाद्यरिष्ट' ही कहना चाहिये। शार्ङ्गधर, और भै० रत्नावली में भारंगीमूल नहीं लिया है, और नागकेशर एवं सुगन्धवाला भी नहीं है, कचनार की छाल ४ तोले लेने के लिये कहा गया है। शेष द्रव्य एवं विधि उक्तानुसार ही है।

यह अरिष्ट कफ, श्वास और कास पर भी लाभ देता है। रोगों को नष्ट कर अग्नि, बल एवं वीर्य की वृद्धि करता है। उदर, रक्त एवं वृणान्तर्गत् कृमियों को नष्ट कर क्षुधा को बढ़ाता है। बालक, स्त्रियाँ और निर्बलों को बहुत कम मात्रा में सेवन कराना चाहिए।

---

४९३ विडङ्गाद्यरिष्ट नं० १—कृमि नाशक।

[वैद्यराज मुन्नालालजी गुप्त-महेन्द्रगढ़]

विधि--वायविडंग, पलासबीज, निम्बगिरी, बकायन के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

बीज, कबीला, इन्द्रायन की जड़, अजवायन, हरड़, बहेड़ा, आमला, निशोथ, कुड़ेकी छाल, कुटकी, बावची और नागरमोथा ये प्रत्येक ४-४ तोले लेकर, जवकुट चूर्ण बना, १२॥ सेर जल में, चतुर्थांश क्वाथ कर, ठंडा होने पर, छान कर, अमृतबान में, या शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ३ पाव शहद, तथा सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, नागरमोथा, राई, दोनोंजीरे, हींग भुनीहुई और कपूर प्रत्येक १-१ तोला, तज, पत्रज, नागकेशर, इलायची प्रत्येक ६-६ माशे, सब का चूर्ण कर मिलावे, और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर काम में लावे।

मात्रा--१ तोला। अनुपान-जल। प्रातः सायं सेवन करे।

गुण—पेट के संपूर्ण कृमि और आन्त्र के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

विषतिन्दुकासव— देखिये, कारस्करासव नं० ३।

४९४ विषमज्वरारिष्ट—विषमज्वर नाशक।

[श्री० डा० कृष्णकुमारी पंडिता]

विधि--करंजुआ १५ तो० तथा गिलोय, चिरायता, पित्तपापड़ा, नीम के पत्ते, अफसन्तीन, नागरमोथा, गावजवाँ, वनपशा और उन्नाव प्रत्येक ५-५ तोले लेकर, सबको अधकुटा कर ६ सेर जल में भिगो देना चाहिये, दूसरे दिन आग पर चढ़ा कर क्वाथ करे, जब ३ सेर शेष रह जाय, मल कर रखले, ठंडा होने पर छान ले, फिर उसमें आध सेर शहद मिला कर, एक मिट्टी के पात्र में भर कर, धूप में १२ दिन तक रक्खे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ध्यान रहे पात्र में रखने पर सुराकिट्ट या किसी आसव की बची हुई गाद १० तोले तक उसमें और मिला देवे । फिर छान कर शीशी में भर कर रखदे ।

मात्रा—१ से ३ तोले तक । प्रातः समय पिलावे ।

गुण—विषमज्वर (मलेरिया) को शीघ्र भगाता है ।

---

४९९ विषमुष्ट्यासव * नं० १—उदर रोगादि नाशक ।

विधि—शुद्ध कुचले का चूर्ण दो तोले और मृतसंजीवनी सुरा ६० तो० दोनों को एकत्र मिला, बोतल में भर दृढ़ काग लगा कर, १ मास तक रक्खा रहने देवे । पश्चात् छान कर, कागदार बोतलों में भर लेवें ।

मात्रा—२ से ५ बून्द तक । अनुपान–१ तोला जल । दिन में २ । ३ बार सेवन करावे ।

गुण—उदर रोग, अग्निमांद्य, अरोचक, भ्रम, उदासी, थकावट, यकृत रोग, सिर दर्द आदि रोगों को नष्ट करता है ।

---

* चूर्णं द्वितोलकं तत्र देयं शुद्धकुपीलुजं । मृतसंजीवनीसुरायाश्च ग्राह्यं पंचदश पलम् ॥ निधाय कूपिकामध्ये स्थापयेन्मासमात्रकम् । घनवस्त्रान्तरे गाल्यं द्वि त्रि विन्दूनि कल्पयेत् ॥ पानीये तोलकेन्यस्य द्वित्रिवारं प्रयोजयेत् । अस्य प्रयोगमात्रेण रोगायान्ति क्षणात्क्षयम् ॥ व्यायामं तु विगाह्ययान्ति धनिकानित्यं सुसक्तासने । तेषामौदरजाः हि रोगनिचयास्तूर्णं समुत्पद्यते ॥ वन्हिर्मान्द्यमरोचकाभ्रमक्लमाः शूलं शिरोजे तथा । ते सर्वे विलयं प्रयान्ति सहसा वातेरता वै घनाः ॥

—सिद्धप्रयोग ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

४९६ विषमुष्ट्यासव नं० २—दुर्बलतादि नाशक ।

[वैद्यराज श्री० पं० घनानन्दजी पन्त विद्यार्णव]

विधि—कुचले दो तोले, चिरायता, गिलोय और नागरमोथा प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला तथा मुनक्का ४ तोले, गुड़ ३० तोले और जल दो सेर सब को एकत्र मिला, कांच के पात्र में भर, एवं अच्छी तरह मुख मुद्रा कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर उपयोग में लावे।

मात्रा—२० बून्द से ४० बून्द तक।

गुण—हृदय शक्तिवर्धक, क्षुधावर्धक, बलवर्धक, प्रतिश्याय, ज्वर तथा त्रिदोष नाशक है। किसी रोग के पश्चात् प्राप्त हुई दुर्बलता एवं मन्दाग्नि को शीघ्र नष्ट करता है।

---

४९७ विशूचिकान्तकासव नं० १—हैजा नाशक ।

[वैद्यराज श्री पं० वालकृष्णजी शर्मा, भूपाल]

विधि—पोदीना, सौंफ, गुलाब के फूल और पलांडु (प्याज) प्रत्येक २०-२० तोले तथा अर्क (आक) मूल छाल, बड़ी इलायची के बीज ५-५ तोले, अजमोद और सोंठ १०-१० तोले, सब को कूट कर, ६ सेर जल में २४ घन्टे भिगो रक्खे। पश्चात् भवके के द्वारा ४ बोतल अर्क-आसव खींच लेवें।

मात्रा—१ तो० से ४ तोले तक। प्रति दो २ घन्टे के बाद। ज्यों २ फायदा होता जाय, त्यों२ मात्रा कम करदेनी चाहिए।

गुण—हैजा, कै, दस्त, प्यास, ज्वर, अजीर्ण के विकार और पेट की गड़गड़ाहट के लिये सदा लाभप्रद है।

नोट—यदि इसे ज्यादा दिन रखना हो तो प्रति बोतल ५-५ तोले रेक्टीफाइडस्प्रिट मिलाकर रक्खे और भी अधिक गुणदायक होजाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

४९८ विशूचिकान्तकासव नं० २—हैजा नाशक ।

(श्री अनन्तदेवजी दीक्षित, वैद्यशास्त्री)

विधि—प्याज, नवीन सोंफ और हरा पुदीना प्रत्येक १-१ सेर, आलूबुखारा, गुलाब के फूल और असली-चन्दन का सफेद बुरादा प्रत्येक आध-आध सेर, बड़ी इलायची १ पाव, तवाखीर १० तोले तथा लौंग, छोटी इलायची और अनारदाना प्रत्येक ५-५ तोले और दारचीनी २० तोले लेकर सबको जवकुट कर २८ सेर जल में २४ घन्टे भिगो कर भवके के द्वारा अर्क खींच लेवे, अर्क खींचने से पहले कपूर ५ तोले कूट कर मिला देना चाहिये।

मात्रा—२ तोले से ४ तोले तक रोगानुसार आध-आध घन्टे के बाद सेवन करावे।

गुण—हैजे के लिये रामबाण है, प्यास को रोकता, पेशाब उतारता है, दाह को शांत करता, दस्त और वमन को शीघ्र बन्द करता है। विशूचिका के दिनों में स्वस्थ मनुष्य पीवे तो हैजे का भय नहीं रहता। (धन्वन्तरि)

---

४९९ वृश्चिकाविषहार्यासव—(स्वकृत)—विच्छू के विषपर।

विधि—कागज़ी नीबूका रस १० तोले लेकर, एक शीशी में भरे तथा उसमें ५ तोले नौसादर का महीन चूर्ण, २ तोले शहद और ३ तोले मेथिलिटेडस्प्रिट मिला कर रक्खे। इसे दंश स्थान पर कपास की पुरेरी से लगावे। लगाते ही आराम मालूम होता है। १०-१० मिनिट बाद इसे बराबर लगाने से सब विष दूर हो जाता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

९०० वृश्चीवाद्योऽरिष्ट *—गुल्म नाशक।

विधि—श्वेत पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा, एरंडमूल, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी और चित्रकमूल प्रत्येक १३-१३ छटाँक लेकर जवकुट कर, ३२ सेर जल में १२ घंटे तक भिगोकर, पकावे। ८ सेर जल शेष रहने पर, ठंडा होने पर, छानकर, मधुमिश्रित पीपल एवं चीते के चूर्ण से प्रलिप्त मटके में भर उसमें २ सेर शहद और आध सेर हरड़ का चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १० या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। इसे धान के भूसे में दबा कर रक्खे। पश्चात् निकाल और छानकर बोतलों में भर कर रखले।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक।

गुण—कष्टसाध्य, अपक्व एवं दुस्तर गुल्म को नष्ट करता है।

---

९०१ व्रणासव—(देशी टिंचरायडिन)।

विधि—पीपल की छाल, नीम की छाल, बबूल की छाल, गूलर की छाल और रसौत ४-४ तोले, रतनजोत दो तोले, सब को जवकुट कर, शुद्ध कांच के पात्र में डाल कर, उसमें देशी शराब ५ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर धूपमें रख दे, प्रति दिन एक या दो वार हिला देना चाहिये। ७ दिन के पश्चात् छानकर, बोतलों में भर कर रक्खे।

---

* वृश्चीवमुरुबूकंच वर्षाभूवृहतीद्वयम्। चित्रकं च जलद्रोणे पचेत्पादावशेषितम्॥ मागधी चित्रकक्षौद्रलिप्ते कुम्भे निधापयेत्। मधुनः प्रस्थमावाप्य पथ्याचूर्णार्ध संयुतम्॥ तुषोषितं दशाहं तं जीर्णभक्तः पिबेन्नरः। अरिष्टोऽयं जयेद्गुल्ममविपाकं सुदुस्तरम्॥ —वृन्दमाधव।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

व्यवहार—घाव को साफ़ कर, रुई के फाये से इसे लगावे।

गुण—घाव का खून गिरना, जलन और राध बन्द होती है और घाव शीघ्र ही अच्छा होजाता है।

(अ० योगमाला)

नोट—देशी टिंचरायोडीन—नं० २—देखिये, शोथनाशकासव।

---

६०२ व्याघ्रीआसव—वातव्याधि आदि नाशक।

(रसायनाचार्य श्रीयुत आर० के० शर्मा, जगराओं)

विधि—कटेरी की जड़ २ सेर, इन्द्रायन की जड़ २ सेर, घीकुआर २ सेर, और अपामार्ग २ सेर, सबको कूट पीस कर, ३२ सेर जल मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, मुख मुद्रा कर, १५ दिन तक एकान्त में सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—२ माशे से ८ माशे तक। प्रातःकाल सेवन करे।

गुण—वातव्याधि, कफ, कास, श्वास, आमाशय के विकार ज्वर, कब्जी, तथा शूल रोगों को नष्ट करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श

५०३ शतपुष्पासव--नं० १—विशूचिका नाशक।

विधि—सौंफ १ सेर, प्याज ४० तोले, सूखा पोदीना १० तोले और देशी कपूर ५ तोले लेकर, सबको कुचलकर, २८ सेर ४ तोले जल में मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर, मुखमुद्रा कर रक्खे। ६ दिन के बाद भवके के द्वारा ५ बोतल अर्क खींच लेवे।

मात्रा—१ से २ तोले तक। दिन में दो बार और रात्रि में २ बार सेवन करावे।

गुण—हैजे में अपूर्व गुणकारी है। (धन्वन्तरि)

५०४ शतपुष्पासव-नं० २—बल पुष्टिवर्धक।

(रसायनाचार्य श्री आर० के० शर्मा जगराओं)

विधि—सौंफ १॥ सेर, बीज कद्दुवा १॥ सेर, बीज खरबूजा १॥ सेर, सोया, सौंफ, हाऊवेर, हन्सराज, पोदीना पहाड़ी और पौदीना देशी प्रत्येक ३२-३२ तो० लेकर, सबका चूर्णकर, चिकने मटके में भर, उसमें शक्कर (मिश्री की) ६॥ सेर और जल २६ सेर मिला, अच्छी तरह सन्धान कर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—२ तोले।

गुण—बल, पुष्टि, आयु और अग्नि की वृद्धि करता है।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

स्त्रियों का मासिकधर्म खुल कर होता है तथा स्त्रियों के समस्त रोगों का नाशक है।

---

८०९ शतपुष्पाद्यरिष्ट—विशूचिका और भ्रमनाशक।

(श्री कविराज विश्वनाथजी द्विवेदी वैद्यशास्त्री, प्रिंसपिल)

विधि—सौंफ, पोदीना, गुलाव के फूल, बड़ी इलायची, मिरचियाकंद, कालीमिरच, अजवायन, लोंग, जायफल और धनिया, सबको जवकुट कर, १६ सेर जल में पकावे, ४ सेर शेष रहने पर, छानकर, शुद्ध चिकने घड़े में भरे और ठंडा होने पर उसमें ४ सेर शहद, मिला, एक मास तक सन्धान कर रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर १० तोला कपूर का चूर्ण कर, थोड़ा २ किंतु प्रमाण से प्रत्येक बोतल में डाल कर, मजबूत डाट लगा देवे। तीसरे दिन से कार्य में लावे।

मात्रा—१ तो० से ३ तोले तक।

गुण—हैजे में इसका सेवन करने से शीघ्र ही वमन और दस्त रोकता है। प्रथम खुराक से ही रोग में परिवर्तन आरंभ हो जाता है। वमन सर्व प्रथम बंद होजाती है, पश्चात् दस्त, उदर शूल, मूत्रावरोध आदि कोई भी उपद्रव नहीं होने पाते। भ्रम, सिर में चक्कर आना, भारी रहना, हमेशा नथुनों का खुश्क रहना इत्यादि रोग शीघ्र ही दूर होजाते हैं। घुमरी या चक्कर जिसमें रोगी सम्पूर्ण वस्तुओं को घूमते हुये देखता है, शीघ्र ही दूर होती है, इस रोग की यह अनुभूत दवा है।

नोट—अभाव में या जल्दबाजी में इसका अर्क भवके के द्वारा खींच कर प्रयोग कर सकते हैं। फल जरा देरी में होगा।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इस आसव को अधिक मात्रा में सेवन करने से मूत्रसंग, विबन्ध आदि उपद्रव होते हैं। उनके परिहारार्थ उशीरासव का दो तोले की मात्रा में सेवन करे या कांजी पीवे।

पथ्य में-शर्बत, लघुअन्न तथा उपवास।

अपथ्य-संग्राहक एवम् विबंध कारक-गुरु पदार्थ।

---

५०६ शरपुंखासव-क्षय, कास नाशक।

[श्री बालकृष्णजी शर्म्मा वैद्यराज, भूपाल]

विधि-सरफोंके की जड़ ४० तोले लेकर, जवकुट कर, ७॥ सेर जल में पकावे, लगभग दो सेर तक जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें २ सेर शक्कर, १३ छटांक धाय के फूलों का चूर्ण मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर सुरक्षित रक्खे। १५ दिन बाद छान कर, बोतलों में भर कर रखदे। प्रत्येक बोतल में ५-५ तोले रेक्टीफाइडस्प्रिट मिला देवे। ४ दिन के बाद काम में लावे।

मात्रा—६ माशे से १॥ तोला तक।

गुण—क्षय की खांसी तथा साधारण खांसी पर भी लाभप्रद है।

शर्करासव—देखिये, दुरालभारिष्ट नं० १।

५०७ शंखपुष्प्यासव—उन्मादादि नाशक।

[प्रो०रामकृष्णजी बर्म्मा, आयुर्वेदाचार्य]

विधि—शंखपुष्पी (शंखाहूली) की जड़ १ पाव, कूट पीस कर, ८ सेर जलमें, कलईदार बर्तन में पकावे। २ सेर जल शेष

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

रहने पर, उसमें ६ सेर जल और डाल कर पुनः पकावे, फिर १॥ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध मटके में भर, उसमें ५ तोले गुलाब के फूल, २॥ तोले धनिया और २॥ तोले खस, महीन चूर्ण कर मिला देवे । पात्र का मुख बन्द कर रक्खे । दूसरे दिन इसको भवके में डाल कर अर्क खींच लेवे । इसमें, २॥ तोला आसवार्क में आधा तोला रेक्टीफाइडस्प्रिट के हिसाब से, रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला, कांच के कार्क वाली शीशी में भर कर रख लेवे ।

मात्रा—१० से २५ बून्द तक । जल में मिला दिन में कई बार सेवन करावे ।

गुण—इसको पिलाने और सूंघने से उन्माद, मृगी आदि रोग दूर होते हैं । विशेषतःहिस्टेरिया में यह अधिक लाभप्रद है ।

('वैद्य'–मासिकपत्र, मुरादाबाद)

---

९०८ शाल्मल्याव–(शाल्मलीकुसुद)–रजवीर्य विकारहारी ।

[वैद्यराज उमादत्तजी मिश्र मिर्जापुर]

विधि-- सेमल के फूल १०० नग और छोटी मूली का स्वरस आध सेर दोनों को एकत्र कर, शुद्ध मटके में भर २४ घन्टे रखने के बाद, मल कर साफ वस्त्र से छान, चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, उसमें सौंफ का अर्क २५ प्रतिशत [फल, फूल एवं पत्र शुष्कद्रव्य में ६ गुना जल, तथा काष्ठद्रव्य में ८ गुना जल मिला, २४ घन्टे भिगोकर अर्क खींचे, जब अर्क द्रव्य से चौगुना खिच आता है, वह २५ प्रतिशत कहलाता है] और अशोक का अर्क २५ प्रतिशत वाला प्रत्येक आध-आध सेर और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मिश्री १ सेर मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् मल, छान कर बोतलों में भर, कार्क लगा, एक सप्ताह तक रक्खा रहने देवे, फिर ऊपर का द्रवरूप आसव (कीट रहित) नितार कर, काम में लावे।

मात्रा—१ तो० से २॥ तोले तक। अनुपान-जल के साथ, भोजन के बाद, उदर दोष रहने पर दिनमें ३ बार।

गुण—गर्भाशय एवं योनिगत दोषों को नष्ट करता है। निर्बलता तथा रजवीर्य से सम्बन्ध रखने वाले सर्व रोगों में आशातीत फल देता है पाचनशक्ति को बढ़ाता है।

---

८०९ शिरीषारिष्ट *—विषविकार नाशक।

विधि—सिरस की छाल २॥ सेर लेकर, जवकुट कर, २६ सेर जल में पकावे। ६॥ सेर जल शेष रहने पर छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें १० सेर गुड़ तथा पीपल, प्रियंगु, कूठ, बड़ी इलायची, नील का पंचाङ्ग, निशोथ, नागकेसर, हल्दी और दारुहल्दी प्रत्येक का चूर्ण ४-४ तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—६ माशे से २॥ तोले तक।

गुण—सब तरह के विष के विकारों को नष्ट कर देता है।

---

* पचेत् तुलार्धं द्विद्रोणे शिरीषस्य जले सुधीः। पादशेषे कषायेऽस्मिन् क्षिपेद् गुडतुलाद्वयम्॥ कृष्णाप्रियंगु कुष्ठैलानीलिनीनागकेशरम्। रजन्यौ पलमानेन दद्यादत्रचनागरम्॥ मासादूर्ध्वं जातरसं यथामात्रं प्रयोजयेत्। शिरीषारिष्ट इत्येष विषव्यापद्विनाशनः॥

—भैषज्यरत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कंठमाला, विषबेल तथा जहरबाद या जहरीले और न भरने वाले घावों पर भोजन के बाद १-१ तो० अरिष्ट, जल में मिलाकर पिलावे, तथा प्रातः सायं गर्म दूध में शिरीषघृत १-१ तो० मिला पिलावें, व्रणों पर भी लगावें । ३ मास में पूर्ण लाभ होता है ।

---

९१० शिलाजत्वासव—सुजाक नाशक ।

[कविराज पं० रामगोपालजी मिश्र राजवैद्य]

विधि—शुद्ध शिलाजीत ५ तोले, जवाखार दो तोले, मुलहठी का सत १ तोला, सतगिलोय १ तोला, सब को एकत्र मिला, उसमें २० तोले रेक्टिफाइडस्प्रिट मिलावें और कांच की बोतल में भर, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, १५ दिन तक रक्खा रहने देवें । पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रखदे ।

मात्रा—६ बून्द से १५ बून्द तक । शुद्ध जल या शक्कर के साथ सेवन करावें ।

गुण—सुजाक की सभी अवस्थाओं में पूर्ण गुणकारी है ।

(अ० योगमाला)

---

९११ शिशुसंजीवन्यासव—उत्तम बालामृत ।

[श्रीयुत बालकृष्णजी शर्मा वैद्यराज, भूपाल]

विधि—काली दाख (द्राक्षा) ४० सेर को कूटकर, ८० सेर जल में, दो दिन तक भिगोकर, (शुद्ध चिकने मटके में भिगोना चाहिये) उसमें शहद १० सेर, धाय के फूलों का चूर्ण १। सेर तथा हरड़ की छाल, अतीस, असगन्ध, काकड़ासिंगी, इलायची, छोटी पीपल, चोपचीनी, सोंठ, कालीमिरच, मजीठ,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लौंग, सफेदचन्दन, कपूरकचरी, वायविडंग, धनिया, तुलसी-पत्र और देवदारु प्रत्येक का चूर्ण १२-१२ तोले, अडूसे (बांसे) के हरेपत्र २० तोले, लोहभस्म १० तोले, नागफनीथूहर के पके फलों का रस १। सेर, शक्कर २० सेर और सुवर्णपत्र (वर्क) १ तो० मिलाकर, अच्छी तरह मुख बन्द कर, १॥ मास तक रक्खा रहने देवे। इसे लकड़ी के पीपे में भर रखना अधिक अच्छा है। प्रति सप्ताह एक बार हिलाते रहना चाहिए। फिर छानकर वोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—३ माशे से ६ माशे तक। पानी या दूध में मिला कर देवे।

गुण—बालक हृष्ट पुष्ट दीर्घायु होते हैं, यह बालकों के अनेक रोगों को दूर करता है।

---

५१२ शीतपित्तारि अरिष्ट—शीतपित्त नाशक।

(श्री स्वामी चैनदासजी आयुर्वेद-विशारद लाडनू)

विधि—चोवचीनी २० तोले, हरड़, वहेड़ा आमला प्रत्येक दो २ तोले, श्वेतचन्दन ४ तो०, श्वेतचीनी ४ तो०, उसवा-मगरवी १२ तोले, सनाय की पत्ती १२ तो०, श्वेत निसोथ १३ तो०, चिरायता १२ तोले, नीम की छाल ८ तोले, सबको जवकुट कर ३० सेर जल में पकावे। ७॥ सेर जल शेष रहने पर, आँच से अलग उतार कर, उसे कुछ ठंडा कर लेवे। पश्चात् उसे विना छाने, शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ४० तोले मिश्री और १ सेर शहद मिला, हाथ से खूब मथकर मिला देवे। पश्चात् पात्र का मुख अच्छी तरह कपड़ मिट्टी से वन्द कर, जमीन में गाढ़

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

देवे। गर्मी के मोसम में २० दिन के बाद, और सरदी के मौसम में १ मास के बाद जमीन से निकाल, अरिष्ट को गाढ़े वस्त्र से छानकर, शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। प्रातः सायं सेवन करे।

गुण—यह शीतपित्त रोग को दूर करने में अव्यर्थ महौषधि है।

शीतलचीन्यासव--देखिये, कङ्कोळासव।

शुण्ठ्यासव--देखिये, शृङ्गवेरासव।

५१३ शूलहारी आसव--(स्वकृत)–उदरशूल नाशक।

विधि—घीकुआर (ग्वारपाठा) का गूदा १ सेर निकाल कर, शुद्ध चिकने मिट्टी के पात्र में भरकर, उसमें ४ छटाँक सेंधा नमक डालकर धूप में रख देवे, जब नमक और गूदा मिलकर एक होजाय, तब उसमें १ सेर नीबू का रस तथा हींग भुनी हुई १ तोला और काला नमक ४ तोले मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, घोड़े की लीद में दबा दे। २० दिन के बाद निकाल, और छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—२ माशे से ६ माशे तक। प्रातःसायं सेवन करावे।

गुण–पेट में वात की पीड़ा चाहे जैसी हो, तथा वायगोला आदि उदर सम्बन्धी सम्पूर्ण विकार शीघ्र ही दूर होजाते हैं।

---

५१४ शृङ्गवेरासव--अग्निवर्धक।

विधि—सोंठ का चूर्ण १ भाग और मद्य (७० से ८० प्रतिशत वाली) १० भाग एकत्र कर, कांच की बोतल में भर, दृढ़ काग

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लगाकर, ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । बीच २ में हिलाते जाना चाहिये । पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे ।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक ।

गुण—यह अत्यन्त अग्निवर्धक है । अग्निमांद्य, अजीर्ण, अरुचि और आध्मान में अत्यन्त लाभप्रद है । (मद्यासव)

---

९१५ शृङ्गिकासव * ज्वरनाशक ।

विधि—शुद्ध किया हुआ शृङ्गिक विष (सींगिया) १ तोला का चूर्ण कर, ८ तोले उत्तम मद्य में (अथवा रेक्टिफाइडस्प्रिट में) मिला, कांच के पात्र में भर कर, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् गाढ़े वस्त्र से छान कर, शीशियों में भर लेवे ।

मात्रा—७ विन्दु से १२ बिन्दु तक । शुद्ध जल २ या ३ तोले में मिलाकर सेवन करावे ।

गुण—ज्वर को भगाने के लिये बड़ा उत्तम है ।

---

९१६ शोथनाशकासव—देशी टिंचरायोडीन नं० २ ।

(श्री वैद्यराज पं० बालकृष्णजी शर्म्मा—भूपाल)

विधि—सोंठ १ तोला, हीराबोल २ तोले तथा रेवन्दचीनी, सज्जीखार, लोध, कपूर प्रत्येक २॥—२॥ तोले, और फटकरी २

---

* प्रक्षिपश्रृङ्गिकचूर्णं करतलतुलितं द्विमुष्टिमदिरायाम् । स्थापय कूर्पीजठरे नूनमुपेक्षस्व तत्पुनः पक्षम् ॥ दृढवासोभिः पावय योजय पश्चा ज्ज्वरामृतं तदिदम् । सलिलं तत्र सहायं मात्रा तस्यैव विन्दवः सप्त ॥

—सिद्ध भैषज्यसंजूषा ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS (USA)

तोले एवं आम्राहलदी ५ तोले और मैदालकड़ी ५ तोले लेकर, सबको जबकुट कर, किसी चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें १०० तोले (१। सेर) मेथीलेटेडस्प्रिट मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, ५ दिन तक तेज धूप में रक्खे। ६ ठे दिन कपड़े से छानकर रख लेवे।

गुण—इसे कपास की फुरेरी से, किसी भी कारण से उत्पन्न हुई शोथ पर या किसी जहरी कीड़े के दंश पर लगावे, तत्काल लाभ होता है। बिलायती टिंचरायोडीन की अपेक्षा दर्द, चोट, जख्मादि पर इसका शीघ्र और चिरस्थायी लाभ होता है।

श्योनाकासव—देखिये, टुण्टुकासव।

श्योनाकासव—देखिये, टुण्टुकासव।

६१७ श्रीखण्डासव *—पानात्ययादि नाशक।

विधि—सफेदचन्दन, कालीमिरच, बालछड़, हल्दी, दारुहल्दी, चीते की जड़, नागरमोथा, खस, तगर, मुनक्का, चन्दन लाल, नागकेसर, पाठा, आंवले, पीपल, चव्य, लौंग, एलबालुक और लोध प्रत्येक का चूर्ण २-२ तोले, गुड़ १५ सेर, धायके फूलों का चूर्ण ६॥ छटाँक और जल २६ सेर, सबको एकत्र कर,

---

* श्रीखंड मरिचं मांसी रजन्यौ चित्रकं घनम्। उशीरं तगरं द्राक्षा चन्दनं नागकेसरम् ॥ पाठां धात्रीं कणां चव्यं लवङ्गं चैलवालुकम्। लोध्रं चार्धपलं तत्र गुडस्य च तुलात्रयम् ॥ धातकीं द्वादशपलं चैकैकं परियोजयेत् ॥ मासं संस्थाप्य मृद्भाण्डे वस्त्रपूतं रसं नयेत्। पाययेन्मात्रया वैद्यो वयोशक्त्याद्यपेक्षया ॥ पानात्ययं परमदं पानाजीर्णं च नाशयेत् पानविभ्रमसत्युग्रं श्रीखण्डासव आशु च ॥ —भैषज्यरत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शुद्ध चिकने घड़े में भर, एक मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से ३ तोले तक।

गुण—पानात्यय, परमद, पानोजीर्ण और पानविभ्रम नाशक है।

---

५१८ श्रीवासासव—सुजाक नाशक।

(कविराज श्री रामगोपालजी मिश्र—राजवैद्य)

विधि—गंदा बिरोजा १ तोला, राल १ तो० दोनों को कूटकर, १० तोले मद्य (या रेक्टिफ़ाइडस्प्रिट) में मिला, कांच के पात्र, में भर, दृढ़ काग लगाकर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान-कर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—५ बून्द से १५ तक। पानी या शक्कर में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—सूजाक की सम्पूर्ण अवस्थाओं में पूर्ण लाभप्रद है।

---

५१९ श्वासहरासव—नं० १—श्वासरोग नाशक।

(श्रीमान् माननीय स्वामी चैनदासजी वैद्यराज)

विधि—रास्ना, गिलोय, पीपल, भारंगी, पुष्करमूल, काली-मिरच, हल्दी, सोंठ और मुलैठी, ये, प्रत्येक १-१ तोला, गुलब-नपसा, गावजवाँ और हंसराज प्रत्येक १।-१। तोला तथा कूष्मा-ण्डमूल, बड़ी कटेरी का पंचाङ्ग, छोटी कटेरी का पंचाङ्ग, धतूरा पंचाङ्ग और धमासा पंचाङ्ग प्रत्येक ५-५ तोले, बासे (अडूसा) की छाल और सरफोंका २॥-२॥ तोले लेकर, सबको जवकुट

Digitization by American Academy of Indic Studies - AAIS(USA)

कर, ३२ सेर जल में पकावे । १६ सेर जल शेष रहने पर, शुद्ध चिकने मटके में भर, ठंडा होजाने पर, उसमें मुनक्का (दाख) १० तोले, शहद १। सेर और खांड (चीनी) २॥ सेर मिलाकर, पात्र को मुख अच्छी तरह बन्द कर, जमीन में गाढ़ देवे । गरम ऋतु में २० दिन बाद तथा शीतकाल में ३० दिन बाद, उसे निकाल कर साफ वस्त्र से एक साफ बर्तन में छान लेवे और उस पूर्व पात्र को, जल से साफ धोकर, उस छने हुये आसव को नितरने के लिये फिर उसी में वापिस डालकर, उसका मुख बन्द कर, दो दिन तक स्थिर रक्खा रहने देवे । पश्चात् आहिस्ते से निकालकर शीशियों में भर लेवे ।

मात्रा—आवश्यकतानुसार, दिन में तथा रात्रि में भी ४ या ५ बार १ से २॥ तोले तक सेवन करावे।

गुण—सब प्रकार के श्वास रोग के प्रबल से प्रबल वेग में, घण्टे २ भर के बाद सिर्फ ३ या ४ मात्रायें देने से श्वास को रोक देता है ।

(धन्वन्तरि-परीक्षितप्रयोगाङ्क)

---

९२० श्वासहरासव—नं०२—श्वास नाशक ।

(पं० हुब्बरामजी आयुर्वेदविशारद)

विधि—एक साबित गिरी का गोला (नारियल के अन्दर का साबित गोला) लेकर, उसमें चाकू से छेदकर १ तोला अफीम भर दो और उसी में आक का दूध अच्छी तरह खूब भर कर, गोले की ही डाट लगा दो, फिर गेंहू का आटा माड़कर, गोले के ऊपर चढ़ा दो और सुखा लो । जब आटा सूखजाय तब उस गोले को भेड़ की मेंगनी में फूंक दो । जब जानो कि गोला

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भस्म होगया है तो निकाल कर, आटा छुड़ाकर गोले को महीन पीस अलग रखलो। पश्चात् सतमुलैठी, काकड़ासिंगी, कड़वे इन्द्रजौ, प्याज़ के बीज, पीपल, छोटी इलायची के बीज, जायफल, भारंगी, सोंठ, जाविञी और नारियल की कली प्रत्येक ४-४ माशे लेकर महीन चूर्ण करले। फिर सबको एक बड़ी बोतल में भर उसमें महुये की शराब १ पाव डालकर, केशर ६ माशे और कस्तूरी ४ रत्ती दोनों को एक कपड़े में पोटली बांधकर उसी बोतल में डाल देवे और बोतल का मुख काग से बंद कर तारों से कस दे, तथा १५ दिन तक घोड़े की लीद में दबा दे। पश्चात् निकाल कर, सावधानी से डाट खोलकर, आसव को छान लेवे, और पूर्व वाले गोले की भस्म मिलाकर, शीशी में रख ले।

मात्रा-१ बून्द से ५ बून्द तक। दूध या जल के साथ देवे।

गुण—सब प्रकार के श्वास (दमा) को नष्ट करता है।

---

५२१ श्वासहरासव नं० ३—श्वास नाशक।

विधि--कलमीशोरा २० तोले, नौसादर १० तोले, आक के पत्ते १० सेर और सांभर नमक १ सेर, इन सबको एकत्रित कर घड़े में भर, पाताल यंत्रविधि से अर्क टपका लेवे। इस अर्क में-असली केसर, कालीमिरच, पीपल और सोंठ प्रत्येक १-१ तोला, बांसाक्षार ३ माशे मिला कर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—प्रथम सप्ताह में १-१ माशा प्रातःसायं देवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

दूसरे सप्ताह में ३-३ माशे सौंफ के अर्क में मिला कर सेवन करावे। पथ्य में घी, दूध, मक्खन का विशेष सेवन करे। घी के साथ वेसनी रोटी खावे।

गुण—वात तथा कफ के पुराने से पुराने श्वास (दमा) के रोगी अच्छे होजाते हैं। (धन्वन्तरि)

श्वासहरासव--नं० ४--देखिये, वासकासव नं० ३।

८२२ श्वासान्तकारिष्ट—श्वास कासादि नाशक।

(वैद्यराज रामनारायणजी हर्पुल)

विधि--—बबूल की छाल, अपामार्ग पंचाङ्ग, कालेधतूरे का पंचाङ्ग, मुनक्का (दाख), दशमूल और कटेरी का पंचाङ्ग, प्रत्येक आध-आध सेर लेकर, ४८ सेर जल में क्वाथ करे। १२ सेर जल शेष रहने पर, उसे शुद्ध चिकने मटके में छानकर भर देवें, और उसमें ६ सेर देशी शक्कर, ४० तोले धायके फूलों का चूर्ण तथा काकड़ासिंगी, नागरमोथा, सोंठ, हरड़ और दारचीनी प्रत्येक का चूर्ण ५-५ तोले मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् फलालेन के कपड़े से छानकर, बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। भोजन के बाद दिन में दो बार सेवन करे।

गुण-श्वास, खाँसी, मन्दाग्नि और क्षय रोग पर लाभप्रद है।

(अ० योगमाला)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

स

६२३ सञ्जीवनासव—सन्निपात नाशक।

(वैद्यभूषण रामनारायणजी नुनहड़)

विधि—शुद्ध कुचला १॥ माशा और शुद्ध शृंगिक (सिंगीया) विष ६ माशे दोनों को बारीक पीसकर कपड़छन करले। फिर उत्तम मृतसंजीवनी सुरा १ तोला में सुवर्ण वर्क १॥ माशे और उत्तम कस्तूरी १ माशा दोनों को खूब खरल करे, जब भली प्रकार घुटजाय, तब एक मजबूत शीशी में १ पाव मृतसंजीवनी सुरा भर कर उसमें उक्त कुचला आदि चूर्ण और घुटी हुई कस्तूरी, सुवर्ण वर्क मिला कर, मजबूत कार्क लगाकर, शीशी को खूब हिलावे, और २१ दिन तक अनाज की राशि या भूसे के ढेर में दबा कर रक्खे। पश्चात् निकाल और छानकर शीशियों में भर लेवे।

मात्रा—५-५ बून्द। अनुपान-अदरख का स्वरस समभाग मिला कर सेवन करावे। इसीप्रकार १-१ घन्टे के बाद देवे।

गुण—कैसा भी घोर सन्निपात क्यों न हो, बिजली की तरह असर दिखाकर रोगी को पूर्ण आरोग्य करता है। (राकेश)

सञ्जीवन्यासव (सुरा)—देखिये, मृतसंजीवनी सुरा नं० २।

सनायासव—देखिये, स्वर्ण पत्र्यासव।

६२४ * सप्तपर्णासव—अतिसारादि नाशक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विधि—सतौने (छितवन) की छाल १ भाग जवकुट कर, मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) ८ भाग उसमें मिला, कांच के पात्र में या चीनी मिट्टी के पात्र में भर, अच्छी तरह मुख मुद्रा कर ७ या १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। बीच २ में हिलाते जाना चाहिये। पश्चात् फलालेन से छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—आधा माशा से ४ माशे तक।

गुण—यह ग्राही है। अतिसार और आमातिसार में बड़ा लाभदायक है। इसका ज्वर नाशक प्रभाव कुनैन के तुल्य होता है। रोग जन्य निर्बलता के लिये भी यह परम लाभप्रद है।

(मद्यासव)

---

६२६ सर्पविषहरासव—(स्वकृत)–सर्प विष नाशक।

विधि—रीठे (बीज रहित) १० तोले और कच्ची फटकरी २ तोले लेकर, दोनों का चूर्ण कर १॥ सेर जल में मिला बोतल में भर, उसमें १० तोला रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला दृढ़ कार्क लगाकर, ७ दिन तक रक्खा रहने देवे। रोज एक या दो बार हिलाना चाहिये। पश्चात् छानकर दूसरी शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से १॥ तोला तक।

गुण—सर्पदंष्ट्र रोगी को १५-१५ मिनिट बाद पिलाना चाहिये। चमत्कारी लाभकारक है। यदि रोगी बेहोश होगया हो तो उसके मस्तक पर शीतल जल डालकर खूब धोना चाहिये, तथा उक्त आसव को उसके नेत्रों में कई बार डालना चाहिये। वह जब होश में आजावे, तब उसे इसी आसव का पान करावे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सहतूतासव—देखिये, तूतासव।

५२६ सारस्वतासव--पौष्टिक, शक्तिवर्धक।

(वैद्यराज पं० बालकृष्णजी शर्मा, भूपाल)

विधि—ब्राह्मीपंचाङ्ग ४०० तोले (५ सेर), शतावर, दारचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, देवदारु, सफेद चन्दन, हरड़, खस, सोंठ, सौंफ, शीतलचीनी, बचमीठी, वायविडंग, कपूर, बीजबन्द और गोखरू प्रत्येक ४० तोले और धाय के फूल २॥ सेर, कूट पीस कर, चीनी की बरणी में भरे और उसमें शक्कर १० सेर, पानी दो मन, और सुवर्णपत्र दो तोले मिला, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर छाया में रक्खे। प्रत्येक सप्ताह इसे एक बार हिला दिया करे। ३५ दिन के बाद छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से ४ तोले तक। दूने पानी में मिलाकर सेवन करावे।

गुण—इसका १ वर्ष तक सेवन करने वाले को आयु, वीर्य, बल, कान्ति, स्मृति, मेधा, वाणी की शुद्धता आदि की वृद्धि होती है। पौष्टिक और शक्ति वर्धक है, तथा वृद्ध पुरुष जवान होजाते हैं और अनेक रोगों का नाश होता है।

(रसतरंगिणी)

नोट—इसे 'महासरस्वति सुरा भी कहते हैं।

---

५२७ * सारस्वतारिष्ट—आयु, वीर्य, स्मृतिशक्ति आदि वर्धक।

विधि—ब्राह्ममुहूर्त में, शुद्धता के साथ उखाड़ी हुई मूल पत्र

---

* समूलपत्रशाखायाब्राह्म्या ब्राम्हमुहूर्तके। गृहीत्वा विंशतिपलं पुष्ययोगे

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

तथा शाखासमेत ब्राह्मी १ सेर, तथा पुष्य योग में संग्रह की गई शतावर, विदारीकंद, हरड़, खस, अदरख, और सौंफ ये प्रत्येक २०-२० तोले लेकर, सबको जवकुट कर, १६ सेर जल में पकावे। ४ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, ठंडा होनेपर, उसे सुवर्ण कलश में या मिट्टी के शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें आध सेर शहद, १। सेर मिश्री, धाय के फूल १ पाव, तथा रेणुका

शतावरी: ॥ विदारिकाभयोशीराण्यार्द्रकं च तथा मिसि:।पंच पंच पलान्येषां जलद्रोणे पचेद्‌ भिषक् ॥ पादावशेषे विस्राव्य रसं वस्त्रेण गालयेत् । माक्षिकस्य दशपलं सितायाः पंचविंशतिः ॥ धातकी पंचपलिका रेणुका त्रिवृता कणां । देवपुष्पं वचाकुष्ठं वाजिगन्धा विभीतकी ॥ अमृतैला विडंग-त्वक् प्रत्येकं कर्षसम्मितम् ॥ क्वाथे तस्मिन् समस्तानि समाक्षिप्य प्रयत्नतः । स्वर्णकुम्भे निदध्याद्‌ भाजने मृण्मयेऽपि वा ॥ स्वर्णप्रतनुपत्रं च क्षिप्त्वास्मिन् कर्षसम्मितम्। मासाज्जातरसं दृष्ट्वा हेमपत्रे लयं गते ॥ वाससा च परिस्राव्य स्थापयेद्‌ घृतभाजने । सारस्वताभिधोऽरिष्टः एषोऽमृतसमः पुरा॥शिष्याणामुपकारार्थं धन्वन्तरिविनिर्मितः। आयुर्वीर्यं धृतिं मेधां बलकान्ति विवर्धयेत् ॥ वाग्विशुद्धिकरो हृद्यो रसायनवरः स्मृतः । बालकानां च यूनाञ्च वृद्धानां च हितः सदा ॥ नरनारीहितो नित्यं परमोजस्करोमतः । वारयेत्स्वरकार्कश्यं तथा चास्पष्टभाषणम् ॥ स्वरं परभृतस्येव-जनयेत्सेवनात् सदा । रजोदोषेण दुष्टानां योषितां शुक्रदोषिणाम् ॥ पुंसाञ्चापि शुभकरः सर्वदोषहरामतः । अत्यध्ययन गीतादि क्षीणस्मृति बलानरा ॥ लभन्ते चित्तसन्तोषं स्मृतिं चास्य निषेवणात् । पयसा सह पातव्योऽरिष्टोऽयं शाणमानतः ॥ मासाभ्यां रोगहृच्चायं शरदा सर्वसिद्धिदः । अकालमृत्योर्हरणे यदीच्छानारीप्रियत्वं यदिवांछितं स्यात् ॥ वाक्शुद्धिधैर्यस्मृतिलब्धिरिष्टा निषेव्यतां तर्ह्यमृतं भवद्भिः ॥

—भैषज्यरत्नावली ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

(मालवे के वीज), निसोथ,पीपल, लौंग, बच, कूठ, असगन्ध, बहेड़ा, गिलोय, छोटी इलायची के बीज,वायविडंग, दारचीनी और सुवर्णपत्र प्रत्येक का चूर्ण १-१ तोला मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—३ माशे से १ तोला तक। गाय के दूध के साथ।

गुण—आयु, वीर्य, धारणाशक्ति, बुद्धि, बल, एवं कांति-वर्धक है। स्वरभंग स्वर का भारी होना और हकलाना नाशक, वाणीको शुद्ध करने वाला, हृदय को हितकारक, रसायन है। यह मज्जातंतु, मस्तिष्क और हृदय पर अत्यन्त गुणकारी है। इसके सेवन से सब प्रकार की अशक्ति दूर होजाती है, तथा शिशु, बालक, तरुण, वृद्ध स्त्री या पुरुषों को किसी भी ऋतु में एक समान गुण दायक है। पुरुषों के वीर्य दोषों को को तथा स्त्रियों के ऋतुदोषों को नष्ट करने में यह अपूर्व गुणशाली है। अधिक पढ़ने तथा गाने से उत्पन्न हुई स्मरणशक्ति की न्यूनता तथा शारीरिक निर्बलता को लह शीघ्र दूर कर देता है। उन्माद, अपस्मार एवं मूर्च्छा रोग कोभी यह दूर करता है। जिस बालक के मुख से लालस्राव अधिक होता हो, तोतलापन हो (वाणी साफ उच्चारण नहीं करसकता हो) बुद्धि मन्द हो, बीच २ में मूर्च्छा आती हो, या अपस्मार हो तो, प्रातःसायं इस अरिष्ट की ३ माशे की मात्रा २ तोला जल या दूध में मिला कर पिलावे और रात्रि में मकरध्वज का सेवन करावे। कफ-कारक पदार्थों से परहेज रक्खे।

नोट—इसे 'ब्राह्मासव' या 'ब्राह्मी अरिष्ट' भी कहते हैं। 'सुवर्णारिष्ट' भी इसे ही कहते हैं। इसे सुवर्ण पात्र में सन्धान करके रखने

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

का विधान है, उसके अभाव में ही इस में सुवर्णवर्क १ तो० मिलाने के लिये लिखा गया है।

---

९२७ सारिवाद्यासव * नं० १—प्रमेहादि नाशक।

विधि—अनन्तमूल (दोनों) नागरमोथा, पठानीलोध, बड़ की छाल, पीपल की छाल, कचूर, पद्माख, नेत्रवाला (सुगन्धवाला), पाठा, आमला, गिलोय, खस, सफेदचन्दन, लालचन्दन, अजवायन, कुटकी, पत्रज (तेजपात), बड़ी इलायची, छोटी इलायची, कूठ,सनाय और हरड़,प्रत्येक का चूर्ण १६-१६ तोले लेकर, २६ सेर जल में मिलाकर, उसमें गुड़ १५ सेर, धाय के फूलों का चूर्ण आध सेर और मुनक्का (दाख बीज निकाली हुई) ३ सेर लेकर अच्छी तरह घोल कर, शुद्ध चिकने मटके में भर, अच्छे प्रकार मुख मुद्रा कर,१ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर, बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २ तोले तक। भोजन के पश्चात् अथवा प्रातःसायं (आवश्यकतानुसार),समानभाग जल और ४ तोले

---

* सारिवा मुस्तकं लोध्रं न्यग्रोधं पिप्पलं शटीम्। अनन्तां पद्मकं वालं पाठां धात्रीं गुडूचिकाम्॥ उशीरं चन्दनद्वन्द्वं यमानीं कटुरोहिणीम्। पत्रमेलाद्वयं कुष्ठं स्वर्णपत्रीं हरीतकीम्॥ एषां चतुःपलान्भागान् सूक्ष्मचूर्णीकृतान् शुभान्। जलद्रोणद्वये क्षिप्त्वा दद्याद् गुडतुलात्रयम्॥ पलानि दशधातक्याः द्राक्षां षष्टिपलां तथा। मासं संस्थापयेद् भाण्डे सवृते मृण्मयेशुभे॥ सारिवाद्यासवस्यास्य पानान्मेहांश्च विंशतिः। शराविकादयः सर्वाःपिडिकास्तत्कृताश्च याः॥ औपदंशिकरोगाश्च वातरक्तं भगन्दरम्। सर्वएते शमं यान्ति व्याधयो नात्रसंशयः॥ —भैषज्यरत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शहद मिलाकर सेवन करावे।

गुण—बीसों प्रकार के प्रमेह, प्रमेह जनितशराविकादि-पिड़िका, उपदंश, बातरक्त, भगन्दर तथा रक्तदोष नाशक है। यह रक्त शोधक औषधियों में अत्यन्त प्रभावशाली है। इसके थोड़े समय के सेवन से ही दाद, खुजली, शरीर के लालचकत्ते, फोड़े, फुन्सी आतशक आदि रक्त के सर्व दोष शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

हरिहरसार्सापारिला—सारिवाद्यासव १० तोले और पोटा-सम्रायोडाइड ६० बूंद एकत्र मिला शीशी में रक्खे। मात्रा १-१ तोला जल मिला प्रातःसायं सेवन कराने से रक्तविकार शीघ्र ही दूर होजाता है। (अ० योगमाळा)

---

९२९ सारिवाद्यासव—नं० २—विसर्पादि नाशक।

विधि—सारिवा १ पाव तथा नागरमोथा, पठानीलोध, निसोथ, पीपल की छाल, कचूर, पद्मचन्दन, बला, पाठा, आमला, गिलोय, खस, सफेदचन्दन, लालचन्दन, अजमोद, कुटकी, पत्रज, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, सनाय, और हरीतकी प्रत्येक १६-१६ तोले, तथा निम्बपत्र, मजीठ, चिरायता, हल्दी, चोपचीनी और पित्तपापड़ा प्रत्येक १-१ पाव, सबका सूक्ष्म चूर्ण कर २६ सेर जलमें मिला, शुद्ध चिकने मटके में भर उसमें मुनक्का (दाख) १६ तोले, धायके फूलों का चूर्ण १ सेर, बेर की छाल १६ तोले, गुड़ ३॥ सेर घोलकर, अच्छी तरह मुख बन्द कर १ मास तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर लेवे।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा—१ तोले से २॥ तोले तक ।

गुण—विसर्प, उपदंश, एवं रक्त दोष नाशक है, पित्तजन्य विकारों को भी दूर करता है। (अ० योगमाला)

---

९३० सारिवाद्यरिष्ट—नं० १—कुष्ठादि नाशक ।

(वैद्यराज पं० सुखरामदासजी टी० ओझा प्राणाचार्य)

विधि—अनन्तमूल २॥ सेर, मुलैठी १। सेर, कालीदाख ५ सेर, बावची १। सेर, वृहत्‌मंजिष्ठादि क्वाथ की सब चीजें १० सेर लेकर, सबको जवकुट कर, ३ मन जल में पकावे, ३० सेर, जल शेष रहने पर, छानकर, ठंडा होने पर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ५ सेर शहद, १ सेर धायके फूलों का चूर्ण और १० सेर मिश्री मिलाकर, पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १ मास तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे।

मात्रा—६ माशे से १। तोला। समभाग जल मिलाकर दिन में दो बार सेवन करावे ।

गुण—कुष्ठ (कोढ) एवं समस्त प्रकार के त्वचा सम्बन्धी रोगों को दूर करता है।

(धन्वन्तरि—अनुभूतचिकित्सांक)

---

९३१ सारिवाद्यरिष्ट—नं० २—रक्तशोधक।

विधि—अनंतमूल १। सेर, द्राक्षा (मुनक्का) १। सेर, दोनों को जवकुट कर, २५ सेर जल में पकावे। चतुर्थांश शेष रहने पर, छानकर शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें ३ सेर शक्कर,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तथा आमला और गिलोय २॥-२॥ तोले पीपल और कालीमिरच १॥-१॥ तोले, लौंग और तज १-१ तोला, तथा मुलैठी ५ तोले सबका चूर्ण कर मिलावे। पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर २५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर बोतलों में भर कर रख दे और दृढ़ काग लगावे, १५ या २० दिन बाद दूसरी बोतलों में नितार कर भरलेवे। नीचे का मैल फेंक देवे।

मात्रा—१ से २ तोले तक।

गुण—किसी भी कारण से बिगड़ा हुआ रक्त साफ होजाता है। (अ० योगमाळा)

---

५३२ सिङ्कोनासव--(स्वकृत) ज्वरघ्न।

विधि—लाल सिंकोना *की छाल का चूर्ण १० तोले और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले, एकत्र किसी शुद्ध बोतल में भर कर, मुख बन्द कर, रक्खे। ३ दिन के बाद फिल्टरपेपर या फलालेन से छान कर शीशियों में भर कर रखदे।

मात्रा—३० बून्द से १२० बून्द तक।

गुण—शीतज्वर, वेदना, मस्तक शूल पर क्विनाइन या क्विनाइनासव के स्थान में इसे दे सकते हैं। यह कटुपौष्टिक और पाचक है, अशक्ति, मन्दाग्नि और अजीर्ण नाशक है।

---

* पहले सिंकोना की छाल अमेरिका से आती थी। अब हिन्दुस्तान के दार्जिलिंग प्रांत में सरकार की ओर से इसकी उपज की जाती है। लाल और पीत भेद से इसके दो प्रकार हैं। इसमें से लाल सिंकोना की छाल विशेष उपयोगी है। पीत सिंकोना में लाल की अपेक्षा क्विनाइन अधिक होती है।

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

९३३ सिद्धजीवनासव—ज्वर दाहादि नाशक।

विधि—२ सेर पत्थर के चूने में २० सेर पानी डालकर, बार २ पानी को चलाते रहें फिर ३ दिन रख छोड़े। बाद में पानी नितार लेवे। नितारे हुये जल में निम्न वस्तुयें डालकर २ दिन तक रक्खे, पश्चात् भवके के द्वारा १२ बोतल अर्क आसव खींच लेवे। दशमूल उत्तम १ सेर, अजवायन, पलाशपापड़ा, करंज की गिरी, द्रोणपुष्पी पंचाङ्ग, चिरायते के फूल, सौंफ, १०० वर्ष पुराने नीम की जड़ की छाल, कालादाना, सनाय, बड़ी पीली हरड़, नागरमोथा, गुलाबी फटकरी शुद्ध और सुहागाशुद्ध ये प्रत्येक २०-२० तोले तथा अतीस,सोंठ,बनपसा, गावजबाँ, अडूसे की जड़, सफेदचन्दन और रतनजोत प्रत्येक १०-१० तोले तथा सेंधानमक, नौसादर, कालानमक, पोदीना और तुलसीपत्र प्रत्येक ५-५ तोले लेकर सबको जवकुट करके उपरोक्त पानी में डाल देवे।

मात्रा—२ तोला से ५ तोले तक अर्क। अनुपान-गर्म जल या गर्म दुग्ध के साथ। प्रातःसायं सेवन करावे।

गुण—जीर्णज्वर, पुराना प्रसूतज्वर, जीर्णकास,अग्निमांद्य, हाथ पैरों की दाह, यकृतप्रदाह और प्रायः सभी जीर्ण रोगों में तथा शरीर की क्षीणतासम्बन्धी रोगों में अत्यन्त प्रभाव-शाली है। (धन्वन्तरि)

सुगन्धमरिच्यासव—देखिये, कङ्कोलासव।

९३४ * सुदर्शनासव नं० १—ज्वर नाशक।

विधि—सुदर्शन बूटी (इसका क्षुप चक्र की समान होता है,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पत्ते लम्बे २ ईख की समान, फूल सफेद रंग का होता है) का घनसत्व १२० रत्ती, एलुवा १२० रत्ती, रेवन्दचीनी ४० रत्ती, इस्रल ४० रत्ती, त्रायमाणमूल, केशर, सोया, खड़िया, कुटकी, देवदारुमूल, कंकोल, हीराबोल, श्वेतछतरी ये प्रत्येक २०-२० रत्ती, कपूर १० रत्ती, दारचीनी ४ रत्ती, सोंठ ४ रत्ती, काली-मिरच २। रत्ती, अफीम १। रत्ती, कुनीन ८७ रत्ती और मद्य (७० से ६० प्रतिशत वाली) ५० तोले लेकर, काष्ठौषधियों का चूर्ण कर, सबको एकत्र मिला, कांच के पात्र में भर, दृढ़ मुख मुद्रा कर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे । पश्चात् छानकर काम में लावे। इसे तीसरे दिन से ही काम में ला सकते हैं।

मात्रा-आधा माशा से ८ माशे तक।

गुण—प्रत्येक प्रकार के ज्वर एवं सूतिका रोगों को यह नष्ट करता है। मलेरिया आदि ज्वरों में जहाँ केवल कुनीन से कुछ लाभ नहीं होता हो इससे अवश्य लाभ होता है। (मद्यासव)

---

६३६ सुदर्शनासव नं० २—सर्व ज्वर नाशक ।

[श्री रामेश्वरप्रसादजी द्विवेदी, आयुर्वेदाचार्य]

विधि--बृहत् सुदर्शन चूर्ण १० तोले में उत्तम देशी सुरा (मृतसंजीवनी सुरा मिले तो और भी उत्तम हो) १ बोतल मिला कर, कांच के पात्र में भर, दृढ़ मुख मुद्रा कर २१ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छान कर रख लेवे ।

मात्रा—५ बून्द से १० बून्द तक। रोगी का बलाबल देख कर सेवन करावे।

गुण—ज्वर को शीघ्र शमन करता है।

(धन्वन्तरि)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नोट—उक्त बोतल में कांच का ही कार्क होना चाहिये और प्रतिदिन दो बार बोतल को हिलाते रहना चाहिये। २१ दिन या १ मास के बाद उसे अच्छी तरह हिला कर, चीनी की बाल्टी पर कपड़ा बिछाकर छान लेने। छने हुये आसव को उसी बोतल में रक्खे। लुगदी को अलग रक्खे। उक्त मात्रा बहुत ही कम है-बड़ी उमर के रोगी को ३० से ६० बून्द तक दे सकते हैं। बहुत शीघ्र ज्वर दूर होता है। निमोनिया के रोगी को १० से ४० बून्द तक सुखोष्ण जल में मिला, प्रति दो घन्टे बाद देवे। लुगदी को २ या ३ माशा, ताजे या उष्ण जल ५ तो० में मिला, छानकर पिलाने से भी ज्वर उतर जाता है।

सम्पादक--

---

९३६ सुदर्शनारिष्ट—ज्वर नाशक।

[श्री पं० मक्खनलालजी शर्मा वैद्यभूषण-खेरली]

विधि—शार्ङ्गधरोक्त बृहत् सुदर्शन चूर्ण १ सेर लेकर, १६ सेर जल में पकावे। ४ सेर जल शेष रहने पर, छान कर, शुद्ध चिकने मटके में भरे और ठंडा हो जाने पर उसमें ६ सेर शहद, और गिलोय का सत ५ तोला मिला देवे। मुख मुद्राकर १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तक।

गुण—ज्वर पर विशेष प्रभावशाली है।

---

९३७ सुधासव नं० १—क्षयादि नाशक।

विधि—इसकी सर्व कृति दाड़िमासव नं० २ के अनुसार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ही है । इसके विषय में श्रीयुत रामनारायणजी वैद्यराजने 'जीवनसुधा' में प्रकाशित किया है कि सन्धानावधि अर्थात् १ मास के पश्चात् आसव को मोटे कपड़े से छान कर, उसमें आधा तोला केशर पीस कर मिला देवे और शीशियों में भर कर रख देवे।

मात्रा—१। तोला, बच्चों को ३ माशे से ६ माशे तक।

समय—रोग के लक्षणानुसार।

गुण—क्षय (दाह, वमन, तृष्णा, खांसी, अरुचि, रक्तपित्त, अतिसार, निर्बलता, हृदय की कमजोरी, छाती के दर्द पर) आदि के लिये लाभकारी है। पित्तज्वर और बच्चों के बालशोष की बीमारी पर भी लाभ करता है। स्त्रियों के प्रदर और हिस्टीरिया रोग में भी लाभ पहुंचाता है। शरीर की कमजोरी दूर करने के लिये इसका ज्यादह प्रयोग किया जाता है।

---

९३८ सुधासव नं० २—उदररोग नाशक।

विधि--गुलाब जल (असली) ५० तोले, अर्क केवड़ा २५ तोले और चूने का साफ जल २५ तोले, इन तीनों को एकत्र शुद्ध चीनी मिट्टी के बर्तन में भर, उसमें १२ तोले संतरे का रस, २५ तोले नीबू का रस, १० तोले अदरख का रस, १० तो० सेंधानमक, १० तोले कालानमक तथा जीरा सफेदभुना हुआ, सोंफ भुनी हुई, कालाजीरा, चीता, हींग भुनी हुई, कल्मीशोरा, कुलीजन, हाऊबेर प्रत्येक का चूर्ण ६-६ माशे, तथा अजवायन, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, लोंग और खाने का सोड़ा प्रत्येक का चूर्ण ३-३ माशे मिलाने के पश्चात् पिपरमेंट का सत १

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

माशा और केशर (असली) दोनों को अलग २ पीस कर मिलावे और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्दकर, ५ दिन के बाद छानकर काम में लावे।

मात्रा—२ माशे से २ तोले तक।

गुण—सर्व उदररोग, अजीर्ण, शूल, प्लीहा, यकृतविकार, गुल्म, कोष्ठबद्धता नाशक है। (एक प्राचीन पुस्तक से)

---

८३९ सुरञ्जानासव नं० १—वातव्याधि नाशक।

(श्रीयुत मदनलालजी चतुर्वेदी आयुर्वेदाचार्य)

विधि—सुरञ्जान (कड़वी) का महीन (सुर्मे के समान पिसा हुआ) चूर्ण १० तोले, मृतसंजीवनी सुरा (७५ प्रतिशत अल्कोहलवाली) १ पौंड (४० तोले) दोनों को मिलाकर, कांच के कार्क वाली बोतल में भरकर रखे, और १ मास बाद फिल्टरपेपर में छानकर पुनः शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—६० बून्द से १२० बून्द तक। २॥-२॥ तोले जल मिलाकर दिन में ३-४ बार सेवन कराना चाहिये।

गुण—पुरानी वातव्याधि, गठिया, शोथ, शूल आदि नाशक है। मूत्रल, रेचन, हृदय-दुर्बलतानाशक।

नोट—अधिक मात्रा में यह हृदय की गर्मी को मन्दकर मद-कारक प्रभाव करता है, अधिक दस्त, वमन, कंठ में जलन, उदर में सख्त दर्द, दुर्बलता, सुस्ती, मष्तिष्क विकार, आन्त्ररोग प्रभृति उपद्रवों को करता है। कभी २ मूर्च्छा होकर रोगी की मृत्यु भी होजाती है। अतएव इसका सेवन सावधानी से करना चाहिये।

(जीवनसुधा)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सुरवल्लीकषाय--देखिये, प्राणामृतारिष्ट।

सुरिञ्जानासव—नं० २—देखिये, हिरण्यतुत्थासव ।

५४० सुवर्चलासव—विशूचिका नाशक।

(श्री० के० डी० तलानिया वैद्यराज)

विधि—हुरहुर (हुरहुर--जवा) के फूल की कली (कली न मिलने पर खिला या सूखा फूल भी ले सकते हैं, किंतु पूरा गुण कली से ही होता है) ५ तोले, नीबू का रस ५ तोले, (नीबू कागजी, जम्बीरी या कमला होना चाहिये, नीबू न मिल सके तो उसके बदले पकी हुई इमली का पन्ना भी ले सकते हैं) उत्तम मिश्री ५ तोले और शुद्ध जल १ सेर लेकर प्रथम कली और मिश्री को खूब पीस डालें, फिर उसे जल में घोलकर, साफ कपड़े में छान लेवे, पश्चात् उसमें ताजा नीबू का रस मिलावे। और बोतल में भर दृढ़ डाट लगा देवे। (इसमें १० तोले तक रेक्टिफाइडस्प्रिट मिलाने से बहुत दिनों तक अच्छा बना रहता है।

मात्रा—१-१ तोला हर एक कै या दस्त के बाद और कै दस्त बन्द होजाने पर भी एक २ घन्टे बाद दे। फिर समय बढ़ाकर उसी मात्रा से देते रहना चाहिए।

गुण—हैजे की हर हालत में इसका व्यवहार किया जाता है। इससे कै, दस्त आना बन्द होजाते हैं, प्यास रुकती है, पेशाव खुलता है और उंगलियों का अकड़ना बन्द होजाता है। दो तीन खुराक देने पर भी यदि पेशाव न खुले तो थोड़े गेंदे के फूलों के रस का नाभि के चारों तरफ और पेड़ू पर लेप करे।

(धन्वन्तरि)

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

नोट—लेखक ने इसका सार्थक नाम 'विशूचिकान्तक' रक्खा है, यह वास्तव में 'आसव' नहीं है। रेक्टिफाइडास्प्रिट मिलाकर हमने इसका अनुभव कर इसे आसव का स्वरूप दिया है। —सम्पादक।

सुवर्णारिष्ट—देखिये, सारस्वतारिष्ट।

९४१ * सूक्ष्मैलारिष्ट—(आसव) शूलादि नाशक।

विधि—छोटी इलायची ८ तोले तथा जावित्री, बड़ी इलायची, धाय के फूल, लौंग, दालचीनी, नागकेशर, और क्षीरकाकोली प्रत्येक का चूर्ण ६-६ माशे, मृतसंजीवनी १६ तोले और जल ८ तोले सबको एकत्र कर, बोतल में भर, दृढ़ काग लगाकर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर शीशियों में भर कर रखदे

मात्रा—१ माशे से ३ माशे तक अथवा ३० बून्द से ६० बून्द तक।

गुण—अत्यन्त भयंकर घोर उदर शूल को शीघ्र ही नष्ट करता है।

---

* शूक्ष्मैलायाः द्वे पले जातिकोषं स्थूलैला च धातकी देवपुष्पम्।
त्वक् केशरं क्षीरकाकोलिकाच प्रत्येकशः कोलमानं प्रकुर्य्य॥
संजीवन्याः कौडवं तोयमर्धं स्निग्धे भाण्डे सर्वमेतन्निधाय।
पक्षं यावत्स्थापयेत् प्रावृतास्ये उद्धृत्यैनं वस्त्रपूतं प्रयुज्यात्॥
मात्रा ज्ञेया माषकात् शाणमाना हन्याच्छीघ्रं शूलरोगं सुघोरम्।
रोगानन्यान् नीलकंठो यथाहीन् एलारिष्टो नीलकंठ प्रणुन्मः॥
—भै० रत्नावली।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

सेवन्त्यासव—देखिये, तरुण्यासव ।

५४२ स्तम्भासव--वाजीकरण ।

[श्रीमान् पं० कृष्णदयाळुजी शर्मा आयुर्वेदपंचानन]

विधि—कस्तूरी, शुद्धशिलाजीत, केशर कश्मीरी, लोबान-कौडिया, प्रत्येक १-१ तोला, अफीम ६ माशे, अम्बर ३ माशे, और कपूर ३ माशे, सब चीजों को पीसकर-संजीवनी सुरा अथवा बरान्डो नं० १ तीन छटाँक (१५ तोले) में मिला, बोतल में भर, दृढ़ कार्क लगाकर, ३ या ७ दिन तक पड़ा रहने देवे। प्रतिदिन दो तीन बार हिला दिया करे । पश्चात् उसे नितार कर किसी कांच की डाटवाली शीशी में सुरक्षित रक्खे।

मात्रा—५ बून्द से १० बून्द तक । दूधके चमचे में मिला कर सेवन करे। इसके ऊपर शक्ति अनुसार दूध पिलावे ।

गुण—स्तम्भन और पुष्टि के लिये अपूर्व योग है । सेवन काल से ५ मिनिट के भीतर ही अपना गुण दिखलाता है। यह वशीकरण से कम नहीं है।

(धन्वन्तरि-प्रयोगाङ्क)

स्फटिकासव—देखियें, खण्डासव नं० १।

५४३ स्वर्णासव नं० १-क्षीणता नाशक ।

(वैद्यराज पं० देवकरणजी बाजपेयी वैद्यशास्त्री कानपुर)

विधि-सोने के वर्क (असली) ३ माशे और मदिरा की गाद २० तोले लेकर, खरल में स्वर्ण वर्क डाल थोड़ी २ मदिरागाद डालकर खरल करे। जब सब समाप्त होजाय, तब २० तोले और मदिरा मिलाकर एक घंटे तक खूब खरल कर शुद्ध

Digitization by American Academy of Indic Studies: AAIS(USA)

चिकने चीनी मिट्टी के पात्र में भर मुखमुद्रा कर आर्द्र भूमि में जहाँ रात दिन पानी बहता हो गाढ़ कर रक्खे। १ माह बाद निकाल कर प्रयोग में लावे।

मात्रा—६ माशे से १ तोले तक।

गुण—वैसे तो यह ताकत के लिये सर्वोत्तम औषधि है। किंतु इसका विशेष अनुभव इसप्रकार है कि इसकी १ पूर्ण मात्रा यदि मरणासन्न रोगी के मुख में डाल दीजावे तो वह रोगी प्रायः किंचित् बोलने के लिये समर्थ होजाता है।

---

९४४ स्वर्णासव नं० २—(स्वकृत) अपस्मार नाशक।

विधि—स्वर्ण के असली वर्क ३ माशे, कस्तूरी दो माशे और शुद्ध कुचले दो माशे लेकर, प्रथम कुचले के महीन चूर्ण को २॥ सेर (२०० तोले) रेक्टीफाइडस्प्रिट में हल करे, फिर उस में स्वर्ण वर्क को अच्छी तरह घोट कर मिलावे, पश्चात् कस्तूरी मिला, मजबूत कांच के पात्र में भर, मुखमुद्रा कर, धान के ढेर में दबा कर रखदे। १५ दिन बाद निकाल कर और छानकर, बोतलों में भर ले।

मात्रा—रोगी के बलानुसार ५ बून्द से १५ बून्द तक।

गुण—अपस्मार (मृगी) को शीघ्र ही नष्ट करता है। वातव्याधि नाशक, स्नायुओं को बलदायक एवं वीर्य विकार नाशक है। इसे अपस्मारहरासव भी कहते हैं।

---

९४५ * स्वर्णपत्र्यासव नं० १—कोष्ठबद्धता नाशक।

विधि—सनाय (सोनामुखी) के पत्ते १६ तोले, जीरा दो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तोले, धनिया दो तोले, शहद ८ तोले और मद्य (४० से ६० प्रतिशत वाली) ७२ तोले लेकर, सनाय आदि का चूर्ण कर, सब को एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ कार्क बन्द कर, ७ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखले।

मात्रा—आधा माशा से ८ माशे तक।

गुण—प्रत्येक प्रकार के बद्धकोष्ठ में इसके सेवन से बड़ा लाभ होता है। (मद्यासव)

---

५४६ स्वर्णपत्र्यासव नं० २--(स्वकृत)-अजीर्णादि नाशक।

विधि--सनाय ८ तो०, सौंफ २ तोले, धनिया २ तो०, इनका मोटा चूर्ण करे, तथा दाख (मुनक्का) ५ तोले और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५० तोले लेकर उक्त विधि से केवल ३ दिन तक बंद बोतल में सुरक्षित रखने से यह आसव सिद्ध होजाता है।

मात्रा—६० बून्द से १। तोला तक।

गुण—रेचक है। अजीर्ण, मलावरोध, त्वचा के रोग एवं अर्शादि विकारों पर इसका रेचनार्थ प्रयोग बड़ा लाभदायक होता है।

---

५४७ स्वर्णरसायनासव--अपूर्व बलवर्धक।

(वैद्यरत्न पं० नारायणजी पन्त वैद्यशास्त्री)

विधि--सोने के वर्क ३ माशे, कपूर १ माशा और रेक्टिफाइडस्प्रिट ५॥ तोले लेकर, इसमें से करीब ३ माशे स्प्रिट में एक एक करके सोने का वर्क डालता जाय और खरल में घोटताजाय सब वर्क जब महीन घुट जाँय, तब उसमें कपूर भी घोट देवे। फिर सब स्प्रिट मिला दे, तथा इसमें १५ तोले बराण्डी एक्शा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नं० १ को मिलाकर, एक कांच की उमदा डाट की मज़बूत शीशी में भर देवें। ध्यान रहे शीशी इतनी बड़ी हो जिसमें यह वस्तु पौने भाग में ही आजाय और चौथाई खाली रहे। फिर गुड़ और चूना मिलाकर शीशी के मुँह की कांच की डाट के ऊपर से लगा देवे, और उसके ऊपर मुलतानी मिट्टी से २-३ कपड़मिट्टी कर, इसे ऐसी जगह जमीन में गाढ देवे, जो ऊपर से हर समय गीली रहती हो, अथवा एक गड्ढे में गाढ़ कर ऊपर से हर रोज पानी भर दिया करे, कभी वह पानी सूखे नहीं। एक साल के वाद इसे निकाले। छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—५ बून्द से १० बून्द तक।

गुण—इसमें स्वर्ण से भी अधिक गुण हैं। चाहे जिस रोग से दुर्बलता आगई हो, इसके कुछ काल के सेवन से ही अपूर्व बल का संचार होने लगता है। मरते समय जो काम चन्द्रोदय आदि बड़े २ रस नहीं कर पाते, वह इससे होजाते हैं।

(अ० योगमाळा–सिद्धयोगांक)

———

५४८ स्वर्णक्षीरीआसव नं० १–टिंक्चर आयोडिन से प्रभावशाली।

(श्री पं० चिरंजीलालजी जैन वैद्यशास्त्री)

विधि—स्वर्णक्षीरी (सत्यानाशी कटेरी) की जड़ की छाल १० तोले, हल्दी और चूना प्रत्येक ५-५ तोले लेकर, २॥ सेर जल में पकावे, और जब चतुर्थांश शेष रहे तब उतार कर छान लेवे। उसको एक साफ बोतल में, ५० तोले स्प्रिट मिलाकर ४ दिन धूप में रखकर, पुनः फिल्टर द्वारा छान लेवें। पश्चात् साफ शीशियों में भर कर रखले।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मात्रा–२ या ३ बूंद।

गुण—चोट पर रुई के फाहे से २ या ३ बार लगाने से पूर्ण लाभ होता है। वैसे ही शोथ पर भी लगाने से शोथ उतर जाता है। फोड़ा फूट गया हो तो इसको दिनमें एक बार लगा कर धो डालने से बराबर रोपण क्रिया होती है, ऐसा तीन चार दिन करने से कैसा ही सड़ा हुआ ज़ख्म क्यों न हो, बहुत जल्दी अच्छा होजाता है। खाँसी पर इसकी २ या ३ बून्दें बबूलारिष्ट में मिलाकर देने से २–३ खुराक में ही लाभ होता है। गलशुंड रोग में जिसमें गले का काग बढ़ जाता है, खाँसी चैन नहीं लेने देती, तब दिन भर में ३–४ बार गले में लगाने से बहुत अच्छा लाभ होता है। सिर के फोड़ों में एक बार लगा देने से पूर्ण प्रभाव दिखलाता है। जिन बच्चों को दूध न पचता हो, उन्हें बतासे में आधी बून्द से १ बून्द तक रोज देने से पूर्ण लाभ होता है। (धन्वन्तरि–बूटीचित्राङ्क)

---

६४९ स्वर्णक्षीरीआसव नं० २—त्वग्रोगादि नाशक।

(पं० धर्मदत्त विद्यालंकार, वैद्यभूषण)

विधि—सत्यानाशी कटेरी का स्वरस ५ सेर, मिश्री १॥ सेर तथा मुनक्का, अनन्तमूल उसवा, चोबचीनी, बकुलवृक्ष (मौलसिरी) की छाल और धायके पुष्प प्रत्येक का चूर्ण १०–१० तोले, सब को एकत्र मिला; कांच या चीनी मिट्टी के पात्र में भर कर, अच्छी तरह मुखमुद्रा कर, १५ दिन तक रक्खा रहने देवे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रखले।

मात्रा—६० बून्द से २४० बून्द तक (१ से ४ ड्राम)।

गुण—रक्तविकार नाशक, खाज, दाद, फोड़ा, फुन्सी आदि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

त्वचा के रोगों को शीघ्र नष्ट करता है। उपदंश या फिरंग के उपद्रवों को शीघ्र शमन करता है।

---

५५० स्वादिष्टासव-नं० १—अजीर्ण, अरुचि आदि नाशक।

[हकीम राजकुमार साहब हकीम कामिल]

विधि—लौंग, बड़ी इलायची, कालाजीरा, कालीमिरच और सफेदजीरा प्रत्येक १-१ तोला तथा छोटी पीपल, दालचीनी, चने का खार, सज्जीखार और जवाखार प्रत्येक ६-६ माशे, सांभर नमक, काला नमक, सेंधा नमक और खारी नमक प्रत्येक ४॥-४॥ माशे लेकर सब को अधकुचला कर, किसी बड़ी बोतल में या मिट्टी के उस पात्र में जिसमें कुछ दिन पानी भर रहा हो, भर कर, उसमें अदरक का रस और क़ाग़ज़ी नीबूका रस ३-३ पाव तथा घीकुआर का गूदा, बंगलापान का रस और जम्भीरी नीबूका रस प्रत्येक आध-आध सेर मिला कर, खूब हिला देवे और पात्र का मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिन तक धूप में रख देवे। पश्चात् छान कर बोतल में भर कर रख लेवे और काम में लावे।

मात्रा—३ माशे से दो तोले तक।

गुण—अजीर्ण, अरुचि, अफारा आदि रोग नाशक है। किंतु गर्म मिज़ाज़ वालों को एवं धातुक्षीण वालों को लाभ नहीं करता। (आयुर्वेदसिद्धान्त)

---

५५१ स्वादिष्टासव (अर्क) नं० २—पाचनशक्ति वर्धक।

[श्री वैद्यराज पं० बालकृष्ण शर्मा भूपाल]

विधि—बड़ी इलायची ३० तोले और दालचीनी ४० तोले,

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दोनों को जवकुट कर, १० सेर जल में १२ घन्टे भिगोकर, नलिका यन्त्र द्वारा ६ या ७ बोतल अर्क खींच लेवे।

मात्रा—२॥ तोले से ५ तोले तक। जल के साथ।

गुण—पाचनशक्ति को ठीक कर भूँखको बढ़ाता है। पीने में स्वादिष्ट है। भोजन के बाद पीने से दिन भर मुख सुगंधित रहता है। हैजे का उद्रेक होने पर, जल के स्थान में इसी को पिलाना लाभदायक है। किसी उदर रोग की दवा के साथ इस को अनुपान की भाँति देने से शीघ्र लाभ होता है। बालकों को कम मात्रा में देना चाहिये।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ह

५५२ हरमलासव-नं० १-(स्वकृत) पौष्टिक।

विधि—हरमल (इस्पन्द) १० तोले, पोस्त के डोरे ४ तोले, तिल्ली का चूर्ण ४ तोले, सबको जवकुट कर, १॥ सेर जल में मिला शुद्ध चिकने मटके में भर, उसमें आध सेर गुड़ और २० तोले धाय के फूलों का चूर्ण मिला, पात्र मुख अच्छी तरह बन्द कर, १५ दिनतक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छानकर शीशियों में भर कर रख दे।

मात्रा—१ तोला से २॥ तोले तक। अनुपान-दूध या जल।

गुण—यह अत्यंत स्तम्भक एवं पौष्टिक योग है। श्वासरोग, अपस्मार, आमवात पर भी लाभदायक है।

---

५५३ हर्मलासव नं० २—(स्वकृत)रक्तशोधक, वात नाशक।

विधि—हर्मल (इस्पंद) के बीज १० तोले लेकर जवकुट कर, ७॥ सेर खूब गर्म जल में भिगो देवें, ३ घन्टे के बाद, उसे खूब मसलतेहुये छान कर, चीनी मिट्टी के पात्र में भर, उसमें ३ सेर शहद और १ सेर रेक्टिफाइडस्प्रिट मिला, अच्छी तरह मुख बन्द कर, १५ दिन तक सुरक्षित रक्खे। पश्चात् छान कर बोतलों में भर कर रखदे।

मात्रा—१० से ६० बून्द तक।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गुण—रक्तशोधक, कफ वात जनित रोग नाशक,तथा पक्षाघात, गृध्रसीवात, स्त्रियों के मासिक धर्म से उत्पन्न होनेवाली, पीड़ा, अनियमित मासिकधर्म, योषापस्मार, अमावात और मूत्रकृच्छ्र को यह शीघ्र दूर करता है । श्वास (दमा) पर भी यह उत्तम प्रभाव दर्शाता है, तथा यह उत्तम निद्राकारक है ।

---

५५४ हारिद्रासव—प्रमहे नाशक ।

[स्वर्गीय श्री पं० परशुरामजी शास्त्री विद्यासागर]

विधि—हल्दी १ पाव लेकर, जलमें भिगोदेवे, फिर कूटकर, जल डालकर स्वरस निकाल ले । अथवा सूखी हल्दी का चूर्ण १ भाग और रेक्टिफाइडस्प्रिट ८ भाग (सूखा चूर्ण डालते समय, उसे समभाग जल में भिगोकर स्प्रिट में डालना चाहिये) एकत्र मिला, बोतल में भर, दृढ़ कार्क लगा कर रख दे । फिर २४ घण्टे बाद फलालेन से छान कर, शीशियों में भर कर रख ले ।

मात्रा—२ बून्द से ५ बून्द तक । २ तोला जल में दो बून्द आसव मिला कर पिलावे । इसी प्रकार दिन में ३ बार देवे ।

गुण—प्रमेह और मधुमेह को शीघ्र नष्ट करता है । पथ्य से रोगी को रक्खे, व्यायाम कराने से न चूके और इसके चमत्कृत गुणों को देखे, कैसा आशु लाभ पहुंचाता है ।

(अ० योगमाला–प्रमेहाङ्क)

---

५५५ हरीतक्यासव *—क्षयकासादि नाशक ।

---

* प्रस्थार्धं तु हरीतक्याः धात्रीप्रस्थद्वयं तथा । दशमूलशतार्धं च